स्वाध्यायी बनने से महान लाभ

१. कर्मों की निर्जरा होती है।

२. जिनवाणी का प्रचार और प्रसार होता है।

३. शुद्ध क्रियाराधन का अभ्यास करने और कराने का लक्ष्य बनता है।

४. सम्प्रदाय वाद से दूर हटने का सुअवसर मिलता है।

५. अनेक स्वधर्मी बन्धुओं से सम्पर्क बढ़ता है, जिससे स्नेह सद्भाव और संगठन भावना सुदृढ़ होती है।

६. शिक्षा प्रेमी उदार सज्जनों का द्रव्य पारमार्थिक कार्यों के उपयोग मे आता है।

७. जैन दर्शन के बारे में विचारों के आदान-प्रदान का सुनहरा अवसर मिलता है।

८. सभी क्षेत्रों में नैतिक उत्साह और चेतना जागृत होती है।

९. आध्यात्मिक क्षेत्र में अनुभव बढ़ता है।

प्रथम खण्ड

स्वाध्याय

स्वाध्याय दूसरो की निन्दा मे निरपेक्ष, बुरे विकल्पो के नाश करने मे समर्थ तत्त्व के विनिश्चय का कारण और ध्यान की सिद्धि करने वाला है।

प्रकाशकीय

भगवान् महावीर के २५००वें परिनिर्वाण वर्ष के उपलक्ष मे सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की ओर से दो ग्रन्थ प्रकाशित करने की योजना हाथ मे ली गई थी। पहला ग्रन्थ "जैन सस्कृति और राजस्थान" 'जिनवाणी' के विशेषांक के रूप में पाठको के हाथो मे पहुँच चुका है। 'श्री लक्ष्मीदेवी जैन पुरस्कार' मेरठ द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ विशेषाक के रूप मे यह पुरस्कृत भी हो चुका है। दूसरा ग्रन्थ "स्वाध्याय स्मारिका" अब पाठको की सेवा मे प्रस्तुत किया जा रहा है। अप्रत्याशित विलम्ब के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

जीवन और समाज मे सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन और सम्यगचारित्र की आराधना के प्रति रुचि जागृत करने, उसमे सहयोगी बनने और सामायिक, स्वाध्याय तथा साधना की प्रवृत्ति विकसित करने की दृष्टि से आज से ३४ वर्ष पूर्व परम श्रद्धेय जैनाचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० के उद्‌बोधन से प्रेरित होकर सम्यग्ज्ञान प्रचारक मडल की स्थापना की गई थी। मण्डल स्वाध्यायी सघ, श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण सस्थान आदि प्रवृत्तियो के माध्यम से ज्ञान और साधना के आराधना और प्रसारण के कार्यों मे सलग्न है।

विचार प्रेरक, सस्कार वर्द्धक सत् साहित्य के प्रकाशन की दृष्टि से मडल ने अब तक लगभग ५० पुस्तकें प्रकाशित की हैं और 'जिनवाणी' मासिक पत्रिका नियमित रुप से ३५ वर्षों से प्रकाशित हो रही है। इसके अब तक 'स्वाध्याय सामयिक, 'तप', श्रावक धर्म, साधना ध्यान और 'जैन सस्कृति और राजस्थान' विशेषाक प्रकाशित हो चुके हैं जो विशेष लोकप्रिय और उपयोगी रहे हैं।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मडल की प्रवृत्तियो मे स्वाध्यायी सघ की प्रवृत्ति का प्रमुख स्थान है। इस सघ की स्थापना आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० के सदुपदेश से हुई। इसका मुख्य कार्यालय घोडो का चौक जोधपुर मे है। विगत वर्षों में सघ ने सराहनीय प्रगति की है, इस समय सवाई माधोपुर उदयपुर, बैंगलोर तथा मद्रास मे इसकी मुख्य शाखाएँ हैं

स्वाध्याय सघ का मुख्य कार्य स्वाध्याय के प्रति लोगो की रुचि जागृत करने के साथ-साथ ऐसे स्वाध्यायी तैयार करना है जो संत सतियो के चातुर्मास से वचित क्षेत्रो मे जाकर पर्युषण के दिनो मे अष्ट दिवसीय पर्वाराधना सम्यक्‌रूपेण करा सकें। कुछ वर्षों तक स्वाध्याय सघ का कार्य विशेष गति नही पकड सका, पर विगत १०-१२ वर्षों से श्री सम्पतराजजी डोसी के सयोजकत्व मे स्वाध्याय सघ ने अच्छी प्रगति की है। स्वाध्यायियो को जैन तत्त्वो की विशेष जानकारी कराने और साधना की ओर उन्हे उन्मुख करने की दृष्टि से अवकाश के दिनो मे धार्मिक प्रशिक्षण शिविर और साधना शिविर भी आयोजित किये जाते रहे हैं।

स्वाध्याय सघ की प्रगति और स्वाध्यायियो से समाज को परिचित कराने के उद्देश्य से इस 'स्वाध्याय स्मारिका' का प्रकाशन किया जा रहा है। आशा है, इसमे जीवन और समाज में स्वाध्याय की रुचि और प्रवृत्ति बढेगी।

स्मारिका मे प्रकाशित स्वाध्याय सम्बन्धी विचार सामग्री जुटाने में हमें डॉ नरेन्द्र भानावत का, स्वाध्याय सघ का प्रगति विवरण प्रस्तुत करने मे श्री सम्पतराजजी डोसी का एव स्वाध्यायियों का परिचय तैयार करने मे सर्व श्री सम्पतराजजी डोसी, कन्हैयालालजी लोढा व रूपचन्दजी जैन का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है। यद्यपि स्वाध्यायियों का परिचय प्रस्तुत करने मे पूरी सावधानी रखी गई है तथापि सूचनाओ के अभाव मे कतिपय स्वाध्यायियो के परिचय इसमें प्रकाशित होने से रह गये हैं उनके लिये हम क्षमाप्रार्थी हैं। सभी स्वाध्यायियो के चित्रो का प्रकाशन भी सम्भव नही हो पाया है। बार-बार लिखने पर भी कई स्वाध्यायियो से हमे उनके चित्र नही मिल पाये। अत. जो चित्र प्राप्त हो सके, उन्ही का प्रकाशन यहाँ किया गया है।

स्मारिका के लिये विज्ञापन जुटाने मे सर्व श्री सम्पतराजजी डोसी, ज्ञानेन्द्रजी बाफना, चन्द्रराजजी सिघवी, सुमेरसिहजी बोथरा, प्रेमचन्दजी हीरावत, कीर्तिचन्दजी ढड्ढा आदि का विशेष सहयोग रहा है। ये सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

स्मारिका के प्रणमन मे सहयोग देने वाले सभी विद्वान् लेखको, सम्पादक मण्डल के सदस्यों व विज्ञापन दाताओ के प्रति हम मण्डल परिवार की ओर से हार्दिक आभार प्रकट करते हैं। आशा है, उनका यह सहयोग हमे आगे भी बराबर मिलता रहेगा।

उमरावमल ढड्ढा — अध्यक्ष

श्रीचन्द गोलेछा — मत्री

सम्यक् ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

सम्पादकीय

मुद्रण के आविष्कार और ज्ञान-विज्ञान के विकास से आज अध्ययन का क्षेत्र बहुत विकसित हो गया है। प्रतिदिन हजारो लाखो पुस्तकें छपती और बिकती हैं तथा करोडो व्यक्ति उन्हे पढते हैं। पर एक समय ऐसा भी था जब छापेखाने के अभाव मे अध्ययन-अध्यापन का मूल आधार कतिपय हस्तलिखित प्रतियाँ और उपदेश व प्रवचन श्रवण ही था। आज तो शिक्षण सस्थाओ के अलावा पुस्तकालय, पत्र-पत्रिकाएँ, फिल्म, रेडियो, टेलिविजन, टेप-रेकार्डर आदि ज्ञान के कई नये-नये साधन विकसित हो गये हैं।

अध्ययन-कौशल का इतना विकास होने पर भी आज व्यक्ति की ज्ञान-चेतना, मौलिकता और सजगता के रूप मे विशेष विकसित नही हो पा रही है। शब्द और विषय का ज्ञान तो बढ रहा है पर अर्थग्रहण और उसकी नानाविध भगिमाओ तक पहुचाने की क्षमता विकसित नही हो पा रही है। बाह्य इन्द्रियों की क्षमता बढने से रग, रूप, शब्द स्वाद, स्पर्श आदि की पहचान और प्रतीति मे तो विकास हुआ है, विश्व की घटनाओ मे रुचि बढी है, सामान्य ज्ञान का क्षितिज विस्तृत हुआ है और नित्य नवीन तथ्य जानने की जिज्ञासा बढी है। यह सब शुभ लक्षण है, पर इसके समानान्तर अपने आत्म चैतन्य को जानने की जिज्ञासा और उसकी शक्ति को प्रकट करने की क्षमता नहीं बढी है। फलस्वरूप ज्ञान की आराधना आत्मा के लिए हितकारक, विश्व के लिए कल्याणक और वृत्ति-परिचारक नही बन पा रही है। ज्ञान के मथन से अमृत के बजाय विष अधिक निकल रहा है और उस विष को पचाने के लिए जिस शिव-शक्ति का उदय होना चाहिए, वह नही हो पा रहा है।

सच बात तो यह है कि केवल अध्ययन से ज्ञान के क्षेत्र मे सघर्ष का बल मिलता है और उससे आग ही पैदा होती है। जब तक स्वाध्याय की वृत्ति नही बनती, तब तक ज्ञान का मन्थन नवनीत या अमृत नही दे पाता। स्वाध्याय का अर्थ है—आत्मा द्वारा, आत्मा के लिए अध्ययन। ऐसा अध्ययन जिससे आत्मा का हित हो, लोक का कल्याण हो। ऐसा स्वाध्याय अर्न्तमुख हुए बिना नही हो सकता। वीतराग महापुरुषो द्वारा कथित सद्शास्त्रो के वाचन, मनन, चिन्तन, भावन और आस्वादन मे जब स्वाध्यायी एकाग्रनचित होता है, तब उसकी पांचों इन्द्रियो का संवर स्वत हो जाता है और वह भीतर की गहराई मे अवगाहन कर निजता से जुडने लगता है, अपने आपको बुनने लगता है। उसकी प्रमाद की अवस्था मिट जाती है। उसकी चेतना एकाग्र होकर भी जागरुक बनी रहती है। उसका ज्ञान केवल आंख द्वारा वाचना या तर्क बुद्धि द्वारा पृच्छना तक सीमित नहीं रहता, वह परिवर्तना और अनुप्रेक्षा द्वारा स्थिर श्रद्धा और निमल भाव के रूप मे परिणत हो जाता है तथा उसके आचरण मे ढलकर अपने में ऐसे शक्तिकण समाहित कर लेता है कि वह प्राणीमात्र के लिए मगलरूप बन जाता है।

आज के युग की यह बडी दु खान्त घटना है कि ज्ञान-विज्ञान का इतना व्यापक प्रसार और अध्ययन अध्यापन की इतनी सुविधाएँ प्राप्त होने पर भी व्यक्ति का मन स्वाध्याय की ओर प्रवृत्त नही हो पा रहा है। आज की शिक्षा पद्धति मे अध्ययन कौशल ने स्वाध्याय-कला को निर्वासित कर दिया है।

फलस्वरूप हमारी प्रवृत्ति परीक्षोन्मुखी बनकर रह गयी है। भीतर उतरने की बजाय वह बाहरी साधनो का ही सहारा लेती है। उससे व्यावसायिकता का फलक तो विस्तृत हुआ है, पर आध्यात्मिकता की सवेदना सिकुड़ गयी हैं, मनोरजन का क्षेत्र तो बढ़ा है पर आत्मरमण की सभावना समाप्त हो गयी है, वृत्तियो को

उभरने का तो अवसर मिला है, पर आत्मानुशासन का स्वाद विस्मृत हो गया है। अतः आवश्यकता है कि हम स्वाध्याय की ओर प्रवृत्त हों ताकि आत्म-हनन और आत्म-दमन के स्थान पर आत्म-विश्वास और आत्मोल्लास बढ़े।

स्वाध्याय की इस प्रवृत्ति को अधिकाधिक विकसित करने की आवश्यकता, आज से तीन दशक पूर्व ही परम श्रद्धेय आचार्य श्री हस्तीमलजी म सा ने अनुभव की। फलस्वरूप उनके उपदेशों से प्रेरित होकर स्वाध्याय संघ की स्थापना की गई। इस सघ का मुख्य लक्ष्य सत-सतियो के चातुर्मास से वचित क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधन के लिए स्वाध्यायी श्रावकों को भेजना है। विगत वर्षों मे सघ की ओर से आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, असम, मध्यप्रदेश, मेवाड, मारवाड़ आदि प्रदेशों में सैंकड़ो स्वाध्यायी बन्धुओं को इस निमित्त भेजा गया है।

ये स्वाध्यायी बन्धु एक प्रकार से सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जागरण के अग्रदूत हैं। ये निस्वार्थ भाव से आठ दिनो तक क्षेत्र विशेष को अपनी सेवाएँ देते हैं। ये मात्र प्रचारक या उपदेष्टा नहीं होते। ये साधक भी होते हैं। स्वय आठ दिनो तक तप-ध्यान ध्यान पूर्वक सयम साधन करते हुए, आत्म-स्वरूप मे लीन रहने का प्रयत्न करते हैं व दूसरो को भी इस ओर प्रेरित-प्रोत्साहित करते हैं। आचार और विचार दोनो के सम्यक् योग से पुष्ट इनका पर्युषण पर्वाराधन उस क्षेत्र विशेष के लिए उपयोगी और प्रेरणाकारी सिद्ध होता है। इनकी विद्यमानता से उस क्षेत्र के सुषुप्त मानस आध्यात्मिक चेतना और धर्मधारणा से स्पन्दित हो उठता है। अष्ट दिवसीय साधना से क्षेत्र विशेष के लोगो को न केवल तत्व ज्ञान मिलता है वरन् उनमें धर्मरुचि भी जागृत होती है जो उनके भावी जीवन निर्माण मे सहायक बनती है।

इन स्वाध्यायी बन्धुओ की भूमिका का सामाजिक पक्ष भी बहुत महत्वपूर्ण है। जिस क्षेत्र मे ये पहुँचते हैं, वहा धार्मिक चेतना ही नही उभरती वरन् सामाजिक जागृति और स्वधर्मी वात्सल्य भाव भी पनपता है। सांस्कृतिक समन्वय और समाज-सगठन का नया वातावरण बनता है जिसके परिणाम स्वरूप विविध रचनात्मक प्रवृत्तियो और सेवाकार्यों को फलने-फूलने का अवसर मिलता है।

स्वाध्याय सघ की प्रगति और स्वाध्यायी बन्धुओ की भूमिका मे समाज को परिचित कराने की दृष्टि से ही इस स्मारिका का प्रकाशन किया गया है। स्मारिका के प्रथम खण्ड मे स्वाध्याय के स्वरूप, महत्व, उपयोगिता और उसके विभिन्न पहलुओं पर पठनीय और मननीय सामग्री प्रस्तुत की गई है। द्वितीय तृतीय खण्ड मे स्वाध्याय सघ के उद्भव एव विकास तथा स्वाध्यायी बन्धुओं की संक्षिप्त परिचय रेखा सचित्र अंकित की गई है।

जयपुर से बाहर अजमेर मे इसका प्रकाशन होने से हम प्रूफ नही देख पाये हैं। अत यत्र तत्र मुद्रण सम्बन्धी अशुद्धिया रह गई हैं। स्वाध्यायियों का परिचय समय पर तैयार न होने से व प्रेस सम्बन्धी कठिनाई के कारण इसके प्रकाशन में बहुत अधिक विलम्ब हो गया। इसके लिए हम पाठकों व स्वाध्याय-प्रेमिको से क्षमायाचना करते हैं।

अपने सभी सहयोगियो के प्रति आभार सहित,

१७ मई, १९७९ — नरेन्द्र भानावत
सी-२३५ ए तिलकनगर, जयपुर-३०२००४ — सम्पादक

स्वाध्याय : आत्मबोध का उत्स

* आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा.

१ स्वाध्याय का स्वरूप :

'अध्ययनमध्याय सु-सुन्दरो-ऽध्याय स्वाध्याय.'

याने सुन्दर-अध्ययन—सत्-शास्त्र को मर्यादापूर्वक पढना स्वाध्याय कहा जाता है। केवल अध्ययन—पठन स्वाध्याय नही कहा जा सकता। क्योकि आज कितने ही कामोत्तेजक जासूसी उपन्यास और अश्लील पुस्तकें तथा कथा कहानिया, विकार-वर्द्धक साज-सज्जो से सुसज्जित, अध्ययन-सामग्री के रूप मे उपलब्ध होते हैं तो क्या इनका अध्ययन भी स्वाध्याय कहायेगा ? कभी नही ! वस्तुतः जिस अध्ययन से आत्म-कल्याण सभव हो ऐसे श्रेष्ठ ग्रन्थो का ध्यानपूर्वक पढना ही स्वाध्याय शब्द का अभीष्ट-अर्थ है। गदी पुस्तको का अध्ययन मन को गदा कर के लक्ष्यभ्रष्ट बना देता है। जिन से आचार-विचारो मे उत्तेजना तथा कालिमा लगती हो भूलकर भी ऐसी पुस्तको को हाथ नही लगाना चाहिये। स्वाध्याय के रूप मे उसके पढने की तो बात ही क्या ? अन्य दृष्टि से ऐसी पुस्तकें चाहे कितनी भी उपयोगी हो किन्तु स्वाध्याय की दृष्टि से सर्वथा हेय हैं। हमारे पूर्वजो ने जो कुछ भी किया, सोचा और पाया वे सभी सद्ग्रन्थो के स्वर्णिम् पृष्ठो पर हमारी थाती के रूप मे युग युग से सुरक्षित पडे हैं। वस्तुत उन्ही आदर्शो की प्राप्ति को लक्ष्य मानकर हमे उनका स्वाध्याय करना चाहिये।

२ स्वाध्याय का एक विशिष्ट रूप :

स्वाध्याय का एक दूसरा भी रूप प्रचलित है, जिसमे पाठको को अध्ययन के लिए किसी सद्ग्रन्थ का अध्ययन उतना आवश्यक नही जितना कि आत्मा का अध्ययन। इस दृष्टि मे" स्वस्य-आत्मन अध्ययनम् स्वाध्याय । याने अपनी आत्मा का अध्ययन ही स्वाध्याय है। आत्मा कोई ग्रन्थ या शास्त्र नही जिसका कि अध्ययन किया जाय ? ऐसी शका का स्पष्ट समाधान यह है कि किसी भी अध्ययन का कुछ न कुछ विपय होता है, और अध्येता उस विपय-वस्तु को हृदयगम करने के लिए उसका पुन पुन निरीक्षण एव परीक्षण करता है जो कि अध्ययन या अध्याय कहाता है। आत्मा के बारे मे भी यह ज्ञातव्य है कि आत्मा क्या है ? कहा से आया है ? कहां फिर जायेगा ? देह से उसका क्या सम्बन्ध है ? मन और इन्द्रियो से इसका क्या नाता है ? क्या देह, इन्द्रिय और मन का समुच्चय रूप ही तो आत्मा नही है। इस जागतिक जाल मे गुड मे मक्खी की तरह इस आत्मा के उलझने का रहस्य क्या है ? क्या देह के साथ आत्मा का कभी विनाश नही होता ? क्या वास्तव मे वह अजर और अमर है ? आत्मा का आकार कैसा है ? वह अमूर्त है तो इस तरह मूर्त रूप का आश्रय ग्रहण क्यो करता आदि वहुविध प्रश्न हैं, जिन पर

पूर्वाचार्यो ने, तत्त्ववेत्ता महर्षियो ने भाति-भाति के विचार व्यक्त किए हैं।

हमको पूर्वश्रुत उस शास्त्र—वाणी के आधार पर चिन्तन, मनन और निदिध्यासन के द्वारा उन गूढ पहेलियो को सुलझाने का प्रयत्न करना चाहिये। आत्मिक तत्व का यह उद्‌घाटन भी स्वाध्याय के अन्तर्गत ही आता है।

३. स्वाध्याय—वाणी का तप

स्वाध्याय एक प्रकार का वाणी का तप है। गीता में श्री कृष्ण ने कहा है—

"स्वाध्यायाभ्यसनं चैव् वाङमयं तप उच्यते"

याने स्वाध्याय एव अभ्यास को वाङ्‌मय का तप कहा जाता है। तप के द्वारा जैसे राग द्वेष आदि कर्मबन्धन आत्मा से अलग हो जाते हैं, वैसे स्वाध्याय रूप तप के द्वारा भी वचन-सिद्धि प्राप्त हो जाती है और व्यक्ति के मुखमण्डल पर एक अलौकिक दिव्यता दिखाई देने लगती है। स्वाध्यायी अपनी निरन्तर स्वाध्याय-साधना से अमोघ वाक् हो जाता है। इस तरह स्वाध्याय से वाणी मे निखार तथा वल आने लगता है। एक सच्चे स्वाध्यायी के निर्मल मन से निकलने वाले वचन कभी खाली नही जाते।

४ स्वाध्याय—एक ज्ञान यज्ञ :

यज्ञ कई प्रकार के होते हैं जैसा कि गीता का वचन है—

"द्रव्य यज्ञा-स्तपोयज्ञा, योग यज्ञास्तथा परे।
स्वाध्याय ज्ञान यज्ञाश्च यतय -संशित व्रता"।

अर्थात् द्रव्य यज्ञ, तपोयज्ञ तथा स्वाध्याय रूप ज्ञानयज्ञ की व्रतनिष्ठ यति जन उपासना करते हैं।

इन यज्ञो मे ज्ञानमूलक स्वाध्याय यज्ञ की महिमा बताते हुए कहा है—

'श्रेयान् द्रव्यमयाद्,-यज्ञान्-ज्ञानयज्ञ परं तप.
सर्वं कर्माखिल पार्थ, ज्ञाने परिसमाप्यते।"

अर्थात् द्रव्ययज्ञ से ज्ञानयज्ञ श्रेष्ठ है। क्योंकि बन्धन के हेतु सभी कर्म, ज्ञानयज्ञ मे समाप्त हो जाते हैं। द्रव्ययज्ञ मे जहा साधन-सामग्री की अपेक्षा रहती हैं, स्वाध्याय मे उनका कोई प्रयोजन नही। स्वाध्याय अन्त. मे छिपे ज्ञान को प्रकाशित करता है, जिससे कि अज्ञानताजन्य सारे सशय और विपर्यास मन से दूर हो जाते हैं। सशयो के मिटते ही व्यक्ति देहवान् की जगह आत्मवान् बन जाता है। और 'आत्मवन्त न कर्माणि निवध्नन्ति" और आत्मवान् को कर्म बाध नही सकता। कर्मबन्ध को काटना ही मोक्ष का सोपान है। ससार के समस्त जप-तप कर्मबद्ध को छुडाने के लिए ही विहित माने गए हैं। जो कि स्वाध्याय से सहज सुलभ प्राप्त होते है।

५ स्वाध्याय—अज्ञानता का नाशक :

जालबद्ध मकडी की तरह, यह आत्मा स्वकृत अज्ञानता के द्वारा सासारिक उलझनो मे उलझी हुई है। इसी अज्ञानता या अविद्या के वश आत्म-ज्योति जगमगा नही पाती। जैसे सूर्य घन-पटल मे छिपकर जगत् पर अपना प्रकाश नही फैला पाता, वैसे अज्ञानता से ज्ञान-घन विभु की दिव्य-ज्योति भीतर ही भीतर कौंध कर रह जाती है और बाहर नही हो पाती। मगर स्वाध्याय के द्वारा निरन्तर ज्ञानवृद्धि होने से एक दिन यह आत्मा अज्ञानता को विनष्ट कर ज्ञानालोक से आलोकित हो उठता है। और इस पर छायी अविद्या का आवरण भी दूर हो जाता है। कहा भी है—

"यथैधासि समिद्धोऽग्नि, भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन,
ज्ञानाग्नि सर्वं कर्माणि भस्मसात् कुरुते तथा"

अर्थात् जैसे प्रज्वलित अग्नि समस्त ईंधन को अपनी ज्वाला से राख बना देती है, वैसे सतत्

स्वाध्याय से प्रदीप्त यह ज्ञानाग्नि अज्ञानता को जडमूल से भस्म बना डालती है।

६ स्वाध्याय—आत्मबोध का उत्स

स्वाध्याय आत्म बोध का उत्स—उद्गम स्थान है। क्योंकि स्वाध्याय से ज्ञान और ज्ञान से आत्म-बोध होता है। स्वाध्याय के द्वारा सरलता से आत्म-साक्षात्कार होता है, जिससे पुन उसको कुछ करना शेष नही रहता। उसके मन की सारी सासारिक तृष्णा या लालसा मिट जाती है और वह परमानन्द निमग्न हो जाता है। इस दशा को प्राप्त करने वाला जीव स्व पर के भेद को भूल जाता है। संसार के समस्त प्राणियो के प्रति उसमे समता का भाव आ जाता है। वह सब मे अपने को तथा सबको अपने मे समाया समझता है। राग और द्वेष से उसका सर्वथा सम्बन्ध टूट जाता है। दो तट बन्धो के बीच बहने वाली सरिता जैसे सागर मे मिलकर अपनी क्षुद्रता खोकर सागर की महानता को धारण कर लेती है, वैसे ही स्वाध्याय के बल पर साधक व्यक्ति से समष्टि का बडा रूप धारण कर लेता है। सुख-दु ख, हानि-लाभ, स्वर्ग-नर्क और भले-बुरे का विचार उसके मन मे नही रहता, वह द्वन्द्व से परे द्वन्द्वातीत बन जाता है।

७ स्वाध्याय—आत्म-चिन्तन की कसौटी :

स्वाध्याय को यदि आत्म-चिन्तन की कसौटी कहे, तो कुछ भी अत्युक्ति नही होगी। स्वाध्यायी साधक इस कसौटी पर—

"किं मे कड किं च मे किच्च सेस,
किं सक्कणिज्ज न समायरामि।"

अर्थात् मैंने क्या शुभ कर्म किया, क्या नही किया एवं कौन से कार्य करने शेष हैं, जिसे मैं करने की स्थिति मे नही हूँ, आदि विषयो को स्वाध्याय के ज्ञानालोक मे वर्गीकरण करते हुऐ अकृत-कर्तव्य -कर्मो के करने मे स्वाध्याय से सबल प्राप्त कर पुन प्राणपन से जुट जाता है। तथा जीवन को गरिमा मडित और उजागर बना लेता है। कसौटी पर कसने से जैसे स्वर्ण की परख होती है, वैसे स्वाध्याय की कसौटी पर आत्मिक गुणो की परख हो जाती है।

८ स्वाध्याय—वक्तृत्व का कल्पद्रुम :

निरन्तर किए गए सद्ग्रन्थो या शास्त्रो, जिसके लिए कहा है कि—

यस्मात् रागद्वेषोद्धत-चित्तान, समनुशास्ति सद्धर्मे
सत्रायते च दु खाच्छा स्त्रमिति निरुच्यते सद्भि:

अर्थात् जिसके द्वारा राग-द्वेष से उद्धत मनको सद्धर्म मे अनुशासित किया जाता है और दु खो से सरक्षण होता है, उसे सज्जनो ने शास्त्र कहा है। उसके अध्ययन या स्वाध्याय से व्यक्ति का ज्ञान विकसित होता है। इस सदध्ययन से उसकी वाणी ओजस्विनी और बलवती बन जाती है। वह इस स्वाध्याय के बल पर प्राप्त ज्ञान के द्वारा जिस किसी विषय को पूर्ण प्रामाणिकता और प्रखर पाण्डित्य से जनगण के आगे प्रस्तुत करता तथा उसे अकाट्य प्रमाणो द्वारा लोक मानस पर खचित कर देता है।

उसकी वाणी मे यथार्थवादिता के सग सग ऐसी माधुरी भरी होती है जिससे कि लोग उससे प्रभावित हुए बिना नही रहते। हर व्यक्ति उसकी वचन-सुधा का पान करना चाहता है। वह जो कुछ भी बोलता है पूर्ण प्रभावकारी होता है।

एक सच्चे स्वाध्यायी की वक्तृत्व-कला इतनी निखर जाती है कि उसकी बातो पर लोग मत्र-मुग्ध से बन जाते हैं तथा तन-मन-धन सब उस पर न्योछावर करने पर तुल जाते हैं। ऐसा समोहक गुण निसर्ग से तो मिलता ही है मगर स्वाध्याय से वह कुसुम-कोढक की तरह प्रफुल्लित एव विकसित हो जाता है।

९ स्वाध्याय—एक अनमोल चिन्तन .

स्वाध्याय के रूप मे किया गया आत्म-चिन्तन एक अनमोल चिन्तन है। किसी बाजीगर के जादू की तरह यह मन को अनेक स्थितियो मे उपस्थित कर देता है। इस चिन्तन मे कभी चारो ओर प्रकाश ही प्रकाश तो कभी सघन अन्धकार फैला रहता है। मन कभी परम पुलकित और कभी स्फूर्ति से भर उठता है तो कभी मोह और आलस्य के क्षणिक झटके भी लगते रहते हैं। मगर चल-चित्र की तरह ये क्षणिक होते हैं, स्थायी नही। स्वाध्याय से अज्ञान गुहा मे अन्तर्निहित वस्तु भी ज्ञानालोक से प्रगट हो उठती हैं। कहा भी है—

'सज्झाय सज्झाण रयस्स ताइणो,
अपावभावस्स तवे रयस्स।
कि सुज्झइ जंसि मल पुरेकड,
समीरिय रूप्पमलं व जोइणो॥"

अर्थात् जिस प्रकार अग्नि मे तपाए चादी का मैल दूर हो जाता है, वैसे ही स्वाध्याय रूप सद्-ध्यान मे लीन शुद्ध अन्त करण व तपस्यारत साधक का पूर्व सचित कर्म-मल नष्ट हो जाता है और कर्म-मैल के दूर होते ही कस्तूरी मृग की सुरभि की तरह आत्म-सलीन ज्योतिर्धर हृदय-क्षितिज पर वाल रवि की तरह अनूठी लालिमा से भरा दिखाई देता है।

१० स्वाध्याय—दिव्य जीवन का मूल :

जीवन केवल जीनाभर नही, श्वासोच्छ्वास की प्रक्रिया चलाना भर नही किन्तु पारिजात प्रसून की तरह सुरभित होकर वातावरण को मधुर बनाना है। मानव, दृष्टि मे, जिस सृष्टि मे ज्येष्ठ और श्रेष्ठ समझा जाता है, उस दिव्यता का निखार यदि उसके द्वारा नही होता है, उसके सहवास का—सान्निध्य का फल वातावरण को उजागर नही बनाता तो मानना होगा कि वह पूर्ण मानव नही है। पूर्ण मानवता के लिए जीवन का दिव्य होना पहली शर्त है और जो अविकल स्वाध्याय के द्वारा ही सभव है।

जैसे अगूरी पेय, पान करने वालो को मधुर भी लगता और धीरे धीरे मन पर एक मीठा गुलाबी नशा भी छा जाता है, वैसे ही अन्तर्मन से शुद्ध भावपूर्ण किया जाने वाला स्वाध्याय भी मन को एक अपूर्व मस्ती से भर देता है। उसकी हृद-वीणा के तार अलौकिक भावो की झकार से अपने आपको स्वरलहरी के माधुर्य मे ओतप्रोत कर देते हैं। स्वाध्याय का राग जब एक बार रग पकड लेता है तो उससे छुटकारा पाना सभव नही होता। नशे की तरह स्वाध्याय भी मन को अपने से अलग नहीं होने देता, जिससे कि जीवन मे दिव्यता आती तथा मानवता निखर उठती है।

११. स्वाध्याय एक चिन्ताहरण बूटी .

जीवन यात्रा मे अक्सर ऐसी भी स्थिति आती है कि जब मन उदास और विपण्ण बन जाता है। कुछ भी करने का उत्साह मन मे नही होता। विषमताओ की उस घडी मे जबकि चारो तरफ अधेरा ही अधेरा दिखाई देता हो उद्विग्नता और आकुलता मन को कचोटती हो, सब ओर विघ्नो और विपदाओ का विषम जाल फैला हो, फूल के दर्शन नही, सर्वत्र शूल ही शूल बिछे हो, असमय बदली की तरह मन घुटन और क्षोभ का अनुभव करता हो, तो सब ओर से मन को हटा कर स्वाध्याय की बासुरी बजाने लग जाइए। टेर ऐसी हो कि आप अपनी याद को भी भूल जाय और स्वाध्याय की मस्ती मे तन्मय और बेसुध बन जाय। स्वाध्याय वाणी का स्वर आपके जीवन स्वर के सग मे समरस या एकमेक हो जाय। कहा क्या होता है, कुछ भी पता न चले। ऐसी स्थिति बनने पर चिन्ता का क्या अतापता रहेगा। जैसे तूफान मे सूखे पत्ते उड जाते हैं, वैसे स्वाध्याय की आधी आपके मनकी समस्त चिन्ताओ को आपसे दूर कर देगी।

कदाचित् आंधी के वेग सहने मे आप अपने को असमर्थ समझते हो तो स्वाध्याय को सजीवनी बूटी की तरह धीरे धीरे घिस कर पीजिए, और देखिये कि कैसे चिन्ताए आपको छोड कर दूर भाग खडी होती हैं। चिन्ताओ का आक्रमण तो तव होता है जब मस्तिष्क मे किसी सद् विचार का चिन्तन नही चलता हो। सुचिन्तन की घडी मे चिन्ता का क्या काम ?

१२. स्वाध्याय-एक अलौकिक साधना :

जप-तप की तरह स्वाध्याय भी एक अलौकिक साधना है। कहा भी है—

'न वि अत्थि नविय होई,
सज्झाएण सम तवो कम्म ।

अर्थात् स्वाध्याय के समान न तो कोई तप है और न हो सकता है। क्योकि 'बहुभवे सचिय खलु, सज्झाएण खणे खववेई" याने स्वाध्याय के द्वारा अनेक भवो के सचित कर्म को मनुष्य क्षण मे नष्ट कर देता है।

ऐसी अलौकिक साधना के लिये साधक को मन को निश्छल और निश्चल बनाये रखना परमावश्यक है। अगर स्वाध्याय के काल मे उद्विग्नता और चचलता से मनस्थिति शुद्ध नही हो तो दिन क्या मास और वर्षों तक स्वाध्याय करने का भी कुछ परिणाम हाथ मे आने वाला नही है। जो स्वाध्याय को भार समझ कर कार्य लेते है उनके लिए स्वाध्याय भार ही है। और उनकी स्थिति किसी भारवाही पशु से अच्छी नही।

जबतक चित्त मे एकाग्रता, निस्पृहता अनुद्विग्नता और शाति नही आयेगी, तवतक स्वाध्याय के नाम पर लगाया गया काल और श्रम सफल नही हो सकता। जैसे सर्वथा शान्त जल मे आत्म-प्रतिबिम्ब दिखाई देने लगता है, वैसे ही शान्त हृदय मे स्वाध्याय की देवमूर्ति दृष्टिगोचर होती है। स्वाध्याय की गहरी अभिरुचि एव श्रद्धा के विना शुभ फल प्राप्ति सर्वथा दु शक्य है।

प्राचीन काल मे गाव के बाहर किसी निर्जन प्राकृतिक स्थान मे गुरुकुल बसा कर गुरुमुख या ग्रन्थगत वाणी का जो स्वाध्याय चलता था—

'आत्मा वा अरे द्रष्टव्य , मन्तव्य ,
श्रोतव्य निदिध्यासितव्य."

का जो चिन्तन मनन चलता था, वह तन मन और वातावरण की विशुद्धता से मन पर गहरी छाप डालने वाला होता था। जिसके लिए "वसे गुरुकुले णिच्च" की छाप सब के मन पर अकित थी।

यो भी स्वाध्याय-साधना सर्वथा निष्फल नही जाती और रस्सी की रगड से जैसे कूप के पत्थर घिस जाते है, वैसे सतत अभ्यास से कुछ लाभ तो मिलता ही है। किन्तु स्थान और मन की शुद्धता की अधिक अपेक्षा रहती है, क्योकि" "तपे हि स्वाध्याय." स्वाध्याय स्वय एक तप है और तपाचरण के वास्ते स्थान की तथा साधन की निर्मलता अत्यावश्यक है।

१३ स्वाध्याय-विवेक एव बुद्धि सापेक्ष्य :-

यो तो जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नही है जहां बुद्धि और विवेक के विना काम चलता हो। मगर स्वाध्याय के क्षेत्र मे विना इसके कभी काम चलने वाला नही है। कुम्हार को जैसे अन्य सब साधन के होते हुए भी मिट्टी का पिण्ड नही हो तो वह कुछ भी बनाने मे समर्थ नहीं है, वैसे स्वाध्यायी को सद्ग्रन्थ, सुअवसर और सुसस्कृत शान्त स्थान के होते हुए भी बुद्धि के विना सब व्यर्थ है। बुद्धि और विवेक के अभाव मे स्वाध्याय का फल क्या निकलेगा ? कहा भी है

"यस्य नास्ति स्वय प्रज्ञा, शास्त्र तस्य करोति किम्
लोचनाभ्या विहीनस्य दर्पणं किं प्रयोजनम्"

बुद्धि के अभाव मे शास्त्र से क्या लाभ ? दोनो आखो से हीन को दर्पण से क्या प्रयोजन ?

अतएव स्वाध्याय बुद्धि और विवेक की सत्ता मे ही श्रेयस्कर होता है। जो बुद्धि और विवेकरहित होता है, उसका तोतारटन्त किस काम का ? ऐसे स्वाध्याय को विडम्बना और छलावा कहे तो कुछ हानि नही। विवेक व बुद्धि-विहीन स्वाध्याय चलनी मे पानी निकालने जैसा निरर्थक है। कहा भी है—

ज अन्नाणी कम्म खवेइ, बहु याहिवास कोडीहिं।
त नाणी तिहि गुत्तो, खवेई उसास मित्तेण ॥

अर्थात् जिन कलुषो को ज्ञानहीन साधक करोडो वर्षो की कठोर साधना के द्वारा नष्ट करता है, उसको ज्ञानी (बुद्धिमान्) अपने ज्ञान बल से क्षण भर मे नष्ट कर देता है। कहां तो साधना का करोडो वर्ष का काल और कहा एक क्षण भर। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि स्वाध्याय सर्वथा बुद्धि और विवेक सापेक्ष्य है। इनके सग ही स्वाध्याय शीघ्र फलदायी होता है। नही तो नही।

१४. स्वाध्याय—एक अनिवार्य कर्म :

जीवन-यात्रा मे भोजन और पानी की तरह स्वाध्याय भी एक अनिवार्य कर्म माना जाता है। क्योकि सदग्रन्थ के स्वाध्याय के बिना आखो के होते हुए भी हमारी गणना अधो मे होती है ? जैसे कहा है कि—

"अनेक सशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम्।
सर्वस्य लोचन शास्त्र, यस्य नास्त्यन्ध एव स।

अर्थात् अनेक सशयों भ्रान्तियो की जड काटने वाला, और छिपे अर्थ को दिखानेवाला शास्त्ररूप नयन जिसको नही है, वास्तव मे वही अन्धा है। और सद्ग्रन्थ का बोध स्वाध्याय से ही सभव है।

स्वाध्याय की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए और भी कहा है—"सज्झायरए, स भिक्खू।" अर्थात् जो स्वाध्याय मे अनुरक्त है वही भिक्षु है। फिर पच महाव्रत-धारी साधु की तो बात ही क्या ? यो भी साधु-सज्जन है।

स्वाध्याय श्वासोच्छ्वास की तरह एक अविस्मरणीय महानता और मानवता की थाती है। इसमे ऐसी अलौकिक शक्ति भरी हुई है कि जिसका कोई वर्णन नही "सज्झाएवा 'सव्वदुक्ख विमोक्खणे"। याने स्वाध्याय सब दु खो से मुक्त करने वाला है।

पूर्वकाल मे गुरुकुल से ज्ञानार्जन के बाद जाने वाले स्नातको को विदा के अवसर पर गुरुजनो के द्वारा जो विदाई सन्देश दिए जाते थे उनमे एक यह स्मरणीय सन्देश भी होता था कि—"स्वाधायान्माप्रमद" अर्थात् घर जाकर भी तुम्हें स्वाध्याय से प्रमाद नही करना है। सोचने की बात है कि सर्व शिक्षा विशारद और सस्कार-सस्कृत जन को भी यह स्मरण दिलाया जाता था कि पाण्डित्य के दर्प मे सच्छास्त्र पठन-पाठन मे अपने को कभी भी प्रमाद मे नहीं डालना।

१५ स्वाध्याय—एक स्वावलम्बन :

स्वाध्याय से विद्वत्ता बढती और विद्वान् सर्वत्र पूजा जाता है। कहा भी है—स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान्, सर्वत्र पूज्यते ॥

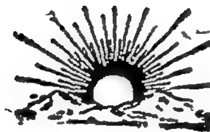
जीवन के लिये रोटी और सत्-शास्त्र दोनो की आवश्यकता होती हैं! बल्कि कहना यह ठीक है कि रोटी से भी बढ कर शास्त्र की आवश्यकता है। क्योकि रोटी जीवन देती है और शास्त्र रोटी के साथ-साथ जीवन जीने की कला।

जीवन मे काम देने वाली व्यावहारिक पुस्तको का अध्ययन भी स्वाध्याय मे वर्जित नही है। मगर गदी पुस्तकें जो कि विष-तुल्य हैं, उनका अध्ययन कभी नहीं करना चाहिये। सदा व्यवहारोपयोग्य अच्छी पुस्तको का ही उपयोग करना चाहिए। अच्छी पुस्तक की जानकारी के लिये यह पर्याप्त है कि अच्छी पुस्तक वही है जो बडी आशा से स्वाध्याय के लिये खोली जाय और यथेष्ट लाभ के बाद बन्द की जाय। प्राय

अधिक विचारने को वाध्य करने वाली पुस्तक ही अधिक लाभकारी होती है। लैला-मजनू और तोता मैना की कहानियो के लिये न तो मस्तिष्क को कुछ आयाम करना पडता है और न उनसे कुछ लाभ।

इस तरह जीवन मे स्वाध्याय की आदत डालने से दोनो क्षेत्रो मे लाभ मिलता है। स्वाध्यायी कहाना कुछ और है और स्वाध्यायी वनना कुछ और। जो शुद्ध हृदय से स्वाध्यायी वनता है तथा शास्त्रो को हृदय से पढता है तो उस काल मे उसको उस शास्त्र के रचयिता साक्षात् वातें करते प्रतीत होते हैं। यह सच्ची स्वाध्याय की भूमिका है।





स्वाध्याय : एक अनुचिंतन

● श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री

स्वाध्याय—दीपक है :

भारतीय सस्कृति मे स्वाध्याय का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। आगम, त्रिपिटक और वेद सभी ने एक स्वर से स्वाध्याय की यशोगाथा गाई है। स्वाध्याय अधकारपूर्ण जीवन-पथ को आलोकित करने के लिए जगमगाते दीपक के समान है, जिसके दिव्य आलोक मे हेय, ज्ञेय और उपादेय का परिज्ञान होता है।

स्वाध्याय सजीवनी बूटी :

शिष्य ने जिज्ञासा प्रस्तुत की, भगवन्! स्वाध्याय से किस गुण की उपलब्धि होती है? भगवान् ने समाधान दिया कि स्वाध्याय से ज्ञानावरणीय कर्म नष्ट होता है।[1] स्वाध्याय से आत्मा मे निर्मल ज्ञान की ज्योति जगमगाती है। ज्ञान का दिव्य व भव्य प्रकाश जीवन को आलोकित कर देता है। जीवन मे जो कुछ भी दु ख-दैन्य के काले कजरारे बादल उमड-घुमड कर मंडराते हैं, उसका मूल अज्ञान है। साधना का लक्ष्य उस अज्ञान को नष्ट करता है। अज्ञान रूपी रोग को नष्ट करने के लिए स्वाध्याय सजीवनी बूटी है। स्वाध्याय अन्त प्रेक्षण है। बिना स्वाध्याय के ज्ञान–दीप प्रज्वलित नही हो सकता।

स्वाध्याय—नन्दनवन :

स्वाध्याय को शास्त्रकारो ने साधारण उपवन की नही, किन्तु नन्दनवन की उपमा दी है। नन्दनवन मे चारो ओर एक-से-एक रमणीय, मन को अह्लादित करने वाले दृश्य हैं, जहाँ पर पहुँचकर मानव सभी प्रकार की आधि-व्याधि और उपाधि को विस्मृत कर देता है और आनन्द के झूले मे झूलने लगता है। वैसे ही स्वाध्याय रूपी नन्दनवन मे पहुँचकर मानव अलौकिक आनन्द का अनुभव करता है। स्वाध्याय करते समय कभी जीवन मे आमूल-चूल परिवर्तन करने वाली शिक्षाएँ मिलती हैं तो कभी स्वर्ग और नरक के दृश्यो का वर्णन प्राप्त होता है तो कभी महापुरुषो के जीवन की दिव्य व भव्य झाकियाँ पढने को मिलती हैं। जब कभी भी आपका मन हताश व निराश हो, जीवन भाररूप प्रतीत होता हो, तब आप स्वाध्याय कीजिए, आपके जीवन मे नवीन आशा व उल्लास का संचार हो जायेगा, नवीन स्फूर्ति अगडाइया लेने लगेंगी।

स्वाध्याय—और योग

योगदर्शन के भाष्यकार महर्षि व्यास ने कहा। "स्वाध्याय से योग की प्राप्ति होती है और योग से

---

१ सज्झाएण भते! जीवे किं जणयइ?
सज्झाएण नाणावरणिज्ज कम्म खवेइ— उत्तरा० २९/१८

स्वाध्याय की साधना होती है। जो साधक स्वाध्याय-मूलक योग की सम्यक् साधना करता है, उसके समक्ष परमात्मा प्रकट हो जाता है अर्थात् वह स्वय परमात्मा बन जाता है।[2]

स्वाध्याय वाणी का तप है, जिससे हृदय का मैल नष्ट होकर वह निर्मल होता है। अन्तस् के ज्ञानदीप को प्रज्वलित करने के लिए स्वाध्याय आवश्यक ही नही, अनिवार्य है। योगशिखोपनिषद्कार ने कहा है—जैसे लकडी मे रही हुई अग्नि बिना मथन के प्रकट नही होती, उसी प्रकार ज्ञान-दीपक जो हमारे भीतर ही विद्यमान है, स्वाध्याय के विना प्रदीप्त नही हो सकता।[3]

स्वाध्याय—और ध्यान

स्वाध्याय और ध्यान का भी परस्पर घनिष्ठ सम्वन्ध है स्वाध्याय में अपने आपका चिन्तन प्रमुख होता है तो ध्यान मे भी ध्याता ध्येय को प्राप्त करने का प्रयास करता है। ध्यान से ध्याता ध्येय वन जाता है। जव ध्याता किसी अन्य वस्तु का अवलम्वन न लेकर स्वय अपने को ही अपना विषय वनाता है तो वह उत्कृष्ट ध्यान कहलाता है। आचार्य पतजलि ने इसे निर्वीज समाधि कहा है। इस दृष्टि से ध्यान और स्वाध्याय मे कोई अन्तर नही है। ध्यान से चित्त एकाग्र होता है तो स्वाध्याय से भी।

वौद्ध वाड्मय मे स्वाध्याय के सम्वन्ध मे विस्तार से विवेचन करते हुए लिखा है—जो प्रतिदिन स्वाध्याय करता है उसके ज्ञान की अभिवृद्धि होती है। उसका ज्ञान शतशाखी की तरह निरन्तर बढता रहता है।

स्वाध्याय : चिन्तामणि :

स्वाध्याय रूपी चिन्तामणि रत्न जिसे मिल जाता है, उसके सामने कुवेर का रत्न-कोष भी कुछ मूल्य नही रखता है। उत्तराध्ययन सूत्र मे 'स्वाध्याय को सर्वदु ख विमोचक कहा है।[4] स्वाध्याय सब भावो का प्रकाश करने वाला है।'[5] यही कारण है कि जैन सस्कृति मे प्रत्येक श्रमण और श्रमणी के दैनिक जीवन मे स्वाध्याय को आवश्यक स्थान दिया गया है। दिन और रात्रि के आठ प्रहर होते हैं प्रथम और चतुर्थ प्रहर मे स्वाध्याय का विधान किया गया है।[6] इस प्रकार आठ प्रहर मे चार प्रहर का समय स्वाध्याय मे व्यतीत करना चाहिये। जो साधक उस विधान को भग करता है तो उस भूल का वह प्रात व सध्या के समय प्रतिक्रमण करता है कि प्रमादवश दिन और रात्रि के प्रथम व अन्तिम प्रहर-रूप चार काल मे स्वाध्याय न ही किया हो तो प्रतिक्रमण करता हूँ।[8] प्रथम प्रहर मे सूत्र का स्वाध्याय किया जाता है, और द्वितीय प्रहर मे सूत्र के अर्थों पर चिन्तन-मनन किया जाता है, इसलिए प्रथम प्रहर को सूत्र-पोरसी और द्वितीय प्रहर को अर्थ पोरसी भी कहा जाता है।[9]

---

२. स्वाध्यायाद् योगमासीत, योगात्स्वाध्याथ मामनेत्। स्वाध्याय-योगसपत्त्या, परमात्सा प्रकाशते ॥
—योगदर्शन ९/२८ व्यासभाष्य।

३ यथाग्निर्दारुमध्यस्थो, नोत्तिष्ठेन्मथन विना। विना चाभ्यासयोगेन, ज्ञानदीपस्तथा न हि ॥—योगशिखोपनिषद्

४ सज्झाएवा निउत्तेण, सव्वदुक्ख विमोक्खणे—उत्त० २६/१०

५. सज्झाय च तओ कुज्जा, सव्व भाव विभावण।—उत्त० २६/३७

६. उत्तराध्ययन

७. दिआ पढमचरिमासु, र्त्तिपि पढम चरिमासु च पोरसीसु सज्झाओ अवस्स का तव्वो।
—आवश्यक चूर्णि, जिनदास महत्तर

८. पडिक्कमामि, चाउक्कालं सज्झायस्स अकरणयाए।—आवश्यक सूत्र

९. उस्सग्गेण पढमा, हृग्घडिया सुत्त पोरिसी भणिआ। विइआय अत्थ विसया, निदिट्ठा दिट्ठसमएहिं ॥

स्वाध्याय—और समाधि :

श्रमण भगवान् महावीर ने चार प्रकार की समाधियो का उल्लेख किया है—विनय-समाधि, श्रुत-समाधि, तप समाधि और आचार समाधि[10] इन चार समाधियो मे श्रुत समाधि का स्थान द्वितीय है। विनय समाधि की नीव पर ही श्रुत समाधि का भव्य प्रासाद खडा होता है। श्रुत समाधि होने पर ही तप और आचार समाधि हो सकती है। विना स्वाध्याय के श्रुत समाधि कदापि नही हो सकती।

शिष्य ने जिज्ञासा प्रस्तुत की—भगवन्! आपने कहा कि शास्त्र-स्वाध्याय से समाधि उपलब्ध होती है, तो कृपया वताइए कि समाधि मिलने के क्या हेतु हैं।

भगवान् ने समाधान करते हुए कहा—स्वाध्याय से श्रुतज्ञान का लाभ होता है, मन की चचलता नष्ट होती है, आत्मा आत्म-भाव मे स्थिर होता है।

स्थानाक मे प्रकारान्तर से प्रस्तुत वात को इस प्रकार कहा है—

(१) स्वाध्याय से श्रुत का सग्रह होगा।
(२) शिष्य श्रुत-ज्ञान से उपकृत होगा, वह प्रेम से श्रुत की सेवा करेगा।
(३) स्वाध्याय से ज्ञान के प्रतिवन्धक कर्म निर्जरित होते हैं।
(४) अभ्यस्त श्रुत विशेष रूप से स्थिर होता है।
(५) निरन्तर स्वाध्याय किया जाय तो सूत्र विच्छिन्न भी नही होते।

आगम साहित्य के अध्ययन, चिन्तन, मनन करने से अनेकानेक सद्गुणो का विकास होता है। ज्ञान की वृद्धि, सम्यग्दर्शन की शुद्धि, चरित्र की सवृद्धि होती है और मिथ्यात्व नष्ट होकर सत्य तथ्य को प्राप्त करने की तीव्र जिज्ञासा वृत्ति जागृत होती है।[12]

आचार्य अकलक ने तत्त्वार्थ राजवार्तिक[13] मे प्रस्तुत तथ्य को इन शब्दो मे प्रस्तुत किया है—

(१) स्वाध्याय से वुद्धि की निर्मलता होती है।
(२) प्रशस्त अध्यवसाय की प्राप्ति होती है।
(३) शासन-रक्षा होती है।
(४) सशय की निवृत्ति होती है।
(५) परवादियो की शकाओ के निरसन की शक्ति प्राप्त होती है।
(६) तप-त्याग की वृद्धि होती है।
(७) अतिचार की शुद्धि होती है।

स्वाध्याय—आत्मा की खुराक :

स्वाध्याय आत्मा की खुराक है जो प्रतिदिन आवश्यक है। वैदिक ऋषि ने तो स्वाध्याय का महत्त्व प्रतिपादन करते हुए यहाँ तक कहा है कि यथायोग्य सदाचार पालन, स्वाध्याय एव प्रवचन कर्म किये जाने योग्य हैं। सत्य स्वाध्याय एव प्रवचन कर्म पालन करने योग्य हैं, इन्द्रिय दमन, स्वाध्याय एव प्रवचन कर्म किये जाने योग्य है, वाह्येन्द्रिय दमन, स्वाध्याय एव प्रवचन किये जाने योग्य हैं। चित्त की शान्ति, मन का निग्रह, स्वाध्याय और प्रवचन किये जाने योग्य हैं। लौकिक व्यवहार, स्वाध्याय एव प्रवचन किये जाने योग्य हैं। इस प्रकार प्रत्येक कार्य के साथ स्वाध्याय और प्रवचन शब्द को जोडकर इस ओर

---

१० चत्तारि विणय समाहि ठाणा पण्णत्ता-तजहा- विणय समाही, सुय समाही तव समाही, आयार-समाहि
—दशवैकालिक ९/४

११ स्थानाङ्ग ५

१२ वही ५

१३ तत्त्वार्थराजवार्तिक

सकेत किया गया है कि जीवन मे इसका कितना गहरा महत्त्व है।[14]

ज्ञानरूपी दीप को निरन्तर प्रज्वलित रखने के लिए स्वाध्याय रूपी स्नेह की नितान्त आवश्यकता है।

स्वाध्यायान्माप्रमदः

प्राचीन युग मे बारह वर्ष तक शिष्य गुरुकुल मे रहकर, अध्ययन पूर्ण कर पुन घर लौटता तब आचार्य आशीर्वाद के रूप मे तीन शिक्षाएँ देता—

(१) सत्य वद,

(२) धर्म चर,

(३) स्वाध्यायान्माप्रमद ।

आचार्य प्रथम सत्य बोलने के लिए और धर्म के आचरण के लिये कहता और फिर स्वाध्याय के लिए। सत्य व धर्म के मर्म को समझने के लिए स्वाध्याय बहुत ही आवश्यक है इसलिए आचार्य ने उस पर बल देते हुए कहा—वत्स! स्वाध्याय में प्रमाद न करना। जो कुछ भी यहाँ रहकर तुमने ज्ञान प्राप्त किया है उसे कभी क्षीण न होने देना। स्वाध्याय से अभिनव ज्ञान की तो वृद्धि होगी और पूर्व पढे हुए ज्ञान मे ताजगी आयेगी। कितनी सुन्दर प्रेरणा है!

स्वाध्याय परम तप :

भगवान महावीर ने द्वादश प्रकार के तप मे स्वाध्याय को आभ्यतर तप मे स्थान दिया है। एक जैनाचार्य ने तो स्वाध्याय को परम तप कहा है। अनशन आदि भी स्वाध्याय के लिए हैं।

स्वाध्याय की परिभाषा :—

अब हमे चिन्तन करना है स्वाध्याय क्या है? आचार्यों ने स्वाध्याय शब्द के अनेक अर्थ किये हैं—

अध्ययन अध्याय शोभनो अध्याय स्वाध्याय[15] सु-अध्याय अर्थात् श्रेष्ठ अध्ययन का नाम स्वाध्याय है। तात्पर्य यह है कि आत्मकल्याणकारी पठन-पाठन रूप श्रेष्ठ अध्ययन का नाम ही स्वाध्याय है।

आचार्य अभयदेव ने सुष्ठु—भली भांति, आ-मर्यादा के साथ अध्ययन करने को स्वाध्याय कहा है।[16]

वैदिक विद्वान ने स्वाध्याय का अर्थ किया है कि (स्वयमध्ययनम्) किसी अन्य की सहायता के बिना स्वय ही अध्ययन करना, अध्ययन किये हुए का मनन और निदिध्यासन करना। दूसरा अर्थ किया कि (स्वस्यात्मनोऽध्ययनम्) अपने आपका अध्ययन करना, साथ ही यह चिन्तन करना कि स्वयं का जीवन उन्नत हो रहा है या नही।

स्वाध्याय के प्रकार :

भगवान महावीर ने स्वाध्याय के पाँच प्रकार बताए हैं—वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा और धर्मकथा।

वाचना :—सद्गुरुवर्य के मुँह से सूत्र पाठ लेना और जैसा उसका उच्चारण करना चाहिए उसी प्रकार उच्चारण करना वाचना है। वाचना से सूत्र के शब्दो पर पूर्ण ध्यान दिया जाता है। हीनाक्षर, अत्यक्षर, पदहीन, घोषहीन आदि दोषो से पूर्ण रूप से बचने का प्रयास होता है।

---

१४ श्रुत च स्वाध्यायप्रवचने च। सत्य च स्वाध्यायप्रवचने च। तपश्च स्वाध्यायप्रवचने च। दमश्च स्वाध्यायप्रवचने च। शमश्च स्वाध्यायप्रवचने च। अतिथयश्च स्वाध्यायप्रवचने च। मानुष च स्वाध्याय च। तैत्तिरीयोपनिषद्

१५ आवश्यक सूत्र ४, अ।

१६ सुष्ठु आ मर्यादया अधीयते इति स्वाध्याय । स्थानाङ्ग २ स्थान २३०

पृच्छना :—स्वाध्याय का यह दूसरा भेद है। सूत्र पर पूर्व ही तर्क-वितर्क, चिन्तन-मनन करना चाहिए, और जहाँ पर शका उद्बुद्ध हो उसका गुरुदेव से पूछकर समाधान करना चाहिए।

परिवर्तना :—यह स्वाध्याय का तृतीय भेद है। एक ही सूत्र को पुन पुन गिनना परिवर्तना है। इससे पढा हुआ ज्ञान विस्मृत नही होता है।

अनुप्रेक्षा :—सूत्र-वाचना जो ग्रहण की, उस पर तात्त्विक दृष्टि से गभीर चिंतन करना। अनुप्रेक्षा से ज्ञान मे चमक-दमक पैदा होती है। यह स्वाध्याय का महत्त्वपूर्ण भेद है।

धर्मकथा :—सूत्र-वाचना, पृच्छना, परिवर्तना और अनुप्रेक्षा से जब तत्त्व का रहस्य ज्ञात हो जाये तब उस पर प्रवचन करना धर्मकथा है। चिन्तन-मनन के पश्चात् ही विचारामृत को जन-जन के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए। धर्मकथा की यह प्रक्रिया मधु-मक्खी की प्रक्रिया है। मधु-मक्खी विविध रगो के सुवासित फूलो का रस लेती है और अपनी प्रक्रिया से इस प्रकार का सतुलन और सामजस्य स्थापित करती है कि उन रसो से जो मधु बनता है वह विविध प्रकार का नही होता, उसका रग भी एक होता है, जो सात्विक और मधुर होता है। स्वाध्यायी को धर्मकथा भी मधु-मक्खी की ही एक प्रक्रिया।

भगवान महावीर ने स्वाध्याय का जो यह क्रम प्रस्तुत किया वह बहुत ही सुन्दर वैज्ञानिक क्रम है। इस क्रम मे शब्द और अर्थ दोनो की पूर्ण रूप से रक्षा की जाती है।

स्वाध्याय के नियम—

स्वाध्याय के सम्बन्ध मे आधुनिक चिन्तको ने कुछ नियम प्रस्तुत किये हैं, उन नियमो की ओर लक्ष्य किया जाय तो स्वाध्याय मे विशेष आनन्द प्राप्त हो सकता है। वे नियम इस प्रकार हैं—

(१) **एकाग्रता**—स्वाध्याय मे एकाग्रता होना अतीव आवश्यक है। जबतक मानसिक चचलता रहेगी, तबतक स्वाध्याय का आनन्द नही आ सकता।

(२) **नैरन्तर्य**—स्वाध्याय मे विक्षेप नहीं होना चाहिये। प्रतिदिन नियमानुसार स्वाध्याय करना चाहिये।

(३) **विषयोपरति**—स्वाध्याय के ग्रन्थो का चयन करते समय सदा यह लक्ष्य रखना चाहिए कि हम विषय-वासना से ऊपर उठें। राग, द्वेष, क्रोध, मान माया, लोभ, आदि दुर्गुणो से बचें और इसके लिए ऐसे ही ग्रन्थो का अध्ययन करना चाहिए।

(४) **प्रकाश की उत्कंठा**—स्वाध्याय करते समय साधक को यह दृढ आत्म-विश्वास होना चाहिए कि मेरी अन्तरात्मा मे अपूर्व प्रकाश फैल रहा है। मेरा सकल्प दृढ हो रहा है।

(५) **स्वाध्याय का स्थान**—स्वाध्याय के लिए स्थान की अनुकूलता भी आवश्यक है। स्थान, कोलाहल रहित व गदा न हो।

स्वाध्याय और ग्रन्थ—स्वाध्याय किन ग्रन्थो का करना चाहिए, यह एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। आजकल स्वाध्याय के नाम पर आधुनिक काम-प्रधान गदे उपन्यास, कहानियाँ व नाटको को पढने की परम्परा निरन्तर बढ रही है और इस प्रकार के साहित्य का अत्यधिक प्रचार हो रहा है जो सांस्कृतिक व नैतिक दृष्टि से अत्यधिक घातक है। इस प्रकार घासलेटी साहित्य को पढना स्वाध्याय नही है। यह स्वाध्याय के नाम पर आत्म-वचना करना है। इस प्रकार नही पढना, पढने से अधिक श्रेयस्कर है। स्वाध्याय के लिए वे ही ग्रन्थ उपयोगी हैं जिनके पठन-पाठन से अहिंसा, सयम व तप को भावना उद्बुद्ध होती हो।

आगम साहित्य अग, उपाङ्ग, मूल, छेद आदि के रूप मे विभक्त किया गया है और कालिक व उत्कालिक रूप मे भी। कालिक श्रुत वह है जो

प्रथम व अन्तिम प्रहर मे पढे जाते हैं, बीच के प्रहरों मे नही। उत्कालिक वे हैं जो चारो ही प्रहरो पढे जा सकते हैं। जिस आगम का जो काल नही है, उस काल मे उस शास्त्र का स्वाध्याय करना ज्ञानातिचार है और जो काल स्वाध्याय के लिए नियत किया है उस समय स्वाध्याय न करना भी अतिचार है। क्योकि स्वाध्याय का समय होते हुए भी प्रमादवश जो साधक स्वाध्याय नही करता है वह ज्ञान का अपमान करता है और ज्ञान का द्वार वन्द करता है।

अस्वाध्याय के प्रकार —

हम पूर्व वता चुके हैं कि स्वाध्याय करने वाले साधक को सदा विवेक रखना चाहिए। जो स्थान स्वाध्याय के अयोग्य हो वहाँ पर स्वाध्याय नही करना चाहिये। अस्वाध्याय के कारण विद्यमान होने पर भी जो स्वाध्याय करता है तो उसे ज्ञानातिचार लगता है और जो स्वाध्याय का अनुकूल स्थान होने पर भी स्वाध्याय नही करता, उसे भी ज्ञानातिचार लगता है।

अस्वाध्याय के मूल दो भेद किये हैं आत्म-समुत्थ और पर-समुत्थ। अपने व्रण से होने वाले रुधिरादि आत्म-समुत्थ कहलाते हैं और दूसरो से होने वाले पर-समुत्थ कहलाते हैं। आवश्यक निर्युक्ति, चूर्णि व आवश्यक हरिभद्रीया वृत्ति मे वहुत ही विस्तार से चर्चा है। 'स्थानाङ्ग' मे वत्तीस अस्वाध्यायो का वर्णन है। वह इस प्रकार है—दश आकाश सम्वन्धी, दश औदारिक सम्वन्धी, चार महाप्रतिपदा, चार महाप्रतिपदाओ के पूर्व की पूर्णिमाएँ और चार सन्ध्याएँ।

दश आकाश सम्वन्धी अस्वाध्याय

(१) **उल्कापात**—आकाश से रेखा वाले तेज पुंज का गिरना, या पीछे से रेखा एव प्रकाश वाले तारे का टूटना, उल्कापात हैं। उल्कापात होने पर एक प्रहर तक सूत्र की अस्वाध्याय रहती है।

(२) **दिग्दाह**—किसी एक दिशा-विशेष मे मानो वहुत वडा नगर जल रहा हो, इस तरह ऊपर की ओर प्रकाश दृष्टि गोचर होना और नीचे अन्धकार प्रतीत होना, दिग्दाह है। दिग्दाह होने पर एक प्रहर तक अस्वाध्याय रहती है।

(३) **गर्जित**—वादल गरजने पर दो प्रहर तक शास्त्र की अस्वाध्याय रहती है।

(४) **विद्युत**—विजली चमकने पर एक प्रहर तक शास्त्र की अस्वाध्याय होती है।

आर्द्रा से स्वाति नक्षत्र तक अर्थात् वर्षा ऋतु मे गर्जित और विद्युत की अस्वाध्याय नही होती, चूँकि वर्षाकाल मे ये प्रकृतिसिद्ध—स्वाभाविक होते है।

(५) **निर्घात**—विना वादल वाले आकाश में व्यन्तर आदि से की गई गर्जना की प्रचण्ड ध्वनि को निर्घात कहते है। निर्घात होने पर एक अहोरात्रि तक अस्वाध्याय होती है।

(६) **यूपक**—शुक्ल पक्ष मे प्रतिपदा, द्वितीया और तृतीया को सन्ध्या की प्रभा का मिल जाना, यूपक कहलाता है। इन दिनो मे चन्द्र प्रभा से आवृत्त होने के कारण सन्ध्या का वीतना ज्ञात नही होता। एतदर्थ इन तीनों दिनो मे रात्रि के प्रथम प्रहर मे स्वाध्याय करने का निषेध है।

(७) **यक्षादीप्त**—कभी-कभी किसी दिशा में विजली के समान जो प्रकाश होता है वह व्यन्तर देव कृत अग्नि दीपन कहलाता है

(८) **धूमिका**—कार्तिक मास से लेकर माघ मास का समय मेघो का गर्भ मास कहा जाता है। इस समय जो धूम्र वर्ण की सूक्ष्म जल रूप धूवर पडती है, वह धूमिका कहलाती है। यह धूमिका कभी-कभी अन्य मासो मे भी गिरती है। धूमिका मे जल होता है, जो भिगो देता है अत वह जव तक गिरती रहती है तव तक स्वाध्याय नही करना चाहिए।

(९) महिका—शीतकाल मे जो सफेद वर्ण की सूक्ष्म जलरूप धूंवर गिरती है वह महिका कहलाती है। वह जब तक गिरती रहे तब तक अस्वाध्याय है।

(१०) रजउद्घात—पवन के कारण आकाश मे जो चारो ओर धूल छा जाती है वह रजउद्घात कहलाती है, जहाँ तक रजउद्घात रहे वहाँ तक स्वाध्याय नही करना चाहिए।

दश औदारिक सम्बन्धी अस्वाध्याय :

(११-१३) अस्थि, मास और रक्त—पचेन्द्रिय तिर्यच के अस्थि, माम, और रक्त यदि साठ हाथ के अन्दर हो तो सभव काल से तीन प्रहर तक स्वाध्याय करने का निषेध है। यदि साठ हाथ के अन्दर बिल्ली आदि चूहे आदि को मार दे तो एक दिन-रात का अस्वाध्याय रहता है।

इसी तरह मानव सम्बन्धी अस्थि, मांस और रक्त का अस्वाध्याय भी जनना चाहिये। अन्तर इतना ही है कि इनका अस्वाध्याय सौ हाथ तक एव एक दिन रात का होता है। महिलाओ के मासिक धर्म का अस्वाध्याय तीन दिन का और बालका एव बालिका के जन्म का क्रमश सात और आठ दिन का माना गया है।

(१४) अशुचि—टट्टी और पेशाब यदि स्वाध्याय-स्थान के सन्निकट हो और दिखलाई देते हो अथवा उसकी दुर्गन्ध आती हो तो वहाँ पर स्वाध्याय नही करना चाहिये।

(१५) श्मशान—श्मशान के चारो ओर सौ-सौ हाथ स्वाध्याय नही करना चाहिए।

(१६) चन्द्र-ग्रहण—चन्द्रग्रहण होने पर कम से कम आठ अधिक से अधिक बारह प्रहर तक स्वाध्याय नही करनी चाहिये यदि उदित हुआ चन्द्रमा ग्रसित हुआ हो तो चार प्रहर उस रात के एव चार प्रहर आगामी दिवस के इस तरह आठ प्रहर तक स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

यदि चन्द्रमा प्रात काल के समय ग्रहण-सहित अस्त हुआ हो तो चार प्रहर दिन के एव चार प्रहर रात्रि के और चार प्रहर दूसरे दिनके, इस प्रकार बारह प्रहर तक स्वाध्याय नही करनी चाहिए।

यदि ग्रहण पूर्ण हुआ है तो भी बारह तक स्वाध्याय नही करनी चाहिए। यदि ग्रहण अपूर्ण है तो आठ प्रहर तक अस्वाध्याय काल रहता है।

(१७) सूर्य ग्रहण—सूर्यग्रहण होने पर कम से कम बारह और उत्कृष्ट सोलह प्रहर तक स्वाध्याय नही करना चाहिए। यदि पूरा ग्रहण न हो तो बारह प्रहर और पूरा ग्रहण हो तो सोलह प्रहर तक अस्वाध्याय होता है।

सूर्य अस्त होने के समय यदि वह ग्रसित हो तो चार प्रहर रात के और बारह प्रहर आगामी अहोरात्र के, इस प्रकार सोलह प्रहर तक अस्वाध्याय होती है। यदि उदित होता सूर्य ग्रसित हो तो उस दिन-रात के आठ प्रहर और दूसरे दिन-रात के आठ प्रहर, इस प्रकार सोलह प्रहर तक स्वाध्याय नही करना चाहिए।

(१८) पतन—राजा के निधन होने पर जब तक दूसरा राजा सिंहासनारूढ न हो तब तक स्वाध्याय नही करना चाहिए, नये राजा के सिंहासनारूढ़ हो जाने पर भी एक दिन रात स्वाध्याय नही करना चाहिये।

राजा के रहने पर भी यदि राज्य मे उपद्रव हो, जन-जीवन अशान्त हो, वह जब तक शान्त न हो जाय तब तक स्वाध्याय नही करना चाहिए। शान्ति और सुव्यवस्था हो जाने पर भी एक अहोरात्र तक अस्वाध्याय काल माना गया है।

राज-मन्त्री, गाँव का प्रमुख शय्यातर एव उपाश्रय के सन्निकट सात घरो के अन्दर किसी की मृत्यु हो जाय तो एक अहोरात्र तक स्वाध्याय नही करना चाहिए।

(१९) राज व्युद्ग्रह—राजाओ मे परस्पर सग्राम हो जाय, जब तक शान्ति न हो और शान्ति होने पर भी एक अहोरात्र तक स्वाध्याय नही करना चाहिए।

(२०) औदारिक शरीर—उपाश्रय मे पचेन्द्रिय तिर्यंच का या मानव का निर्जीव शरीर पडा हो तो सौ हाथ तक स्वाध्याय नही करना चाहिए।

यहाँ यह स्मरण रखना चाहिए कि चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहण को औदारिक सम्बन्धी अस्वाध्याय मे इसलिए गिना है कि इनके विमान पृथ्वीकाय के बने हुए है।

चार महोत्सव और चार महाप्रतिपदा :

(२१-२८) आषाढ पूर्णिमा, आश्विन पूर्णिमा, कार्तिक पूर्णिमा और चैत्र पूर्णिमा इन चार दिन मे महान महोत्सव होते थे इन पूर्णिमाओ के पश्चात् की प्रतिपदाए महाप्रतिपदाएँ कहलाती थी। एतदर्थ इन चार महापूर्णिमाओ को और चारो महाप्रतिपदाओ को स्वाध्याय नही करना चाहिए।

(२९-३२) प्रात काल, मध्यान्ह, सायकाल और अर्ध-रात्रि इन चारो को सध्याकाल कहते हैं। इन सन्ध्याओ मे भी दो-दो घडी स्वाध्याय नही करना चाहिए।

अन्य ग्रन्थो मे अन्य कुछ बातें और भी दी हैं।

आगम: ज्ञान-विज्ञान का अक्षय कोष :

श्रमण भगवान महावीर विश्व की एक अनुपम ज्योति थे। जिनका जन्म उस समय के प्रसिद्ध राजकुल में हुआ, पर उनका मन वहाँ लगा नही और उस विराट वैभव को छोडकर वे अनगार बने, उग्र, तप, जप व सयम की साधना कर केवली बने। श्रमण, श्रमणी, श्रावक और श्राविका रूप तीर्थ की सस्थापना कर वे तीर्थ कर बने। उसके पश्चात् उन्होने जो प्रवचन किये वे आगम या सूत्र के नामसे आज विश्रुत हैं। आगम ज्ञान-विज्ञान का अक्षय कोष हैं। उसमे केवल अध्यात्म और वैराग्य के ही उपदेश नही हैं किन्तु नीति व्यवहार और जीवन के हर पहलू को छूने वाले सुविचार उसमे भरे पडे हैं। उन्हे वही प्राप्त कर सकता है जो उसमे गहरी डुबकी लगा सकता हैं।

स्वाध्याय के लिए ग्रन्थो का चयन करते समय विवेक दृष्टि आवश्यक है। कम पढा जाय, किन्तु अच्छा पढा जाय, सद्विचारो को जगाने वाला पढा जाय। किस क्रम से पढना चाहिए इस प्रश्न के उत्तर मे एक चिन्तक ने कहा है पहले वह पढो जो आवश्यक हो, फिर वह पढो जो उपयोगी हो, उसके पश्चात् वह पढो जिससे ज्ञान की अभिवृद्धि हो।

स्वाध्याय सत्संगति से बढकर—

सत्सगति से भी स्वाध्याय बढकर है। सत्सगति हर क्षण सभव नही है किन्तु सद्ग्रन्थो का पठन-पाठन हर समय सभव है। ग्रन्थ अभिन्न मित्र की भाति सदा साथ रह सकता है अतः पाश्चात्य विचारक टपर ने कहा 'बुक्स आर अवर बेस्ट फ्रेन्डस्' पुस्तकें हमारी सर्वश्रेष्ठ मित्र हैं। दूसरे विचारक ने कहा—पुस्तकें ज्ञानियो की जीवित समाधि हैं, जब हम उसे खोलने हैं तो वे महापुरुष उठकर हमसे बोलने लग जाते हैं और हमारा मार्ग दर्शन करने लगते हैं" प बाल-गगाधर तिलक ने तो यहां तक कहा है कि मैं नरक मे भी उन सत् शास्त्रो का स्वागत करूगा क्योकि उनमे अद्भुत शक्ति है वो जहा भी होंगे वहा अपने आप स्वर्ग बन जायेगा। अत जीवन मे सत् शास्त्र का स्वाध्याय आवश्यक ही नही परमावश्यक है। आचार्य सोमदेव ने 'नीति वाक्यामृत' मे शास्त्र को तृतीय नेत्र कहा है "शास्त्र तृतीय लोचन"। एक अन्य आचार्य ने तो शास्त्र को समस्त जगत की आख कहा है, जिसके अभाव मे मानव अधा है। स्वाध्याय रूपी तृतीय नेत्र जिस मानव के भीतर प्रकट होता है वह शिवशकर बन जाता है। ऋग्वेद मे तो ज्ञान को ही चतुर्मुख ब्रह्मा से उपमित किया है। ज्ञानी चारो दिशाओ मे सब कुछ देखता है, सब कुछ सुनता है।

गुरु-वन्दना

❁ श्री जतनराज मेहता

अनन्त की अनन्त शक्तियो के स्पर्श से
धरती की अनन्त चेतना मुखरित हो उठी है,
झंकृत हो उठी है।

धरती के कण-कण मे अनन्त की यह ध्वनि
अवनि और अम्बर को आत्म-चेतना के एक ही धागे
मे पिरोकर एकमेक कर देती है।

क्षितिज के उस पार कल्पना का सूरज अपने
अनन्त ज्ञानरूपी किरणो से इस जगत् पर अपना
उल्लास उतार रहा है जिससे मही के प्रबुद्ध-प्राणी
आत्म-चेतना की दिव्य शक्तियो से देदीप्यमान
हो रहे हैं—

उनमे से कुछेक आत्माएं उस अजर अमर
विश्वात्मा से तादात्म्य स्थापित कर स्वय को
अनन्त आनन्द मे लीन कर देती हैं—

हे भगवान्! मुझे उन आत्मलीन महात्माओ
के श्रीचरणो की चाह है—जिनकी कृपा से—
मैं तुझे प्राप्त कर सकूँ—अनन्त की अनन्त गहराइयो मे
अपने आपको लीन कर सकूँ।



स्वाध्याय का जीवन में महत्त्व

उपाध्याय श्री विद्यानन्द मुनि

मनुष्य जीवन पशु जीवन से श्रेष्ठ है क्योकि पशु और मनुष्य के विवेक मे अन्तर है । पशु का विवेक आहार, निद्रा, भय, मैथुन तक सीमित है किन्तु मनुष्य का विवेक इससे ऊपर उठ कर चिन्तन की असीमता को मापता है। उसकी जिज्ञासा से दर्शन-शास्त्रो का जन्म होता है। उसके ज्ञान से स्व-परकी भेदविद्या का प्रादुर्भाव होता है। वह इह और अपरत्र लोकों के विषय मे आत्मन्थन की छाया मे नवीन उपलब्धियो से मानव समाज के बुद्धि, चिन्तन और चेतना के धरातल का नवीन निर्माण करता है। मैं कौन हूं ? जन्म-मरण क्या है ? ससार से मेरा क्या सम्बन्ध है ? मुझे कहा जाना है ? अनन्तानुबन्धी कर्मशृ खला का अन्त कहां है ? इत्यादि दार्शनिक प्रश्नावली के ऊहापोह मनुष्य मे ही हो सकते हैं। चिन्तन की इस सहज धारा का उदय सभी मानवो मे होता है किन्तु कुछ लोग ही इस अनाहत ध्वनि को सुन पाते हैं। सुननेवालो में भी कुछ प्रतिशत व्यक्ति ही गम्भीरता से विचार कर पाते हैं और उन विचारको मे भी बहुत थोडे लोग होते हैं जो अपने चिन्तन की परिणति से चारित्र को कृतार्थ करते हैं। क्योकि "बुद्धे फलं ह्यात्महितप्रवृत्ति" आत्महित की ओर प्रवृत्त होना बुद्धिविमर्श का सर्वोत्तम फल है ।

यह आत्महित का ज्ञान चिन्तनशील मनीषियो ने ग्रन्थ-भण्डारो के रूप मे अपनी उत्तराधिकारिणी मानवपीढी को सौंपा है। एक व्यक्ति किसी एक विषय पर जितना लिख नही सकता, सोच भी नही सकता, अपना जीवन अर्पित कर के भी जितना दे नही सकता, उतना अपरिमित ज्ञान हमारे कृपालु पूर्वजो ने, पूर्ववर्ती विचारको ने हमारे लिए छोडा है। जैसे जल कणो से कुम्भ भर जाता है उसी प्रकार अनेक दार्शनिको, चिन्तनशीलो, विचारको एव विद्वानो के द्वारा प्रतिपादित अनुभूत तथ्यो की एक-एक शब्दराशि से, भावसम्पदा से, अर्थविशिष्टता से ग्रन्थ-रूप मे जन्म लेकर ज्ञान-विज्ञान की अपार विभूतियो ने हमारे आत्मदर्शन के मार्ग को प्रशस्त किया है। उन सारस्वत-महर्षियो के अपार ऋणानुबन्ध से हम उऋण नही हो सकते । जब किसी ग्रन्थ को पढते हैं, उसे अल्पकाल मे ही पढ लेते हैं किन्तु उस की एक-एक शब्दयोजना मे, पक्तिलेखन मे, विषयप्रतिपादन मे और ग्रन्थ परियोजन की प्रतिपादन विधि मे मूल लेखक को—विचारक को कितने दिन, मास, वर्ष लगे होंगे, कितने काल की अधीत विद्या का निचोड उसने उसमे निहित किया होगा इसे परखने का तुलादण्ड हमारे पास क्या है ? तथापि यदि हमने किसी की रचना के एक शब्द को, आधे सूत्र को और एकपक्ति-श्लोक को भी यथावत् समझने का प्रयास करने मे अपनी आत्मिक तन्मयता लगायी है तो निस्सन्देह वह लेखक स्वर्गस्थ होकर भी कृतकृत्य हो उठेगा। लेखक के श्रम को उस पर अनुशीलन करने वाले अनुवाचक ही सफल कर सकते हैं। जबतक शब्द प्रयुक्त होकर साहित्य मे नही उतरते और जबतक कोई कृति सहृदयो के हृदय को आकर्षित नही कर लेती तब तक शब्द का जन्म (निष्पन्नता) और कर्ता का कृतित्व

कुमार ही हैं। श्रेष्ठ कृतियो के अध्ययन से हमे विचारो मे नवीन शक्ति का उन्मेश होता हुआ प्रतीत होता है। नयी दिशा, नये विचार, नवीन शोध और वैदुष्य के अवसर निरन्तर स्वाध्याय करने वालो को प्राप्त होते हैं।

स्वाध्याय करते रहने से मनुष्य मेधावी होता है। ज्ञानकी उपासना का माध्यम स्वाध्याय ही है। स्वाध्यायशील व्यक्ति उन विशिष्ट रचनाओ के अनुशीलन से अपने व्यक्तित्व मे विशालता को समाविष्ट पाता है। वह रचनाओ के ही नही, अपितु उन-उन रचनाकारो के सम्पर्क मे भी आता है, जिनकी पुस्तकें पढता होता हैं। क्योकि व्यक्ति अपने चिन्तन के परिणामो को ही पुस्तक मे निबद्ध करता है। कौन-कौन है ? यह उसके द्वारा निर्मित साहित्य को पढकर सहज ही जाना जा सकता है। स्वाध्यायशील व्यक्ति की विचारशक्ति और चिन्तनधारा केन्द्रित हो जाती है। मन, जो निरन्तर भटकने का आदी है, स्वाध्याय मे लगा देने से स्थिर होने लगता है। और मन की स्थिरता आत्मोपलब्धि मे परम सहायक होती है। एतावता स्वाध्याय के सुदूर परिणाम आत्मा को उत्कर्ष प्रदान करते हैं।

पुस्तकालयो व्यक्तिगत संग्रहालयो, ग्रन्थभाण्डागारों को दीमक लग रही है। नवयुवको का जीवन स्वाध्यायपराङ्मुख हो चला है। जीवन रात-दिन यन्त्र के समान उपार्जन की चक्की मे पिस रहा है। स्वाध्याय की परिस्थितियां दुर्लभ हो गई हैं और बदलती परिस्थितियो के साथ मनुष्य स्वयं भी स्वाध्याय के प्रति विरक्त हो चला है। उनका कार्यालयो से बचा हुआ समय सिनेमा, रेडियों, ताश के पत्तो और अन्य सस्ते मनोरजनो मे चला जाता है। स्वाध्याय शब्द की गरिमा से अनजाने लोग विचारको की रत्नसम्पदासमान ग्रन्थमाला से कोई लाभ नहीं उठा पाते। स्वाध्यायशील न रहने से मन मे उदार सद्गुणो की पूंजी जमा नहीं होती। शरीर को भोजनरूपी खुराक (अन्नमय आहार) तो मिल जाता हैं किन्तु मस्तिष्क भूखा रहता है। मानव केवल शरीर नही है वह अपने मस्तिष्क की शक्ति से ही महान् है। अस्वाध्यायी इस महिमामय महत्त्व के अवसर से वचित ही रह जाता है। स्वाध्याय न करने के दुष्परिणाम से ही कुछ लोग जो आयु मे प्रौढ होते हे विचारो मे बालक देखे जाते हैं उनके विचार कच्ची उम्रवालो के समान अपक्व होते हैं और इस अपरिपक्वता की छाया उनके सभी जीवन-व्यवहारो मे दिखायी देती है। जो मनुष्य चलता रहता है वह भूखा नहीं रहता और जो पढता रहता है उसके पास पाप नही आते। स्वाध्याय के माध्यम से व्यक्ति परमात्मा और परलोक मे अनायास ही सम्पर्क स्थापित कर लेता है। स्वाध्याय आभ्यन्तर चक्षुओ के लिए अजनशलाका है। दिव्यदृष्टि का वरदान स्वाध्याय से ही प्राप्त किया जा सकता है।

जीवन मे उन्नति प्राप्त करने वाले नियमित स्वाध्यायी थे। एक बार एक महाशय को लोकमान्य तिलक की सेवामे बैठना पडा। वह प्रात काल से ही ग्रन्थो के विविध-सन्दर्भ-स्वाध्याय मे लगे थे और इसप्रकार दोपहर हो गया। उठकर उन्होंने स्नान किया और भोजन की थाली पर बैठ गये। आगन्तुक ने पूछा—क्या आप सध्या नही करते ? तिलक महाशय ने उत्तर दिया कि प्रात काल से अब तक मैं सध्या ही तो कर रहा था। वास्तव मे स्वाध्याय से उपार्जित ज्ञान को यदि जीवन मे नहीं उतारा गया तो निरुद्देश्य 'जलताडनक्रिया' से क्या लाभ ? आंखो की ज्योति को मन्द किया, समय खोया और जीवन मे पाया कुछ नही तो 'स्वाध्याय का परिणाम क्या निकाला ? स्वाध्याय 'स्व' के अध्ययन के लिए है। ससार की नश्वर आकुलता से ऊपर उठने के लिए है। स्वाध्याय की थाली मे परोसा हुआ अमृतमय समय जीवन को अमर बनाने मे सहायक है। स्वाध्याय से आत्मिक तेज जागृत होता है। पुण्य की ओर प्रवृत्ति होती है। मोहनीय कर्म का क्षय करने की ओर विचार दौड़ते

हैं। पूर्वजो ने जिस वास्तविक सम्पत्ति का उत्तराधिकार हमे सौंपा है उस 'वसीयतनामा' को पढना वैसे भी हमारा नैतिक कर्तव्य है।

'श्रुतस्कन्धे धीमान् रमयतु मनोमर्कटममुम्' यह मन वानर के समान चचल है इसे जो शास्त्र-स्वाध्याय मे एकतान कर देता है वही धन्य है। स्वाध्याय से हेय और उपादेय का ज्ञान होता है यदि वह न हो तो 'व्यर्थ. श्रम श्रुतौ' शास्त्राध्ययन से होने वाला श्रम व्यर्थ है। स्वाध्याय से ज्ञानचक्षुओ का उन्मीलन होता है और मनुष्य मृत्यु के दुर्ग को लाघने का सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है। यदि स्वाध्याय करने पर भी मन मे विचार-मूढता है, ज्ञान पर आवरण है तो कहना पडेगा कि उसने स्वाध्याय पर बैठ कर भी वास्तव मे स्वाध्याय नहीं किया। 'पाणौ कृतेन दीपेन किं कूपे पततां फलम्' दीपक हाथ मे लेकर चले और फिर भी कूए मे गिर पडे तो दीपग्रहण का श्रम व्यर्थ नही तो क्या है? शास्त्रो का स्वाध्याय अमोघ दीपक है यह सूर्यप्रभा से भी बढ कर है। जब सूर्य अस्त हो जाता है तब मनुष्य दीपक से देखता है और जब दीपक भी निर्वाण हो जाता है तब सर्वत्र अन्धकार छा जाता है किन्तु उस समय अधीतविद्या का स्वाध्याय ही आत्मभूमि मे आलोक आविर्भाव करता है। यह स्वाध्याय से उत्पन्न आलोक तिमिरग्रस्त नही होता। अखण्ड ज्योतिर्मय यह ज्ञान स्वाध्यायरसिको के समीप 'नन्ददीप' बनकर उपस्थित रहता है। स्वाध्याय की उपासना निरन्तर करते रहना जीवको नित्य नियमित रूप से माजने के समान है। एक अच्छे स्वाध्यायी का कहना है कि यदि मैं एक दिन नही पढता हूँ तो मुझे अपने आप मे एक विशेष प्रकार की रिक्तता का अनुभव होती है और यदि दो दिन स्वाध्याय नही करता हूँ तो पास-पडौस के लोग जान जाते है और एक सप्ताह न पढने पर सारा ससार जान लेता है। वास्तव मे यह अत्यन्त सत्य है क्योकि जिस प्रकार उदर को अन्न देना दैनिक आवश्यकता है उसी प्रकार मस्तिष्क को खुराक देना भी अनिवार्य है। शरीर और बुद्धि का समन्वय बना रहे इसके लिए दोनो प्रकार का आहार आवश्यक है।

'अज्झयणमेव झाणं' अध्ययन ही ध्यान है, ऐसा आचार्य कुन्दकुन्द का मत है। ससार मे जितने उच्च कोटि के लेखक, वक्ता और विचारक हुए हैं उनके सिरहाने पुस्तको से बने हैं। विश्व के ज्ञान-विज्ञान रूपी तूलभार को उन्होंने अश्रान्त भाव से आखो की तकली पर अटेरा है और उसके गुणमय गुच्छो से हृदयमन्दिर को कोषागार का रूप दिया है। लेखन की अस्खलित सामर्थ्य को प्राप्त करने वाले रात दिन श्रेष्ठ साहित्य के स्वाध्याय मे तन्मय रहते हैं। बडे २ अन्वेषक और दार्शनिक रात दिन भूख-प्यास को भूल कर स्वाध्याय मे लगे रहते हैं। स्वामी रामतीर्थ जब जापान गये तो व्याख्यानसभा मे उपस्थित होने पर उन्हें पराजित करने की भावना से मच-संयोजक ने बोर्ड पर शून्य (०) लिख दिया और भाषण के प्रथम क्षण स्वामी राम को पता चला कि उन्हें शून्य पर भाषण करना है। उन्होने जापानियो की दृष्टि मे शून्य प्रतीत होने वाले उस अकिंचन विषय पर इतना विद्वत्तापूर्ण भाषण दिया कि श्रोता उनके वैदुष्य पर धन्य-धन्य और वाह कह उठे। यह उनके विशाल भारतीय वाङ्मय के स्वाध्याय का ही फल था। काव्यमीमासाकार राजशेखर ने लिखा है कि जो बहुज्ञ होता है वही व्युत्पत्तिमान् होता है। जिसको स्वाध्याय का व्यसन है वही बहुज्ञ हो सकता है। गोस्वामी तुलसीदास ने रामभक्ति के विषय मे कहा है कि जैसे कामी पुरुष को नारी प्रिय लगती है और लोभी को पैसा प्रिय लगता है उसी प्रकार जिसे भक्ति प्रिय लगे वह भगवान को पा सकता है। ठीक यही बात स्वाध्याय के लिए लागू होती है। जो व्यक्ति अध्ययन के लिए अपने को अन्य सभी ओर से एकाग्र कर लेता है वही स्वाध्याय देवता के साक्षात्कार का लाभ उठाता है।

पढ़ने वालो ने घर पर लैम्प के अभाव मे सडको पर लगे 'वल्वो' की रोशनी मे ज्ञान की ज्योति को वढाया है। जयपुर के प्रसिद्ध विद्वान् प० हरिनारायण जी पुरोहित ने वाजार मे किसी पठनीय पुस्तक को विकते हुए देखा। उस समय उनके पास पैसे नही थे अत उन्होने अपना कुर्ता खोल कर उस विक्रेता के पास गिरवी रख दिया और पुस्तक घर ले गये। इसीलिए उनका 'विद्या-भूपण' नाम सार्थक था। भारत के इतिहास मे ऐसे अनेक स्वाध्यायपरायण व्यक्ति हो चुके हैं। विदेशो में अधिकाश व्यक्तियो के घरो मे 'पुस्तकालय' हैं। वे अपनी आय का एक निश्चित अश पुस्तक खरीदने मे व्यय करते हैं। धर्मग्रन्थो का दैनिक पारायण करने वाले स्वाध्यायी आज भी भारत मे वर्तमान हैं। वे धार्मिक स्वाध्याय किये विना अन्न, जल ग्रहण नही करते 'स्वाध्यायान् मा प्रमद' स्वाध्याय के विपय मे प्रमाद मत करो। स्वाध्यायशील अपने गन्तव्य मार्ग को स्वय ढूढ निकालते हैं। अज्ञान के गज पर स्वाध्याय का अकुश है। पवित्रता के पत्तन मे प्रवेश करने के लिए स्वाध्याय तोरण द्वार है। स्वाध्याय न करने वाले अपनी योग्यता की डींग हाकते हैं किन्तु स्वाध्यायशील उसे पवित्र गोपनीय निधि मान कर आत्मोत्थान के लिए उसका उपयोग करते हैं। उनकी मौन आकृति पर स्वाध्याय के अक्षय वरदान मुस्कारते रहते हैं और जब वे बोलते है तो साक्षात् वाग्देवी उनके मुखमच पर नर्तकी के समान अवतीर्ण होती है। स्वाध्याय के अक्षरो का प्रतिविम्व उनकी आखो पर लिखा रहता है और ज्ञान की निर्मलधारा से स्नात उनकी वाङमाधुरी मे सरस्वती के प्रवाह पवित्र होने के लिए नित्याभिलाषी होते हैं।

एक महान् तत्वद्रष्टा, सफल राजनेता और उत्तम सन्त स्वाध्याय-विद्यालय का स्नातक ही हो सकता है। स्वाध्याय एकान्त का सखा है। सभास्थानो मे सहायक है। विद्वद्गोष्ठियो मे उच्च आसन प्रदान कराने वाला है। जैसे पैसा-पैसा डालने पर भी कोपवृद्धि होती है, उसी प्रकार विन्दु विन्दु विचार सग्रह करने से पाण्डित्य की प्राप्ति होती है। शब्दो के अर्थ कोपो मे नही, साहित्य की प्रयोगशालाओ मे लिखे है। अनवरत स्वाध्याय करने वाला शब्दो के सर्वतोमुखी अर्थों का ज्ञान प्राप्त करता है। स्वाध्याय करने वाले की आखो मे समुद्रो की गहराई, पर्वत शिखरो की ऊचाई और आकाश की अनन्तता समायी होती है। वह जब चाहता है, विना तैरे, विना आरोहण-अवगाहन किये उनकी सीमाओ को वता सकता है। स्वाध्याय को तप साधना के रूप मे सेवन करने वाला उससे अभीप्ट लाभो को प्राप्त करता है।



स्वाध्याय :
स्वरूप और साधना

श्री कन्हैयालाल लोढ़ा
एम ए.

स्वाध्याय शब्द स्व और अध्याय इन दो पदो के मेल से बना है। स्व का अर्थ है अपना और अध्याय का अर्थ है सही अध्ययन करना, सही जानना अर्थात् स्वय को जानने की क्रिया स्वाध्याय है।

स्व वह है जो कभी अलग न हो। जो साथ न रहकर अलग हो जाता है उसे अन्य या पर कहा जाता है। जो अन्य नही है—अनन्य है वही स्व है। इस दृष्टि से विचार करें तो जिस धन, धाम, धरा व परिजन को अपना मानते हैं वे भी पर ही है, अन्य ही है क्योकि जीवन मे किसी भी समय अथवा मृत्यु आने पर इनका साथ छूट ही जाता है। यही बात शरीर पर भी घटित होती है। अत धन-जन ही नही तन भी पर ही है।

जीव ज्ञानस्वभाववाला है। अत जानने का कार्य अर्थात् कोई न कोई विचार निरन्तर करता रहता है। जानने का यह कार्य तबतक प्रतिक्षण चलता रहता है जब तक कि वह सर्वज्ञ नही हो जाता है।

विचारणीय तो यह है कि जीव अनतकाल से जानने या विचारने का कार्य करता आया है। परन्तु जानने का कार्य अभी तक पूरा नही हुआ है। इससे यह सिद्ध होता है कि जीव की 'जानने की क्रिया' सही नही है। क्योकि सही क्रिया वह है जो सफल हो अर्थात् जिसके करने से उद्देश्य या लक्ष्य की प्राप्ति हो जावे। जिसके करने से कार्य मे सफलता न मिले, उसका करना व्यर्थ या मिथ्या है। जैसे सही दवा या उपचार वह है जिससे रोग मिट जावे और दवा और उपचार करने की आवश्यकता न रहे। इसी प्रकार जानने या चिंतन की सही क्रिया वह है जिससे जिज्ञासा की पूर्ति हो जाये, जानना शेष न रहे।

अनतकाल से जानने की क्रिया या प्रयत्न बराबर करते रहने पर भी अभीतक अज्ञानता ज्यो की त्यो विद्यमान है। इससे यह परिणाम निकलता है कि जानने की क्रिया सही 'सम्यक्' रूप मे नही हो रही है और है भी यही वास्तविकता। कारण कि हमने जब भी स्वय को जानने का प्रयत्न किया तब उसी को जानने का प्रयत्न किया जो पर है। कारण कि पर को ही स्व (निज) रूप मान रहे हैं। इसी भूल के परिणाम से प्राणी दु खी हो रहे हैं, ससार-परिभ्रमण व जन्म-मरण कर रहे हैं। अत इस भूल का अत करना आवश्यक है। इस भूल का अन्त तबही सभव है जब स्व और पर के यथार्थ स्वरूप को समझा जाय। स्व को पर से भिन्न समझा जाय।

आचार्य पूज्यपाद ने कहा है—

जीवोऽन्य· पुद्गलाश्चान्य इत्यसौ तत्वसंग्रह।
यदन्यदुच्यते किंचित् सोऽस्तु तत्स्यैव विस्तार ॥

इष्टोपदेश ५०

अर्थात् जीव शारीरिक पुद्गलो से भिन्न है और पुद्गल जीव से भिन्न हैं। यही ज्ञान तत्व का सग्रह है। इसके अतिरिक्त जो कुछ भी कहा जाता है। वह सब इसी का विस्तार है।

पर से स्व का अनुभव के स्तर पर भिन्नता का साक्षात्कार करना या दर्शन करना जैनदर्शन मे भेद-विज्ञान कहा गया है। इससे ग्र थि-भेदन होता है। पर के साथ स्व का बधन (सबध) होना ही ग्र थि (गाठ) है। ग्र थि-भेदन का अनुभव ही सम्यक् ज्ञान है, सच्चा स्वाध्याय है।

भेद-विज्ञान से जैसे-जैसे पर के साथ स्व के सबध का भेदन होता जाता है वैसे-वैसे ग्र थियो का भी भेदन होता जाता है अर्थात् कर्म टूटते—निर्भरित होते जाते हैं। इस प्रकार स्वाध्यायी को जितना-जितना भिन्नता का अनुभव बढता जाता है वह स्व के निकट पहुँचता जाता है, स्वानुभूति बढती जाती है। जब समस्त पर पदार्थों से सबध दूर हो जाता है, राग-द्वेष हट जाता है तो पूर्ण स्वानुभूति के साथ केवलदर्शन—केवलज्ञान प्रकट हो जाता है।

स्वाध्याय तप की प्रक्रिया:—

ऊपर कह आए है कि जिसका साथ छूट जाता है, वह पर है और जिसका नाश हो जाता है उसका सदा के लिए साथ छूट जाता है। अत नश्वरता-अनित्यता के अनुभव मे ही सच्चे अर्थों मे परायेपन का बोध होता है। अनुभव के स्तर पर हुआ नश्वरता का यह बोध उस पदार्थ के प्रति राग-द्वेप-मोह-रूप सबध छुडाने वाला है तथा समता व शाति के साम्राज्य मे प्रवेश कराने वाला है।

अनुभव के स्तर पर नश्वरता का बोध करने का उपाय ध्यान है। इसीलिए साधना-क्षेत्र में ध्यान और स्वाध्याय का जोडा बतलाया गया है। ध्यान का अर्थ है चित्त को सर्व ओर से हटाकर सत्य का दर्शन करना। सत्य अर्थात् जो जैसा है उसके वास्तविक स्वरूप का अनुभव करना। और उस अनुभव से उद्भूत परिणाम को जानना है स्वाध्याय, बोध या प्रज्ञा।

ध्यान मे जब चित्त को शात करके समत्व भाव से प्राणियो के जन्म-मरण, शरीर के बाहरी भाग, भीतरी भाग और उन पर होने वाली सवेदनाओ को देखा जाता है तो वहाँ पर सतत उत्पाद-व्यय स्पष्ट अनुभव होता है चित्त को देखने पर यह उत्पाद-व्यय और भी अधिक द्रुतगति से होता हुआ अनुभव होता है। ध्यान मे जितना-जितना समता व सूक्ष्मता के क्षेत्र की गहराई मे प्रवेश होता है, यह उत्पाद-व्यय उतना ही अधिक शीघ्रता से होता हुआ अनुभव होता है। यहाँ तक कि एक पल मे लाखो-करोडो बार से भी अधिक उत्पाद-व्यय होता दिखाई देता है। जो इतना परिवर्तनशील-नश्वर है, जिसका अस्तित्व क्षणभर के लिए भी नहीं है। ऐसे क्षणभगुर पदार्थ के प्रति कौन बुद्धिमान मनुष्य राग-द्वेष-मोह करना पसद कर सकता है अर्थात् कोई नही। अत बुद्धिमान—प्रज्ञावान उनसे अपने को भिन्न समझकर उनके प्रति राग-द्वेष-मोह छोडकर स्वानुभव की ओर बढता जाता है। यही स्वानुभव की वृद्धि, सच्चे अर्थ मे स्वाध्याय है। जब सर्व पर या अन्य पदार्थों से सबध छूट जाता है तो पूर्ण स्वानुभव हो जाता है। यही स्वाध्याय की परिसमाप्ति है।

स्वाध्याय, पर से हटने, निवृत्त होने रूप मे सयम या सवर है और ग्र थियो (कर्मों) के तोडने क्षय करने के रूप मे निर्जरा है। इसलिए ही स्वाध्याय को निर्जरा के आभ्यतर भेदो मे स्थान दिया गया है। सवर और निर्जरा रूप होने से स्वाध्याय साधना है, धर्म है।

वस्तुत स्वाध्याय स्वय की वास्तविक स्थिति का अध्ययन करता है। अर्थात् स्वय मे राग, द्वेप, मोह, हिंसा, झूठ, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ आदि कितनी बुराइयाँ है—दुर्गुण है उनको व उनसे पैदा होने वाले दु खो को जानना ताकि उनको दूर कर सकें तथा सद्गुणो की कमियो को जानना ताकि उनकी प्राप्ति की जा सके, यही जीवन-शोधन की क्रिया स्वाध्याय है

सत्पुरुषों के ग्रंथो मे उनके अनुभव के आधार पर दुर्गुणो को दूर करने व सद्गुणो को प्राप्त करने के कार्य का निरूपण होता है। जिस पर चलकर स्वय के जीवन का शोधन किया जा सकता है। अत कारण मे कार्य का आरोप कर उपचार से उसे भी स्वाध्याय कहा जाता है। जिस प्रकार यह कहा जाता है कि यह सडक या मार्ग अमुक गाव जाता है या ले जाता है परन्तु वास्तव मे न तो सडक कहीं जाती है और न किसी को ले जाती है। केवल उस पर चलने वाला यात्री उस गाव जाता है। उस यात्री के कार्य का आरोप सडक पर कर कह दिया जाता है कि सडक जाती हैं। इसी प्रकार जिस पथ से या ग्र थो से स्वय का अध्ययन होता है वे स्वाध्याय के सहयोगी अग शास्त्र-पठन, तत्ववार्ता, सत्सग, धर्मकथा, आदि भावना को भी स्वाध्याय कहा जाता है। परन्तु जिन पुस्तको के पठन से व जिस वार्ता या गोष्ठि से स्व की ओर अन्तर्मुखी गति न होकर, पर की ओर वहिर्मुखी गति होती है, वह ग्र थ-पठन या चर्चा-वार्ता-गोष्ठि स्वाध्याय नही कही जा सकती। स्वाध्याय की सीधी-सादी कसौटी यह है कि कोई भी ज्ञान, दर्शन व क्रिया या कार्य जो जीवन-शोधन करने वाली होती है वह स्वाध्याय है और जीवन मे विषय-इच्छा, कषाय-वृत्ति उत्पन्न करने वाली होती है वह स्वाध्याय नही है क्योकि वह अकल्याणकारी है।

अभिप्राय यह है कि स्वाध्याय से जीवन-शोधन होकर ज्ञान-दर्शन-चारित्र गुण का विकास होता है। आतरिक शक्तियो व गुणो का प्रस्फुटन होकर शाश्वत सुख-शाति व प्रसन्नता की उपलब्धि होती है।



श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण सस्थान,
रामलालजी का रास्ता
जयपुर (राजस्थान)

स्वाध्याय : परम ज्योति

डॉ० बद्रीप्रसाद पंचोली

स्वाध्याय को भारत में परमज्योति माना गया है। आत्मोत्थान के साधनो मे स्वाध्याय का स्थान सर्वोपरि है। साध्य की प्राप्ति कराने वाला प्रमुख साधन साध्य से अभिन्न समझा जाता है। इस दृष्टिकोण से स्वाध्याय आत्मोत्थान का दूसरा नाम है। जीवन-सुधार की कोई ऐसी प्रक्रिया नही है जिसके मूल में स्वाध्याय न हो।

स्वाध्याय के दो आयाम :

स्वाध्याय शब्द 'स्व' और 'अध्याय' से मिल कर बना है। इस शब्द का अर्थ है—स्व अर्थात् अपना अध्ययन अथवा स्व के लिए अध्ययन। इसके पहले अर्थ मे आध्यात्मिक जीवन जीने की सारी प्रक्रिया समा जाती है। इसी तरह दूसरे अर्थ मे सृष्टि के विविध उपादानो का परिचय प्राप्त करके उनसे जीवन मे नई से नई प्रेरणा भरने की प्रवृत्ति का समावेश होता है। दोनो ही अर्थ स्वाध्याय को उत्तम साधन के रूप मे प्रतिष्ठित करते हैं। अब यह देखना है कि जीवन का उद्देश्य क्या है और स्वाध्याय उसकी प्राप्ति मे किस प्रकार सहायक होता है ?

स्वाध्याय : चेतना का यज्ञ :

सामान्य व्यक्ति से उसके जीवन का उद्देश्य पूछा जाय तो उसका उत्तर होगा—सुखप्राप्ति। सुख इन्द्रियों की उस प्रसादावस्था का नाम है जो उन्हे विविध सुख-साधनो से प्राप्त होती है। बाह्य-साधनो से प्राप्त सुख क्षणिक होता है और तभी तक रहता हैं जबतक साधन उपलब्ध हों। उनके अभाव में सुख प्राप्त नहीं हो सकता। इसलिए स्थायी सुख या आनन्द की चाह रखने वाला व्यक्ति उसे बाहर से नहीं अपने भीतर से खोजता है। शरीर मे एक आध्यात्मिक यज्ञ चला करता है। इसे चेतना का यज्ञ कहते हैं। इसमें मन सहित समस्त इन्द्रिया आत्मा मे आहुति दिया करती हैं इससे इन्द्रियो को आत्म-दक्षिण होने का सुख मिलता है और आत्मा अपने आनन्दभाव मे स्थित होती है।

आत्मा सच्चिदानन्दमय परमात्मा का अश है। उसके लक्षण शरीर के छन्दो मे छन्दित होने के कारण प्रच्छन्न बने रहते हैं। आनन्द की परमावस्था मे आत्मा अपने छन्दो से ऊपर उठकर अपने स्वरूप को प्राप्त कर लेती है। आत्मा की आनन्दावस्था मे उसकी चिन्मयता भी मिश्रित होती है। यह आत्मा की दीप्तावस्था है। स्वराज्य इसी का नाम है। स्वराज्य की सिद्धि आत्मविस्तार से सम्भव है। स्वराज्य-सिद्धि के उपरान्त अमत्य, तमस् और मृत्यु से छुटकारा मिल जाता है और सत्य, ज्योति एव अमृतत्व की प्राप्ति होती है। वेदो मे ज्योति को उत्तर-ज्योति, ध्रुव-ज्योति, उरु ज्योति, अमृतज्योति, गूढ़ज्योति अवध्र-ज्योति या स्वज्योति कहा गया है। उत्तर-रामचरित नाटक' मे भवभूति ने इस ज्योति को पाने वाले के लिए 'आविर्भूतज्योति' शब्द का व्यवहार किया है। इस ज्योति को प्राप्त करना ही परमपुरुषार्थ—मोक्ष है। इसे पानेवाला साधक परमपद को प्राप्त

कर लेता है। स्वाध्याय इस ज्योति को प्राप्त कराने वाला साधन है। उत्कृष्ट साधन होने से ही स्वाध्याय को परमज्योति कहा गया है।

स्वाध्याय का स्वभाव गतिशीलता :

"अधि' उपसर्गपूर्वक गत्यर्थक इ धातु से अध्ययन शब्द बनता है। मन की वृत्तियो का उदात्तीकरण करने वाली विशिष्ट गति ही अध्ययन है। यह गति शारीरिक न होकर मानसिक होती है। ऋषि का भी गतिमय जीवन होता है। यह शब्द गत्यर्थक 'ऋ' धातु से व्युत्पन्न है। आर्षजीवनपद्धति अपनाने के लिए मन को गति-सम्पन्न बनाना होता है। 'चरैवेति' भारतीय जीवनदर्शन का केन्द्रभूत विचारसूत्र है। महत्त्वपूर्ण अग माना जा सकता है।

योगदर्शन मे अध्ययन की गणना पाँच नियमो मे की गई है। जिन विशिष्ट ग्रन्थो को स्वाध्याय के लिए अपनाने की व्यवस्था है उन्हें निगम (निःशेष गतिप्रेरक) और आगम (सम्पूर्णत गतिप्रेरक) नाम दिया गया है।

स्वाध्याय : स्वराज्य-सिद्धि की प्रक्रिया

स्वाध्याय केवल ग्रन्थो का पारायण मात्र नही हैं। उनके अनुसार आचरण करना ही स्वाध्याय कहा जाता है। आचरण 'स्व' के अध्ययन का सर्वोत्तम प्रकार है। इसका फल 'स्व' के विस्तार के रूप मे सामने आता है। मानव-मन 'स्व' से मुक्त होकर 'पर' और 'परम' की ओर गति करता है। इसमे विश्राम-स्थल के रूप मे परिवार, ग्राम, जिला, देश और विश्व— सब समा जाते हैं। अन्ततोगत्वा 'स्व' का विसर्जन हो जाता है। इस प्रकार स्वराज्य सिद्धि की प्रक्रिया चलती है जिसका एक मात्र साधन स्वाध्याय ही ठहरता है। इसलिए मनु ने कहा है कि स्वाध्याय और उससे उपलब्ध ज्ञान से व्रत, होम, यज्ञ, महायज्ञ आदि सम्पन्न करके साधक अपने शरीर को ब्रह्म-प्राप्ति के योग्य आत्मा वाला बना लेता है—

स्वाध्यायेन व्रतैर्होमैस्त्रैविद्येनेज्यया सुतैः।
महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः॥
(मनुस्मृति २।२८)

भारत मे सभी श्रेष्ठ कर्मो की तरह स्वाध्याय भी यज्ञ कहा जाने लगा है। मनु के मत मे अध्ययन अध्यापन ब्रह्म-यज्ञ है (मनुस्मृति ३।७०) यही क्यो? इसे देवकर्म भी कहा गया है जिसके द्वारा सारे संसार का पोषण हो सकता है—

स्वाध्याये नित्य युक्त स्याद्दैवे चैव हि कर्मणि।
दैवकर्मणि युक्ता हि बिभर्तीदं चराचरम्॥
(मनु० ३।७)

स्वाध्याय से ही विद्या-प्राप्ति संभव :

याज्ञवल्क्य ने भी मनुष्य मात्र के लिए नित्य, स्वाध्याय का विधान किया है। 'श्रीमद्भागवत् पुराण मे इसकी गणना धर्म के ३०, अगो मे की गई है। 'तैतिरीयोपनिषद्' की 'शिक्षावल्ली मे स्वाध्याय से से प्रमाद न करने का उपदेश दिया गया गया है— 'स्वाध्यायान्मा प्रमद'। 'महाभारत' मे मनुष्य के लिए प्राप्य तीन ज्योतियो—अपत्य,कर्म और विद्या का उल्लेख है उनमे से विद्या की प्राप्ति स्वाध्याय से ही सभव है।

जीवन-साधना के समस्त पथ स्वाध्याय मे एकीभूत हो जाते हैं। निरक्षर सन्त भी अपने साधना-मय जीवन मे 'स्व' का अध्ययन करते थे। उनके 'स्व' मे सारा ससार ही समा जाता है। व्यक्तिगत अनुभव के माध्यम से वे सारे ससार का मर्म समझ जाते थे। सदाचार, सत्य, तप, इन्द्रिय-दमन, मन का शमन आदि मे से कोई ऐसा कार्य नही है जिसकी सम्पन्नता स्वध्याय पर निर्भर न हो। 'योगशिखोप-निषद्' के अनुसार हमारे भीतर विद्यमान ज्ञानदीप स्वाध्याय के विना वैसे ही नही जल सकता जैसे लकडी मे स्थित अग्नि मन्थन के विना प्रकट नही

होता। इसीलिए भगवान कृष्ण ने स्वाध्याय या ब्रह्मयज्ञ को अपनी विभूतियो मे सम्मिलित किया है– 'यज्ञाना ब्रह्मयज्ञोऽहम्।

स्वाध्याय : समाज का मूलाधार :

स्वाध्याय आध्यात्मिक जीवन मे तो उपयोगी है ही, सामाजिक जीवन मे भी उसका महत्त्व कम नही है। बुद्धि की अध्यवसाय-कुशलता स्वाध्याय की देन है, विवेक स्वाध्याय का परिणाम है और व्यक्ति की समाजनिष्ठा का बुद्धि और विवेक से सम्बन्ध होता है। इस प्रकार स्वाध्याय ही समाज का मूलाधार है। स्वाध्याय से ही आत्मविसर्जन की प्रवृत्ति का विकास सम्भव है जिसका चरम रूप राष्ट्रनिष्ठा और भगवद्-भक्ति के सर्वोच्च प्रकार आत्मनिवेदन मे अभिव्यक्त होता है। अत न केवल जीवन सुधार की वरन् जीवन के चरम् प्रतिफल की प्राप्ति के साधन के रूप मे स्वाध्याय का स्थान जीवन मे अप्रतिम है।

स्वाध्याय : ऋषि-मुनियो की अर्चना :

मनुष्य जन्म से ऋण सज्ञा लेकर इस ससार में आता है—ऋण ह वै जायमान'। जब वह अपना सम्बन्ध सत्कर्मों से अपने भौतिक शरीर के विविध उपादानो के अधिष्ठातृ देवो से, मातृभाव समुपेत पृथिवी से, अवकाशप्रदाता आकाश से तथा पूर्वपुरुषो की चिन्तनप्रवृत्तियो मे जोड लेता है तब उसकी जीवनधारा धन्यता प्राप्त कर लेती है। विष्णु पुराण' (३।६।६) के अनुसार स्वाध्याय द्वारा मुनियो को प्राप्त किया जा सकता है। उन्नत जीवन की कामना करने वाला प्रत्येक व्यक्ति जीवन के ऊँचे नीचे बीहड मार्ग पर किसी पथ-प्रदर्शक को खोजना चाहता है। स्वाध्याय के माध्यम से वह ऐसे पथ-प्रदर्शको को भावना जगत के चिर-सहचर के रूप मे पा लेता है। जो व्यक्तिगत जीवन मे ऋषि बनता है वही अपनी रचनाओ मे मौन होकर मुनिभाव से स्थित होता है। स्वाध्यायशील व्यक्ति मुनियो का साक्षात्कार करके स्वय आर्ष-जीवन का पथिक बन जाता है। ऋषि-मुनियो से प्रेरणा पाकर जब व्यक्ति आचरण मे 'विचारो' का अनुवाद करने लगता है। इसीलिए मनु ने उपदेश दिया है स्वाध्यायेनार्चयेत्ऋषीन्'— अर्थात् स्वाध्याय करके ऋषियो की अर्चना की जाय। ऋषि-ऋण से मुक्ति पाने का साधन स्वाध्याय ही है। ऋषियो अर्थात् सदाचारी व्यक्तियो का अनुकरण करने और मुनियो अर्थात् उच्च कोटि के ग्रन्थकारो के ग्रन्थो मे स्थित विचारो को आचरण मे ढालने से ही जीवन मे सुधार सम्भव है।

प्राध्यापक हिन्दी विभाग
गवर्नमेन्ट कॉलेज, अजमेर (राज)

स्वाध्याय : परमं तप :

श्रीमती रूपवती किरण

समता की निर्मल गगा :

आज के युग मे कल्पवृक्ष की भाति विज्ञान के बढ़ते हुये चरण मानव को सतापकारी तृष्णा के अथाह-सागर मे डुबा चुके हैं। आर्त मानव व्याकुलता से प्रतीक्षारत है उन उपायो के लिये जो मानस के उद्वेग को शातकर तृप्ति दे सके। उसे निश्चय हो गया है कि शारीरिक सुख उसे तृप्त करने मे सर्वथा असमर्थ है। मानव सामग्री के मरुस्थल मे मानसिक अशाति से तृप्त राग द्वेष की आंच मे चने की भाति भुनता हुआ छटपटा रहा है समता के सीकरो के लिये जो तत्काल शाति प्रदान कर सकते हैं उसे यह ज्ञात नहीं कि समता की निर्मल गगा की अजस्र धारा उसी के अतस् मे प्रवाहित है। उस पवित्र तृष्णाहारिणी सरिता का उद्गम वह स्वय है और वह पिपासित हो यत्र-तत्र भटक रहा है। यह कैसा आश्चर्य है कि जिसके गर्भ मे अनत औषधिया पल रही हो वही हिमाचल रुग्ण रहे ? मानव को अपनी विशाल निधि की खोज करना है। भयकर दरिद्रता से मुक्ति पाना है तो सतर्क हो स्वाध्याय करना होगा। सतत स्वाध्याय ही वह सुगम उपाय है जो आत्मा के गुप्त अबूझे भंडार के रहस्यो को खोलकर समस्त आधि-व्याधि-उपाधि को हरण कर लेता है। इसके प्रभाव से ससार मे होने वाला आनुषगिक फल-ऋद्धि सिद्धियाँ, चरणो मे अनिमत्रित लोटती हैं।

स्व मे केन्द्रीभूत हो :

स्वाध्याय जीवन का आवश्यक अग है। इसके विना मनुष्य पशु के सदृश है बल्कि पशु कह कर भी पशु का अपमान करना है। स्वाध्याय करते समय मन की क्रिया के अनुरूप वचन व शरीर की क्रिया भी होती है अर्थात् तीनों का समन्वय हो जाता है। कदाचित् तीनो मे विभिन्नता हो तो पढकर भी बुद्धिगम्य नही होता, मनन-चितन तो असम्भव ही है। अध्ययन मे अतिरिक्त विकल्प नही रह सकते। एकाग्रता से मन-वचन-काय पर नियत्रण अनायास हो जाता है। अन्य पदार्थों से ममता की डोर टूट जाती है। चेतना, जो अब-तक आकर्षणों मे बह रही थी, अपने मे लौट आती है। आत्मा का 'स्व' मे केन्द्रीभूत हो विराम लेना आत्मविशुद्धि का कारण है। जैन दर्शन का केन्द्र आत्मा ही है। आत्मा का लक्ष्य स्व-स्थित होना है। स्वाध्याय से स्व के प्रति जिज्ञासा बढती है, जो आत्मा की खोज करके ही शात होती है एव उसे पा जाने पर अभूतपूर्व तृप्ति मिलती है।

मोह-ममता के गहन अधकार मे भटकता प्राणी आत्मिक शक्ति को विस्मृतकर अपना प्रतिक्षण ह्रास कर रहा है। स्वाध्यय ज्ञान-किरणो के द्वारा आलोक दान करता है, ताकि व्यक्ति अपनी सामर्थ्य से परिचित हो आत्मशक्ति को पूर्णत विकसित करने की क्षमता प्राप्त कर सके।

ज्ञान आत्मा का प्रमुख गुण :

आत्मा अनत गुणो का भडार है। ज्ञान आत्मा का असाधारण गुण या लक्षण है। इसके द्वारा ही आत्मा को ग्रहण किया जा सकता है तथा अन्य गुण भी ज्ञान के द्वारा ग्रहण होते हैं। ज्ञान चराचर समस्त ज्ञेय को विषय करता है।

ज्ञान अज्ञान मे अतर :

प्रयोजन सिद्धि के अर्थ ज्ञान-अज्ञान की परिभाषा भलीमाति विदित हो जाना उचित है। जो प्रयोजन को सिद्ध करे वह ज्ञान, शेष सब अज्ञान है। ज्ञान का पारपरित फल निर्मल केवलज्ञान की प्राप्ति है, जहाँ ज्ञान मे कुछ भी मिश्रण नही, केवलज्ञान ही ज्ञान है। यह सुनिश्चित है कि ज्ञान के साथ अन्य लौकिक सपदा अनुपग रूप से होती ही है, परन्तु ज्ञानी को अन्तरानुभूति के सुख के समक्ष धन-सपति तृणवत् तुच्छ प्रतिभासित होती है।

यू तो ज्ञान के अभाव मे अज्ञानी को भी विशेष सपदा ऋद्धि-सिद्धि आदि उपलब्ध हो जाती हैं, पर शाश्वत आनद की प्राप्ति नहीं होती। समय पाकर सामग्री विनष्ट हो जाती है, क्योंकि क्षण भगुरता का उसका स्वभाव है। यदि ज्ञान के सद्भाव मे भी मात्र वैभव प्राप्त हो तो ज्ञान अज्ञान मे अन्तर ही क्या रहा ? ज्ञान का विशिष्ट या अतिरिक्त फल शाश्वत मुक्ति की उपलब्धि है।

अज्ञानी ज्ञान से वैभव आदि फल की अभिलापा रखते हैं, अमृत से विपप्राप्ति की इच्छा करते हैं, सत् मे असत् को खोजते हैं। अज्ञान सर्प की भाँति विपैला है। इसके दर्शन से कपायो की ऐ ठन होती है। दशित प्राणी निर्विप होने के लिये संसाररूपी कच्चे कूप का जल पीने का उपक्रम करते हैं, परन्तु विपय-भोगो की अनवरत वर्पा से तृष्णा के दल दल मे फिसल-फिसल कर गिर जाते हैं। अज्ञानी का सारा पुरुपार्थ पदार्थाश्रित रहता है, जबकि ज्ञानी का पुरुपार्थ आत्मस्थित होने का होता है।

कपाय अज्ञान मे पनपती है। विवेकपूर्वक ज्ञान की क्रिया वैराग्य से स्वग्रहण होता है। अन्य पदार्थ के ग्रहण की वृत्ति छूट जाती हैं। अतएव कपाय निराश्रित हो क्रमश. कृश होते जाते है और आत्मा की स्वच्छता निखरने लगती है।

स्वाध्याय : आत्मगुणो की अभिवृद्धि

ज्ञान मे ज्ञान की स्थिरता हेतु स्वाध्याय विशेष आवश्यक है। स्वाध्याय के क्षणो मे व्यक्ति अनेक चिन्ताओ से उन्मुक्त हो जाता है। दत्तचित्त हुए विना स्वाध्याय नही हो सकता। इससे स्वअध्ययन की प्रेरणा, मार्गदर्शन मिलता है। आत्मनिरीक्षण की वृत्ति अनुसधान करती हुई प्रगति पथ पर चल पडती है। युगयुगो से चली आ रही भूलो का उन्मूलन कर आत्मविशुद्धि कर कल्याण किया जा सकता है। आत्म-कल्याण मे सलग्न व्यक्ति अन्य प्राणियो के कल्याण मे भी पूर्णत सतर्क रहता है। उसके विचारो मे सरलता, सहिष्णुता आ जाती है तथा आचरण सात्विक सीमित कर, वह आत्मगुणो की अभिवृद्धि मे रत रहता है।

कला : स्व मे विराम लेने की

ज्ञान ज्योति प्रत्येक आत्मा मे सदैव दीप्त है, जिसके द्वारा विश्व के पदार्थ प्रकाशित हो रहे हैं। निरन्तर स्वाध्याय कर स्वय को भी प्रकाशित किया जा सकता है। ज्ञान-ज्योति उद्दीप्त हो सकती है। आकर्पण-विकर्पणों से हट कर अपने मे सयत रहना अत्यन्त कठिन कार्य है। स्वाध्याय के बल पर 'स्व' मे विश्राम करने का अभ्यास हो सकता है।

चेतना 'स्व' के प्रति समर्पित

प्रथम तो हमे यही ज्ञान नही कि शरीर के पार भी कोई इससे विलक्षण वस्तु है। कदाचित् आत्मा नामक वस्तु का अस्तित्व मान भी लिया तो उसकी ओर अभिरुचि जागी नही। समस्त परिचय शरीर व शरीर सम्बन्धी अन्य पदार्थों से ही रहा है। जो वस्तु आज तक प्रत्यक्ष परिचय मे नही आई, मन का मोड उस ओर होता नहीं। यद्यपि उसका अनुभव हमे प्रतिक्षण हो रहा है, तथापि हम उस पर ध्यान नही देते। ध्यान दिये विना समीप मे रखी वस्तु भी दूर

हो जाती है। जब तक हम अपने प्रति पूर्णत समर्पित न हो, तब तक आनन्दानुभूति असम्भव है।

उपलब्धियो का सदुपयोग अनिवार्य :

यह प्राकृतिक नियम है कि प्राप्त वस्तु का दुरुपयोग किया जाये तो कालान्तर मे वह वस्तु अप्राप्य हो जाती है। ज्ञानार्जन की अनुकूलता वर्तमान मे प्राप्त है, उसका समुचित लाभ नही लिया तो ज्ञान-प्राप्ति दुर्लभ ही जायगी।

स्वाध्याय का महत्व :

स्वाध्याय की अचिन्त्य महिमा है। इसके आनुषगिक फल ऋद्धि-सिद्धि बिना प्रयत्न स्वयमेव मिलते हे। श्रमण सस्कृति मे गृहस्थ व साधु दोनो के आवश्यक षट्कर्मो मे स्वाध्याय भी अनिवार्य कर्म हैं। चंचल मन की गति अवरुद्ध करने के लिये ध्यान के पश्चात् स्वाध्याय ही ऐसा महत्त्वपूर्ण कार्य है, जहाँ विभिन्नताए समाप्त हो, मन-वाणी-कर्म समन्वित हो जाते हैं। सयम की आँच मे आत्मा को तपाये बिना उसे स्वभाव के अनुकूल नहीं ढाला जा सकता।

स्वाध्यायः परम तपः

चैतन्य आत्मा जिससे अपने मे चैतन्य हो उठे अर्थात् ज्ञान के प्रकाश से जगमगा उठे, वह तप है। तप के बाह्य एव आभ्यतर दो भेद है। दोनो प्रकार के तप आत्मा का अनुसरण करते हैं। जन्म-मरण के असाध्य रोग से छुटकारा पाना है तो तप को अगीकार करना ही होगा। तप से कर्मशृ खला टूट कर बिखरने लगती है। "स्वाध्याय परम तप। स्वाध्याय से सम्यग्दर्शन पूर्वक सम्यग्ज्ञान की उपलब्धि होती है। स्वाध्याय कर आत्मशुद्धि का सतत प्रयास होना कार्यकारी है। यदि आत्मविशुद्धि न हुई तो स्वाध्याय का क्या मूल्य ?

स्वाध्याय के प्रकार :

स्वाध्याय के मुख्यत पाँच प्रकार हैं।—'तात्वार्थ सूत्र' मे सूत्र है—

'वाचनापृच्छनानुप्रेक्षाम्नाय धर्मोपदेशा'।

यथा वाचना, पृच्छना, अनुप्रेक्षा, आम्नाय और धर्मोपदेश। इनका स्वरूप इस प्रकार है—

१ **वाचना**—वीतराग मार्ग पर अग्रसर होने मे जो ग्रन्थ सहायक हो उनका पठन-पाठन करना वाचना है।

२. **पृच्छना**—शका-समाधान के अर्थ—विशेष ज्ञानियो से विनय पूर्वक प्रश्न करना पृच्छना है।

३. **अनुप्रेक्षा**—अध्ययन से ज्ञात किये पदार्थों का बारबार चिंतवन करना अनुप्रेक्षा है। इससे ससार की असारता का प्रत्यक्ष दिग्दर्शन होता है। आत्मा जगत् के क्षण जीवी पदार्थों से विरत हो आत्मगुणो मे अनुरक्त होता है। हृदय वीतरागता से एकरस हो जाता है।

४ **आम्नाय**—निर्दोष उच्चारण कर पाठ को रटना आम्नाय है।

५. **धर्मोपदेश**—मोक्षमार्गी धर्म का उपदेश देना धर्मोपदेश है।

ये पाचो स्वाध्याय के अग हैं, ज्ञानवर्द्धन मे कारण हैं। यथाथत स्व अध्ययन करना अथवा 'स्व' मे तन्मयता स्वाध्याय की अद्वितीय कला व फल है। अतएव इसे तप मे अन्तर्भूत किया गया है। स्वाध्याय का आदर यही है कि वक्ता, श्रोता दोनो ज्ञानार्जन के पवित्र अभिप्राय हेतु स्वाध्याय करें-करावें। श्रोता कुतर्क करे या वक्ता के अपमान का अभिप्राय रखकर प्रश्न करे तो ज्ञानवृद्धि का पावन उद्देश्य नष्ट हो जाता है एव वक्ता अपने सम्मान यश आदि के लालच से प्रवचन या धर्मोपदेश करे तो वह प्राप्य ज्ञान का सदुपयीग न कर अपनी महान् क्षति कर रहा है। अत सरलचित्त, समता भाव से स्वाध्याय कर। ज्ञान-वर्द्धन तथा ज्ञानाचरण करना योग्य है।

ज्ञान की उपादेयता :

ज्ञान उपादेय है, क्योकि वह सवर, निर्जरा,

मोक्ष का कारण है। ससार मे भ्रमण कराने वाले आस्रव-बध रूप अज्ञान का तथा उसे समाप्त करने का उपाय ज्ञान से ही विदित होता है। ज्ञान स्वपर भेद विज्ञान कर पर मे मोह-ममत्व तोड स्व से अभिन्न हो जाता है। स्वाध्याय भेद विज्ञान का जनक है। ज्ञान आत्म स्वभाव होने से प्रत्येक व्यक्ति ज्ञान-प्राप्ति का इच्छुक रहता है। यह बात अलग है कि अविवेक के सस्कारो से युक्त विषयानुरक्त प्राणी निष्प्रयोजन अध्ययन मे रत रहता है। आत्मानुरागी यथार्थ दिशा मे गतिशील होता है तो ज्ञान सम्यग्ज्ञान बन व्यक्ति को अवलम्बन दे, भव पार करा देता है। ज्ञान दु ख से निवृत्ति करा, सुख सागर में अवगाहन कराता है।

रूढिवाद, अधविश्वासो के घेरे से निकल विज्ञान के चमत्कारो पर मुग्ध न हो, सम्यग्ज्ञान के द्वारा स्व पर कल्याण की सद्भावना जनजन के मन मे जग जाये तो युद्ध की गति अवरुद्ध की जा सकती है।

कृपना ध्यान दें :

जैन समाज ध्यान दे अपनी आने वाली नई पीढी पर, जो उसकी उत्तराधिकारिणी है, और उत्तरोत्तर आचार-विचारहीन होती जा रही है। समाज मन्दिरो के नव-निर्माण को रोक ज्ञान की उपासना हेतु ज्ञान-मन्दिरो का निर्माण करे। वहाँ ज्ञान दान की सुन्दर व्यवस्था हो। अल्पवय बालको से लेकर समाज का प्रत्येक व्यक्ति उनमे अध्ययन कर सके। ज्ञान कल्याण-कारक है। अत ज्ञान का विकास होना चाहिये। सम्यग्ज्ञान होने पर सामग्री के सन्निध्य मे ज्ञानी उन्मत्त नही होता एव सासारिक अनेक अभावो के होते हुए भी वह परम शान्ति का अनुभव करता है। इसका एक ही कारण है—वस्तु स्वरूप का यथार्थ ज्ञान। जिसने स्वद्रव्य अपनी आत्मा व अन्य चेतन-अचेतन रूप पर द्रव्य के स्वरूप को ज्ञान के द्वारा प्रत्यक्ष कर लिया है, वह शाश्वत को छोड अशाश्वत को ग्रहण करने की अभिलाषा क्यों करेगा ? और जब इच्छा ही नही होगी तो व्याकुलता का फिर कौनसा कारण है ? व्यग्रता का अभाव ही तो आनन्द है। जहाँ आनन्द है वहा शान्ति है।

मन को झिझोडने वाला अज्ञान चैन नही लेने देता। अज्ञान दूर हो एव घट-घट मे ज्ञान-ज्योति प्रदीप्त हो जगमगाये। सद्ज्ञान के अभाव मे व्यक्ति ठूंठ के सदृश है जो फल-फूल पत्रादि के अभाव मे कोरा ही रह जाता है। यदि हम नई पीढी को ज्ञान की हरियाली न दे सके समाज मे जैन दर्शन के विद्वान् शून्यवत् रह जायेगे। व्यक्ति को आध्यात्मिक ज्ञान की नितान्त आवश्यकता है। अत स्वाध्याय अनिवार्य है।

—किरण ज्योति, ६९२ राइटटाउन,
जबलपुर–2

स्वाध्याय : स्व का चिन्तवन

डॉ महेन्द्र सागर प्रचडिया

'स्व' का चिन्तवन स्वाध्याय कहलाता है। स्व किसी भी अस्तित्व मे निहित शक्ति का नाम है। उसे आत्म कहा गया है। कहने को कुछ और भी कहा जा सकता है परन्तु वास्तविकता यह है कि उसे शब्दायित नही किया जा सकता। अस्तित्व को जब शब्दायित किया जाता है तब उसमे व्यक्तित्व का सयोग होता है। व्यक्तित्व क्रियाओ का लेखा-जोखा है। वहाँ अनुभूति नही, प्रतीति नही अपितु मात्र आकार है। और अन्ततोगत्वा अहकार है, जबकि स्व मात्र अह है।

फिर, ऐसे शब्दातीत अस्तित्व का चिन्तवन कैसे किया जा सकता है? सामान्यत हम जिनवाली, प्रभुवाली को बांचते हैं, उच्चारते हैं, शब्दो मे सबे— मत्रो को कण्ठायित करते हैं, जपते हैं और मानते हैं कि स्वाध्याय किया गया है। विचार कर देखें तो ऐसा है नही। जहा किया गया है, वहाँ व्यक्तित्व है अस्तु स्थूल है किन्तु आत्म अथवा स्व सूक्ष्म है फिर स्थूल के द्वारा सूक्ष्म की प्रतीति कैसे सम्भव हो सकती है? सूक्ष्म की मात्र प्रतीति अथवा अनुभूति सम्भव है।

कोई दीर्घ-स्वर मे आरोप लगा सकता है कि फिर जिनवाली—शास्त्र-सम्पदा व्यर्थ है और उसका प्रवाचन सार्थ नही है। उत्तर मे मेरा तो यही निवेदन है कि ऐसा सोचना भी असावधानी है। जीवन मे असावधानी हुई कि दुर्घटना सुनिश्चित।

क्रिया—ज्ञान=रुढि, परम्परा या रीति। ज्ञान के अभाव मे रीति वस्तुत प्रीति विहीन हुआ करती है। प्रीति अनुभूतिजन्य है और रीति क्रियाजन्य। अब क्रिया+ज्ञान=साधना, तप। ज्ञान के प्रभाव मे रीति प्रीति का सचार किया करती है फिर जो ध्वनित है वही सगीत है। नीति की बात जो प्रीति मे बाँध दे उसे सगीत कहते हैं।

अब देखिये कि दर्शन-श्रद्धान के साथ जो स्वभाव है उसे ज्ञानपूर्वक ध्यान किया जाय तभी वह स्वाध्याय होगा। शब्दायित 'स्व' स्वरूप जब इस प्रकार चिन्तवन का विषय बनाया जायगा फिर वही सास्वान प्रतीत होने लगेगा। श्रद्धान के साथ ज्ञानपूर्वक किया गया चारित्र मोक्ष का मार्ग होता है।

स्वाध्याय शब्द रुढि बन गया है अस्तु लोक मे इसका अर्थ मात्र शास्त्र-वाचन, जाप-जपना आदि गृहीत है। मुझे लगता है, यह यथार्थ है नही। दर्शन, ज्ञान, चारित्र्य का समन्वित प्रयोग वस्तुत स्वाध्याय है। ससार-प्रभु की प्रयोगशाला है, यहाँ अनन्त वस्तुओ का अध्ययन—प्रयोग हुआ करता है। वस्तु के स्वभाव का दर्शन ज्ञान, चारित्र के द्वारा जहाँ चिन्तवन हुआ करता है वहाँ पर स्वाध्याय होता है। इस प्रकार आज के जीवन मे स्वाध्याय की परमावश्यकता है। सच्ची शान्ति और सुख स्वाध्यायी निरन्तर अनुभूत करता है।

पीली कोठी, आगरा रोड,
अलीगढ (उ. प्र)

स्वाध्याय : एक आध्यात्मिक प्रक्रिया

डॉ. देवेन्द्रकुमार शास्त्री

'स्वाध्याय' तीन शब्दो से मिल कर बना है। 'स्व' का अर्थ है—अपना, अधि का अर्थ है—मे, और अय का अर्थ है—गमन करना। 'अपने मे गमन करना। स्वाध्याय शब्द का अर्थ है। 'अपने' से अभिप्राय है 'आत्मा मे'। आत्मा मे गमन करना या आत्म अथवा परमात्म तत्व को उपलब्ध होना यथार्थ मे 'स्वाध्याय' शब्द का अर्थ है। अध्यात्म का समानार्थी स्वाध्याय शब्द हैं। स्वाध्याय अध्यात्म-मूलक है दोनो की आत्मा समान है दोनो का भाव एक है। दोनो मे एक ही अनुभूति है। उस अनुभूति को प्राप्त करना ही स्वाध्याय करने का उद्देश्य है।

जन साधारण पुस्तक, ग्रन्थ, आगम या शास्त्र को पढना स्वाध्याय समझते हैं। सामान्य अर्थ मे शुभ भावो मे प्रवृत्त कराने वाली तथा अशुभ भावो से हटाने वाली पुस्तक का वाचन करना स्वाध्याय कहा जाता है। हरेक पुस्तक पढना स्वाध्याय नही हो सकता। जिस पुस्तक को पढने से हम पापास्रव (पाप की क्रिया) मे बध जाते हैं, व्यवहार से उसे स्वाध्याय करना कहते हैं। पुस्तक या शास्त्र का पढना ज्ञान का साधन है। साधन का आलम्बन लेकर ही मनुष्य साध्य का लक्ष्य बना सकता है, साध्य की ओर उन्मुख हो सकता है। बिना साधन के साध्य की प्राप्ति नही हो सकती। अतएव जो ज्ञान के साधन हैं, वे शास्त्र हैं, धार्मिक ग्रन्थ हैं, आगम हैं और उन की विनय, भक्ति एव वाचना करना सभी स्वाध्याय हैं। जिस प्रकार बार-बार रज्जू के सघर्षण से पाषाण भी सस्कारवान् हो जाता है, उसी प्रकार से अनादिकाल से मोहित यह जीव ज्ञान की रज्जु की भाति धार्मिक ग्रन्थो के अभ्यास से ज्ञान के सस्कार से चमत्कृत हो जाता है। जैसे कि जल से सहित कूप के मिल जाने पर मरुस्थल मे प्यास से तडप रहा व्यक्ति यदि कहीं से रस्सी प्राप्त कर लेता है और कुए से पानी निकालना जानता हो तो रस्सी से पात्र को योजित कर कुए से पानी खीच कर अपनी पिपासा शान्त कर सकता है। उसी प्रकार मनुष्य भी अपने बुद्धि रूपी पात्र की शास्त्ररूपी रस्सी से नियोजित कर ज्ञानरूपी जल को प्राप्त कर सताप दु ख, को मिटा सकता है। इस प्रकार धार्मिक ग्रन्थ अनादि काल से दु खरूपी प्यास मे तडपते हुए प्राणियो के लिए अमृत के समान शीतलता तथा शाति को प्रदान करने वाले हैं। ज्ञान से ही हमे हेय-उपादेय का बोध होता है। ऐसे ज्ञान का साधन करना स्वाध्याय करना कहलाता है। अत आगम ग्रन्थो मे स्वाध्याय का अत्यन्त महत्त्व बताया गया है। प्राय सभी धार्मिक ग्रन्थो मे स्वाध्याय को तप कहा गया है।

किन्तु क्या आगम ग्रन्थो मे लिखे हुए शब्दो को पक्तिश पढ लेना या पाठ कर लेना अथवा ज्यो के त्यो शब्द बाच कर सुना देना मात्र स्वाध्याय है? यदि यही स्वाध्याय हो तो पशु-पक्षी भी उन शब्दो को सुन कर स्वाध्यायी बन जायेंगे। इसीलिए कहा गया है—शास्त्र या आगम से सुने हुए या पढे हुए अर्थ का मनन अथवा अभ्यास करना स्वाध्याय है। केवल तोते की भाति शब्द को पढ लेना, सुन लेना या रट लेना स्वाध्याय नही है। अतएव जहा शब्द स्थूल स्वाध्याय है, वहा अर्थ सूक्ष्म स्वाध्याय है। वास्तव मे

शब्द अर्थ के लिए पढा जाता है, शब्द, शब्द के लिए नही होता। स्वाध्याय मे अर्थ पढा जाता है; शब्द नही। इसी को लक्ष्य कर कहा गया है

वहुयइ पढियइ मूढ पर तालू सुक्कइ जेण।
एक्कु जि अक्खरु त पढहु सिवपुरि गम्मइ जेंण।।
—पाहुड दोहा ।९७।।

हे मूर्ख ! इतना अधिक पढा कि मुख का तालु सूख गया। यदि एक ही अक्षर पढ लेते तो शिवपुरी के लिए गमन कर सकते थे।

वास्तव में वहुत पढने से भी क्या लाभ ? जिसका मन मैला है, वह भला धर्म कैसे प्राप्त कर सकता है ? जो अनेक शास्त्र पटता है और वहुत तरह के चारित्र का पालन करता है, किन्तु यदि आत्म-स्वभावमे विपरीत है तो वह सव वाल-चरित्र या अज्ञानियो की क्रिया है। इसमे पता चलता है कि अर्थ समझने मात्र से भी वास्तविक स्वाध्याय नहीं होता। यह ठीक है कि जिस प्रकार अर्थ समझने के लिए शब्द माध्यम का आलम्वन लेना होता है, ठीक उसी प्रकार से गुण की प्राप्ति के लिए अर्थ का मनन तथा चिन्तन करना पडता है। क्योकि अर्थ जान लेने के अनन्तर भी जिसका मन मैल से कलुपित है, उसे क्या लाभ हुआ ? तभी कहा है :—

पोत्था पढणि मोक्खु कह मणु वि असुद्धउ जासु।
—पाहुडदोहा, १४६

जिसका मन अशुद्ध है, उसे पुस्तक पढने से भी भला मोक्ष कैसे मिल सकता है ?

परमार्थ से तो यही निश्चय है कि शास्त्र ज्ञान नही है। पुस्तक जड, इसलिए पुस्तक मे ज्ञान नही है। शब्द पौद्गलिक है, इसलिए शब्द मे भी ज्ञान नही है। अर्थ या भाव मन से उत्पन्न होता है, मन स्वय पौद्गलिक है, इसलिए अर्थ या भाव भी चेतन न होने के कारण ज्ञान नही है। इस प्रकार वर्ण ज्ञान नही है, रूप ज्ञान नही है, आकार ज्ञान नही है, सकल्प-विकल्प ज्ञान नही है, प्रशस्त राग या पुण्य ज्ञान नही है, और पढना, वाचना तथा पूछना भी स्वाध्याय नही है। व्यवहार से स्वाध्याय के कई भेद हो सकते हैं, किन्तु परमार्थ से तो विशुद्ध आत्मा की निर्विकल्प अनुभूति करना अथवा ज्ञायक मात्र ज्ञाता, द्रष्टा रह जाने का नाम ही स्वाध्याय है। ऐसे स्वाध्याय के लिए ही कहा गया है, कि—

सज्झाए वा निउत्तेण सव्वदुक्खविमोक्खणे।
—उत्तराध्ययनसूत्र, २६, १०

अर्थात् स्वाध्याय करते रहने से सम्पूर्ण दु खो से छुटकारा मिल जाता है।

इस परम स्वाध्याय को प्राप्त करने के लिए जैन-धर्म मे जो मार्ग वताया गया है, वह आत्म-चिन्तन का है। जैन मुनि सदा आत्म-चिन्तन मे लीन रहने का अभ्यास करते हैं। श्रमण साधु के लिए दो ही वातें मुख्य रूप से निर्दिष्ट की गई हैं—स्वाध्याय और ध्यान। ये दोनो ही आध्यात्मिक प्रक्रियाएँ, जो मुख्य विन्दु को प्राप्त कर एक दूसरे मे पर्यवसित हो जाती हैं। यह भूमिका सामान्य साधु के लिए नही है। जो सप्तम गुणस्थानवर्ती सातिशय दशा मे अध्यात्मिक आरोहण की ओर प्रगतिशील है एसे मुनिराज इस सातिशय दशा को प्राप्त करते है। किन्तु जो इस भूमिका को प्राप्त करना चाहते है, उन्हे प्रथम विषय-कषायो के रस से परावर्तन करने का अभ्यास करना चाहिए। इसका एक मात्र उपाय 'सयम' वताया गया है। वास्तव मे मनुष्य का जीवन 'सयम' है।

आत्म-चिन्तन का नाम भी स्वाध्याय है। इसका दूसरा नाम अनुप्रेक्षा भी है। अनुप्रेक्षा शब्द या अर्थ से न होकर शुद्ध मन से की जाती है। एक ही भावना को वार-वार शुद्ध मन से भावन करना अनुप्रेक्षा है। व्यवहार से यह स्वाध्याय है। कहा भी है—

अणुप्पेहा णाम जो मणसा परियट्टेइ, णो वायाए ।

—दशवैकालिक निर्युक्ति, १,४८

अर्थात् पठित अर्थ का मन से अभ्यास करना अनुप्रेक्षा या स्वाध्याय है, वचन से नही । मनुष्य शुद्ध मन से इतना ही करले, तो इसका भी बडा भारी महात्म्य है । आज तक ससार मे जितने भी महापुरुष हुए हैं, वे सब इस स्वाध्याय के कारण ही महत् पद को प्राप्त हुए । आगम भी यही कहते है.—

"सज्झायं च तवो"—उत्तराध्ययनसूत्र, २६, ३७

स्वाध्याय तप है । इसलिए सतत इसका अभ्यास करते रहना चाहिए ।

—शकर ऑयल मिल के सामने,
नीमच (म० प्र०)

सम्यक् श्रुत ही सच्चा स्वाध्याय

श्री रमेश मुनि, जैन सिद्धान्ताचार्य

सस्कृति का दर्पण साहित्य :

पवित्र सस्कृति और सभ्यता का प्रतिनिधित्व आज साहित्य कर रहा है। साहित्य ने व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का निर्माण किया है। साहित्य की यह अमोघ शक्ति आज समाज के कण-कण मे परिव्याप्त है।

जिस प्रकार शरीर के लिए भोजन की आवश्यकता रहती है, उसी प्रकार मानव मस्तिष्क को भी सदैव स्वस्थ रखने के लिए साहित्य रूपी भोजन की आवश्यकता है। विना भोजन जैसे शरीर नि शक्त हो जाता है, ठीक उसी प्रकार विना सुसाहित्य के मानवीय मस्तिष्क भी बेकार हो जाता है। अच्छे मस्तिष्क मे अच्छे विचार उत्पन्न होते हैं, और अच्छे विचारो से व्यक्ति अच्छा बनता है। अच्छे व्यक्तियो का समूह ही समाज का आधार और आदर्श है। अतएव यदि समाज को प्रगतिशील और महान् बनाना अभीष्ट है तो सर्वप्रथम मानव समाज मे परिव्याप्त रूढियो का अन्त करना होगा। उसके किए प्रगतिशील युगपरिवर्तनकारी उदात्त विचारो की जरूरत है और ये विचार अच्छे साहित्य से ही उद्भूत होते हैं।

जीवन निर्माण और शास्त्र :

जीवन निर्माण मे शास्त्र-सिद्धान्त एक मौलिक निमित्त माना गया है, कारण यह कि शास्त्र उभय जीवन सुधारने की कुन्जी व तत्व-रत्नाकर है। "जिन खोजा तिन पाइया गहरे पानी पेठ" की युक्ति के अनुसार ज्यो-ज्यो स्वाध्यायी प्रेमी सिद्धान्तो की तह तक पहुचता है त्यो-त्यो उसे महा मूल्यवान् द्रव्यानुयोग, कथानुयोग, चरित्रानुयोग आदि नानाविधि अभीष्ट तत्व रत्नो की प्राप्ति होती है। फलस्वरूप शास्त्र-लोचन प्राप्त हो जाने पर फिर वह मुमुक्ष इतस्तत मिथ्याअटवी मे नही भटकता, वह निज जीवन मे सम्यक् ज्योति प्रदीप्त करता हुआ सामाजिक जीवन को भी उसी प्रखर ज्योति मे जगमगाने का श्लाधनीय प्रयत्न करता है, जैसा कि कहा है—

तव चिम सजय जोगय च, सज्झाय जोग च सपा अहिट्ठए।
सूरे व सेणाइ समत्तमाउहे, अत्तमप्पणो होई अत्य परेसि ।। दशवै० अ० ८/६२

अर्थात् जिस प्रकार चतुरगिनी सेना से घिरा हुआ तथा शस्तास्त्रो से सुसज्जित शूरवीर योद्धा सग्राम मे अपनी तथा साथी की रक्षा करता है, उसी प्रकार तप सयम तथा आगम के पठन-पाठन रूप स्वाध्याय योग की सदा आराधना करने वाला साधक अपनी आत्मा की एव पर-आत्मा की रक्षा करता हुआ, कर्म रूपी शत्रुओ को परास्त करने में सक्षम होता हैं।

"शस्तामृतरसास्वाद सगम सज्जनै सह"

वास्तव में सोचा जाय तो स्वाध्यामृत का रसास्वाद और महामना गुणी-जनो की सगति, यही सारभूत तत्त्व हैं।

मिथ्या श्रुत एक अंधेरा

श्रुत (शास्त्र) के दो विकल्प माने गये हैं—मिथ्याश्रुत और सम्यक् श्रुत। मिथ्याश्रुत एकान्तवादी पुरुष प्रणीत माना गया है। वह स्व पर जीवनोत्थान में सहायक न बनकर बाधक एव रोधक है, तारक नही मारक है, जहाज नही ज्वाला है और ज्यादा कहे तो मिथ्याश्रुत एक मृत्यु है, विष है, अशान्ति एव दुख का अथाह सागर है। इसलिए आगम का उद्घोष है—'सव्वे उम्मग्ग पट्ठिया" अर्थात् एकान्तवादी जन सभी उन्मार्ग में घसीटने वाले हैं, अतएव "दूरओ परिवज्जए" उनका सहवास उनकी मान्यता दूर से ही त्याग देनी चाहिए।

सम्यक् श्रुत की उपादेयता

"आप्त वचनादाविर्भूतमर्थ सवेदन मागम आप्त (सर्वज्ञ) के वचनो से होने वाले पदार्थों के ज्ञान को सम्यक् श्रुत कहा गया है। सर्वथा राग-द्वेष विजेता, एव कही जाने वाली वस्तु स्वभावो को सम्यक् प्रकार से समूल पर्यायो को जो जानता है और जैसा जानता तदनुसार ही कथन करता है अर्थात भूत-भविष्य व वर्तमान काल का जो सर्वथा विज्ञाता है, वह आप्तपुरुष कहा गया है। 'तस्य हि वचनमवि सवादि भवति" अर्थात् उस यथार्थज्ञाता और यथार्थ वक्ता का कथन ही विसवाद रहित होता है।

वह जीवन अमृत अनन्त शान्ति स्रोत, शुद्ध ज्योति अन्तरग जीवन को चमकाने वाला, ओज, तेज, अजेय शक्ति का आकार, अनन्तबल, अनन्तविज्ञान एव अनन्त आनन्द का नन्दनवन माना गया है।

यह निर्विवाद सत्य है कि—आप्तवाणी मे पूर्वापर विरोध नही रहता है क्योकि उनकी शैली नय-निक्षेप प्रमाण आदि तत्वगर्भित एव अनवरत गति से बहने वाली स्याद्वाद-सुधा की स्रोतस्विनी रही है, जो समष्टि के कण-कण को प्लावित करती हुई, स्वधर्म-परधर्म का सागोपाग विश्लेषण प्रस्तुत करती हैं। सम्यक्श्रुत की दृष्टि मे मानव मात्र को समानाधिकार है। वहा जाति, कुल या परिवार को बढावा न देकर व्यक्तित्व का महत्व माना गया है। भले उस पार्थिव शरीर पर किसी जाति, कुल का सिक्का या ट्रेडमार्क क्यो न लगा हो? "यत् सत्य तत् मम" जीवन विकास के हेतु भूत जो सार तत्व हैं, वे मेरे है, यह सम्यक् श्रुत का दिव्य उद्घोष है। और भी कहा है—"सम्मग्ग तु जिणक्खाय, एस मग्गे हि उत्तमे" अर्थात् आप्तपुरुष प्ररूपित मार्ग ही सर्वोत्तम प्रशस्त मार्ग है।

आप्त वाणी की दुर्लभता

पामर प्राणी को सर्वज्ञ कथित प्रवचनों की प्राप्ति अति दुष्कर मानी है। इसका कारण यह है कि सम्यक् श्रुत की तह तक पहुँचना एव उसे ठीक तरह से समझना हर एक के बस की बात नहीं है। पाप-श्रुत को समझना बहुत आसान है, अतएव मिथ्याश्रुत का फैलाव जन-जीवन मे जल्दी हुआ करता है। यह एक ऐसा कदम है जिसके दल दल मे जीवात्मा फँस कर दम तोड देता है परन्तु मुक्त नही हो पाता है।

माणुस्स विग्गह लद्धु, सुई धम्मस्स दुल्लहा।
ज सोच्चा पडिवज्जति, तव खतिमहिंसय॥

मानव जन्म मिल जाने पर भी उस सम्यक्-श्रुत धर्म का सुनना दुर्लभ माना है और उसके श्रवण करने पर ही इस जीवात्मा को तप, क्षमा, अहिंसा तत्वो की उपलब्धि होती है। वस्तुतः जन्म जरा-मृत्यु की भयावनी शृखला को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए निश्चयमेव सम्यक् श्रुत रूप स्वाध्याय रामबाण औषधि सिद्ध हुई है। इसका लक्ष्य है—मनोविग्रह एव अज्ञान का अन्त करना। वस्तुत ज्ञान रूपी सम्पत्ति स्वाध्याय के माध्यम से इकट्ठी होती है। ज्ञान-दीप को अमर रखने के लिए स्वाध्याय रूपी तेल उडेलना होगा। तभी आन्तरिक जीवन देदीप्यमान होगा।

स्वाध्याय का सुन्दर स्वरूप

श्री विजय मुनि

ज्ञान पिपासु को जो अपना,
जीवन सफल बनाना है ।
निश्चय करना स्वाध्याय,
अरे ! आतम का जो खजाना है ।।

आप्त वचन का चिंतन करना,
स्वाध्याय कहलाता है ।
वास्तविक सुख को पाता है वह,
विमल विशुद्ध बन जाता है ।।

ज्ञानावरणीय कर्म टूटते,
स्वाध्याय तप बडा प्रबल ।
स्व-पर जीवन उज्जवल करता,
स्वाध्याय है सत्य-सबल ।।

जीवन का आधार है बन्धु !
सब ही गाते है महिमा ।
जिसने अपने मे अपनाया,
उसकी भी गौरव गरिमा ।।

स्वाध्याय मे गुण अनेक है,
सूत्र मे जिसको बतलाया ।
श्रुतज्ञान का प्राप्ति होती है,
जिसने भी इसको अपनाया ।।

एकाग्र चित्त होता है इससे,
इस पर श्रद्धा पूर्ण करो ।
अज्ञान हटाना हो तो भाई !,
स्वाध्याय को वरण करो ॥

मिथ्याश्रुत को छोड़ अगर,
जो सम्यक् श्रुत को अपनाये ।
तभी जागती ज्योति दिल में,
मन नन्दनवन बन जाए ॥

स्वाध्यायी संघ जहाँ भी जाता,
ज्ञान प्रकाश ही करता है ।
स्वाध्यायी नर-नारी बने.
यह "विजय" कामना करता है ॥

स्वाध्याय : मनन और मीमांसा

श्री रमेश मुनि शास्त्री

स्वाध्याय की उज्ज्वल शुभ्र किरणें जीवन के विभिन्न परिपार्श्वों मे परिव्याप्त गहन अधकार को तिरोहित करती है, मन-मस्तिष्क को नया आलोक देती है और मोह कालुष्य का शमन करके जीवन के अणु मे चादनी जैसा प्रकाश भर देती हैं।

आगम-साहित्य मे स्वाध्याय को नन्दन-वन की उपमा से उपमित किया गया है। जैसे नन्दन वन मे चारों ओर से मानव के अन्तरग को आनन्दित करने वाले रमणीय दृश्य होते हैं, वैसे ही स्वाध्याय रूपी नन्दनवन मे पहुँचकर मानव आनन्द मे झूम-झूम जाता है। उसके जीवन का हर कोण वैडुर्यरत्न की भाँति प्रदीप्तमान् हो उठता है।

मानसिक शुद्धि के लिये तप के विविध स्वरूपो का वर्णन जैनागम मे उपलब्ध होता है। उनमे स्वाध्याय और ध्यान प्रमुख हैं, ये दोनो मन को एकाग्र एव शुद्ध करने के अमोघ साधन हैं।[1] मन मे जब-जब दुर्विचार और विकल्प की आंधी आये, स्वाध्याय मे जुट जाएँ, मन उन दुर्विचारो की आधी से निकलकर, शुद्ध विचारों मे स्थिर हो जायेगा, निर्मल एव निर्दोष बन जायेगा।

स्वाध्याय की परिभाषा

स्वाध्याय की परिभाषा करते हुये यह बताया गया है कि सद्-शास्त्रो का मर्यादा पूर्वक पठन करना, विधिपूर्वक अच्छी पुस्तको का अध्ययन करना स्वाध्याय है[2]। स्वाध्याय शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ इस प्रकार हैं—अपना अपने भीतर अध्ययन अर्थात् आत्मचिन्तन मनन स्वाध्याय है।[3] सुअध्याय अर्थात् श्रेष्ठ अध्ययन का नाम स्वाध्याय है साराश यह है कि आत्म कल्याणकारी पठन-पाठन रूप श्रेष्ठ अध्ययन का नाम ही स्वाध्याय है।[4]

वैदिक विद्वान् ने स्वाध्याय का अर्थ किया है— किसी अन्य की सहायता के बिना स्वय ही अध्ययन करना, अध्ययन किये हुए का मनन करना और निदिध्यासन करना। दूसरा अर्थ किया कि अपने आप का अध्ययन करना, साथ ही यह चिन्तन करना कि स्वय का जीवन उन्नत हो रहा है या नही।

स्वाध्याय के सन्दर्भ मे यह ध्यातव्य है कि सभी प्रकार का अध्ययन स्वाध्याय के अन्तर्गत नही आता। जिस प्रकार अहितकर भोजन शरीर मे रोग पैदा कर देता है, उसी प्रकार गलत पुस्तको के अध्ययन करने से

1. सज्झायझाण सजुत्तो—उत्तराध्ययन
2. सुष्ठु आ-मर्यादया अधीयते इति स्वाध्यायः —आचार्य अभयदेव
3. स्वस्य स्वास्मिन् अध्याय.-स्वाध्याय. ।। —स्थानाग टीका, 5/3/465
4. अध्ययन अध्याय: शोभनो अध्याय स्वाध्याय.– आवश्यक सूत्र–4, अ —चन्द्रप्रज्ञप्ति ९१

बुद्धि कुण्ठित हो जाती है, मन दूषित हो जाता है, जीवन की चादर मैली हो जाती है। अत. सुन्दर विचारो को जगाने वाला साहित्य ही स्वाध्याय की कोटि मे आता है और यही आत्म शुद्धि का साधन भी है।

श्रमण प्रभु महावीर ने कहा है—स्वाध्याय करते रहने से समस्त दुःखो से मुक्ति हो जाती है,[5] जन्म-जन्मान्तरो मे संचित किये हुए—अनेक प्रकार के कर्म क्षीण हो जाते हैं।[6] अनेक भवो मे संचित दुष्कर्म को स्वाध्याय द्वारा क्षण भर मे खपाया जा सकता है।

स्वाध्याय का फल बताते हुए श्रमण प्रभु ने कहा है—स्वाध्याय करने से ज्ञानावरण कर्मों का क्षय हो जाता है[7]। स्वाध्याय से आत्मा मे निर्मलज्ञान की ज्योति जगमगाने लगती है। ज्ञान का दिव्य आलोक जीवन आलोकित कर देता है। जीवन मे आधि, व्याधि और उपाधि के काले कजराले बादल नही मण्डराते। वस्तुत स्वाध्याय अन्त प्रेक्षण है अज्ञान रूपी रोग को नष्ट करने के लिये स्वाध्याय रामबाण दवा है।

योग दर्शन के भाष्यकार महर्षि व्यास ने कहा है—स्वाध्याय से योग की प्राप्ति होती है। जो साधक स्वाध्याय मूलक योग की सम्यक् साधना करता है उसके समक्ष परमात्मा प्रकट हो जाता है तात्पर्य यह है कि वह स्वयं परमात्मा बन जाता है।[8]

स्वाध्याय वाणी का तप है। अन्तर् के ज्ञानदीप को प्रज्वलित करने के लिए स्वाध्याय आवश्यक ही नही, अनिवार्य है यह एक अभूतपूर्व तप है। इसकी बराबरी का तप अतीत मे न कभी हुआ, वर्तमान मे न कहीं है और न कभी होगा।[9]

इस तप की उत्कृष्टता बताते हुये यहाँ तक कहा गया है कि स्वाध्याय स्वय मे एक तप है।[10] इसकी साधना-आराधना में कभी भी प्रमाद नहीं करना चाहिये।[11]

स्वाध्याय रूपी चिन्तामणि रत्न की प्राप्ति जिस को हो जाती है। उसके सामने कुबेर का रत्न-कोष भी कुछ मूल्य नहीं रखता है। स्वाध्याय सब भावों का प्रकाशक है।[12] स्वाध्याय को सर्व दुःख विमोचन भी कहा गया है।[13]

स्वाध्याय के प्रकार

आगम साहित्य मे स्वाध्याय के पाच भेदो का निरूपण हुआ है, यथा वाचना, पृच्छना, परिवर्तना अनुप्रेक्षा और धर्मकथा।[14] यहाँ उन पर विचार किया जा रहा है—

---

5 सज्झाएवा निउत्तेण सव्वदुक्ख विमोक्खणो —उत्तराध्ययन सूत्र २६।१०

6 बहुभवे संचियं खलु सज्झाएण खणे खवइ

7 सज्झाएण नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ —उत्तर० २९।१८

8 स्वाध्यायाद् योगमासीत्, योगात्स्वाध्यायमामनेत्। स्वाध्याय-योगसंपत्त्या परमात्मा प्रकाशते ॥ योगदर्शन ९।२८

9 बृहत्कल्प भाष्य ११६९, तथा चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र ८९

10. तैत्तिरीय आरण्यक २।१४॥

11. तैत्तिरीयोपनिषद्—१।११।१॥

12 सज्झाय च तओ कुज्जा, सव्वभाव विभावण ॥ उत्तरा० २६।३७॥

13 उत्तराध्ययन—२६।१०

14 (क) भगवती सूत्र २५।७, (ख) स्थानांग, (ग) उववाई।

१ **वाचना**—सद्ग्रन्थो का अध्ययन करना, यदि स्वयं पढने मे असमर्थ हो तो दूसरों से सुनना, या दूसरों को सुनाना, यह सब वाचना के अन्तर्गत हैं। जिस व्यक्ति को पढने मे आनन्द की अनुभूति होती है, वह विना अधिक श्रम किये ही ज्ञानोपार्जन कर लेता है। साधक को पहले अपने आचारमूलक ग्रन्थो को गहराई से पढ लेना चाहिये, जिनसे आचारविधि या सदाचार की प्रेरणा-प्रकाश मिल सकें।

२ **पृच्छना**—पृच्छना स्वाध्याय व ज्ञानप्राप्ति का एक प्रधान अंग हैं, क्योकि शंका व जिज्ञासा होना मनुष्य मात्र का स्वभाव है। जव तक केवल ज्ञान की प्राप्ति न हो तव तक जिज्ञासा उठती रहती है। पृच्छना मे दो वातो का विशेष ध्यान रखना चाहिए। पूछना जिज्ञासा पूर्वक होना चाहिये। मात्र दिमाग चाटने की भावना न होनी चाहिये या जिनसे द्वेष या विवाद खडा होता हो, इस प्रकार के प्रश्न नही होने चाहिये। प्रश्न के मूल मे शुद्ध जिज्ञासा की सौरभ महकनी चाहिए तथा जिससे पूछा जाय उसका विनय व सत्कार करना चाहिए। मैं आप से अमुक वात पूछना चाहता हूँ आप कृपा कर इसका उत्तर देंगे तो मैं वहुत ही आभारी होऊँगा। समाधान पाकर फिर उनका आभार प्रकट करना चाहिये। और विनय पूर्वक उठना चाहिये। यही पृच्छना स्वाध्याय है।

३ **परिवर्तना**—पठित ज्ञान को, कण्ठस्थ किये हुए तत्त्व को, स्मृति मे स्थिर रखने के लिए पुनरावर्तन करना परिवर्तन कहलाता है। जो याद किया गया है उसे वार-वार दुहराया नही जाय तो धीरे-धीरे वह स्मृतिपटल से उतर जाता है, विस्मृत हो जाता है पर पुन-पुन. दुहराने से ज्ञान स्थिर होता है। सीखी हुई विद्या को जितना अधिक दुहराया जायेगा वह उतनी ही याद रहेगी।

४. **अनुप्रेक्षा**—सूत्र वाचना, जो ग्रहण किया है उस पर विस्तार के साथ गम्भीर चिंतवन करना, गम्भीर चिन्तन करने से ज्ञान में चमक-दमक आ जाती है। अनुप्रेक्षा एक प्रकार की सीढियाँ हैं जो तन्मयता के भव्य भवन पर चढने के लिये एक से दूसरी सीढी, दूसरी से तीसरी सीढी, पर यो आगे से आगे ऊँचाई पर पहुँचा जाता है। संक्षेप में अनुप्रेक्षा में एक प्रकार की ध्यान की स्थिति आ जाती है।

५ **धर्मकथा**—धर्मकथा स्वाध्याय का पाचवाँ भेद है। धर्मकथा को पांचवे स्थान पर रखने का एक कारण यह भी है कि साधारण ज्ञान कभी प्रवक्ता व उपदेशक वन नही सकता। इसके लिये गहरा अध्ययन अनुभव स्व-पर मत का प्रामाणिक ज्ञान होना नितान्त अपेक्षित है।

धर्मकथा चार प्रकार की कही गई है—

१ **आक्षेपणी**—स्याद्वाद ध्वनि से युक्त अपने सिद्धान्तो का मण्डन करने वाली उपदेशात्मक कथा आक्षेपणी कथा है।

२ **विक्षेपणी**---अपने सिद्धान्त के मण्डन के साथ दूसरे सिद्धान्त में रहे हुए दोषो का वर्णन कर स्व-सिद्धान्त मे दृढनिष्ठा पैदा कराने वाली कथा विक्षेपणी कथा है।

३. **सवेगनी**—कर्मो के विपाक फलो की विरसता वताकर ससार से वैराग्य उत्पन्न कराने वाली कथा सवेगनी कथा है।

४. **निर्वेदनी**—हिंसा, असत्य आदि के कटुफल वताकर अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य आदि का उपदेश देकर व्यक्ति को त्याग के महापथ की ओर मोडने वाली कथा निर्वेदनी कथा है।

इस प्रकार स्वाध्याय के सम्बन्ध मे यहाँ सक्षिप्त विचारणा की गई है। वस्तुतः स्वाध्याय द्वारा जीवन का कण-कण स्फूर्तिमान एव तेजोदीप्त हो उठता है और अन्तश्चैतन्य देव जागरण की अगड़ाइयाँ लेने लगता है।

स्वाध्याय : स्वरूप और महत्ता

श्री महावीर प्रसाद जैन

जैन धर्म की मान्यता के अनुसार आत्मा अनन्त-ज्ञानमयी है किन्तु कषायों अर्थात् राग-द्वेष, काम-क्रोध लोभ, मद के आस्रव के कारण उस अनन्त ज्ञान का आवरण होता रहता है। इसे ज्ञानावरण नाम का प्रथम कर्म भी कहते है। 'आत्मा' रूपी समुद्र मे 'कर्म' काई की हल्की परत के समान हैं। जैसे ही यह काई की परत हटाई, उसके नीचे निर्मल जल का अथाह सागर हिलोरें लेते लगता है। ये ही स्थिति 'ज्ञानावर्णीय' कर्म की है। 'अज्ञान' व 'कषायो' की हल्की परत हमारी आत्मा के ज्ञानसागर पर छाई हुई है। 'स्वाध्याय' के द्वारा इसको हटा देने पर आत्मा का ज्ञान स्वयमेव प्रकट हो जायगा।

अब प्रश्न उठता है कि 'स्वाध्याय' क्या है? यदि कोई व्यक्ति स्वय कुछ भी पढ ले तो क्या वह स्वाध्यायी हो जायगा? व्यवहार मे तो आज की सभ्यता मे पला प्रत्येक व्यक्ति सुबह से पहले ही समाचार पत्र का स्वाध्याय कर लेता है। अमूल्य समय का अधिकाश भाग 'तोना-मैना' के किस्सो, या विभिन्न प्रकार के उपन्यासो के अध्ययन मे व्यय कर दिया जाता है, किन्तु क्या यही स्वाध्याय है? सच तो यह है कि आत्मा को जानने व समझने वाले व्यक्ति के लिये यह अध्ययन सर्वथा निरर्थक है। आध्यात्म की भाषा में स्वाध्याय का सही अर्थ 'स्व' अर्थात् 'आत्मा', अधि- अर्थात् 'ज्ञान' और यान अर्थात् जानकारी है। आत्मा के बारे मे जानना, चिन्तन एवं मनन करना ही सही अर्थों मे स्वाध्याय है।

जैन शास्त्रो मे स्वाध्याय के महत्त्व पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। यह सन्तोष का विषय है कि जैन धर्म के विभिन्न सम्प्रदायो मे स्वाध्याय की महत्ता और ढग मे कोई विशेष अन्तर नही है। चाहे श्वेताम्बर मत हो अथवा दिगम्बर, मूर्तिपूजक सम्प्रदाय हो अथवा स्थानकवासी, स्वाध्याय प्रत्येक जैन श्रावक के लिये आवश्यक कार्यों की गिनती मे आता है। यही नही अन्तरग तपो मे स्वाध्याय एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। जैन साधुओं की दैनिक जीवनचर्या स्वाध्याय द्वारा ही पूर्ण होती है। पुरुषार्थ सिद्धि उपाय की १९९वी गाथा मे अतरग तप के भेद बतलाते हुए लिखा है—

"विनयो वैयावृत्य प्रायश्चित तथैवचोत्सर्ग
स्वाध्यायोदय ध्यान भवति निषेव्य तपोन्तरगमिति"

इसी प्रकार 'सागर धर्मामृत' मे श्रावको के योग्य कार्यो की सूची मे भी स्वाध्याय अर्थात् जिनागम के रहस्य को विनयपूर्वक विचारने का उपदेश दिया है। यथा—

'कविर्श्रम्य गुरु सब्रह्मचरित्रैमोर्यिभि' सह
जिनागम रहस्यानि विनयेन विचारयेत।"

स्वाध्याय की सर्वविदित महत्ता पर कोई सन्देह नही किया जा सकता है। अब प्रश्न उठता है कि स्वाध्याय किस चीज का किया जाय? कोई भी व्यक्ति जो अपने को आस्तिक मानता है, अर्थात् जो आत्मा की सत्ता एव परलोक पर विश्वास करता है, उसे तो 'स्व' अर्थात् आत्मा का अध्यायन करते

की आवश्यकता है ही परन्तु यदि कोई जिज्ञासु आत्मा, परमात्मा, परलोक आदि के अस्तित्व पर विश्वास तो नही करता किन्तु अपने हृदय और मस्तिष्क पटल खुले रखने का दावा करता है, तो उसे स्वाध्याय द्वारा ज्ञानार्जन होना स्वाभाविक है और इस माध्यम से वह वह एक न एक दिन अपने स्वयं की सत्ता अर्थात् आत्मा की विभिन्न स्थितियों पर विश्वास करने लगेगा, श्रद्धा करने लगेगा उसे 'सम्यगदर्शन' हो जायगा। यदि आत्मा की सत्ता पर विश्वास हो जायगा तो उसकी शक्ति, शक्ति को प्रभावित करने वाले तत्त्व, शक्ति का आवरण करने वाले तथ्य इत्यादि की जानकारी भी हो जायेगी आत्म विश्वास होगा तो आत्म-ज्ञान भी होगा, भेद-ज्ञान होगा और अन्तत "सम्यगज्ञान" होगा। 'श्रद्धा', 'विश्वास' और 'ज्ञान' होने के पश्चात मनुष्य स्वाभाविक रूप से चरित्र निर्माण की ओर अग्रसर होगा और आत्मा कल्याण के लिये कुछ करने के लिये प्रयास करेगा और वह उसका 'सम्यक्चारित्र' होगा।

अत उपर्युक्त गुणो को प्राप्त करने हेतु हमे किसी ऐसी वस्तु का अध्ययन करना है जिसमे के बारे में कुछ हो। आत्मा एक तो नहीं हो सकती किन्तु एक जैसी अनेक हो सकती हैं और चू कि सब आत्माएं एक जैसी हैं तो सन्देह उत्पन्न होता कि क्या परमात्मा जैसी कोई चीज है; और इसका उत्तर हमे उन शास्त्रो के अध्ययन से प्राप्त होगा जो उन आत्माओ की वाणी के आधार पर बने हैं जिन्हे हम परमात्मा की सज्ञा देते हैं। वह परमात्मा जैन धर्म के सिद्धान्तों के अनुसार एक नही किन्तु अनन्त हैं और वे सब परमात्मा अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान अनन्त सुखमय हैं, चिदानन्द हैं एवं सर्वगुणा सम्पन्न हैं। वे वीतरागी हैं अत किसी का भला-बुरा नही करते है। वे कर्ता नही है परन्तु सर्वज्ञ हैं, सर्वद्रष्टा हैं, हितोपदेशी हैं, पथ-प्रदर्शक एव प्रेरक हैं। प्रत्येक आत्मा अपने स्वय के पुरुषार्थ एव उद्यम से परमात्मा बन सकता है। यह सब अध्ययन, ऐसे सब शास्त्र, ऐसे सब लेख, प्रवचन, भाषण जो हमे परमात्मा बनाने की प्रेरणा दें, मार्ग-दर्शन करें, स्वाध्याय के योग्य हैं।

विभिन्न धर्मावलम्बियो ने इसी प्रकार के अध्ययन को 'श्रुति' अथवा 'श्रुत' की सज्ञा दी है और इन दोनो शब्दों का 'श्रवण' से सम्बन्ध है। स्वाध्याय उन्ही तत्वो का करना है जो 'शुद्ध प्रमाण' की कोटि मे आते हैं। जैन धर्म की मान्यता के अनुसार 'आप्त' पुरुषों के विशिष्ट वचनो का ही सकलन ही मौलिक साहित्य है स्वाध्याय के योग्य है। साधारण पुरुषो वचन जो हर कही रागद्वेष से अथवा पूजा-ख्याति अथवा धन कमाने के प्रयोजन से सकलित एव शास्त्र-बद्ध किये गये हो व आध्यात्मिक पुरुष के स्वाध्य के स्वाध्याय के योग्य नहीं हैं। अत जैन परम्परा का श्रुत साहित्य वह है जो 'अर्थत तीर्थंकर देवो द्वारा कहा गया हो और तदनन्तर तीर्थ करो के साक्षात् शिष्य श्रुत केवली गणधरो द्वारा सूत्र रूप मे रचा गया हो एवं उनके पश्चात् विशुद्धागम विशिष्ट बुद्धि शक्ति सम्पन्न आचार्यों के द्वारा काल एव सहनन आदि दोषों के कारण अल्पबुद्धि शिष्यो के लिये रचा गया हो।"

सक्षेप मे "जिनवाणी" का स्वाध्याय अभीष्ट है। राग और द्वेष के विजेता को 'जिन' कहते हैं। अनन्त आत्माएँ जिन हो गई हैं, हो रही हैं और होती रहेगी। भगवान् ऋषभदेव और भगवान् महावीर भी जिन थे। वे तीर्थंकर भी थे। तीर्थ कर की वाणी को ही 'जिनवाणी' या आगम कहते हैं। जैन सस्कृति तथा जैन परम्परा के मूल विचारो का और आचार्यों का मूल स्रोत आगम वाङ्मय है। जैन परम्परा का साहित्य बहुत विशाल है। आगमो मे धर्म, दर्शन, संस्कृति, तत्त्व, गणित, ज्योतिष, खगोल भूगोल और इतिहास तथा समाज, सभी प्रकार के विषय यथा

प्रसग आ जाते हैं। समस्त आगमो को चार अनुयोगो मे बांटा गया है[1] —

(१) प्रथमानुयोग—जिन ग्रन्थो मे तीर्थंकरो आदि त्रेसठ शलाका पुरुषों (२४ तीर्थंकर, १२ चक्रवर्ती, ९ बलभद्र, ९ नारायण, ९ प्रतिनारायण ये ६३ शलाका यानि गणनीय पुरुष हैं) ऋषियों, पुण्यशाली, महान पुरुषों का जीवन चरित्र हो वे ग्रंथ प्रथमानुयोग के हैं। जैसे, आदिपुराण, पद्मपुराण, पाडव पुराण, हरिवंशपुराण आदि '

(२) कारणानुयोग—जिन ग्रन्थो में त्रिलोक का, काल परिवर्तन का, गणित सूत्रो का वर्णन हैं। वे करणानुयोग हैं, जैसे त्रिलोकसार, त्रिलोयपण्णति आदि। करण शब्द का अर्थ 'जीव के परिणाम' से भी है। इनका वर्णन गोम्मटसार, लब्धीसार, क्षपणसार में है।

(३) चरणानुयोग—जिनमे मुनिचर्या तथा गृहस्थ के आचार का वर्णन हो—जैसे मूलाचार, आचारसार, रत्नकरण श्रावकाचार, सागार व अनागार धर्मामृत।

(४) द्रव्यानुयोग—जिन ग्रन्थो में ६ द्रव्यों, पंच अस्तिकायो, गुण पर्यायों, तत्वों, ९ पदार्थों आदि का दार्शनिक कथन हो वे द्रव्यानुयोग के ग्रंथ हैं। जैसे समयसार, प्रवचनसार, द्रव्य संग्रह आदि।

उपर्युक्त सब शास्त्रों में आत्मा तथा उससे सम्बन्धित पदार्थों को आधार बना कर वस्तु-स्वरूप का कथन किया गया है। कथा, तत्त्वज्ञान, उपदेश द्वारा इनका स्वाध्याय वांछनीय है और वास्तव में यही स्वाध्याय है जो आत्मविकास तथा जीवन-विकास के लिये अभीष्ट है।

अन्त मे इस विवेचन में यह लिखना भी उचित होगा कि स्वाध्यायकर्ता को निम्न स्थितियो से गुजरना आवश्यक है (१) वाचना, यानि पढना, (२) पूंछना, (३) चिन्तन करना, (४) मनन करना तथा (५) प्रवचन करना। स्वाध्याय द्वारा सम्यग्ज्ञान प्राप्ति होती है, अन्य जीवों के सम्यज्ञान का बोध होता है, परिणाम स्थित रहता है, ससार से वैराग्य होता है, धर्म की वृद्धि होती है और अनेक गुण प्रकट होते हैं, अतः नियमित स्वाध्याय करना चाहिये।

१—इन अनुयोगों के परिचय में उदाहरण स्वरूप जिन ग्रंथों का नामोल्लेख किया गया है, वह दिगम्बर परम्परा की मान्यता के अनुसार है। —सम्पादक।

सहायक कुल सचिव, राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर—४

स्वाध्याय और ध्यान

श्री हीरा मुनि 'हिमकर'

रथ के दो पहियो की तरह साधना क्षेत्र मे स्वाध्याय व ध्यान समान भावेन सम्बन्धित माने गए हैं। ध्याता का जो मौलिक ध्येय है वह स्वाध्याय की आराधना किए बिना प्राप्त नही हो पाता। बिना ध्यान के स्वाध्याय वन्ध्या नारी के समान है। वही विद्यार्थी परीक्षा मे सफल होगा जो ध्यान पूर्वक अध्ययन करता है। औषधि का विधिवत सेवन करने पर व्याधि शान्त होती है, स्वास्थ्य सुधर जाता है, यही गतिविधि हमारे स्वाध्याय और ध्यान की मानी जाती है।

श्रुतस्य अध्ययनं स्वाध्याय अर्थात् जिनागम का पठन पाठन करना स्वाध्याय माना गया है। वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा एवम् धर्म कथा ये स्वाध्याय के पाच प्रकार माने गए हैं, आज का युग शिक्षा युग हैं। साक्षरता के रूप मे ज्ञान का काफी विस्तार हुआ है पर आगम वाचन कहाँ कितना हो रहा है, हमारे महात्मा तथा समाज के नेताओ को देखना चाहिए।

पृच्छना, प्रश्न करना, जानकारी करना, वाचन किए बिना ऐसा नही हो सकता, बिना वांचन किये न प्रश्न किया जा सकता है न जानकारी प्राप्त की जा सकती है। पहले की अपेक्षा आज थोकडो, व तत्वज्ञान सम्बन्धी प्रश्नोत्तरो की परम्परा बहुत मदी होती चली जा रही है। परिवर्तना और अनुप्रेक्षा, वांचना के ही अग है, वाचना के अभाव मे ये दोनो अग आज लुप्त होते चले जा रहे हैं। इन चार प्रकार के स्वाध्याय के अभाव मे वक्ता की धर्म कथा भी श्रोताओ के लिए रस प्रद हो नही सकती कारण उसमे तैयारी का अभाव रहता है। इसलिए स्वाध्याय का प्रचार ऐसे ढग से होना चाहिए कि वक्ता तैयार हो सके।

"झाणे चउव्वि हे पण्णते" औपपातिक सूत्र

ध्यान चार प्रकार से विभाजित किया गया है। आर्त्त, रौद्र, धर्म एवम् शुक्ल। दुखितस्य वा ध्यान आर्त ध्यान दुखी अवस्था मे जो चिंता की ज्वाला जलती है वही आर्त ध्यान है। रोदयति पटाद् इति रुद्र. किसी विषय को लेकर के रोता है वही रुद्र ध्यान है। ये दोनो अशुद्ध-अशुभ ध्यान माने जाते हैं, इनसे व्यक्ति स्वयं दुखी होता है और दूसरो को भी रूलाता है इस बुरे ध्याष से बचने के लिये स्वाध्याय आवश्यक है। कारण बिना ज्ञान दुख का अंत नही हो सकता, वर्तमान युग विज्ञान वादी होता चला जा रहा है सुख बढ़ने के बजाय प्रतिदिन घटता चला जा रहा है कारण धार्मिक स्वाध्याय जीवन मे न होने से अच्छी प्रवृत्तियो में रुचि व धर्मोपदेश रुचि का अभाव रहता है। सूत्र रुचि आदि ध्यान के लक्षण माने गये हैं। इन लक्षणो के अभाव से ही स्वाध्याय की परम्परा शिथिल होती जा रही है। आज के हमारे त्यागी वर्ग मे भी वह स्वाध्याय की उमग की पूर्वापेक्षा, बड़ी मन्दी गति से चल रही है। उसमे

पुन. जागृति लाने के लिए हमे कुछ नये तरीके से सोचना पडेगा जिससे हमारा आधुनिक वर्ग स्वाध्याय की तरफ रुचि रख सके। उसके लिए समाज मे सप और सगठन पर अधिक बल देना होगा जिन बातो को हम अपना सिद्धान्त बनाकर आपस मे मन-भेद बना लेते हैं उनको अवश्य हटाना पडेगा।

स्वाध्याय के जो प्रकार हैं वे ही ध्यान के अवलम्बन भी माने गये है। स्वाध्याय की प्रवृत्ति को विशेष बढावा देने के लिए स्वाध्याय सघ की स्थापना की गयी है। वर्तमान मे इस सस्था के द्वारा जो लाभ हो रहा है वह मुख्यत पर्युषण पर्वाराधन तक ही सीमित है। साल भर के सस्कार आठ दिन मे पूरे हो नही सकते। इसलिए स्वाध्याय की योजना ऐसी होनी चाहिए जो साल भर चलती रहे और आबाल वृद्धजन उससे लाभ उठा सकें। धर्म के प्रचार मे जनता की रुचि बढाना कठिन जरूर है फिर भी हताश नही होना चाहिए।

स्वाध्याय के साथ ही ध्यान के सस्कार भी चालू रखना जरूरी है। उसके लिए जहां भी स्वाध्याय पाठ चले वहां आदि मध्य अन्तिम समय स्वाध्यायियो को ध्यान करवाना चाहिए। जिससे ध्यान के सस्कार बने रह सकें। इन दोनो का उद्देश्य है—आत्म शाति प्राप्त करना। देश में, समाज मे शाति लाने का यही उत्तम मार्ग है अत नियमित रूप से स्वाध्याय करते रहना चाहिये। स्वाध्याय मे प्रमाद के लिए कोई जगह नहीं है। कहा भी है—

निद्दं च न बहुमन्नेज्जा सप्पहासं विवज्जए।
मिहो कहाहिं न रमे सज्झायम्मि रओ सया॥

निद्रा अधिक नहीं लेना, व्यर्थ की हसी-मजाक नहीं करना, व्यर्थ की बातो मे समय पार नहीं करना जब भी समय मिले स्वाध्याय का लाभ उठाना। यह है शास्त्रीय परमार्थ। स्वाध्याय-ध्यान जीवन की पगो के साधन हैं। इन्ही से समय समय पर आत्मा को सहारा मिलता रहता है। राष्ट्र पिता महात्मा गाधी ने भी इस सम्बन्ध में कहा है—प्रार्थना का अर्थ है ईश्वर के साथ सम्भाषण करना और आत्म शक्ति के लिए प्रकाश प्राप्त करना जिनसे ईश्वर की सहायता से अपनी कमजोरियो पर हम विजय प्राप्त कर सकें।

हमारा ध्येय है-- आध्यात्मिक शक्ति विशेष प्राप्त करना। जीवन की प्रवृत्तियो वे होनी चाहिए जिसमे धर्म प्रचार होता रहे आत्मबल मिलता रहे। कारण भौतिक वैभव तथा देह बल परलोक का सहायक नही होता है। इसीलिए स्वाध्याय के साथ ध्यान की प्रवृत्तियां होने से आत्मा की प्रगति होती है। आत्म-विकास सम्बन्धी पठन-पाठन से गुण विशेष उत्पन्न होने पर ही ज्ञान का प्रकाश मिलता है। कहा भी है—

ज्ञान वैराग्य सम्पन्न, सवृतात्मा स्थिराशयः।
मुमुक्षुरुद्यमी शान्तो ध्याने धीरः प्रशस्यते॥

ज्ञान-वैराग से सम्पन्न होना, स्थिर आसन बैठ कर इन्द्रियो को वश करना, मोक्ष का अभिलाषा बनायी रखना, और अपने विचारो मे धीर-वीर शान्त मुद्रा वाला होना ध्यानी का लक्षण माना गया है। ध्यानीजन की यही पूर्व भूमिका मानी गयी है। आधुनिक युग मे इन तत्वो की बडी जरुरत है। भौतिकवाद की चकाचौध मे ऐसे तत्वो का पनपना बडा कठिन होता जा रहा है। इन्हे पनपाने के लिए सम्मिलित रूप से व्यापक स्तर पर प्रयत्न किये जाने चाहिए।

स्वाध्याय और ध्यान हमेशा एकान्तवास मे शोभा देते है। एकान्तवास मे रहना आज भारी कठिन है कारण आज की अखबारी दुनियां का आकर्षण दिनोदिन बढता जा रहा है। पर यह निश्चित है कि एकान्तवास किये बिना वस्तु पल्ले नही पड सकती। कहा भी है—

यत्र रागादयो दोषा, अजस्त्रं यान्ति लाघवम् ।
तत्रैव वसतिः साध्वी, ध्यान काले विशेषत ॥

साधना क्षेत्र में प्रवेश करने वाले के लिए यह एक महत्वपूर्ण मार्ग-दर्शन है। ध्यान का अवलम्बन स्वाध्याय है। स्वाध्याय का अवलम्बन रुचि व रुचि आत्मा के साथ रहने वाली है। कारण आत्मा स्वय ज्ञान रूप है तो जब ध्याता अन्य वस्तु का आधार न लेकर अपना ही ध्यान करे तब वह सच्चा आत्मज्ञानी बन बैठता है। स्वाध्याय एक तप है तो ध्यान उस तप मे चित्त समाधि पैदा करने वाला है। अपने-अपने स्थान पर दोनो महान् तत्व माने गये है। हमारे देश, राष्ट्र, समाज और व्यक्ति को कल्याण प्रद मार्ग तथा सुख-शाति देने वाले ये दोनो तत्व हैं।

आत्म-विकास में स्वाध्याय की भूमिका

डा छविनाथ त्रिपाठी

आत्म विकास और स्वाध्याय :

आत्म-विकास और स्वाध्याय का सम्बन्ध साध्य-साधन के रूप मे अभिहित किया जा सकता है। प्रत्येक साधन, साध्य की उपलब्धि का माध्यम होता है, किन्तु वह साधन निश्चित रूप से महत्वपूर्ण होता है, जो अपने अस्तित्व मे ही साध्य का बोध कराता हो। स्वाध्याय, स्व द्वारा किया गया अध्ययन मात्र नहीं है, वह 'स्व' का अध्ययन भी है और इसी अर्थ में उसमें आत्म' भी अन्तर्निहित है। यह स्वाभाविक है कि आत्म-विकास का सर्वोत्तम साधन स्वाध्याय ही माना जाय।

स्वाध्याय की दो पद्धतियाँ :

मनोविज्ञान में अध्ययन की दो पद्धतियाँ प्रचलित हैं अन्तर्दर्शन पद्धति और बहिर्दर्शन पद्धति। इनमे से प्रथम पद्धति 'स्व' का ही अध्ययन है। अध्ययन का लक्ष्य ज्ञानार्जन है और स्वाध्याय 'स्व' का ज्ञानार्जन है; अत 'आत्मान विद्धि' की लक्ष्यपूर्ति इस अन्तर्दर्शन की पद्धति से ही संभव हो सकता है। स्वाध्याय की व्यक्तिगत अनुप्रेरणा आदत, जीवन-लक्ष्य, लालसा, अभिरुचि, मनोवृत्ति और अचेतन-पर निर्भर करती है।

स्वाध्याय आत्म-स्वातंत्र्य का मूल -

आत्म गौरव और आत्महीनता की प्रवृत्तियाँ तो जन्मजात होती हैं, परन्तु इन्हे प्रोत्साहन तो सामाजिक रीति-रिवाजो और प्रभावो से मिलता है। संतुलन के अभाव मे इनमे से कोई भी एका प्रवृत्ति आत्म-विकास मे बाधक है। ये दोनो ही वासना या आत्मा पर पडे कर्मरज के प्रतीक हैं। भगवान् महावीर ने आत्म-स्वातन्त्र्य को ही सुख का मूल माना है। जो आत्मा वासनाओ या कर्म रजो से मुक्त नहीं होगी, उसका विकास कैसे सभव होगा। स्व के ज्ञानार्जन से ही कर्मरजो की पहचान होती है। उनके क्षरण की प्रक्रिया ज्ञात होती है और आत्म-स्वातन्त्र्य के पथ और मजिल की झलक मिलती है। ज्ञान मात्र से ही नही, उपलब्ध ज्ञान को क्रियात्मक रूप देने से इस स्वातन्त्र्य (ज्ञानक्रियाभ्याम् मोक्ष) की उपलब्धि होनी है। स्वाध्याय ज्ञानार्जन की क्रिया भी है और ज्ञानयुक्त क्रिया का प्रेरक भी।

स्वाध्याय विवेक का जनक ·

आध्यात्मिक जगत का 'ज्ञान' ही भौतिक जगत का 'विवेक' है। 'जयं चरे जय चट्ठे' के मूल मे यह विवेक ही तो है। तुलसी की 'सुमति-भूमि' ही इस विवेक-बीज का आश्रय है। विवेक स्वाध्याय से प्राप्त होता है। विवेक ही ज्ञान है; ज्ञान गुण है, आत्मा गुणी अनावृत ज्ञान ही आत्मा के स्वरूप को स्पष्ट करता है। विवेकी ही इस ससार-कान्तार मे कभी खिन्न नही होता। (उत्तराध्ययन २९।५९)

स्वाध्याय : मन का शिवसकल्प :

स्वाध्याय मन का शिव-संकल्प है, क्योकि वह आत्म-ज्ञान की उपलब्धि का माध्यम है। स्वमति, पर-व्याकरण और परेतर उपदेश को ज्ञान-प्राप्ति का माध्यम माना गया है। स्वाध्याय मे ये दोनो ही माध्यम अन्तर्निहित हैं। आगम-निगम के साथ प्राचीनागत मतवाद, विविध आचार्यों का दृष्टिकोण ही तो अध्ययन-योग्य है। भ्रान्तियो का निराकरण और त्रुटियों की पूर्ति भी अध्ययन का लक्ष्य है, किन्तु स्वाध्याय में स्वयपठन या श्रवण के उपरान्त मनन और निदिध्यासन की भी व्यवस्था है। पूर्ण वोध तो मनन और निदिध्यासन के वाद ही होता है। शिक्षितो के लिए स्वय पठन और अशिक्षितो के लिए गुरु या आचार्य से श्रवण. यह सिद्ध करता है कि स्वाध्याय किसी वर्ग-विशेष के लिए सुरक्षित नही है। आत्म-विकास की प्रक्रिया मे स्वाध्याय का पथ सवके लिए समान रूप से मुक्त है। (शुक रहस्योपनिषद् ३।१३) यहा प्रतिद्वन्दिता भी नही है। स्वाध्याय का सम्वन्ध चिन्तन से है, जो अमूर्त है और मनन तथा चिन्तन जैसे अमूर्त साधनो से ही अमूर्त आत्मा पर पडे अमूर्त कर्म-सस्कार जन्य रज की सफाई हो सकती है।

'सोच्चा जाणइ कल्लाण' से श्रवण का महत्व ही ज्ञात होता है। श्रुत ज्ञान के लिए भी अध्ययन किया जाता है। यह एकाग्र चित्त से होना चाहिए। आत्मा को सुस्थापित करने के लिए भी अध्ययन किया जाता है, और दूसरो को सुस्थापित करने के लिए भी। (दश वैकालिक ९।३।।)

स्वाध्याय यज्ञ और तप .

ज्ञान-श्रवण के लिए भी उसी तन्मयता और एकाग्रता की आवश्यकता है, जो स्वय पठन के लिए। यही कारण है कि स्वाध्याय को वैदिक परम्परा से यज्ञ और जैन परम्परा में तप का पर्याय माना गया है। 'ऋतं च स्वाध्याय प्रवचने च' (तैत्ररीय १/९/१) 'ऋतं तप. श्रुत तप' (महानारायणोप० ७।८), 'स्वाध्याय ज्ञानयज्ञाश्च यतयः सशितव्रता:' (गीता ४।२८) आदि कथनो के साथ भगवान् महावीर के साढे वारह वर्षीय तप का विवरण देखें तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि उनका तप आचार शुद्धि और स्वाध्याय का ही तप था। अनेकान्त दृष्टि की उपलब्धि स्वाध्याय के बिना सभव ही नही है। आत्म-विद्या तपोमूलक ही है। (श्वेताश्व० १।१६)। स्वाध्याय दैवी सम्पत् है। इस सम्पत्ति की उपलब्धि चचल मन से सम्भव नही है, अत यम-नियम, अभ्यास और वैराग्य द्वारा इसके निग्रह की व्यवस्था की गई है। विषयो का ध्यान करने वाला पच कषायो के जाल में फँस जाता है। उसे विवेक की प्राप्ति नही हो सकती है।

'आचाराग' (३।४।१०६) हो या 'स्थानांग' (४२९,३०), दोनो ने ही आत्म-विकास का प्रथम चरण, पच कषायों से मुक्ति माना है। आत्म-विकास का द्वितीय चरण समत्व की साधना है। आत्म विकास के लिए सयम और विवेक की साधना को ही तप कहा गया है। (दश वै १०।७।) इन दोनो से ही लोकान्ति क्रान्त गोचरता प्राप्त होती है। (आचाराग ३।४।१२३।) यही आत्म-विकास की मजिल है। तप के इन दोनो चरणों की प्राप्ति का स्रोत स्वाध्याय है। सयम के लिए भी विवेक आवश्यक है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह यम हैं तो शौच, सन्तोष तप, स्वाध्याय, आत्म-चिन्तन, प्रणिधान नियम हैं। यम और नियम ही आत्म सस्कार के साधन हैं और सुसस्कृत ही आत्म-विकास के पथ पर आगे वढ सकता है।

स्वाध्याय और ध्यान

अष्टाग योग मे ध्यान, धारणा और समाधि उत्तरोत्तर श्रेष्ठ अग है। इन तीनो का अभ्यास स्वाध्याय से ही प्रारम्भ होता है। तीनो परस्पर संश्लिष्ट और एक दूसरे के पूरक हैं। अवधान (attention) और ध्यान मे अन्तर है। अवधान तो

उद्दिष्ट वस्तु या विचार को मस्तिष्क-केन्द्र मे लाने की मानसिक प्रक्रिया है, किन्तु ध्यान उसे केन्द्र मे सुस्थापित रखने का प्रयत्न है। इस प्रयत्न के सातत्य के अभाव के कारण ही अवधान चचल माना जाता है। अवधान अनियमित, ऐच्छिक और अनैच्छिक (अभिरुचि सपन्न) होता है। ध्यान एक ही प्रकार का होता है, जो बिना भय या पुरस्कार-लोभ के सम्पन्न होता है। स्वाध्याय मे तन्मय होने की प्रक्रिया और तन्मयता की स्थिति मे अन्तर होता है। स्वाध्याय मे तन्मयता समाधि का ही आभास कराती है। ध्यान की साधना, चिन्तन और अभ्यास द्वारा होती है, ध्यान निर्मथनाभ्यासात् (श्वेताश्व० २.४।) तन्मयता मे किए गए स्वाध्याय से ही एक शिक्षित व्यक्ति तत्त्वज्ञ बनता है और तत्त्वज्ञ को किसी उपदेश की आवश्यकता नही रहती। उपदेश तो तीर्थंकर-बन्ध के भी कारण बनते हैं, अत स्वाध्याय कही अधिक महत्वपूर्ण है। स्वाध्याय मे तन्मय व्यक्ति कम से कम उस समय तक पच कषायो से मुक्त रहता है और उसकी स्थिति एक समत्व-साधक की भाँति सासारिक क्रियाओ एव अनुभूतियों से मुक्त रहती है। यह स्पष्ट है कि आत्म-विकास के दोनो चरणो की साधना स्वाध्याय मे अन्तर्निहित है। स्वाध्याय के समय और अभ्यास को बढा कर कोई भी व्यक्ति आत्मज्ञ, विश्वज्ञ, जीवन्मुक्त, सिद्ध और जिन का स्तर प्राप्त कर सकता है। ये सभी आत्म-विकास के उच्चतम बिन्दु पर अधिष्ठित व्यक्तियों के नाम हैं।

स्वाध्याय केवल आध्यात्मिक दृष्टि से ही आत्म-विकास की साधना नही है, सांसारिक दृष्टि से भी यह एक महत्वपूर्ण साधना है। मानव-शरीर का सर्वोत्तम भाग मस्तिष्क है। इसकी समता एक मुद्रण-यन्त्र से की जा सकती है। मुद्रण-यन्त्र तो विश्राम भी लेता है, पर मस्तिष्क निरन्तर सक्रिय रहता है। चलता हुआ मुद्रण-यन्त्र निरन्तर कागज पर अपनी छाप लगाता जाता है, केवल कागज बदलने की आवश्यकता पड़ती है। भोजन द्वारा जिस प्रकार शरीर के अन्य अग बनते हैं, उसी प्रकार मस्तिष्क भी निर्मित होता रहता है। मस्तिष्क-निर्मित या यह नूतन प्रमेय ही कागज है, जो निरन्तर तह पर तह की तरह पल-पल नया लगता जाता है। यह मनुष्य पर निर्भर करता है कि मस्तिष्क के प्रत्येक नये कागज पर कुछ न कुछ अंकित करता चले। ये सारे कागज मुद्रित एव जिल्द वाली किताब की भाँति होते हैं, और हम जब चाहे किसी भी मुद्रित-पृष्ठ को एक एक पल मे खोल लेते हैं और उसे पुन पढ सकते हैं। इसे ही स्मृति कहा जाता है। ज्ञात-ज्ञान (मस्तिष्क मे मुद्रित ज्ञान) का नाम ही स्मृति है। मस्तिष्क पर ज्ञानांकन की प्रक्रिया जितनी गहरी, स्पष्ट एव प्रभावपूर्ण होगी, स्मृति भी उतनी ही स्वच्छ, सूक्ष्म, एवं सुपाठ्य होगी। यही कारण है कि प्रत्येक मनोवैज्ञानिक मस्तिष्क पर गहरे एव स्पष्ट ज्ञातांकन के लिए अवधान (Attention) को अपने विवेचन मे प्रमुख स्थान देता है।

ध्यान और अवधान

ज्ञान-ग्रहण की अपनी सतत-प्रक्रिया मे मस्तिष्क और अवधान इतने सश्लिष्ट होते हैं कि इन दोनो को पृथक-पृथक करना असभव है। जिस पर हमारा ध्यान नही है, मस्तिष्क उसका वरण ही नही करता। अचेतन और अवचेतन पर मुद्रित ज्ञान गहरा और स्पष्ट नही होता। इसकी स्मृति भी धुधली होती है, कभी हम ऐसे अस्पष्ट मुद्रित पृष्ठो को पढ भी नही पाते। यही कारण है कि अवधान को मानव-चेतना की वरण प्रक्रिया, किसी विचार को मस्तिष्क मे स्पष्ट रूप से अंकित करने की प्रक्रिया, सतत क्रमबद्ध प्रक्रिया, मानसिक-प्रक्रिया कहकर स्पष्ट किया जाता है। एक समय मे एक ही वस्तु या विचार पर ध्यान केन्द्रित हो सकता है। उसी की स्पष्ट छाप पड़ती है। अवधान से ज्ञानेन्द्रियो की सामर्थ्य बढती है। यह

सोद्देश्य होता है और चेतना-केन्द्र के साथ शरीर और उसकी प्रक्रियाओ को नियोजित कर लेता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह सत्य नही है कि एक ही समय मे कोई व्यक्ति सैकडो वस्तुओ या विचारो को चेतना-केन्द्र मे लाकर ग्रहण कर सकता है। एक पल मे सैकडो विचार धारण किए जा सकते है, इसका अर्थ सिर्फ इतना ही है कि एक पल को भी सैकडो भागो मे विभक्त कर क्रमिक रूप मे उन विचारो को मस्तिष्क पर अकित किया जा सकता है। यह मस्तिष्क की अद्भुत क्षमता का प्रदर्शन है जिसका सम्बन्ध अवधान से है। बाह्य जगत मे भी ऐसे मुद्रण-यन्त्र बन चुके हैं, जो एक पल मे अनेक पृष्ठ मुद्रित कर सकते हैं। मस्तिष्क इन मुद्रण यन्त्रो से भी अधिक वरण-प्रक्रिया में गतिशील है।

प्रत्येक अध्यापक को कुछ ऐसे छात्रो के दर्शन हो जाते हैं, जो ध्यान-मग्न होकर अपना पाठ सुनते हैं, और मस्तिष्क पर अकित कर लेते हैं। वे उस पाठ को बिना पुन पढे सुना सकते हैं। अन्धे छात्रो की यह शक्ति अधिक होती है, क्योकि नेत्रहीन होने के कारण दृश्य-बाधाए उनके सामने उपस्थित नही होती और उनकी अवधान-क्षमता सामान्य व्यक्ति से बढी हुयी होती है। स्वाध्याय की तन्मयता के कारण ही ऐसे छात्रो को प्रतिभाशाली एव प्रथम श्रेणी का छात्र माना जाता है। कक्षा में सीमित, अपूर्ण एव अयोग्य अध्यापकों से पढने पर भी उसकी पूर्ति वे स्वाध्याय (Self-Study) से कर लेते हैं।

चिन्तन-प्रक्रिया और स्वाध्याय ·

वस्तुत चिन्तन स्वाध्याय का महत्त्वपूर्ण अग है। इस चिन्तन-प्रक्रिया मे स्मृति, कल्पना और तर्क शक्ति का पूर्णत प्रयोग किया जाता है। स्मृति, अज्ञात या श्रुत ज्ञान की आवृत्ति है। अज्ञात या ज्ञात तथ्यो को किसी विशिष्ट योजना का अग बनाने मे कल्पना शक्ति का प्रयोग किया जाता है। तर्क शक्ति इस योजना को वैज्ञानिक रूप प्रदान करती है। चिन्तन-प्रक्रिया का तत्त्व है, लक्ष्याभिमुखता। लक्ष्य-प्राप्ति के लिए पथ का अन्वेषण, ज्ञात तथ्यो का सकलन एव स्मरण, नई पद्धति से उनका वर्गीकरण और कर्णा-गोचर मानसिक वाणी के आन्दोलन और सकेत चिन्तन-प्रक्रिया के तत्व कहे जाते हैं। किसी समस्या के समाधान या लक्ष्य-विशेष की प्राप्ति के लिए किया गया मानसिक श्रम ही चिन्तन कहलाता है। पठित ग्रन्थ या आचार्य-मुख से सुने गए ज्ञान के आधार पर नये ज्ञान की अभिव्यक्ति इस चिन्तन-प्रक्रिया से उपलब्ध होती है।

चिन्तन के दो लक्ष्य होते हैं—ज्ञात तथ्य के किसी नूतन पक्ष का अनावरण और आविष्कार। चिन्तन सत्य का अन्वेषण एव उत्तर दान का प्रयत्न है। पृथक्-पृथक् समय, स्थान और ज्ञान के बहुविध क्षेत्रो से उपलब्ध तथ्यो का इसमे प्रयोग होता है। इसकी प्रक्रिया मे ऐन्द्रिय प्रतिमाएँ, भावात्मक या रूपरेखात्मक (योजनात्मक) प्रतिमाएँ सश्लिष्ट होती हैं। अमूर्त चिन्तन के लिए ऐन्द्रिय और क्रियात्मक प्रतिमाओ की आवश्यकता नही होती। वैचारिक धरातल पर भी विश्लेषण और सश्लेषण का क्रम चलता रहता है। एक दार्शनिक और भौतिक वैज्ञानिक की चिन्तन-प्रक्रिया तथा उसके लक्ष्य अनावरण और आविष्कार मे कोई अन्तर नही होता, केवल साधन भिन्न-भिन्न होते हैं सासारिक दृष्टि से आत्म-विकास के चरम बिन्दु पर अधिष्ठित वह व्यक्ति है जो ज्ञान के किसी भी क्षेत्र मे नवीन आविष्कार करता है।

स्वाध्याय · आत्म-विकास की साधना

लक्ष्यहीन स्वाध्याय निरर्थक है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी-अपनी अभिरुचि के अनुसार आध्यात्मिक या सासारिक लक्ष्य निर्धारित कर सकता है। उस लक्ष्य के प्रति आस्था होनी चाहिए। अब तक अभिव्यक्त ज्ञान के लिए वह लक्ष्यानुरूप अध्ययन-सामग्री का

चयन कर सकता है। पूर्ण अवधान के साथ वह इसका स्वयं पठन या श्रवण कर सकता है, पर यहाँ तक यह अध्ययन-क्रिया-मात्र है। इस प्राप्त-ज्ञान को जब वह मनन या चिन्तन प्रक्रिया का अंग बना लेता है तब वह वास्तविक स्वाध्याय कहलाता है। यही स्वाध्याय कहलाता है। यही स्वाध्याय तप है। इसी तप का फल है—ज्ञान का अनावरण और आविष्कार। ज्ञान का अनावरक या आविष्कारक ही आत्म-विकास के शिखर तक पहुँचा हुआ उत्तम व्यक्ति है। आध्यात्मिक और सांसारिक क्षेत्र में उसके नाम भिन्न-भिन्न हैं, परन्तु आत्म विकास में स्वाध्याय की महत्त्वपूर्ण भूमिका दोनों क्षेत्रों में समान है। वाचना, प्रच्छना, अनुप्रेक्षा, आम्नाय (परावर्तन) और धर्मोपदेश को अन्तः तप एवं स्वाध्याय माना गया है। बौद्ध परंपरा इसे तप का अंग मानती है और उपनिषद्-परम्परा तो इसे हृदय की ग्रन्थियों का भेदक, सर्व संशयों का निवारक तथा कर्म-बन्ध का प्रशामक मानती है। आत्म-विकासोन्मुख व्यक्ति के लिए 'तैत्तरीय उपनिषद्' की यह चेतावनी स्मरणीय है—'स्वाध्यायान्मा प्रमदः', स्वाध्याय में आलस्य न करो।

—डी ४६, कुरुक्षेत्र
विश्वविद्यालय,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

आत्म-जागृति और स्वाध्याय

साध्वी श्री रतनकँवरजी

आज के युग में भौतिकवाद आंधी और तूफान की तरह तीव्र वेग से बढता चला जा रहा है। विज्ञान के नये-नये चमत्कार विश्वशांति को चुनौती दे रहे हैं। संहारक साधनो का विद्युत गति से निर्माण हो रहा है। मानव की महत्वाकाक्षाएँ दानव की तरह बढती जा रही है। जिससे चारो ओर अशान्ति का साम्राज्य छाया हुआ है। ऐसे विकट समय मे भगवान महावीर की अहिंसा सयम प्रेम व शान्ति से युक्त वाणी का प्रचार-प्रसार होना अत्यावश्यक है। भगवान् की वाणी मे वह ओज और तेज है जो ससार के समस्त दिग्भ्रमित प्राणियो को सच्ची सुखानुभूति का रसास्वादन करा करा सकता है। यह तभी सम्भव है जब हम स्वाध्याय का सबल लेकर चलें।

स्वाध्याय का तप मे स्थान :

स्वाध्याय का आत्म-जागृति मे प्रमुख स्थान है। जैन-धर्म मे निर्जरा के मुख्य दो भेद हैं—बाह्य और आभ्यन्तर। उसी आभ्यन्तरतप में स्वाध्याय भी एक तप है। कहा भी है—

"तपोहि स्वाध्याय" (तैतिरीय आरण्य २।१४)

स्वाध्याय का अर्थ :

सुष्ठु इति शोभनम् स्वाध्याय। अधि-प्रति। आप आत्म-लाभ। अर्थात् मुक्तिमार्ग के साधन हेतु श्रुत-चरित्रधर्म का अध्ययन, मनन व चिन्तन कर मुमुक्षुओ को श्रेयस्कर मार्ग के प्रति उन्मुख करने मे सहायक भूत साधन का नाम "स्वाध्याय" है। अथवा सुष्ठु-आ मर्यादा अधियते इति स्वाध्याय। स्व=अपना अर्थात् आत्मस्वरूप का। अध्याय=अध्ययन करने का नाम ही स्वाध्याय है।

स्वाध्याय का मतलब केवल पोथी ज्ञान व अक्षर ज्ञान हो नहीं है किन्तु तत्त्वों की वास्तविक जानकारी कराकर आत्मा के सत्-स्वरूप का भान कराना है।

स्वाध्याय एक प्रकार का अनोखा, अदृश्यतप है जिसके द्वारा आतम के विकारो को शमन कर अनन्त-ज्योतिर्मय प्रकाशपुंज केवल ज्ञान को प्राप्त किया जा सकता है। चरम तीर्थङ्कर भगवान महावीर ने भी अपनी अन्तिम देशना 'उत्तराध्ययन सूत्र' मे भी स्वाध्याय की महिमा व गरिमा बताते हुए कहा है—

"सज्झाएण नाणावरणिज कम्मं खवेइ"
(उ० म० २९।१८)

जो मुमुक्षप्राणी श्रुत-चरित्र रूपी इस वीतराग वाणी का स्वाध्याय करता है वह अपने ज्ञानावर्णीय कर्म को क्षय करता है।

'चन्द्रप्रज्ञप्ति' मे भी स्वाध्याय पर प्रकाश डालते हुए कहा है—

"नवि अत्थि नविय होई सज्झाएण समं तवोकम्म" (चन्द्र प्रज्ञप्ति ८९)

अर्थात् - स्वाध्याय के समान न तो कोई तपस्या है और न भविष्य मे हो सकती है।

जब तक व्यक्ति को आत्मा की इस अनन्त आनन्द प्रदायणी अक्षय निधी का ज्ञान नही होता है। तब तक वह तत्त्वो मे आसक्त बना रहता है। तथा वाह्य पदार्थों के सयोग वियोग मे ही अपने आप को हर्ष और विषाद का भाजन मानता है। क्योंकि सत्ज्ञान के अभाव मे शुभ-अशुभ का भेद जानना बडा ही दुर्लभ है। कोई भी पारखी काँच व हीरे के अन्तर को तब ही जान पाता है जब उसे अनुभव हो। अनुभव अपने आप प्रादुर्भूत नही होता बल्कि सुनने, समझने और अध्ययन करने से ही होता है। वैसे ही स्वतत्वा परातत्व, हेय-उपादेय का ज्ञान भी सुनने-पढने तथा तद्रूप आचरण करने से ही होता है। दशवैकालिक सूत्र मे कहा भी है —

'सोच्चाजाणइ कल्याण सोच्चाजाणइ पावग।'

अर्थात् सुनकर (स्वाध्याय से) ही मानव आत्मोन्नति कल्याण के राजमार्ग को अपना कर अनन्त सुख-समुद्र मे तरगित होता हुआ दृष्टिगोचर होता है।

आत्म विकास मे ज्ञान एक मुख्य साधन है। ज्ञानी व्यक्ति इस अद्भुत ज्ञान के प्रकाश से मिथ्यात्व से अन्धकार से परिपूरित ससाररूपी भयकर अटवी से अपने आप को किनारे पहुँचा सकता है। अत सुखाभिलाषी आत्मार्थी साधक को चाहिए कि वह सर्व प्रथम ज्ञान आत्मज्ञान को प्राप्त करे। कहा भी है —

"पढम नाण तओ दया"

पहले ज्ञान फिर दया (आचरण) क्योकि जिसके पास मे अज्ञान का सद्भाव है। उसका प्रत्येक कार्य आत्मपतन का सहायक है। अज्ञानी का प्रत्येक कार्य हवा मे चित्रित किये हुए चित्र के समान निरर्थक है। क्योकि —

"नाणेण विना न हुंति चरण गुणा"

अर्थात् ज्ञान के अभाव मे चरित्र विकास असम्भव है।

शास्त्रकारों ने ज्ञान को धागे की उपमा से उपमित करते हुए कहा है —

'जहा सुई समुत्ता पडियावि न विणसई।
तहा जीवो ससुत्ता ससारे न पडिणस्सई।।

जिस प्रकार धागे वाली सुई सहसा नही खोती अगर खो भी जाती है तो शीघ्र मिल सकती है। उसी प्रकार जिस आत्मा मे ज्ञान-धागा पिरोया हुआ है। वह आत्मा भव भ्रमण नहीं कर सकती है। 'समयसार' मे भी कहा है—उवओग एव अहमिक्को"

मैं (आत्मा) एक मात्र उपयोगमय (ज्ञानमय) हूँ किन्तु ऐसी ज्ञान आत्मा का स्वरूप जानना बडा ही कठिन है। क्योंकि ;

"दुखेणज्जइ अप्पा" मोक्षा पाहुड। ६५

इतने पर भी स्वाध्याय एक ऐसा पवित्र अनुपम साधन है। जिसके द्वारा दुर्लभ भी सुलभ मे परिणत हो जाता है। परन्तु आवश्यकता है। सच्चे (स्वाध्याय) आत्म ज्ञान की।

भगवद्गीता मे भी इसी बात को स्पष्ट करते हुए कहा है।

"ज्ञानाग्नि' सर्व कर्माणि भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन"

अर्थात् ज्ञान को हम एक प्रकार की अग्नि भी कह सकते हैं। जिसके आचरण से भव भ्रमण कराने मे समर्थ कर्म रूपी ईंधन को जलाकर भस्मीभूत किया जा सकता है।

स्वाध्याय को आत्म शान्ति का साधनभूत बतलाते हुए उत्तराध्ययन सूत्र मे भी कहा गया है '—

'सज्झाएवाँ..... सव्व दुक्खविमोक्खणे "

स्वाध्याय सब प्रकार के दुखों से मुक्त कराने वाला सच्चा हितैषी है। और भी कहा है—

"सज्झाय सज्झाण रयस्स ताइणो,
अपाव भांवस्स तवे रयस्स
विसुज्झई जंसि मल पुरेकड
समीरिय रुप्पमल व जोइणो।।"

जैसे अग्नि द्वारा तपाये हुए सोने-चाँदी का मैल दूर हो जाता है। वैसे ही स्वाध्याय सद्ध्यान मे लीन, षट्काय रक्षक, शुद्ध अन्त'करण एव तपस्या मे रत-साधक का पूर्वसचित कर्म मैल नष्ट हो जाता है। वास्तव मे—

"वहु भवे सचिय खलु सज्भाएण खणेऌवेई"

अनेक भवो मे सचित दुष्कर्म को स्वाध्याय द्वारा व्यक्ति क्षण भर मे खपा देता है। कहा भी है—"ज्ञानभावनया कर्माणि नश्याचि न सशय" अर्थात—ज्ञान से भव-भ्रमण मे साधन भूत कर्मो को नष्ट कर दिया जाता है। इससे सशम नही है।

स्वाध्याय वह अमर बूटी है, जिसका सेवन करने से आत्मा के कषायादि रोगो का शमन हो जाता है—और आत्मा परमात्व भव को प्राप्त कर लेता है।

परन्तु यह सब तब ही सम्भव है। जब मन के इस भयकर उपद्रव्यदायी भूत को वश मे किया जावे इस पर एक दृष्टान्त दृष्टव्य है —

अन्धकार अपना रग जमाता जा रहा था। और घडी भी करीब दो बजा रही थी कि उस शान्त सुपुप्त रात्रि में एक सेठ हाथ मे मिठाई की टोकरी ले अपने ग्राम की ओर कदम बढाता जा रहा था।

इसी बीच पीछे से एक आवाज आई "सेठ! ठहरो! मुझे भी साथ ले लो। एक से दो होने पर रास्ता सुगमता से तय किया जा सकेगा। तथा तुम मुझे जो भी कार्य देओगे मैं उसे सहर्ष कर दूगा। किन्तु मेरी एक शर्त है।"

"वह क्या ?" सेठ ने जिज्ञासापूर्वक पूछा।

'यही जिस दिन कार्य नही दोगे तो मैं तुम्हे अपना साथी बना लूगा।"

शर्त मजूर हो गयी सेठ कार्य बताता और वह (पीछे लगा हुआ भूत) शीघ्र ही विद्युत गति से उसे सम्पन्न कर देता जैसे-तैसे रात गुजरी, प्रात काल हुआ।

परन्तु यह क्या। सबका जीवन प्रदाता हजार रश्मि वाला सूर्य आज सेठ के लिए काल बनकर आया। क्योकि सेठ के पास उस भूत को बतलाने के कोई कार्य नही था। सेठ को इस प्रकार खिन्न म्लान और उदास देखकर सहसा सेठानी को एक बात सूझ पडी। वह हर्ष विभोर हो सेठ के समीप पहुँची और बोली—

"पतिदेव। घबराओ नही। अपने यहां एक काम है। वह आप उस मित्र से कराओ।"

"सेठानी। "शीघ्र बताओ वह क्या है ?" सेठ ने तुरन्त पूछा।

"अपने पुराने घर मे दो कोठी हैं। एक धान से परिपूर्ण है और दूसरी खाली। अत उसे भरने और फिर खाली करने का पुन 2 आदेश दे दो।"

इस युक्ति से मानो सेठ को नव जीवन मिला। सेठ ने भूत को काम बता दिया और भूत प्रतिपल काम मे रत रहने से तग होकर शान्त हो गया। अब सेठ सुखी बन गया।

इसी प्रकार मन भी बडा चचल नटखट है यदि उसे स्वाध्याय मे जोड दिया जाए तो वह भी वश में हो जायेगा।

'उत्तराध्यन सूत्र' मे केशी गौतम सवाद मे मन को वश मे करने के लिये स्वाध्याय को एक साधन बताया है। केशी श्रमण ने गौतम से पूछा —

"अय सहू सिओ भीमो, दुरुस्सो परिधावई।
जासि गोयम आरूढो, कह तेण न हीरसि ॥"

अर्थात् यह उन्मार्गगामी होने से इच्छानुसार ले जाने वाला तथा जीव को नरकादि दुर्गतियो मे गिराने का साधन भूत होने से भयकर ऐसा यह दुष्ट अश्व दौडता है फिर भी हे गौतम! आप इस पर आरूढ हो रहे हैं। सो आप इसके द्वारा उन्मार्ग पर क्यो नही पहुँचाए जाते हैं।

गौतम ने शका समाधान करते हुए प्रत्युत्तर मे कहा—

"पधावत निगिण्हामि, सुयरस्सी समाहियं ।
न मे गच्छइ उम्मग मग्ग च पडिवज्जई ।।"

हे भदन्त ! जिस घोडे पर मैं सवार हुआ हूँ वह घोडा श्रुतरूप लगाम से नियत्रित है । अत जब यह दौडने लगता है तब मैं इसको उस लगाम से रोक लेता हूँ इसलिए यह मुझे उन्मार्ग पर नहीं ले जाता और सीधा ही सत्य पथ पर चलता रहता है ।

वास्तव मे मन रूपी घोडे को वश मे करने के लिए श्रुत या स्वाध्याय ही लगाम है ।

तो आइये आत्म जागृति मे साधनभूत मोक्षपद दाता इस स्वाध्याय का सम्यक् आराधन कर अपने जीवन को दिव्य एव पुण्य बनाएँ ।

स्वाध्याय और सत्संग

श्री निर्मलकँवरजी

"ससार विषवृक्षस्य द्व एवं मधुरे फले।
काव्यामृत रसास्वादः सगम सज्जनैः सह।।"

भयंकर अग्नि में जलते हुए उस संसार रूपी विष वृक्ष के क्रोध, मान, माया, लोभ, राग और द्वेष आदि अनेक कटु फल हैं। पर उसके सुन्दर सुस्वादु दो सुमधुर फल भी विद्यमान हैं। प्रथम सद् ग्रन्थो का पठन-मनन चिन्तन और स्वाध्याय। दूसरी सज्जनो की सगति। इसी विषय मे सस्कृत मे एक श्लोक बहुत प्रसिद्ध है—

"पृथिव्या त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्।
मूढैः पाषाण खण्डेषु, रत्न सज्ञा विधियते।।"

कवि ने इस पृथ्वी पर स्थित तीन रत्न बताए हैं। जल, अन्न, और सुभाषित वचन। किन्तु दुर्भाग्य है इनको छोडकर मूर्ख मानव जड रत्नों को रत्न मानने लगा है।

वास्तविकता तो यह है कि शास्त्रों मे अगणित सुभाषित वचन भरे पडे है। उनका पठन, चितन मनन कर जीवन मे उतारने से ही मानव का आत्म कल्याण हो सकता है। इन्ही शास्त्रीय सुभाषितो को धारण करने वाले प्राणी भूत, भविष्य और वर्तमान में सुखी होते हैं।

अज्ञान दशा मे साधक की क्या गति होती है। इस बात को 'सूत्र-कृताग' में इस प्रकार बताया है—

जहा अस्साविणि पावं, जाई अंधो दुरुहिया।
इच्छई पारमागंतु, अंतरा य विसीयई।।६।
६।२।३६।

अज्ञानी साधक उस जमान्ध व्यक्ति के समान है। जो सछिद्र नौका पर चढ़कर नदी किनारे पहुँचना चाहता है। किन्तु किनारा आने से पहले ही बीच प्रवाह में डूब जाता है। इसलिए साधक का कर्त्तव्य है कि वह भवसागर में डुबने वाले अज्ञान को हटाने के लिए स्वाध्याय का सम्बल लेकर चले।

किसी विद्वान ने ठीक ही कहा है "सुन्दर पुस्तकें ही मानव का सर्वोत्तम मित्र है।" पुस्तकालय में जाने से मानव को कई महापुरुषो जैसे आगम ग्रंथो से तीर्थंकर गणधर और अनेक महान् प्रभावशाली आचार्यों की, महाभारत से वेद व्यास की रामायण से बाल्मीकि, की रघुवश और मेघदूत के पाठन पठन से कालिदास की हमे सहज सगति मिल जाती है।

सद्ग्रन्थ एक प्रकार का मनोरम उद्यान है। जिस प्रकार एक रुग्ण व्यक्ति उपवन मे भ्रमण कर आरोग्य लाभ प्राप्त करता है। उसका मन मस्त बन जाता है। ठीक उसी प्रकार पुस्तक रूपी बगीचे को पाकर मानव मन बडा ही प्रफुल्लित होता है और वह अपने जीवन के कलुषित विचारों को निकाल कर उनमें सद् विचारो की वायु भरता है।

आज हमारे सामने ढेरो पुस्तकें हैं और अध्ययन करने की भी परम्परा पहले से अधिक है। पर आज

लोगो की अधिकांश रुचि गन्दी और अश्लील पुस्तको को पढने की ओर है उन्हे पढकर वे अपने जीवन को तो बिगाडते हैं पर साथ ही साथ अपने समय का भी दुरुपयोग करते हैं।

जीवन उन्नत बनाने वाले व्यक्तियो का कर्त्तव्य है कि वे ऐसी ही पुस्तको को चुनकर पढें जो उनके जीवन को उनके कार्य कलापो को बुरे विचारो से बचाकर न्याय-नीति सम्पन्न बनाये।

जैसे व्यक्ति अपना शरीर पुष्ट बनाने के लिए नित्य प्रति भोजन करता है। उसी प्रकार जीवन को पवित्र एव उच्च बनाने के लिए सद्‌साहित्य व आगमो का नित्य प्रति स्वाध्याय करके अपने जीवन को उन्नत बनाना चाहिए।

स्वाध्याय और सत्सग से जीवन मे अच्छाईयाँ आती हैं और बुरी बातों या बुरे लोगो के सपर्क से बुराई। सभी अच्छा बनना चाहते हैं। बुरा कोई नही। तो अच्छे बनने के लिए जितना सत्पुरुषो की सगति का होना अत्यावश्क है उतना ही स्वाध्याय करना भी। अनुभवी व्यक्तियो का कहना है कि—"जैसा सग वैसा रग।" सत्सग का महात्म्य से बताते हुए महाकवि तुलसीदासजी ने भी कहा है—

"एक घडी आधी घडी, आधी से पुन आध।
तुलसी संगत साधु की, कटे कोटि अपराध॥"

सत्सग के प्रभाव से जीवन कितना बदल जाता है। इस सम्बन्ध में निम्न प्रसग द्रष्टव्य है।

मनुष्यो को खरबूजे और तरबूज की तरह काटने वाला नृशस महान् पापी घोर हत्या मे सलग्न, राजा प्रदेशी का जीवन भी महान् परोपकारी सत मुनि केशी कुमार श्रमण की सुसगति से आमूल चूल परिवर्तित हो गया। उसने आगे चलकर श्रावक के बारह व्रतों को धारण किया व अपने राज्य की आय को चार भागों मे विभक्त कर एक विभाग दान मे दे दिया और अपने जीवन के अमूल्य क्षणों को स्वाध्याय व साधना मे लगा दिया। सत्सगति और स्वाध्याय के माध्यम् से जीवन इतना उत्कृष्ट बन गया कि अपनी प्राण प्रिया रानी सूर्य कान्ता के द्वारा जहर दिया जाने पर भी उनके मन मे रचमात्र भी द्वेष भावना नहीं जगी।

रत्नाकर डाकू जैसा नृशस व्यक्ति भी सत्संगति के प्रभाव से एक दिन ससार मे महान् कवि वाल्मीकि के रूप मे प्रख्यात हुआ।

आज के युग मे भी महात्मा गाधी का उदाहरण हमारे सम्मुख है—

एक समय महात्मा गांधी जोहन्सबर्ग मे किसी दूसरे स्थान पर जा रहे थे। रेलगाडी मे पोलाट नामक अग्रेज मित्र ने उनको प्रसिद्ध विद्वान् रस्किन द्वारा लिखित "अन्टु दीस लास्ट" नामक एक पुस्तक पढने को दी। गाधीजी ने १२ घन्टे की मुसाफिरी मे उसे पूरी पढ़ ली। इस पुस्तक का उनके जीवन पर इतना गहरा प्रभाव पडा कि उसी दिन से उन्होने बैरिस्ट्री का कार्य छोडकर देश सेवा में अपने जीवन को समर्पित कर दिया। इस पुस्तक के सत्सग एव स्वाध्याय ने उन्हें विश्ववद्य महात्मा बना दिया।

लोक मान्य तिलक ने कहा है "मेरे पास अच्छी-अच्छी पुस्तकें हो तो मैं जेल मे भी सहर्ष रहने को तैयार हू।"

विश्व में सत्पुरुषो की सख्या विरल है। उनको पहचानना उनकी सगति मे रहना अति कठिन है। सत्सगति तो बडे ही पुण्योदय से मिलती है। सर्वत्र सत्पुरुषो का मिलना सभव नहीं है। इस कठिनाई को ध्यान मे रखते हुए महापुरुषो ने एक सुगम उपाय बताया कि सत्पुरुषो की वाणी सर्वत्र और हर समय सद्‌साहित्य के रूप मे प्राप्त हो सकती है। अतः सभी युवक-युवतियो का परम कर्त्तव्य है। कि वे नियमित सद्‌ग्रन्थो का स्वाध्याय करें, उसके अलावा जो भी

समय मिले उसको सदग्रन्थो के स्वाध्याय, चितन, मनन मे लगावे। इससे जीवन मे एक अद्भुत क्रान्ति होगी। बुरे कार्यो से क्रमश घृणा होती चली जायेगी और अच्छे कार्यों को करने मे उत्साह एव उमग बढेगा। इससे आत्मोन्नति व आत्मकल्याण सहज ही हो जायेगा इसलिए किसी कवि ने भी ठीक ही कहा है—

"अन्धकार है वहा, जहा आदित्य नही।
मुर्दा है वह देश, जहाँ साहित्य नही॥"

अगर हमे अपने देश मे धर्म-नीति, न्याय और शान्ति का बिगुल बजाना है, जीवन को अमन, विमल और निर्मल बनाना है तो स्वाध्याय करना होगा महापुरुषो के सत्संग का लाभ लेना होगा। महापुरुष तो एक चलते फिरते विश्व-विद्यालय है वे तो साक्षात ज्ञान पुन्ज है। उनके जीवन का हर कार्य कलाप मानव मात्र के लिये प्रेरणा व सद्ज्ञान का स्त्रोत है।

सत्संग व सद्ज्ञान हमारी आत्मोन्नति का कितना सुन्दर साधन है। इस विषय मे 'भगवती सूत्र' मे कहा है—

"सवणे नाणे विणाणे, पचखाणे य सजमे।
अणण्हये तवे चेव, वोदाणे अकिरिया सिद्धि॥"

अर्थात् सत्संग से धर्म श्रवण, धर्म श्रवण से तत्वज्ञान, तत्वज्ञान से विज्ञान, विज्ञान से प्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान से सयम, सयम से अनाश्रव, अनाश्रव से तप, तप से पूर्वबद्ध कर्मो का नाश, पूर्वबद्ध कर्मों के नाश से निष्कर्मता और निष्कर्मता से सिद्धि गति प्राप्त होती है।

कहने का तात्पर्य यह है कि सत्सग और स्वाध्याय ही मुक्ति का राज मार्ग है। अत मुझे पूर्ण विश्वास है स्वाध्याय और सत्सग से हम सब अपने जीवन का भव्य और नव निर्माण करेंगे।

स्वाध्याय और नारी–जागरण

साध्वी श्री मैनासुन्दरी जी

भगवान् ऋषभ से लेकर भगवान् महावीर तक का इतिहास बताता है कि नारी के कदम सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक क्षेत्र मे हमेशा आगे रहे हैं।

एक दिन था जब नारी धर्म सभाओ मे शास्त्रार्थ कर अपनी विजय वैजयन्ती फहराया करती थी। 'भगवती सूत्र' के पृष्ठों पर आज भी राजकुमारी जयन्ती का नाम स्वर्ण अक्षरो में अंकित है। उसके द्वारा पूछे गये ज्ञान-विज्ञान से परिपूरित प्रश्न नारी जाति के विशेष अध्ययन, मनन और चिन्तन के परिचायक है। गार्गी और मैत्रेयी आदि नारियो ने भी राजसभाओ में अपने ज्ञान की धाक जमाई थी। प्रसिद्ध विद्वान् शंकराचार्य से मण्डन मिश्र की पत्नी ने भी सफलतापूर्वक शास्त्रार्थ किया था।

पर वर्तमान युग मे नारी आध्यात्मिक ज्ञान के क्षेत्र मे काफी पिछड़ गयी है। ज्ञान के अभाव में हमे कई बार उपहास का पात्र होना पड़ता है एक रोचक दृष्टांत सहसा मेरी स्मृति में आ रहा है—

एक बार किसी बहिन के घर एक महात्माजी भिक्षार्थ पधारे। पर्व दिन होने पर भी बहिन हरी सब्जी काट रही थी। सहज भाव से महात्माजी ने पूछा—

"बहिन ! आज पर्व दिन मे यह "रत्नप्रभा।" (प्रथम नरक) में जाने योग्य कर्म क्यों कर रही हो ?"

"महाराज मेरी जैसी तुच्छ साधिका को कहाँ नसीब रत्नप्रभा ? यह तो कोई आप जैसे महापुरुषों को ही मिल सकती है।

महात्माजी हँस पडे बहिन की अज्ञान दशा पर। स्पष्ट है कि उस बहिन को रत्नप्रभा नरक का ज्ञान नही था। वह उसे कोई अच्छा व ऊँचा स्थान समझ रही थी। एक अन्य उदाहरण और भी है.—

किसी श्राविका ने अपने नगर मे आगत सन्त मुनिवर से नम्र निवेदन किया—"भगवती सूत्र सुनाइये।" मुनिवर को श्राविका की इस जिज्ञासा से प्रमोद हुआ। उसके समझने के स्तर को जानने हेतु उन्होंने श्राविका से कुछ प्रश्न किये—

"पचेन्द्रिय कौन ?"

"हाथी"

"चतुरिन्द्रिय कौन ?"

"ऊँट"

"तेन्द्रिय कौन"

"घोडा"

"बेन्द्रिय कौन ?"

"हम दम्पति।"

"एकेन्द्रिय कौन ?"

"एकेन्द्रिय तो आप हैं महाराज ! क्योकि आपके आगे पीछे कोई नहीं है।"

महाराज बेचारे स्तब्ध रह गये। यह है हमारी आज की नारी के शास्त्रीय ज्ञान का स्तर ! निम्नलिखित मनोरंजक प्रसग भी यहाँ अप्रासगिक न होगा—

कथावाचक जी ने रामायण पूरी तो की एक बहिन ने पण्डित जी से पूछा—पंडित जी आपने यह बात

तो नही बताई कि सीता जो "हिरण" हो गयी थी ।" वह वापिस सीता कब बनी ?

पण्डित जी तो चकित से रह गये । कितनी अज्ञानी बहिन है । जिसने "हरण शब्द का भाव" हिरण "पशु से लिया ।"

नारी के लिए आध्यात्मिक ज्ञान का क्षेत्र अवरुद्ध सा है । भौतिक शिक्षण तो वह प्राप्त कर रही है । पर आध्यात्मिक मशाल प्रज्ज्वलित करने मे वह यताचित् भी योगदान समाज से प्राप्त नही कर रही है । इस क्षेत्र में वह बहुत पीछे है ।

जीवन शुद्धि मे स्वाध्याय का बहुत बडा योग है । जैन धर्म मे तो इसकी गणना आभ्यन्तर तपो में की गयी है इसकी महिमा और गरिमा का वर्णन आगम, वेद और पिटको मे सर्वत्र मुक्त कंठ से जाया गया स्वाध्याय के माध्यम से धुलकर आत्मन् मन्दिर में ज्ञान की धवल ज्योति जाज्वल्यमा होती है ।

मानव समाज के कल्याण के लिए स्वाध्याय दीप स्तम्भ की तरह है । जैसे दीप स्तम्भ भूले भटके अटके राहियो को ठीक दिशा सूचि करता है । वैसे ही स्वाध्याय हमारे जीवन निर्माण का पथ प्रदर्शक है ।

स्वाध्याय के बल से ही महासती चेलना ने अपने उन्मार्गगामी स्वामी श्रेणिक को सही राह पर प्रतिष्ठित किया । जैन जगत् मे श्रेणिक को इतना महान् गौरवास्पद स्थान दिलाने मे सती चेलना का ही सबसे प्रमुख हाथ रहा था । महासती मदन रेखा स्वाध्याय ज्ञान के बल से अपने पति युगबाहु को अन्तिम क्षण सुधार कर सद्गति दिलवाने मे सहायिका बनी जाग्रत नारी धन्या ने अपने पति सुरादेव के देव उपसर्गद्वारा जगमगाते कदमो के सुस्थिर कर सच्ची सहचरी का पद सार्थक किया ।

अतीत काल की तरफ यदि हम आँख उठाकर देखें तो ज्ञात होगा की हमारा गृहस्थ जीवन सुखी था । समाज मे सर्वत्र शान्ति व सौख्य का प्रसार था । प्रत्येक घर नन्दन कानन था । कवि के शब्दो मे—"गहिस्थ्य मे वह सौख्य था, जो सौज्य था उपवर्ग मे ।" इसका कारण था हमारी नारी स्वाध्याय से परिष्कृत एव ज्ञान से सींचित थी । उसका दिल-दिमाग विकसित एव परिष्कृत तथा हृदय उदार था । वह सूझबूझ की धनी और सुशिक्षिता थी । स्व आत्मा का निरन्तर चिन्तन मनन करने मे उसमे क्षमा, शान्ति, और सहिष्णुता की भावना थी परिवार के सभी सदस्य नारी के सरस स्नेह पूर्ण वात्सल्य भाव से एक सूत्र में बन्धे थे ।

परन्तु आज स्वाध्याय की प्रवृत्ति के अभाव मे हमारे घर परिवार और समाज मे सौहार्दपूर्ण वातावरण की कमी है । छोटी-छोटी बातो पर तनाव बढ रहा है, दृष्टि संकीर्तन और आग्रहपूर्ण है ।

इसका कारण नारी के जीवन मे स्वाध्याय की कमी है । वह इर्ष्या और द्वेष आदि विकारो के वशीभूत हो छोटे-छोटे झगड़ो का जन्म देती है । असहिष्णु नारी स्वर्ग सदृश घर को रौरव नरक बना देती है । गालियो की बौछार से घुटन सा दृश्य बात की बात में नारी उत्पन्न कर देती है । क्रोधावेश मे आकार वह प्रिय से प्रिय व्यक्ति के प्रति भी मन मे उग्रता और वाणी मे कटुता, ले आती है ।

स्वाध्याय के अभाव के कारण आज हमारा गृहस्थ जीवन दयनीय विशृंखल और जर्जर हो रहा है ।

सुन्दर घर का निर्माण नारी के हाथो मे ही है । मानव तो भौतिक गृह का निर्माण करता है । वह तो आर्थिक लाभ के लिए दिन भर अपने विभिन्न कार्यों मे अत्यधिक व्यस्त रहने से घर के वातावरण से प्राय. दूर ही रहता है । परिवार की एक छत्र अधिष्ठात्री, गृह स्वामिनी नारी ही है ।

यदि यह नारी स्वाध्याय के पवित्र जल से अभिषिक्त होगी तो अपने महान् उत्तरदायित्व से वह भली भाँति परिचित होगी उसे "कहने" मे नही वरन् "सहने" मे आनन्दानुभूति होगी। उसका मृदुल, प्रेमिल व्यवहार नि सन्देह आज के वीरान श्मशान तुल्य घरों को सुख का सदन बनायेगी और निम्न पंक्तियाँ सार्थक होगी—"हर घर को तुम स्वर्ग बनाना, हर आंगन को फुलवारी।"

अंग्रेजी की भी निम्न उक्ति भी पर्याय बनेगी।

Man makes houses women makes homes

अर्थात्—सुशिक्षित सुसंस्कृता नारी ही आदर्श घर बनाती है। केवल मनुष्य तो ईंट चूने का घर बनाता है। नारी ही अपने घर को स्वर्ग बना पति व परिवार का जीवन रम्य, सौम्य व प्रशस्त बनाने मे सक्षम है।

आज की नारी स्वाध्याय के अभाव में कई अन्ध विश्वासो से ग्रस्त है

जिसके कारण वह अनेक कुप्रथाओं से आक्रान्त है। सच्चे धर्म के स्वरूप को भूलकर विभिन्न देवी-देवताओं की मनौतियां करती है जादू टोना मंत्र-तंत्र मे उसकी पूरी निष्ठा है। इन अन्ध विश्वासो के कारण कई कुपरिणाम उसे भोगने पड़ते है। लौकिक एवं लोकोत्तर दोनो दृष्टियों से यह अशोभनीय एव हानिकारक बात है।

सद्ज्ञान के अभाव मे आज की नारी विलासिता की ओर तीव्र गति से दौड़ी जा रही है। ऊपर की चमक-दमक, चमक-मटक मे वह रीझी हुई है। फैशन परस्त होने से अनावश्यक खर्च बढा दिये हैं। परिवारों में आर्थिक विपन्नता, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचारी पनपाने का उत्तरदायित्व भी नारी पर ही है। आभूषण प्रियता व्ययसाध्य वस्त्रों का प्रयोग औरो के देखा देखी शादी-विवाह मे अनाप-शनाप खर्च करने की प्रवृत्ति ने आज मध्यम वर्ग के लोगों को बड़ा दुखी बना दिया है।

यदि नारी स्वाध्याय की मशाल को थाम ले तो अन्ध विश्वास एव फिजूल खर्ची का गहन अन्धकार नष्ट हो जायेगा। जब ज्ञान सूर्य बनकर नारी के जीवन मे चमकेगा तो कुरीतियो के उल्लूक अपना मुँह छिपा लेंगे।

देव गुरु और धर्म का सच्चा स्वरूप भूली-भटकी नारी के जीवन मे एक नया क्रान्तिकारी मोड देगा। उसकी धर्म भावना समाज के सभी सदस्यो मे एक नयी प्रेरणा भरेगी।

जब नारी सद्ज्ञान से सहित होगी तो उसकी संतान सदाचारी एवं सुसंस्कारित होगी। बच्चे के जीवन का निर्माण माता की मुट्ठी मे बन्द है।—

"अन्त मे माता पिता के खेल का समान हूँ मैं
जो चाहे सो बनाले, देव हूँ शैतान हूँ मैं।"

रत्न की खान से बहुमूल्य हीरे ही निकलेंगे। अच्छी लता पर सुन्दर फूल खिलेंगे। नारी मे स्वाध्याय के माध्यम से विवेक जाग्रत होगा वह "सादा जीवन उच्च विचार" का अपने जीवन में असली रूप देकर व्यर्थ के खर्चों से सहज बचेगी।

घरेलू संघर्ष, अन्ध विश्वास कुरुतियाँ आदि जड़मूल से समाप्त हो जायेंगे।

तो अन्त मे मेरी बहनें जिनमे धर्म की ज्योति है? अविचल श्रद्धा है, भावुक हैं, कोमल हैं, सरल हैं, मृदुल हैं, वे भगवान महावीर के इस पच्चीसौवी निर्वाण तिथि के शुभ पावन प्रसग के उपलक्ष में विवेक (ज्ञान), स्वाध्याय का दीप प्रज्वलित कर अपने जीवन को और भी चमकायेंगी। 'स्वाध्याय-माप्रमद' इस सूक्ति को जीवन मे अगीकृत कर आज के अपने विपन्न समाज को सुसम्पन्न, सुदृढ और सुसमृद्ध बनायेंगी, ऐसा दृढ विश्वास है।

जीवन-निर्माण और स्वाध्याय

श्री मिट्ठालाल मुरड़िया

स्वाध्याय का अर्थ है-अपने को पढना, अपने स्वय का अध्ययन कर चिन्तन और मनन करना। केवल अपना ही अपना ध्यान कर दुर्गुणो से विग्रह करना, स्वय की मनोभूमि और चिन्तावृत्तियो का साक्षात्कार करना, स्व की ओर जाना, स्व की ओर आना, स्व की ओर देखना, स्व मे ही रमण करना और स्व मे ही लीन होकर स्व की साथ अन्यान्यों का पथ भी आलोकित करना।

बहुत बडे सौभाग्य से ही स्वाध्याय का पुण्यप्रसग हाथ लगता है। स्वाध्याय उत्कृष्ट मगल है, स्वाध्याय प्रकाश स्तम्भ है, स्वाध्याय महासागर है, उसमे डुबकियें लगाते जाइये और निकलते जाइये। स्वाध्याय करने से मन को शान्ति मिलती है, दिल मे आनन्द आता है। स्वाध्याय मे प्रवृत होने के कारण हम निन्दा से बच जाते हैं और हमारा दैनिक जीवन मनोरम व्यतीत होता है।

जिसे लोभ, मोह और आसक्ति नही है, जो मन से क्रोध को कसता है, मोह को मारता है, लोभ को ललकारता है और उन्माद को उखाडता है छल और कपट से दूर रहकर सबका भला करता है, जिसे अन्यान्यो की प्रगति पर ईर्ष्या नही है, जो हिंसा और शोषण से सदा बचता है, जो अहिंसा, सत्य और अपरिग्रह के महत्व को समझ कर प्रेम पूर्वक रहता है, जिसे राग-रग से अनुराग नहीं है, जिसके आचार-विचार उत्तम हैं, जो कम खाता है, सतोष के साथ विवेक रखता है, शान्ति के साथ प्रेम बढाता है, सभी के साथ सहानुभूति रखता हुआ मैत्री सम्बन्ध स्थापित करता है, जो मर्यादा के प्रतिकूल कोई कार्य नही करता, जो अपने सकल्पों पर दृढ रहकर सभी को समान रूप से देखता है, जिसकी दृष्टि मे दया, करुणा और प्रेम है-वह सचमुच स्वाध्यायी है।

एक लोभी अन्तर्मन से स्वाध्याय नही कर सकता, एक हठी स्वाध्याय को जीवन का अग नही बना सकता और एक तिकडमबाज स्वाध्याय के लिए समय नही दे सकता।

यह सच है कि स्वाध्याय से कर्मदल टूटते हैं, चित्त प्रसन्न रहता है, दिल मे अलौकिक आनन्द की अनुभूति होने लगती है। स्वाध्यायी की आत्मा निर्मल और पावन होती है और किसी अदृश्य शक्ति के प्रकाश से उसका जीवन जगमगाने लगता है।

मानव जीवन के निर्माण मे स्वाध्याय का महत्व पूर्ण स्थान है, मानव के नैतिक उत्थान मे स्वाध्याय का बहुत बडा योग रहा है। स्वाध्यायी शान्त रहकर भगवतभक्ति मे लीन रहता है, व्रत और उपवास करता है, सामाजिक, प्रतिक्रमण करता हुआ पवित्रता की ओर बढता जाता है, बाहरी दुनिया से नाता तोडकर अन्दर ही अन्दर रमता हुआ ऊपर उठता जाता है। प जवाहरलाल नेहरू का जीवन निर्माण किसने किया? विवेकानन्द और गाधी का जीवन किसने बनाया? अरविन्द को महानता किसने दी? गोखले और दादा भाई नौरोजी को हम क्यो स्मरण करते हैं? क्योकि स्वाध्याय ने ही जीवन निर्माण कर उन्हे महान् बनाया है उनकी ज्ञान, ध्यान, व्रत, प्रार्थना, भगवान् पर भक्ति, समय की पाबन्दी, नियमितता, कर्त्तव्य परायणता, सच्चाई, निर्भयता और धर्म पर श्रद्धा थी।

आज समाज, देश और धर्म को सदाचारी, चरित्रवान और कर्त्तव्यनिष्ठ स्वाध्यायियों की आवश्यकता है जो समाज मे शान्ति स्थापित करें, सहृदयता और सौजन्यता बढावें, सामाजिक द्वन्द्व मिटावें, कुप्रथा तोडें और संकीर्णता से ऊपर उठकर चतुर्विध संघ मे ज्ञान, ध्यान, चिन्तन और मनन की चेतनापूर्ण जागृति पैदा करें।

स्वाध्यायी आंख बन्द करके भी सभी को देखता है और आंख खुली रखकर भी किसी को नही देखता। उसकी स्वाध्याय साधना मे धन कोई मोह का व्यवधान उपस्थित नहीं करता? परिवार कोई बाधक नहीं बनता? उसके लिए सभी कार्य कल्याण प्रद होते हैं। अमगल को वह मगल बना देता है। उसकी दृष्टि मे कोई छोटा नहीं और कोई बडा नही। स्वाध्याय के रस में वह इतना मस्त हो जाता है कि उसके चेहरे पर तेज टपकने लगता है और तन की कान्ति बढ जाती है।

प्राय हम घर की रोटियां खाकर परायी निन्दा और अपनी प्रशसा करते हुए नहीं थकते। ऐसे व्यक्तियों को चिन्ता और दु ख से राहत पाने के लिये स्वाध्याय रामबाण है, लोभियो के लिये स्वाध्याय जादू है, कामियों के लिये स्वाध्याय तीर-कमान है और कंजूसों के लिए तो स्वाध्याय पेनिसिलिन इन्जेक्शन है। इसलिए जीवन व्यवहार के सभी कार्य संपादित करते हुए भी आप स्वाध्याय न छोड़िये। अतएव आप जीवन निर्माण के लिए स्वाध्याय कीजिए। गृह-कलह से मुक्ति पाने के लिए स्वाध्याय कीजिये, सरलता और सादगी के लिए स्वाध्याय कीजिये। स्वस्थ और प्रसन्न रहने के लिए स्वाध्याय कीजिये, सामाजिक एकता और प्रामाणिकता के लिए आप स्वाध्याय कीजिये, चतुर्विध सघ में शान्ति और बालको को सस्कारवान बनाने के लिए स्वाध्याय कीजिये. और परिवार मे श्रद्धा और भक्ति पैदा करने के लिए स्वाध्याय कीजिए जो कुछ भी हो, मगर स्वाध्याय अवश्य कीजिये।

किन्तु हम स्वाध्याय नहीं करते. पराध्याय करते हैं। जो पराध्याय करते हैं, वे स्वाध्याय कैसे कर सकते हैं? स्वाध्याय और पराध्याय में जमीन-आसमान का अन्तर है। पराध्याय करनेवाला स्वाध्याय का आनन्द नहीं उठा सकता। स्वाध्यायी सुखी, संतोषी, सरल और सात्विक प्रकृति के होते हैं, मोह और ममत्त्व से दूर रहकर अन्तराल में रमते हैं और स्वाध्याय ही उनका ध्येय बनकर दैनिक जीवन का अग बन जाता है। हम अहर्निश पराये को ही देखते हैं, पराये का ही सोचते है? पराये का ही अध्ययन करते हैं, परायी प्रगति पर दुखी होकर प्राय· हम अपनी अशान्ति बढाते हैं।

जो अपने दोष न देखकर, दूसरो के दोषो को देखता है, अपनी योग्यता की, अपने शौर्य और दान की बडी मनोरम कहानियां सुनाकर आत्म-प्रशसा करता है, अपनी ही गौरव गाथा सुनाता है, अपने पर्दे को न देखकर दूसरों के पर्दे में झांकता है, टकटकी लगा अन्यायो की खिडकियें खोलखोलकर देखता है, भला वह अपना वर्तमान जीवन कैसे सुखी बना सकता है? दर्प और झूठी शान सदैव उसे पीडित करती रहती है। जो भूतकाल की कीर्तिकला कहते नही थकते और भविष्य के हवा-महलों पर डकोटा वायुयान दौड़ाते हैं, ऐसे एक नहीं, दो नहीं, तीन नहीं, पूरी की पूरी फौज है। कहां तो उत्सर्ग पूर्ण जीवन और कहां परनिन्दा और आत्म-प्रशंसात्मक प्रदर्शन का दिलचस्प चक्कर।

मैं चाहता हूं कि स्वाध्याय दिखावे का न हो, स्वाध्यायी व्यक्ति के जीवन में तप, त्याग और संयम लबालब भरा हुआ हो।

आज समाज को उच्च आदर्शों वाले उत्तमोत्तम स्वाध्यायियों की आवश्यकता है, जो समाज की युवा पीढी को चरित्रवान बना सकें, उनमें उत्तम संस्कार डाल सकें, त्याग और तप के अंकुर पैदा कर सके, उनके आचार-विचार को बदल कर उसमे आध्यात्मिकता के भाव भर सकें।

स्वाध्याय सहित अनुष्ठानों की आराधना

श्री चन्दुलाल के. मेहता

स्वाध्याय का लक्ष्य : स्वहित-आत्महित :

मोक्षमार्ग में स्वाध्याय का विशिष्ट स्थान है। श्रुत आराधना का स्थान ज्ञान और तपस्या दोनो मे है। "स्व" को —आत्मा को—लक्ष्य कर जो भी सम्यक् शास्त्रो का अध्ययन-अध्यापन होता है, वह है स्वाध्याय। अध्ययन में लक्ष्य स्व आत्मा का कहा गया है जिससे यही सूचित होता है कि शास्त्र पठन चिंतवन इसी उद्देश्य से करना है कि स्वात्मा मे सम्यक् ज्ञान का प्रकाश कैसे आये, बढे, कैसे टिक सके, और उससे सम्यक् ज्ञान दृष्टि कैसे विकसित हो, शुद्ध कल्याण का मार्ग कैसे प्रगट हो और इनसे धर्म आराधना का पुरुषार्थ कैसे बढे ? अध्ययन, अध्यापन स्व के हित में, स्व के जीवन मे रम जाय वही स्वाध्याय का उद्देश्य है। स्व का हित का अर्थ है आत्मा का हित न कि जड काया के सुख सम्मान का ध्येय यदि अध्ययनाय फल की आकाक्षा वाला या किसी भी आत्मा से द्वेषादि पर भाव से युक्त रहा तो अध्ययन की साधना के फल स्वरूप, भौतिक सुख प्राप्ति के साथ दु:खो की परम्परा जारी रहेगी। आगामी भवो मे भी मति मलिन और द्वेष युक्त होने से जीवन विशुद्धि की आशा दूर चली जायगी।

आत्मा-हित की पुष्टि विरागता व भावना द्वारा :

यदि ससार मे रहते हुए भी धर्म साधना की जड निर्वेद-ससार से विरागता ग्लानि-रही, तभी उस संसार से मुक्त कराने वाला धर्म रुचिकर होगा। यदि इससे विपरीत दशा रही, यानि ससार के सुख-सम्मान प्रिय बने रहे, व्रत नियम तपस्या से काया दुर्बल हो जाने का उद्वेग रहा तब वैसी क्रिया आत्मा को बधन से छुडाने वाली न बन कर ससार वृद्धि का ही कारण रहेगी। पाप सज्ञाओ-आहार, विषय, परिग्रह, कषाय आदि—से नफरत बनी रहने से मन निर्मल बन सकेगा। मैत्री आदि चार व एकत्व, अन्यत्व, सवर आदि बारह भावनाओ से युक्त क्रिया, जब विरागता से अतिरिक्त, धर्म साधना की आधारशिला बन जाय तब ही साधना मे कुछ अश आनद की अनुभूति होगी। मन में जब धर्म इसी स्वाभाविक नींव पर स्थित हो जाय तब हम समझ सकते हैं कि धर्म-क्रिया आत्महित के लक्ष्य से—आत्म शुद्धि के लिये हो रही है।

स्वाध्याय की अनन्य उपयोगिता :

मन को आत्महित में, धर्मक्रिया मे स्वाभाविकता के साथ लाने वाला, और उसमे अधिक समय तक स्थिर रखने वाला स्वाध्याय ही है। मन वायु से भी अधिक-तेज गतिवान है। एक समय मे मन कहाँ से कहाँ पहुँच जाता है। ऐसे चचल मन को समय-समय शुभ भावो में पकड कर रखने वाला कोई न हो, तब अशुभ मे जाने से उसे कौन रोक सकता है ? जाप, प्रार्थना, ध्यान, आवश्यकादि क्रियाएँ अमुक समय तक ही चलती

हैं और उनमे मन स्थिर हो या न भी हो—योगी आदि महापुरुषो की बात निराली है। कारण यह है कि मन अनत काल से विविधता-प्रिय बना रहा है।

इसीलिये शास्त्रो की विषय वस्तु मे मन को घटो, महिनों तक पकड रखने का अभ्यास हो तब ही मन, बाह्य विषयो से अधिक से अधिक दूर और दूर होता जायगा। उतना ही नही किन्तु अध्यात्म और तत्व की शास्त्रीय बातें मन मे बहुत घूटने पर—चिंतन मनन करने पर—भौतिक विषय निस्सार बन कर रहेंगे। दूसरे शब्दो मे मानसिक शुद्धि के लिये भिन्न-भिन्न अनुष्ठानो मे से एक है स्वाध्याय, जो कि मन को शुद्ध बनाने की प्रक्रिया है। अनतज्ञानी तीर्थ कर भगवान की वाणी—उपदेश—जो शास्त्रो मे ग्रथित किया हुआ है, उसका स्वाध्याय अनत कर्म क्षयकारिणी महापवित्र साधना है। जिन वचन का बहुत अभ्यास होते-होते, जिनागमो मे रमणता से, आत्मदृष्टि भी विकसित हो जाती है।

आत्मदृष्टि विकसने पर लाभ :

आत्म आराधना में रत होने पर मन का जड पदार्थों की ओर से झुकाव हट कर आत्मा की ओर विशेष आकर्षण होता है; आत्म तत्व की अभिरुचि की जागृति होती है, तत्व जिज्ञासा बढ जाती है। पूछ कर ज्ञान वृद्धि की भावना (पृच्छा करने की अभिलाषा) बढती है। इस हेतु आत्मा को मुलायम बनना पडता है यानि अहकार का मर्दन करना पडता है। जान-कर, समझ कर, स्वीकार करने की,—अमली रूप देने की अवस्था प्राप्त होती है—यानि श्रावक के व्रत अगीकार करने की भावना होती है। इन सभी सीढियो पर चढ़ते-चढते तत्व पर हार्दिक श्रद्धा हो जाती है।

आत्म दृष्टि का विकास यानि (i) आत्म शुद्धि = आत्मा के दोषो, दुर्गुणो और कुसस्कारो से शुद्धि। आज तक भूतकाल मे मैंने कैसे संसार बीताया, क्या धार्मिक क्रिया की, क्या कमाई की, अब क्या परिस्थिति है, मे पापी या धर्मी! आरभ-समारभ वैसे ही करता जा रहा हूँ या घटाता जाता हूँ ? इस प्रकार के आत्म सबधी प्रश्न स्वय पूछे जाते हैं। (ii) आत्मा की, जड की पराधीनता मे से मुक्ति। मोहमय ससार और कर्म के बधनो से मुक्त होते जाना, यह है पराधीनता पर कटौती। (iii) आत्मा की विभूति के नजदीक जाना यानि आत्मा की स्वय की जो ज्ञानमय दशा है, स्वरूप से महासत्व व वीर्य की दशा है—उनका अशत भी अनुभव करते जाना, झाकी करते जाना यानि आत्म-समृद्धि के नजदीक पहुँचना। यही है आत्मदृष्टि के विकास का फल।

जिनागम (जिनाज्ञा) का माहात्म्य :

स्वाध्यायशील आत्मा, जिनाज्ञा के बधन मे, जिनेश्वरदेव का, सच्चा शरण लेता है। उनके शरण जाने पर उन्ही को सच्चे तारक, रक्षक, शासक मानता है। "उन्ही के प्रतिपादित तत्व ही सच्चे; उनका दिखाया हुआ आराधना मार्ग ही सच्चा" यह हार्दिक भाव सुन्दर अध्यवसायो से भरा हुआ पवित्र भाव—यदि हृदय मे सतत बना रहा, तब मलिन भाव और तुच्छ विचार अपने आप कम होते जायेंगे। कुसस्कार के स्थान पर सुसस्कार का बल बढता जायेगा।

जिनेश्वर देवो ने आत्मदृष्टि के विकास हेतु मन की शुद्धि-परिष्कार-पर अत्यधिक बल दिया है। रागद्वेष व मोह के जीव पर के अधिकार शनैः शनै मद करने के लिये मानसिक जागृति व पुरुषार्थ आवश्यक है। परमात्मा की जिज्ञासा अधिक बढाते जाना और सासारिक जिज्ञासा यानि इच्छाओ, उपाधि, आव-श्यकताओं का घटाते जाना, धर्म सस्सार सुदृढ करने का सरल उपाय है। इस उपाय से अभ्यास होते, मन जो आज तक इन्द्रियो का गुलाम बना हुआ था,

वह जब इन ही इन्द्रियो के विषयो के पीछे जाता रहेगा। इतना ही नहीं, किन्तु जहाँ जीवन की अनिवार्य पूर्ति करनी पड़े वहाँ भी मन इच्छापूर्वक न जाकर, कच्चे दिव्य से, सीधा पीछे लौटने की भावना के साथ ही जायेगा। उदाहरण के लिये, भोजन क्रिया अनिवार्य है, फिर भी भोजन की क्रिया करते हुए व्यक्ति अपने मन मे भक्ष्याभक्ष्य की, स्व शारीरिक प्रकृति की, अनुकुलता की सावधानी, खाद्य-मात्रा की सकोच वृत्ति रखते हुए, विवेक के साथ हाथ लम्बा करेगा। केवल स्वाद हेतु, पेट मे ठोस ठोस कर भरने की, रस-लोलुपता से स्वच्छदता से भोजन पर आकर्षित नहीं होगा। प्रत्येक कार्य में इसी प्रकार लक्ष्य अब यही रहेगा कि आत्मा पर की वासनाओ और विकारो के बंधनों से मुक्त होने के लिये और आत्मा की गुण विभूति के समीप पहुँचने के लिये मैं विवेक पूर्वक यह प्रवृत्ति कर रहा हूँ।

स्वाध्याय (तत्व चितन) से आराधक भावना की वृद्धि.

स्वाध्याय के पठन व चितन के साथ यह जागृति सदैव रहनी आवश्यक है कि (I) मैं अपनी परिणति का निरीक्षण करता रहू कि मन किसी अशुभ विचार मे या अशुभ भाव की ओर आकर्षित नही हो रहा है (II)-गुणो की ओर मेरा हार्दिक आकर्षण सहज बना हुआ जारी है (III) दोषों से मेरी घृणा उतनी ही जारी है जो पहले थी (IV) गुणो के पोषक-स्थान (अहिंसा, सत्य, क्षमादि) और वैसे निमित्तो का सेवन भी जारी है। इस प्रकार सर्वज्ञ के शास्त्रो के स्वाध्याय से, तत्त्वों के श्रद्धायुक्त चितन से और आत्मा का, उस चितन द्वारा इन्द्रिय विषय घृणा और गुणों की ओर आकर्षण कितना पुष्ट हुआ, यह साथ-साथ नापा जा सकता है।

आराधना की ओर अपेक्षा भाव यानि "जिनाज्ञा ही तारक-तारणहार है" वह है धार्मिक व्यक्ति का आराधक भाव। यद्यपि वह स्व मन मे ग्लानि अनुभव करता है कि सर्वज्ञ के सभी विधानो को पालन करने में मैं असमर्थ हू, फिर भी वह आराधक भाव मे ही है। जिनाज्ञा के उच्च उपादेय भाव, कर्तव्य भाव हृदय मे बस गये होने से वीर्योल्लास जागृत होने पर व अशतः आज्ञा के विधि-निषेध के पालन मे वह श्रद्धावान श्रावक सलग्न हो जाता है। जिनाज्ञा की आराधना और आराधक भाव मोहनीयादि कर्म के आशिक नाश से प्राप्त होता है। आराधना से आराधक भाव आता है, टिकता है, और वर्धमान होता है, इसीलिये आराधना-धर्मक्रिया—की किंचित भी उपेक्षा न हो, यह सावधानी आवश्यक है।

जगद्गुरू महावीर परमात्मा ने प्रियमित्र चक्रवर्ती के भव में, चक्री के वैभव विलास त्याग कर, चारित्र की आराधना इतनी बलवत की कि आराधक भाव क्रोड वर्ष के चरित्र पालन में बहुत पुष्ट किया। उसी के परिणाम-स्वरूप देवलोक से च्यव कर बाद मे पचीसवे नदन राजा के भव मे दीक्षा लेकर लक्ष वर्ष के उग्र चारित्र पालन करते हुए—मासक्षमण के पारणे मे मासक्षमण करते हुए—११ लक्ष ६० हजार से अधिक मासक्षमण कर अरिहतादि वीस स्थानक की आराधना की। इस क्रिया मे अद्भुत आराधक भाव की वृद्धि के कारण तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जन किया। कोटि-कोटि वंदन हो इस उत्कृष्ट आराधक और उनकी आराधक भावना को।

हम भी अपनी सीमित शक्ति और गृहस्थ जीवन की अल्प शेष आयु सर्वज्ञ की आज्ञानुसार सुन्दर सवर-निर्जरा की यानि अहिंसा-सयम-तप की आराधना मे लगाने का पुरुषार्थ, वैराग्य गर्भित तत्वश्रद्धा के साथ करते रहें। यही मनुष्य जीवन प्राप्त करने की सार्थकता होगी। जैसे जैसे आराधना सबल होती रहेगी वैसे आराधक भाव बढता जायेगा। शुभ क्रिया के अधिक अभ्यास से सुविकसित भाव शुभतर, दीर्घायुष्क और दीर्घकाल तक स्थिर होते रहेंगे।

आराधक भाव का सामर्थ्य :

आराधना से हृदय मे उल्लसित शुभ भाव (अध्यवसायो) का अपूर्व वल होता है। वे भाव उच्च कोटि के अशुभ कर्मों को (यदि निकाचित न हों) तोडने मे-रस और अनुवध मद करने मे, व उन कर्मों की स्थिति और दलिक कम करने मे शक्तिमान हैं। उतना ही नहीं किन्तु शुभ भाव रूपी मंत्र के प्रभाव से शेष अशुभ कर्म का विष भी, अल्प फल विपाक वाला वन जाता है।

अनुष्ठानो की उच्च आराधना से शुभ कर्म के अनुवन्ध आत्मा मे अत्यधिक एकत्रित होते हैं। शुभ भाव की वृद्धि से अनुवन्ध पुष्ट होते हैं और पराकाष्टा पर भी पहुँचते हैं। अनुवन्ध (वीज शक्ति) वाला शुभ कर्म अनुवन्ध की अपेक्षा उत्कृष्ट कोटि का होता है। और तीव्र शुभ अध्यवसाय द्वारा यदि वह उपार्जित है तव नियम उत्तम फल-शुद्ध औषधि के सेवन की भाति आरोग्य, पुष्टि, तुष्टि-का दाता होता है। यह अनुवन्ध वाला शुभ कर्म, नये शुभ मे प्रवृति कराता है और परम सुख का साधक भी वनता है।

आराधना-धर्मक्रिया :

जीवन का सार ही धर्मक्रिया है। विनाशी, अपवित्र और पर, ऐसी काया द्वारा, अविनाशी पवित्र और स्व आत्मा का कल्याण साधने का वल धर्म क्रिया में है। नवकार मंत्र का स्मरण व्रत, प्रत्याख्यान, नियम, उपवास, उणोदरी आदि वाह्य तप, गुरु आदि की या वडिलों की वैयावच्च ध्यान, कार्योत्सर्ग आदि आभ्यतर तप, धर्मराग, प्रभुभक्ति, दान सामायिक आदि धर्म-क्रियाओं द्वारा साक्षात् या परपरा से, मोक्ष की साधना हो सकती है।

सभी क्रियायें प्रारंभ में द्रव्य क्रिया मे ही होती हैं, किन्तु उन्हीं क्रियाओं को भाव के लक्ष्य से करते-करते व्यवहार भी शुद्ध वनता जाता है। व्यवहार शुद्ध वनते जाने पर, द्रव्य क्रिया को वल मिलता हैं और निश्चय जीवत और जागृत वनता है वहीं द्रव्य क्रिया, नया निश्चय प्राप्त करने का साधन भी वनती है। द्रव्य क्रिया अनत वार व्यर्थ गई फिर भी उसी की सहायता से कभी न कभी, वह मन के उपयोग और हृदय के भाव से करने पर, भाव क्रिया करने का सामर्थ्य प्राप्त हो जायगा। व्रत, तप आदि का सेवन करते-करते, प्रतिसमय जागृति रखने पर, उत्तरोत्तर शुभ भाव की वृद्धि होती है।

एक सरल उदाहरण देखें। हम प्रतिदिन नवकार मंत्र का जाप करते ही हैं। कई वार माला हाथ मे घूमती जाती है और मन अन्य स्थानों पर चक्कर लगा लेता है। इस स्थूल क्रिया मे यदि निश्चय यह लाया जाय कि एक भी मणियों का हाथ में योही फिरना, मन का नवकार के पद के साथ सयुक्त न होते हुए हो जाय, तव वहा से पुन लौट कर माला गिनना प्रारम्भ किया जाय तव मन को इस प्रकार अभ्यास कराते हुए उसका, संयोजन पद के साथ हो जायगा। फिर यह विचार किया जाय कि अत मे कितनी वार पांच पद स्मरण मे पुन लौटना पडा।

अब नया निश्चय किया जाय कि यह पद-स्मरण मे प्रत्येक पद आखो के सामने लिखा हुआ है उसे मैं पढ रहा हूँ। इस प्रकार आँख और मन एक साथ पढने की क्रिया मे जुटे हुए रहें तव अन्य विचारो को स्थान ही नहीं रहेगा। वाद मे उन पदो का विशेष प्रकार से अर्थ सहित स्मरण किया जाय, तव मन की स्थिरता मे वृद्धि होना सभव है। उन परम तत्त्व-अरिहतादि-के अनेक गुण, उपकार, शक्ति, प्रभाव आदि का चितन-मनन वढते-वढते, जाप की क्रिया व्यर्थ जाने से रुक जायगी उतना ही नही किन्तु उन महापुरुषों के कुछ आशिक गुण अपनाने की इच्छा दृढतर वनती जायगी।

स्वाध्याय और जप

पंच परमेष्ठि की साधना, उपासना कौनसा कल्याण नही कराती ? उनका उपदेश कल्याण के अनेक मार्ग प्रकाशित करता है। उनके स्मरण भाव-वंदन, भक्ति, उनके गुणो का उत्कीर्तन, आलंबन, उनका शरण इत्यादि हमारे लिये महाकल्याण के कारण हैं, साधन हैं, यह उनका अचिंत्य प्रभाव है। लोह जैसे काले आत्मा को सुवर्ण जैसे गुण सम्पन्न बनाने वाले वे वीतराग प्रभु हैं। वे पच परमेष्ठि पारसमणि हैं। नवकार मत्र आत्मा के अनादि मिथ्या भावों को टाल कर सम्यक् भाव प्रगटाने में अत्यधिक उपकारक है। उसके द्वारा होने वाली अरिहंत सिद्धादि की पहिचान से स्व आत्मा के केवल ज्ञान स्वरूप की प्रतीति और निर्णय हो जाता है और अनादि के मिथ्या मोह का विलय दिन प्रतिदिन बढता जाता है। नवकार मत्र का अर्थबोध, उसके अधिकाधिक स्वाध्याय, चितन, तत्वदृष्टि विचार से वर्धमान होता है।

स्वाध्याय, इस प्रकार से शास्त्रों के पठन-पाठन और नवकार मत्रादि के जप रूप भी है। बाह्य धर्म साधना भले दिखने में पहिले जैसी ही जारी है, किन्तु गुणो की वृद्धि से साधना का शक्ति-पावर, ओजस बढता जाता है और यह गुणवृद्धि, श्रद्धायुक्त तत्वचितन से ही प्राप्त होगी।

स्वाध्याय और तप

स्वाध्याय स्वयं भी तप का एक प्रकार है निर्जरा तत्व है। कर्मक्षय का साधन है ही किन्तु बाह्य तप अनशनादि से प्रचुर कर्मक्षय होता है। कर्मक्षयार्थ इन्द्रियों और मन की विषय कामना का जितने अंश में दमन, उतना ही तप सार्थक हुआ। बाह्य तप केवल कर्मक्षय के लिये ही नहीं है किन्तु नये कर्मों को लेकर आने वाले आश्रव, इन्द्रिय-अविरति शरीर ममत्व और आहार ममत्वरूप कषायो और अशुभ मन-वचन-काया के योगों के रुंधन के लिये भी आवश्यक है। यदि छः प्रकार के बाह्य तप के अभ्यास से आत्मा को नियंत्रित किया है, तब ही स्वस्थ मन, स्वस्थ आत्मा स्वाध्याय-जाप-ध्यान में निश्चलता से और तन्मयता से प्रवृत्त हो सकता है। तप जीवन को सौम्य, स्वच्छ, और सर्वांगपूर्ण बनाने की दिव्य साधना है और उसके साथ स्वाध्याय जारी रहने से स्वजीवन निरीक्षण और अतर शत्रु के साथ लड़ने का सत्व विकसित होता है।

प्रायश्चित, विनय, वैयावच्च और स्वाध्याय

बाह्य तप से पुष्ट बना हुआ आभ्यन्तर तप का महत्त्व बहुत है। फिर भी स्वाध्याय के वल की शक्ति के अभाव मे प्रायश्चित, विनय आदि की आराधना से ही, उपर्युक्त आतर शत्रु के साथ युद्ध कर सहिष्णुता, क्षमा, समभाव आदि का विकास शक्य नही होता। प्रायश्चित में स्व के पापो को अत्यत प्राश्चाताप के साथ प्रकट करना होता है। इसमे आत्मा के बलवान शुभ भाव की वृद्धि होती है। आत्मा मे घुमे हुए जटिल दोष, गुणिजनो के गुणगान करने से, उनका विनय, भक्ति, बहुमाव करने से, उपकारी के उपकार मन मे चिन्तन करने से और उनके गुणो को मन में तल्लीन करने से—यानि मन को स्वाध्याय मे लीन रखने से ही दोष हट सकते हैं। निष्काम सेवा, विनय, वैयावच्च से अहत्व टूटता है, विषयांधता छूटती है, स्वार्थाता कटती है। देत का सुदर उपयोग होता है गुरुजन वडीलो की सेवा मे। जब मलिन अध्यवसाय से कर्मबंध होता है, तब विशुद्ध अध्यवसाय से कर्मक्षय होता ही है। शरद, मजेयुक्त हवा से यदि सरदी लगती है तब गरम, सुखी हवा से सरदी टूटती भी है। अविनय उच्छृंखलता आदि मे मनकषाय का पोषण होता है। तब यह स्वय सिद्ध है कि विनम्र भाव, वैयावच्च, प्रायश्चित

आदि में मनोयोग के शुभभाव कर्मक्षय के हेतु होते हैं। इसीलिये तप से कर्मक्षय मे भाव का बल विशेष आवश्यक है। अविनय मे आर्तध्यान है, विनय मे धर्मध्यान है। आर्तध्यान का मूल रागद्वेष है और जब मूल विद्यमान हे, तब आर्तध्यान भी मौजूद है। स्वाध्याय यानि वस्तु स्वभाव के चिंतन से ही आर्त-ध्यान से बचा जा सकता है।

स्वाध्याय और ध्यान :

धर्मप्रवृत्ति इसीलिये करनी है कि मन को पवित्र भावनाओं से भरना है। धर्मक्रिया का उद्देश्य—'मन को शुभ ध्यान में रखना है'–रखने पर धर्मक्रिया मे सुस्ती, प्रमाद आने की संभावना नहीं। फिर भी इधर-उधर के विचारो से बचने हेतु (I) क्रिया के रहस्य की चितवना (II) स्वरूप विचारणा (III) क्रिया मे यदि सूत्र पाठ बोलने हैं तब सूत्र के पद लक्ष्य मे लिये जाय और (IV) उनके अर्थ भावार्थ पर विचा-रणा की जावे। दूसरे शब्दो मे क्रिया का उद्देश्य यही रहा कि "मन को इस क्रिया द्वारा, अच्छे ध्यान मे रखना है।" नाजुक मन को बहुत साधना मे जोड़ने पर भी यह आशका रहती है कि कभी वह आर्तध्यान मे सरक न जावे। इसीलिये अनहद विषय राग, निरकुश खान पान, काया की सुखशीलता, व्यापारादि मे रमणता आदि पर बहुत काम लाने की जरूरत है। अन्यथा यदि ये सभी सलामत हैं तब आर्तध्यान भी सलामत है। आरम्भ, समारम्भ से दूरी रखने से ही मन की शुभध्यान मे रमणता शक्य है।

काया पर आकस्मिक वेदना का उद्भव हो, तब अविचल मन रखना बहुत जटिल समस्या है। फिर भी स्वाध्याय के आलबन से तत्वदृष्टि, ज्ञानदृष्टि, तत्वचिंतन से पुनः पुनः मन की स्थिरता मे प्रवेश किया जा सकता है। स्वाध्याय और ध्यान की महिमा ऐसी है कि मन उसी में प्रविष्ट होकर पकडे जाने पर, वेदना, परिषह की पीड़ा स्मरण से दूर रह सकती है। यही है सत पुरुषो का "ज्ञान-ध्यान" में लीन रहना यानि स्वाध्याय में या प्रशस्त ध्यानमय क्रिया के आचरण मे सलग्न हो जाना।

स्वाध्याय और कायोत्सर्ग :

कायोत्सर्ग मे प्रतिज्ञा सहित काया और वाणी स्थिर किये जाते हैं। उसी के साथ विशेष प्रकार का चिंतन किया जाता है। शुभ में मन-वचन-काया की स्थिरता, यह अति उच्च कोटि की साधना है और वह कायोत्सर्ग मे मिलती है: श्रावक वर्ग सामायिक, प्रतिक्रमण आदि मे अभ्यास के रूप मे प्राथमिक, प्रारंभिक स्थिति मे कायोत्सर्ग करके प्रतिदिन चिंतन, निश्चित प्रकार के सूत्र, पद और उनके अर्थ का स्वाध्याय करता है। इस धर्मक्रिया मे साधना जारी रहते हुए किसी की ओर से कषाय, पीड़ा, अन्याय भी हो और उस परिस्थिति को मन पर ली न जावे, तब ही सुख और शाति की संभावना है। यद्यपि यह बहुत कठिन है फिर भी "निमित्तो को महत्व न देने से रागद्वेष की परंपरा रूक जाती है।" यह लाभ स्मरण पर लाने से अत्यधिक कर्म क्षय की संभावना है। इसी प्रकार धर्मक्रिया मे प्रगति होती रही तब आत्मा का प्रत्येक प्रदेश यह सवेदन करने लगे कि इस हेतु से भिन्न चिदात्म स्वरूप मैं हूँ।

स्वाध्याय और सामायिक :

सामायिक मे "समय" का अर्थ है— आत्मा और "सामायिक" का अर्थ है आत्मा मे अवस्थिति, "आत्मा में अवस्थिति" मे आत्मा अर्थात् जीव अपने को अजीव मे — शरीर, मन, इन्द्रिय एव अन्य पदार्थों से – भिन्न समझ कर, अनुभव कर मोक्ष की यात्रा में प्रगति कर सकता है। यह स्थिति जो कि अत्यंत पुरुषार्थ, उल्लास और जागृति की पराकाष्ठा है,

दुसाध्य होते हुए, असाध्य नही है। यह आशय प्राप्त करने हेतु, हेय तत्व—आश्रव, पाप, बंध—का श्रद्धा सहित चिंतन करने से उनके प्रति अरुचि; और उपादेय तत्व—संवर, निर्जरा के चिंतन से उनके प्रति रुचि उत्पन्न होगी, जब कि तत्व जीव, अजीव केवल जानने योग्य, रागद्वेष करने योग्य नही हैं—इस तरह की सतत् अनुप्रेक्षा तत्व विचारणा, स्वाध्याय मे रत रहने से संभावित है।

सामायिक समभाव की साधना है। समभाव की साधना यानि जीव मात्र के प्रति प्रेम की भावना। समता की भावना मे वृद्धि—साधना-निर्ममत्व भाव के आलबन से होती है। निर्ममत्व भावना यानि राग की विरोधी भावना। निर्ममत्व भाव पुष्टि के लिये एकत्व, अन्यत्व····धर्म, बोधि दुर्लभ आदि द्वादश भावनाओ का परशीलन करना होगा। परिणाम स्वरूप शांति, आत्मिक सुख, आनद की झाकी अतर में सभव हो सकेगी।

चतुर्शरण स्वीकार की आवश्यकता :

उपर्युक्त सभी धर्मक्रियायें-साधना-अहकार की भावना विलीन होने पर सभव है, शब्द हैं, आराध्य हैं। (देह को ही माना हुआ "अह") "अह" का नाश, तत्व का अंधकार-आच्छादन का विच्छेद, भगवत, परमेष्ठि के अनुग्रह से ही प्राप्त होगा। आध्यात्मिक जगत् के सर्वोत्कृष्ट तत्व—अरिहत, सिद्ध, साधु, केवली प्ररुपित शुद्ध धर्म—के बहुमान आदर सहित शरण मे जाने से उनका अनुग्रह कृपा, जिनाज्ञा पालन, सरल, सहज, सुलभ है। अब तक असहाय बना हुआ आत्मा, अनत-अनत सकित के पुंज के चरणों मे, शरण मे, पहुँचने पर उन्ही के प्रसाद से, स्वकर्म उपार्जित आपति विपत्ति की महान् घटनाओ के उपस्थित होने पर भी, उन विषम परिस्थिति का प्रतिकार वीरता से करता हुआ, चित्त को आत्म-तत्व की ओर केन्द्रित कर सकेगा। तात्विक विचारणा को वेग प्रदान कर आत्मा को ओजस्वी बनाने वाले, उन देव तत्व, गुरुतत्व और धर्मतत्व का प्रभाव अगम, अमेय; अगोचर, अनुपम, अचित्य है।

चार शरण स्वीकार के अतिरिक्त यदि हम अनत जिनेश्वर देवो के अनत, अत्यत दुष्कर अनुष्ठानो की; अनत सिद्ध परमात्माओ के सिद्धभाव, अनत आचार्यो के पदाचार, अनत उपाध्यायो के सूत्रप्रदान और अनत साधु महात्माओ के रत्नत्रयी की आराधना के अनुष्ठानो की बहुमान सहित, विवेक पूर्वक और प्रशस्त प्रणिधान से अनुमोदना करे, तब वह अनुमोदना आत्मा मे अखड शुभ अध्यवसाय जागृत करती रहेगी। इस से आराधना मे अचित्य बल, उल्लास, अखडता का प्रवाह जारी रहेगा।

स्वाध्याय का लक्ष्य स्वरित, आत्मरित जीवन, विशुद्धि है और उपर्युक्त व अन्य अनुष्ठानों में वे निहित हैं। स्वाध्याय युक्त अनुष्ठानो की आराधना से सभी श्रेय प्राप्त हो सकता है।

शेठवाडा, प्रांतिज
(गुजरात)

स्वाध्याय : आत्म-विकास की सीढ़ी

स्वर्गीय श्री रिषभदास रांका

भगवान महावीर ने धर्म का लक्षण बताते समय कहा है कि अहिंसा, सयम और तप ये धर्म के लक्षण है।

जैसे समता-अहिंसा की साधना के लिये सयम को आवश्यक माना है वैसे ही तप को भी। पूर्व सचित कर्मों की निर्जरा के लिये तप की आवश्यकता है। इसके बिना शुद्धि नहीं होती, आत्मविकास पूरा नही होता। साधना में तप का स्थान महत्वपूर्ण है। यह शरीर को कसता है, मन को विशुद्ध, दृढ, एकाग्र बनाने में सहायक होता है।

तप दो तरह के हैं, बाह्य और आभ्यन्तर। आभ्यन्तर तप में स्वाध्याय को महत्वपूर्ण स्थान है। स्वाध्याय का अर्थ है जिज्ञासा पूर्वक ज्ञान की उपासना। स्वाध्याय से ज्ञान में वृद्धि होती है और ज्ञान को आचरण में लाने पर आत्मविश्वास बढता है और इससे चारित्र पालन की प्रेरणा मिलती है।

आत्मविकास की साधना में सत्सगति का अत्यन्त महत्व है, पर निर्दोष सगति का पाना कठिन है। मनुष्य चाहे जितना सत्-चरित्र हो पर मनुष्य के नाते उसमे त्रुटि रहना सभव है। मनुष्य के दोष उस के शरीर के साथ नष्ट हो जाते हैं, इसलिए जो आज ससार में नही हैं ऐसे सत्पुरुषों के साहित्य द्वारा सत्सगति का अधिक लाभ मिलने की सम्भावना रहती है। क्योकि मृत्यु के साथ दोषो का भी विलय हो जाता है। फिर मनुष्य जो कुछ लिखता है, निर्दोष ही लिखने का उसका प्रयत्न रहता है। इसलिए ज्ञान-प्राप्ति में साहित्य का बहुत अच्छा उपयोग है। हम भगवान महावीर, बुद्ध, राम, कृष्ण, ईसा या और ससार के महापुरुषो का उनके साहित्य द्वारा सत्सग करते हैं, उनके अनुभव से लाभान्वित होते हैं। ग्रंथो को पढकर उनके अर्थ का चिन्तन करना स्वाध्याय का वाचना प्रकार है। जो हमसे अधिक जानकार हों उनसे प्रश्न पूछ कर जिज्ञासा शात करना पृच्छना है। जो कुछ पढा या दूसरो से सुना-सीखा उसे विवेक की कसौटी पर कसना चिन्तन है। जो कुछ पढा या जाना हो उसे निर्दोष करना और जो कुछ सीखा उससे दूसरो को लाभान्वित करना यह सब स्वाध्याय ही है।

हम जब आगमों में साधक की चर्या देखते हैं तो उसमें स्वाध्याय और ध्यान को प्राथमिकता दी गई गई है। स्वाध्याय के बाद ध्यान चित्त को एकाग्र करने में सहायक होता है।

पर पुस्तकें नहीं थी तब स्वाध्याय के लिये पाठान्तर किया जाता था। तब गाथाए स्तोत्र, भजन, विशिष्ठ गुणो या दोषो के काव्य बनाकर वे बोले या गाये जाते थे। उन्हे "सज्झाया" कहा जाता था।

साधक की दिनचर्या के प्रमुख अग थे स्वाध्याय और ध्यान। कहा भी है.—

"स्वाध्यायद् ध्यानमध्यास्तां, ध्यान त् स्वाध्याय मामनेत्।
ध्यान-स्वाध्याय-सपत्या, परमात्मा प्रकाशत्मे ॥"

स्वाध्याय के पश्चात् ध्यान करें और ध्यान के बाद स्वाध्याय। इस प्रकार ध्यान और स्वाध्याय के क्रम से परमात्मा प्रकाशित हो जाता है।

स्वाध्याय किस समय किया जाय इस विषय मे भी उल्लेख मिलता है। रात के पहले प्रहर में स्वाध्याय करें, दूसरे मे ध्यान, तीसरे में नींद लें और चौथे मे फिर स्वाध्याय करें।

स्वाध्याय के विषय मे हमारी परम्परा की क्या दृष्टि थी वह तो मैंने दी ही पर इस विषय में अपना अनुभव भी बता दूँ जिसे मुझे बताने के लिये कहा गया है।

यो कहा जाय तो अतिशयोक्ति नही होगी कि मेरे व्यक्तित्व के विकास मे स्वाध्याय का स्थान प्रमुख रहा है। मेरी पाठशाला या विद्यालय की शिक्षा बहुत ही अल्प रही है जो कुछ मैंने पाया वह स्वाध्याय के द्वारा ही पाया।

पिताजी धार्मिक वृत्ति के थे। उन्होंने धार्मिक ग्रंथों का सग्रह काफी कर रखा था जिसके पारायण से मुझ में धार्मिक व परहित की भावना के बीज पडे जो अंकुरित होकर मेरे जीवनविकास में वृक्ष की तरह बढकर मुझे उसके फल चखने को मिले।

पर स्वाध्याय और वाचन मे अन्तर है यह बात मैं प्रारम्भ मे समझ नही पाया था। जो पुस्तक सामने आती पढते रहता, परिणाम-स्वरूप मेरे विचारो मे स्थिरता नहीं रहती, मेरी स्थिति बिना पैंदे के लोटे की तरह थी। पर जब मैं अपने विचार लिखकर दूसरों को कहने लगा तो विचारो मे स्थिरता आई और स्वाध्याय के उस अग की प्रतीति हुई कि अपने विचारो से दूसरों को लाभान्वित किया जाय। अपनी बात को दूसरो को समझाना या दूसरों को धर्मोपदेश करना भी स्वाध्याय का ही अंग है। पर धर्मोपदेश साधक तभी करता है जब उसका आचरण स्वयं करता हो, नहीं तो उसकी स्थिति उस पिता के जैसी होने की सम्भावना रहती है जो स्वय तो सिगरेट पीता है पर लडके को उपदेश देता है कि तुम्हे सिगरेट नहीं पीनी चाहिए क्योकि वह हानिकारक है।

ऐसा उपदेश न तो दूसरो पर प्रभाव डालता है और नहीं अपना श्रेय साध पाता है। बल्कि कई बार तो उनके जीवन मे दम्भ या अहकार होने का खतरा होता है। स्वाध्याय मे उसी बात को शामिल किया जा सकता है जो तप बनकर पूर्व कर्मों को निर्जरा करती हो, जिससे हमारा जीवन शुद्ध और निर्मल होता हो।

जब स्वाध्याय मे यह विवेक आ जाता है तो है तो फिर साधक क्या पढे कौर क्या नहीं इसका विवेक करता है। अपना समय और शक्ति निरर्थक नहीं खोता। जो स्वाध्याय जीवन विकास में लाभदायक होता है उन्हीं ग्रंथों या पुस्तकों का वाचन करता है।

स्वाध्याय मे पढ़ें जाने वाले सभी ग्रंथो या विचारो को ग्रहण कर सकेंगे यह भी नही कहा जा सकता, वैसे ही सद्-साहित्य का मन पर कुछ भी असर नही होगा, यह कहना कठिन हैं। यह तो हमारी ग्रहण शक्ति पर ही अवलंबित है। जिनकी वृत्ति नई बात लिखने की होती है, जिनमें ज्ञान-प्राप्ति की जिज्ञासा होती है वे ही स्वाध्याय से लाभान्वित होते हैं। उनका स्वाध्याय तप बन जाता है, जो आत्म-विश्वास मे सहायक होता है।

स्वाध्याय : सुसंस्कारों की नींव

डॉ० कुसुमलता जैन

दीर्घ-कालीन साधना द्वारा मानव-समाज ने जिस ज्ञान-राशि का सञ्चयन किया, वह सञ्चित और सुरक्षित ज्ञान वाङ्मय है। इस वाङ्मय के अनुशीलन और अध्ययन से अध्येता अपने पूर्वजों द्वारा सहस्रों वर्षों मे अर्जित ज्ञान को अल्पावधि मे ही आत्मसात कर लेता है। पूर्वजों की इस ज्ञान-निधि का अध्ययन मनन ही स्वाध्याय है।

स्वाध्याय : स्व का स्वत : अध्ययन :

स्वाध्याय स्व का स्वत. अध्ययन है। स्व का आत्मा का ज्ञान ही वास्तविक ज्ञान है। पाश्चात्य विद्वान सुकरात ने भी मनुष्य को अपने आपको जानने के लिये प्रेरित किया है—Know thyself वैदिक ऋषियों ने भी 'आत्मान विद्धि' का सदुपदेश दिया है। जैनदर्शन का तो वर्ण्य विषय आत्मा ही है। शुद्ध आत्मस्वरूप की उपलब्धि का मार्गदर्शन ही जैनदर्शन का लक्ष्य है। जैनाचार्यों ने उपादेय आत्मज्ञान के लिये ही आत्मबाह्य सृष्टि के इतर पञ्चतत्त्वो का ज्ञान आवश्यक माना है। अत जैनदर्शन का समस्त ज्ञान आत्मज्ञान में ही केन्द्रित है।

स्वाध्याय के पांच प्रकार :

'स्व' के रूप का शास्त्रो के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास ही स्वाध्याय है। प्रथमत यह स्वाध्याय स्वकीय प्रेरणा से आरम्भ होता है। स्वाध्याय के पांच प्रकार आचार्यो ने निर्दिष्ट किये हैं—'वाचना-प्रच्छनानुप्रेक्षाम्नाय-धर्मोपदेशा ।' शास्त्रोक्त शब्दों का शुद्ध उच्चारण तथा शब्दो के निर्दोष अर्थ की अवधारणा वाचना है। वाचना में अर्थादि के सम्बन्ध मे सशय होने पर गुरुजनो से विनयपूर्वक शका-निवारण के लिये प्रश्न करना प्रच्छना है। वाचना और प्रच्छना के उपरान्त निर्णीत, असंदिग्ध विषय का पुन पुन चिन्तवन, मनन अनुप्रेक्षा है। अधीत ग्रन्थ का निर्दोष पाठ करना परिवर्तना या आम्नाय है। इससे अर्थो का अवधारण होता है, अधीत पाठ कण्ठ-गत हो जाता है, उपयोग स्थिर होता है। उपर्युक्त चार प्रकार के स्वाध्याय द्वारा गृहीत ज्ञान का उपदेश 'धर्मोपदेश' नामक स्वाध्याय का पाँचवा प्रकार है।

स्वाध्याय : परम तप :

बुद्धि-जीवी प्राणी-मानव की बुद्धि के वर्द्धन का साधन स्वाध्याय है। स्वाध्याय मानव की मानसिक क्षुधा का आहर है। विश्व के इतिहास मे ऐसे अनेक स्वाध्याय प्रेमियो के वर्णन सुलभ हैं, जो स्वाध्याय-तन्मयता मे आत्म विस्मृति की स्थिति को प्राप्त हो गये हैं। श्रमण और वैदिक दोनो ही परम्पराओ मे स्वाध्याय को परम तप माना गया है। जैन सस्कृति मे स्वाध्याय को आभ्यन्तर तप कहा है। शिक्षा समाप्त कर गृहस्थाश्रम मे प्रविष्ट होने वाले युवक-युवतियो को वैदिक आचार्य 'स्वाध्यायान् या प्रमद' का आदेश देते थे। श्रमण सस्कृति मे साधु और श्रावक दोनो के लिये स्वाध्याय दैनिक आवश्यक कृत्यो मे परिगणित है।

स्वाध्याय : ध्यान का हेतु :

सद्-साहित्य का निरन्तर स्वाध्याय मानव मे सुन्दर सस्कारो की नीव का निर्माण करता है। मनुष्य को आलसी होने से रोकता है, ज्ञान की भावना से आलस्य का परित्याग स्वाध्याय है—'ज्ञानभावना-लस्यत्याग स्वाध्याय.।' स्वाध्याय से हेयोपादेय का विवेक जागृत होता है, ज्ञान की प्राप्ति होती है। ज्ञान ही सुख का कारण तथा मोक्ष का हेतु है। प. दौलत-राम ने ज्ञान की प्रशसा मे कहा है—

ज्ञान समान न आन जगत मे सुख को कारण।
इति परमामृत जन्म जरामृत रोग निवारण॥

नित्य स्वाध्याय से ज्ञान परिष्कृत और परिवर्द्धित होता है। स्वाध्याय ध्याय का हेतु है। आचार्य कुन्द-कुन्द स्वामी ने अध्ययन को ही ध्यान कहा है—'अज्झयणमेव झाण।'

निरन्तर स्वाध्याय मानव की चचल वृत्तियो को नियन्त्रित करता है। मन बहुत चपल और गतिवान है, चित्त का यह चाचल्य ही दु खो का कारण है। स्वाध्याय की प्रकृत्ति मन पर अ कुश रखती है। जब तक मनुष्य सद्ग्रन्थो का अध्ययन करता है, उस समय तक उसकी दृष्टि विषय-वासनाओ से विमुख होकर ग्रन्थ-वर्णित विषय को समझने और हृदयगम करने मे लगी रहती है। अनुप्रेक्षा और परिवर्तना रूप स्वाध्याय से परिणामो मे निर्मलता आती है। शुद्ध सस्कारो का जन्म होता है। पाप की ओर से मन विमुख होता है।

मनुष्य का मन वानर के समान चञ्चल है। उसे कर्मरूपी विच्छु ने डस लिया है और उसने मोहरूपी मदिरा का पान कर रखा है। ऐसा मन अधिक समय तक स्थिर नही रहता। वह स्वच्छन्द विहार कर अनर्थ उत्पन्न न करे, इस पवित्र उद्देश्य से आचार्यों ने कहा है कि बुद्धिमान अनेकान्तरूपी फलो से नत, सप्त-भगीरूपी पत्तो से आकीर्ण तथा नयरूपी शाखाओ से युक्त, विशाल एव विस्तृत मूल वाले श्रुतरूपी वृक्ष के स्कन्ध पर मन रूपी मर्कट को स्थापित करें। वानर सदृश चञ्चल मन श्रुतरूपी वृक्ष-पर आरुढ होकर ही स्थिर हो सकता है—

अनेकान्तात्मार्थं प्रसव फलभारातिविनते,
वच पर्णाकीर्णे विपुलनयशाखा युते।
समुत्तुगे सम्यक् प्रततमतिमूले प्रतिदिन,
श्रुतस्कन्धे धीमान् रमयतु मनोमर्कटममुम्।

स्वाध्याय से मनोवृत्ति स्फीत होती है, अन्त करण पवित्र होता है। मान, माया, मोह, क्रोधादि कषायो की तीव्रता ससार-परिभ्रमण का, नीच-गति मे ले जाने का कारण है। निरन्तर स्वाध्याय से कषायो मे मन्दता आती है। चरित्र-पालन की रुचि जागृत होती है।

स्वाध्याय से मानव की चिन्तन शक्ति परिष्कृत होती है। स्वाध्यायी व्यक्ति सुख और दु ख दोनो को कर्मकृत फल मानता है, अत वह न सुख मे उन्मत्त होता है और न दु ख मे उद्विग्न। स्वाध्याय उसे समदृष्टि प्रदान करता है। वह पापो से भीत रहता है, और अनैतिक कार्यो से बचता है, और अल्प सतोषी रहता है और अनीतिपूर्ण धनसञ्चय से विरत होकर सासारिक कष्टो को धैर्यपूर्वक सहन करता है।

नैतिक शिक्षा के अभाव के कारण ही विश्व मे नैतिक मूल्यो का अवमूल्यन हो रहा है। स्वतन्त्रता के उपरात भारत का नैतिक चरित्र निरन्तर ह्रासोन्मुख है। भ्रष्टाचार और उत्कोच की प्रवृत्ति भारतीय समाज मे आपादमस्तक तक व्याप्त है। इस दुष्प्रवृत्ति के सवर्द्धन का कारण समाज मे धन और पद को अतिशय महत्व दिया जाना है। भौतिक जीवनस्तर की समृद्धि की बलवती कामना प्रत्येक भारतीय-मस्तिष्क मे छाई हुई है। नैतिक स्तर को सुधारने और चारित्र को दृढ करने की ओर किसी का लक्ष्य नहीं है। यदि समाज मे सत्साहित्य के पठन-पाठन को

प्रोत्साहित किया जाय, शिक्षा मे नैतिक शिक्षा का समावेश किया जाय, तो समाज मे सत्यमेव सदाचार का महत्व वढेगा। सद्ग्रन्थो का स्वाध्याय उनकी भौतिकवादी प्रवृत्तियो का उन्मूलन कर उन्हें सात्त्विक और सदाचारी जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देगा।

भारती के भव्य-भवन मे विपुल सामग्री सग्रहीत है। पतञ्जली ने शब्दशास्त्र के विषय मे कहा है-शब्द शास्त्र अपार सिन्धु है, आयु स्वल्प है, विघ्न अनेक है; अत निस्सार को त्याग कर हस की भाँति सार भाग का परिग्रहण करें। स्वाध्यायी व्यक्ति को भी इसी भाँति विशाल वाङ्मय मे से सन्मार्ग की ओर ले जाने वाले, आध्यात्मिक साहित्य का मनन-चिन्तवन इष्ट है।

—पोपटकर हाऊस, गाँधी चौक,
सदर, नागपुर (महाराष्ट्र)

समस्त समस्याओं का समाधान-स्वाध्याय

श्री चन्द्र जैन

संत्रस्त मानव :

आज मानव अनेक सत्रासो, कुठाओ, व्यामोह एव पर-पीडन से सन्तप्त है कि उसे अपने कर्त्तव्य का परीज्ञान नहीं हो पा रहा है, फलत वह व्यग्र है, विमूढ है और आक्रोश के वशीभूत होकर अनर्थ करने के लिए तत्पर है। इसका एक मात्र कारण यह है कि वह स्वाध्याय से कोसो दूर है। उसका मानस केवल अश्लील साहित्य के पठन मे अवश्य कभी-कभी सलग्न हो उठता है, अन्यथा सात्विक एव पारमार्थिक ग्रन्थो के पढने मे उसकी रुचि है ही नही। स्वय को न जानने के कारण ही मानव दानव के रूप मे इधर-उधर भ्रमित होकर फिर रहा है। पर को अपनाकर वह स्व को भूल बैठा है। जड और चेतन मे महान् अन्तर है। इस अन्तर की उपेक्षा करने वाला इन्सान न कभी सुखी रह सकता है और न आत्मोन्नति करने मे सफल मनोरथ हो पाता है। ऐसा विमोहित मानव समझाने पर भी नही समझता। कविवर दौलतराम के ये दो पद ऐसे ही विमूढ मानव के प्रति प्रबोधनार्थ कथित हैं—

(१)

जिया तोहे समझायो सौ सौ बार।
देख सुगरु की परहित मे रति, हित उपदेश सुनायो।१।
विषय भुजग सेय सुख पायो, पुनि तिनसु लिपटायो।
स्वपद विसार रच्यो परपद में, मदरत ज्यों बोरायो।२।
तन धन स्वजन नहीं है तेरे, नाहक नेह लगायो।
क्यों न तजे भ्रम चाख समामृत, जो नित सत सहायो।३।
अबहु समझ कठिन यह नरभव, जिन वृष बिना गमायो।
ते बिलखे मणिडार उदधि मे, दौलत को पछतायो।४।

(२)

निपट अयाना, तै आपा नही जाना,
नाहक भरम भुलाना बे।
पीय अनादि मोहमद मोहचो,
पर पद मे निज माना बे।निपट०।१।
चेतन चिन्ह भिन्न जड़ता सों,
ज्ञान दरश रस साना बे।
तन मे छिप्यो लिप्यो न तदपि ज्यो,
जल में कजदल माना बे।निपट०।२।
सकल भाव निज निज परनतिमय,
कोइ न होय बिराना बे।
तू दुखिया पर कृत्य मानि ज्यों,
नभ तोउन श्रम ठाना बे।निपट०।३।
अजगन में हरि भूल अपनथो,
भयो दीन हैराना बे।

दौल सुगुरु धुनि सुनि निज मे निज,
पाय लह्यो सुख थाना वे ।निपट०।४।
निपट अयाना तै आपा नहि जाना ।
नाहक भरम भुलाना वे ।।

आत्मस्वरूप की पहिचान :

स्वाध्याय वस्तुत अपना चिन्तन-मनन है। इससे मानव अपने स्वरूप को पहचानता है, जानता है एव पर परणति की समीक्षा करने मे समर्थ हो जाता है। अपने लेखा-जोखा मे वही सफल हो पाता है, जिसने आध्यात्मिक ग्रन्थो का परिशीलन किया है और अपने सत् स्वरूप को पहिचानकर स्व पर भेद को भली भाँति जान लिया है । स्वाध्याय का सामान्य अर्थ पठन-पाठन अवश्य है लेकिन निश्चयनय से स्वाध्याय की समुचित व्याख्या वडी विस्तृत एव व्यापक है। अपनी आत्मा के स्वरूप का परिपक्व अध्ययन, चिन्तन और पुर्नाचिन्तन है। सच्चा स्वाध्याय है। शाब्दिक अर्थ को ध्यान मे रखकर हम कह सकते है कि स्वाध्याय का मतलब अपना पढना है। लेकिन अपने को वही व्यक्ति भली-भाँति पढ सकता है जिसका ज्ञान विस्तृत है, निर्मल है, अन्ध विश्वासो से दूर है, एव विविध ग्रन्थो के अनुशीलन से जो बहुमुखी बन चुका है। कोरा ग्रन्थो का ज्ञान, कभी भी हमें विमोहित कर सकता है, और हमे दिग् भ्रमित बनाकर लक्ष्य-हीन दिशा की ओर वढने के लिए विवश कर सकता है। ग्रन्थो के पढने के उपरान्त उसका चिन्तन-मनन अत्यन्त आवश्यक है। हमारे प्रवुद्ध आचार्यो ने स्वाध्याय की वडी व्यापक परिभाषा की है।

'तत्त्वार्थ सूत्र' के अध्येता स्वाध्याय के भेदो से पूर्णरूप मे परिचित है। यहाँ वाचना, पृच्छना, अनुप्रेक्षा, आम्नाय और धर्मोपदेश-ये सब स्वाध्याय मे अर्न्तनिहित है। शब्द और अर्थ को स्वय पढना तथा दूसरो को सुनाना वाचना है। अज्ञात वस्तु-स्वरूप का बोध प्राप्त करने के लिए अन्य ज्ञानीजनो से जिज्ञासा करना पृच्छना है। अधीत अथवा श्रुत वस्तु स्वरूप का चिन्तन-पुर्नचिन्तन अनुप्रेक्षा है। मूल ग्रन्थ अथवा अर्थ का पाठ करना आम्नाय है तथा जिस वस्तु-स्वरूप का मनन-अध्ययन कर लिया गया है उसे दूसरों को समझाना धर्मोपदेश है।[1]

स्वाध्याय और तप :

स्वाध्याय एक उत्कृष्ट तप है, अत इसकी सम्यक् साधना मे चित्तवृत्ति का निरोध सर्वोपरि है। साथ ही साथ मन को स्थिर रखने के लिए आहार-विहार की शुद्धता का भी सदा ध्यान रखना चाहिए। जीवन का उत्थान पतन परिणामो पर आधारित है। यदि परिणाम अशुद्ध हैं तो जीव का उत्थान दुष्कर है, और परिणाम यदि तप-साधना से विशुद्ध हो गए है तो प्राणी का शीघ्र ही समुन्नत होना निश्चित है। स्वाध्याय इस सदर्भ मे परमावश्यक है। इससे परिणामो मे शुद्धता आती है, अविवेक का नाश होता है मिथ्यात्व की प्रक्रिया का अन्त होता है तथा शनै शनै कर्मो का क्षय होने से भव्य जीव मोक्ष-निवासी बन जाता है। मोह के वशीभूत होने से ही प्राणी विविध सपासो, कु ठाओ एव अवरोधों का केन्द्र बन जाता है। यही मोह माया के रूप मे नाना प्रकार के वन्धनों की सर्जना करता है। परिणाम स्वरूप जीव विकारो से वशीभूत होकर अनन्त दु खों को भोगता है, कषायो से स्वयं को कसता है और प्रपीडित होकर दुर्गतियों मे भ्रमण करता रहता है। इस भ्रमण की शृ खला को छिन्न-भिन्न करने मे स्वाध्याय ही एक सुलभ-साधन है। सत्य तो यह है कि कर्म-तत्व के परिमार्जनार्थ स्वाध्याय एक पावन सलिल है। जिस प्रकार मन-वचन-काम की सरलता

---

१. वाचना पृच्छनानुप्रेक्षाम्नाय धर्मोपदेशा ।।२५।। मोक्षशास्त्र, नवमोऽध्याय

भक्ति प्राप्ति मे सुगम साधन के रूप मे कथित है[1] उसी प्रकार यह त्रिविध सारल्य स्वाध्याय की सफलता मे सदा प्रमुख माना गया है। यदि हम गभीरता से विचार करे तो हमे यह स्वीकृत करना होगा कि भागवत मे प्रतिपादित नवधा भक्ति स्वाध्याय का ही एक व्यापक स्वरूप है—

श्रवण कीर्तनं विष्णोः स्मरण पाद सेवनम्।
अर्चनं वन्दनं दास्य, सख्यमात्म निवेदनम्॥

स्वाध्याय और सत्संग

अब प्रश्न यह उठता है कि स्वाध्याय के प्रति मानस मे उत्कठा कैसे समुत्पन्न हो। जब तक सद्-ग्रन्थो के अध्ययन की लालसा निष्काम भावना मे मन मे अ कित नही होती तब तक स्वाध्याय के प्रति न जागरूकता सघ फलदायिनी होगी और न इस तप की उपादेयता सुध्याय बनेगी। मन का चाचल्य सर्व विदित है तथा इसे (मन को) सुस्थिर करना भी एक समस्या है। इसका समाधान सत्सगति ही है। यह सत-समागम स्वाध्याय का अच है और अन्त भी। सुफी विद्वानो की यह दृढ मान्यता है कि सतो का सग मानस की मलिनता को धोता है और उसमे अहर्निश सद्भावना को साकार बनाता रहता है। गोस्वामी तुलसी दास ने ठीक ही कहा है—

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी मे तुन आध।
तुलसी संगति साधु की, हरै कोट अपराध॥

शठ भी सतसगति से सुधरता है और उसकी कुवासना सुवासना मे शीघ्र ही परिवर्तित हो जाती है—

सठ सुधरहि सत सगति पाई।
पारस परस कुधात सुहाई॥
विधि बस सुजन कुसगत परही।
फनि मनि सम निज गुन अनुसरही॥

(राम-चरितमानस बालकाण्ड)

इस साधु सगति के परिप्रेक्ष्य मे विद्वानो को यह स्वीकार्य है कि कोरा शास्त्र अध्ययन स्वाध्याय नही है, अपितु सत-समागम स्वाध्याय का एक अभिन्न अ ग है। वे दोनो एक दूसरे के पूरक है। श्रमण के षट् कर्मो मे स्वाध्याय को भी एक प्रधान कर्त्तव्य मानकर हमारे आचार्यो ने श्रावक की दैनिक चर्चा को अधिक विशुद्ध तथा विवेकशील बनाया है।

स्वाध्याय के हेतु समस्त साहित्य प्रथमानुयोग, द्रव्यानुयोग, करणानुयोग और चरणानुयोग-इन चार योगो मे विभाजित किया गया।[1] इन योगो के स्वाध्याय से ज्ञान की तो वृद्धि होती है और साथ ही साथ जीवन-सुधार के अनेक प्रयोग सम्मुख आते है। विशुद्ध भाव से यदि परीक्षण किया जाय तो स्वाध्याय जीवन की अमिट शक्ति है, और यही मस्तिष्क का खाद्य है। आवश्यकता केवल विवेक और आस्था की है। प्रत्येक सुधी श्रमण भगवान् से यही प्रार्थना करता है कि —

शास्त्रो का हो पठन सुखदा, लाभ सतसगती का।
सद्वृत्तो का सुजस कहके, दोष ढाकू सभी का॥
बोलू प्यारे बचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ।
तौलो सेऊ चरण जिनके मोक्ष जौलौ न पाऊँ॥

---

१. सूधे मन सूधे वचन, सूधी सव करतूत। तुलसी सूधी सकल विधि, रघुवर प्रेम प्रसूति॥
—तुलसी दोहावली पृ ५६

१. क-प्रथमानुयोग—कथा-वर्त्ता चरित्र आदि सबधी साहित्य।
ख-द्रव्यानुयोग—द्रव्यो से सबद्ध साहित्य।
ग-करणानुयोग—तीन लोक से सम्बद्ध साहित्य।
घ-चरणानुयोग—आचार धर्म से सम्बन्धित साहित्य।

आत्म-जागृति की लौ सदा प्रज्वलित रहे

आत्म-जागृति की लौ को सतत प्रदीप्त करने वाला यही स्वाध्याय है जो जन-जन की भौतिक समस्याओ का समाधान कर सकता है, उद्विग्नता का शमन कर सकता है, अवाञ्छित कुंठाओ को दूरकर सकता है, जिन्दगी को सुख से जीने का उपाय इससे मिल सकता है और कल्पित भेदो की गहरी खाई इसी सन्तोष से पाटी जा सकती है। नर मे नारायण बनाने वाला यही स्वाध्याय आज की विविध समस्याओ को बडी सुगमता से हल कर सकता है। यही आचार्यो का सुनिश्चित मत है।

स्वाध्याय ज्ञान का ही एक परिमार्जित स्वरूप है। अत ज्ञान को यदि स्वाध्याय का परिवर्तित रूप मान लें तो किसी प्रकार का विरोध नही हो सकता है। भगवान् महावीर ने कहा है—

१ प्रथम ज्ञान होना चाहिए तत्पश्चात् दया अर्थात् आचरण।

२. जिस प्रकार धागे मे पिरोई हुई सुई गिर जाने पर भी गुम नही होती है, इसी प्रकार ज्ञान रूप धागे मे युक्त आत्मा ससार मे कही भटकती नहीं, अर्थात् विनाश को प्राप्त नही होती।

३ ज्ञानी आत्मा ही 'स्व' और पर के कल्याण मे समर्थ होती हैं।

४. ज्ञान का प्रकाश इस जन्म में रहता है पर जन्म मे रहता है और कभी दोनो जन्मो मे भी रहता है।

५ आत्म-द्रष्टा साधक को ऊँची या नीची कैसी भी स्थिति मे न हर्षित होना चाहिए और न कुपित ही।

—मोहता निवास
कोठी रोड, उज्जैन (म प्र).

स्वाध्याय और अनुशासन

डॉ० नरपत चन्द सिघवी

विश्व वडा है, जीवन विश्व से वडा है परन्तु मनुष्य जीवन से वडा है। जीवन एक प्रयोगशाला के सदृश है जिसमे मनुष्य निरन्तर प्रयोग करता रहता है। मानव-रुचियाँ उसके जीवन की परख है, मनुष्यत्व की पहचान है। मनुष्य-जीवन अनुभव का शास्त्र है। प्रत्येक व्यक्ति एक महान ग्रंथ है, यदि अन्य उसे पढना जानते हो। अध्ययन करना जानते हो। अध्ययन मनन और परिशीलन के लिए कीजिए। अध्ययन अवश्य आनन्द का, अलंकरण का और योग्यता का काम करता है। सद्ग्रंथ जो इस लोक के चिन्तामणि है, उनके अध्ययन से सव कुचिन्ताएँ विलीन हो जाती हैं, सशय-पिशाच भाग जाते है और मन में सद्भाव जाग्रत होकर परम शाति प्राप्त होती है ऐसा स्वामी विवेकानन्द का मत है। अध्ययन मानसिक रुकावटो को दूर करके मनुष्य को श्रेष्ठ वनाने मे सहायक होता है परन्तु स्वाध्याय से आत्म-शासन की शिक्षा उपलब्ध होकर, क्राति घटित होती है, जहाँ जीवन नया हो जाता है। नया व्यक्ति, आपके अत करण मे जो अत करण आत्मा की वाणी है, न्याय का कक्ष है, पैदा होता है। स्वाध्याय का एक अति प्रचलित अर्थ लिया जाता रहा है, वह है शास्त्रो का, धर्म-शास्त्रो का अध्ययन, पठन एव मनन। पर सूक्ष्म दृष्टि से न होकर स्वाध्याय का अर्थ मात्र शास्त्र का अध्ययन स्वय का अध्ययन है। जव स्वय के अध्ययन के सागर मे कोई गहरा गोता लगाता है तो वह स्वाध्याय के क्षेत्र मे प्रवेश करता है।

भारत की सास्कृतिक चेतना को प्रभावित करने वाले अन्यतम महापुरुष—भगवान महावीर ने स्वाध्याय की गणना मूल्यवान अतर तपो मे की हैं। स्वाध्याय द्वादश अन्तर तपो मे से चतुर्थ अतर तप है, वह जीवन की अन्यतम साधना है। स्वाध्याय का अर्थ हैं स्वय मे उतरो एवं स्वय का अध्ययन करो। सच्चे वीर की तरह 'पीछे हटे चलो', अन्दर ही अन्दर 'मार्च' करते रहो क्योकि हृदयाकाश के केन्द्र मे खडे होकर तुम कुल ससार को हिला सकते हो। अपने अन्दर प्रवेश करो क्योकि समस्त व्रह्माड भीतर हैं, आत्मा का पूरा जगत भीतर है, उसका अध्ययन करना सच्चा स्वाध्याय हैं। 'जागते हुए जियो' स्वाध्याय का यही मूल मत्र है। स्वाध्याय से व्यक्ति सच्चे अर्थ मे ज्ञानी होता हैं, अपने अनुभवो के क्षितिज का प्रसार करता है। स्वाध्याय से व्यक्ति जितना ही भीतर की तरफ मुडेगा, जितना अत करण को देखना शुरू करेगा, उतना ही प्रकाश भीतर ही भीतर विकीर्ण होगा और तव अधकार की कोई भी रेखा प्रवेश न कर सकेगी, अनन्त स्वच्छता, निर्दोपिता अन्त करण मे व्याप्त हो जाएगी और मिथ्या-ज्ञान की कालिमा का नामोनिशान न रहेगा। स्वाध्याय मनुष्य को असत्य से सत्य की ओर, अधकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमरता की ओर ले जाने का साधन है।

स्वाध्याय तभी सभव हो सकेगा जव मन अनुशासित हो। अनुशासन की डोर से वधा मनुष्य

शारीरिक और मानसिक सयम का परिचय प्रस्तुत करता है। सागर की गहराई यदि स्वाध्याय है तो गोताखोर की कुशलता अनुशासन है। अनुशासन यदि शरीर है तो स्वाध्याय प्राण-शक्ति है। नियम और व्यवस्था के साँचे मे ढले बिना व्यक्ति के लिए स्वाध्याय सभव भी नही। अनुशासन की तूलिका मे मानव अपनी जीवन रूपी कलाकृति के स्वाध्याय के रगो मे मनोरम एव दिव्य बनाता है।

अनुशासन यदि सफल जीवन का महत्त्वपूर्ण अग है तो स्वाध्याय बौद्धिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति का मेरुदड है। अनुशासन यदि विस्तार है तो स्वाध्याय गहराई है। बिना अनुशासन के स्वाध्याय करना तो मरुभूमि मे बोये गये बीजो के सदृश व्यर्थ है। स्वाध्याय से जो आत्मिक शाति तथा जो दिव्यता प्राप्त होती है, वह अनुशासन द्वारा ही प्राप्य है। अनुशासन के अमोघ अस्त्र द्वारा कठिन से कठिन कार्य भी सहज और सरल हो जाता है। स्वाध्याय के लिए सबसे बडी बात मन को अनुशासित बनाने की है। अनुशासन का महत्त्व यदि शरीर मे व्यवस्थित रुधिर सचालन का है तो स्वाध्याय का आत्म-शक्ति को चेतना प्रदान करने का है।

अनुशासन की आधार-शिला है-नियन्त्रण मे रहना, शारीरिक और मानसिक सयम रखना। ऐसा सयम किसी बाह्य सत्ता से नही अपितु अपनी इच्छाशक्ति से पैदा होता है और स्वाध्याय इस इच्छा शक्ति का सफल सचालन करता है। निरन्तर एकाग्रता जो अनुशासन का प्रमुख तत्त्व है, स्वाध्याय की साधिका बनती है। सयमी, आत्मविश्वासी, चरित्रवान, ज्ञानवान अनुशासन के घेरे मे रहकर स्वाध्याय की ज्योतिर्मय रश्मियो मे अपने जीवन को प्रकाशित करता है।

वाछनीय अनुशासन वह है जो व्यक्ति के अतम् से पैदा होता है। इस अनुशासन का अर्थ है—किसी सुदूर लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सतत् चेष्टा करते रहना और इस प्रयास मे कष्ट-सहन करने की शक्ति का विकास करना। मानव जब ऐसी स्थिति मे अपने को पाता है तब उसके लिए स्वाध्याय के बन्द कपाट खुल जाते है और वह शुद्धत बौद्धिक अनुशासन जो स्वाध्याय का ही एक रूप है, के क्षेत्र मे प्रवेश पाता है। आत्मा द्वारा ही आत्मा मे सतुष्ट रहा वह स्वाध्यायी तब स्थितप्रज्ञ हो उठता है। 'गीता' मे स्थितप्रज्ञ की जो परिभाषा दी गई है, उसी परिभाषा के क्षेत्र मे अनुशासित स्वाध्यायी विचरण करता है। स्वाध्यायी की विजय शक्ति है—मन की एकाग्रता यानि अनुशासन। यह शक्ति मनुष्य-जीवन की समस्त शक्तियो का आकलन कर, सर्व ऊर्जाओ का सकलन कर, आध्यात्मिक क्राति उत्पन्न करती है।

जिस तरह श्रेष्ठ पुरुष बोलता कम है पर व्यवहार मे अधिक सक्रियता दिखलाता है, उसी तरह स्वाध्यायी बोलता कम है, चिन्तन और मनन की गहराइयो मे प्रकाश रेखाएँ अधिक फैलाता है। स्वाध्यायी के लिए जीवन जागरण है, उत्थान है, उसका लक्ष्य है अनुशासन की सम्बल पृथ्वी के तमसोच्छन्न अन्धकारमय पथ से गुजर कर दिव्य-ज्योति से साक्षात्कार करना जहाँ द्वन्द्व और संघर्ष कुछ भी नही है।

प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
जोधपुर विश्वविद्यालय
जोधपुर

स्वाध्याय एवं स्वस्थ प्रशासन

श्री शान्तिचन्द्र मेहता

कुछ विचित्र सा लगता है कि प्रशासन के स्वास्थ्य का सम्बन्ध स्वाध्याय से जोडा जाय, क्योकि इस प्रकार से सोचने की हम आदत मे नही है। सामान्यतया हम सोचते हैं कि धर्म और ससार के क्षेत्र अलग-अलग होते हैं और इन दोनो शब्दों मे से स्वाध्याय का सम्बन्ध धार्मिक क्षेत्र से है तो प्रशासन सासारिक क्षेत्र से सम्बन्धित है। फिर दोनो का परस्पर क्या तालमेल ? पर डॉ भानावत ने यह विषय देकर स्वाध्याय के फलक को विस्तृत अर्थवत्ता दी हैं।

समाज और व्यक्ति का सम्बन्ध :

प्रशासन एक सामूहिक उपक्रम होता है और इस कारण उसके प्रयोजन को हम सामाजिक सदर्भ मे ही देख सकते हैं। प्रशासन से सारा समाज (चाहे वह एक राज्य, राष्ट्र अथवा किसी विशेष वर्ग का हो) सम्बद्ध होता है और उससे सामाजिक सत्ता का ही बोध होता है। यो व्यक्ति के अस्तित्व के बिना समाज कुछ भी नही, क्योकि व्यक्ति-व्यक्ति मिल कर ही सामाजिक ढांचे का निर्माण करते है। अत व्यक्ति की शक्ति तो मूल मे होती ही है, किन्तु इसके साथ-साथ जिस सामाजिक शक्ति का उदय होता है, उसका अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बन जाता है। किसी भी विधान सभा के सदस्य स्वय मिलकर एक कानून बनाते हैं, किन्तु उस कानून के बन जाने के बाद क्या वही विधायक उसे तोड सकता है ? व्यक्ति रूप मे उस विधायक को तब अपनी ही बनाई हुई सामाजिक शक्ति शक्ति का अनुसरण करना पडता है। इसी सदर्भ मे समाज और व्यक्ति के पारस्परिक सम्बन्धो का समीकरण निकालना चाहिए।

व्यक्ति विचारक हो सकता है, किन्तु अनुशासन के बिना वह उद्दड भी हो सकता है। अत प्रशासन व्यक्ति को अनुशासन रखने का एक सामाजिक प्रयोग है। यह प्रयोग यदि स्वस्थ रूप से चले तो सामाजिक अनुशासन के साथ व्यक्ति के सर्वतोमुखी विकास का क्रम सहज ही बन सकता है।

वैयक्तिक जीवन की सम्पूर्णता :

स्वस्थ प्रशासन के लिये वैयक्तिक जीवन की गति उसकी सम्पूर्णता-प्राप्ति की ओर सदा अग्रसर रहनी चाहिये। प्रशासक व्यक्ति होते हैं और प्रशासित भी व्यक्ति तथा दोनो ही को व्यक्तिगत दुर्बलताएँ अपने मार्ग से हटा सकती है। इस कारण अपने ही जीवन को धर्म और ससार मे अलग-अलग विभाजित करने की धारणा समुचित नही है धर्म कर्त्तव्य का ही पर्यायवाची है तथा कर्त्तव्यो का निर्वाह परलोक के सुखो के लिये बाद मे और इस जीवन को सम्पूर्णता प्रदान करने के लिये पहले होना चाहिये।

इसीलिये यह कहा जा सकता है कि स्वस्थ प्रशासन के लिये स्वस्थ नागरिको का निर्माण हो। नागरिक शरीर से स्वस्थ हो---यह ठीक, लेकिन वह मन, नीति, बुद्धि और अपनी आत्मा से स्वस्थ हो---यह उससे भी अधिक आवश्यक है। इन सम्पूर्ण

स्वास्थ्य को ही हम जीवन की सम्पूर्णता कह सकते हैं।

सम्पूर्णता, सम्पन्नता और स्वाध्याय :

समग्र जीवन की सम्पूर्णता और सम्पन्नता में स्वाध्याय का कितना गहरा योग हो सकता है---यह समझने की बात है। स्वाध्याय यदि व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करता है तो ऐसे व्यक्ति सारे समाज को प्रभावित करते हैं और प्रशासन को एक दिशा देते हैं।

स्वाध्याय है क्या ? स्वाध्याय का मूल मौलिकता में रहा हुआ है। अपने आप अध्ययन करने का अर्थ ही यह होता है कि किसी की उस अध्ययन में अपनी अपनी गहरी रुचि है---यह पहली बात। दूसरे, ऐसा अध्ययन सदा चिन्तन को जागृत करता है। जहाँ अध्ययन और चिन्तन होता है, वहाँ मौलिकता का जन्म आश्चर्यभावी हो जाता है। मौलिकता का अर्थ होता है---समस्याओं का आधारगत समाधान। ऐसा समाधान सदा सामूहिक हित को लिए हुए होता है क्योंकि स्वाध्याय की इस प्रक्रिया में अपना स्वार्थ विलीन होता जाता है। सोचिये कि जब ऐसे स्वाध्यायी प्रशासन की बागडोर सम्हालें तो क्यों नहीं, स्वस्थ प्रशासन का निखरा हुआ रूप सामने आयेगा जो समाज एवं व्यक्ति के आदर्श सम्बन्धों का प्रतीक होगा ?

स्वाध्याय स्वशक्ति-उद्बोधक :

स्वाध्याय को दिशा संकेतन के रूप में न मान कर स्वशक्ति उद्बोधक के रूप में देखना चाहिये। स्वाध्याय की दिशा और सामग्री जीवन के किसी भी पक्ष से सम्बन्ध रखने वाली हो किन्तु स्वाध्याय की अनवरत प्रक्रिया से स्वशक्ति जागृत होनी चाहिये जो स्वाध्यायी को सामाजिक गतिविधियों को स्वस्थ दिशा में संचालित करने के कार्य में सक्षम बना सके। स्वाध्यायी की सामाजिकता यही होगी कि वह व्यक्ति न रहकर एक संस्था बन जाय। तब प्रशासन क्या, सारा सामाजिक जीवन स्वस्थ बना रहेगा।

स्वाध्याय और आत्म-शुद्धि

श्री पार्श्वकुमार मेहता

स्वाध्याय की पवित्रता :

सत्शास्त्रो को मर्यादा सहित पढने का नाम स्वाध्याय है मन को शुद्ध वनाने की प्रक्रिया को स्वाध्याय कहा गया है अर्थात् अपना स्वयं के भीतर अध्ययन, आत्म-चिन्तन ही स्वाध्याय है। प्रसिद्ध पाश्चात्य दार्शनिक शेक्सपियर के अनुसार ससार न भला है न बुरा। हमारे विचार ही उसे भला बुरा बनाते हैं। आत्मा के विचार पानी की तरह हैं। उसमे सुगन्धी मिलना पुण्य है तो गन्दगी मिलना पाप।

स्वाध्याय स्वय एक तप है। जिस प्रकार अग्नि मे सोना-चाँदी तपाने से मैल दूर हो जाता है उसी प्रकार स्वाध्याय मे लीन तपस्या मे रत मुमुक्षुओ का पूर्व सचित कर्म मैल नष्ट हो जाता है। स्वाध्याय के लिए एकाग्रता, नियमितता तथा विषयोपरति निर्विकारिता इन तीनो वातो की आवश्यकता होती है। जिस प्रकार घिसना, कटना, तपाना, पीटना इन चार प्रकार से सोने की शुद्धता की परीक्षा ली जाती है, उसी प्रकार दान, शील, तप और आचरण द्वारा मानवता की भी परख होती है। सोने की शुद्धि की परीक्षा अग्नि मे तपाने से होती है, उसी प्रकार सत्पुरुष की परीक्षा भी विपत्ति मे होती है। स्वाध्याय नियमित करना चाहिए। स्वाध्याय करने के पश्चात् इसके तत्त्व का चिन्तन-मनन करना परमावश्यक है, तभी स्वाध्याय का मन पर, आत्मा का अपने साथ वात-चीत करने अर्थात् आत्म परीक्षण कर उसकी शुद्धि की ओर हम अग्रसर हो सकेंगे।

चिन्तन मे सद्विचारो का पुट आवश्यक है। जो जैसा ध्यान करता है उसका वैसा ही विचार हो जाता है। दैनिक कार्य हो चाहे व्यापार सम्वन्धी अथवा अन्य, सवमे शुद्ध चिन्तन ही आत्म शुद्धि के लिए आवश्यक होता है।

सद्विचारो का फल :

एक वार की वात है। नगर सेठ के मुनीम 25 वर्षों से व्यवसाय सभालते थे। सेठ को कुछ पता न था। सारा कारोवार मुनीमजी चलाते थे। लाखो का धन्धा था। कभी सेठजी ने दुकान की तरफ झाका तक न था। मुनीमजी स्वध्यायी व साधना मार्ग के पथिक थे। कर्त्तव्यनिष्ठ, सच्चरित्र तथा प्रामाणिक तो थे ही। सेठजी का कारोवार मे धन प्रतिदिन वढता ही जा रहा था। मुनीमजी को वेतन केवल अपना निर्वाह हो जाने जितना ही मिलता था। लडकी उनके वडी हो गई। विवाह की चिन्ता उनको सताने लगी। धर्मपत्नी के वार-वार आग्रह करने पर भी सेठजी से वात करने की हिम्मत उनमे न थी। पूरे 5000 का का खर्च सवार था। मुनीमजी के मन मे कौतूहल जागा। उन्होंने विचार किया--इतने वर्षों से सेठजी ने दुकान की ओर झाका तक नही है। तिजोरी से ही 5000 रुपये क्यो न ले लू ? उन्होंने तिजोरी से रकम जेव मे रख ली। इधर मन का तार सेठजी की आत्मा मे डोला। सेठजी भी विचार मग्न थे। इतने वर्षों से मैंने कभी व्यवसाय देखा तक नही। सव कुछ मुनीमजी पर छोड दिया। क्यो न आज रकम गिन

कर हिसाब-किताब पूछा जाय। वे दुकान जाने के लिए रवाना हुए।

इधर मुनीमजी की चिन्ता बढी। स्वाध्याय का चिन्तन विचारो मे प्रवाहित होता रहा। धिक्कार है मुझे, इतने वर्षों की प्रामाणिकता को मैंने केवल 5000 रुपये के लिए लाछित कर दिया। उन्होंने तुरन्त राशि तिजोरी मे रखी, तब कही आत्मा को शान्ति मिली। विचारो की शुद्धि के कारण सेठजी की आत्मा पुन सजग हो उठी। मैंने इतने अच्छे मुनीमजी पर व्यर्थ शक किया। यह अच्छा नही है। वे क्या सोचेंगे की मुझ पर विश्वास नही, जबकि इतना कारोबार बढाकर लाखो रुपये कमाकर उन्होंने दिए। उन्होंने घर की ओर वापस प्रयाण किया। विचार करते गये-क्यो मेरे मन मे बुरा अध्यवसाय उत्पन्न हुआ। उन्हे याद आया-मुनीमजी की लडकी बडी हो गई होगी और वह सीधे वापस मुनीमजी के घर चल दिये। मुनीमजी भी घर की ओर चले। वहा उन्होंने मुनीमजी से निवेदन किया कि आपकी कन्या का विवाह अपने इकलौते पुत्र से करना चाहता हूँ। कृपया आप स्वीकृति प्रदान करे। मुनीमजी के काटो तो खून नही। स्वाध्याय चिन्तन ने क्या-क्या विचारो को मोडा, झकझोरा और आखिर सद्‌विचारो का सहारा लिया। यह है स्वाध्याय के विचारो की पवित्रता का फल।

पाश्चात्य दार्शनिक वेकन के मतानुसार—Reading makes a full man, Speaking a perfect man, Writing an exact man अर्थात् अध्ययन मनुष्य को पूरा बनाता है, भाषण परिपूर्ण बनाता है। जिस प्रकार शरीर के लिए व्यायाम की आवश्यकता होती है उसी प्रकार मस्तिष्क के लिए अध्ययन स्वाध्याय व चिन्तन की। भावना का विचारो पर गहरा असर पडता है अत विचारो की शुद्धता शुद्ध भावना पर निर्भर है।

स्वाध्याय का मर्म :

एक बार का प्रसग है कि दादी और पोती अपने गाव से पास ही दूसरे गाव आवश्यक कार्यवश जा रही थी। रास्ते मे एक ऊंटवाला मिला। दादी बोली भाई मेरी पोती को तेरे ऊंट पर बैठने दे। यह थक गई है; किन्तु ऊट वाले ने इन्कार कर दिया और आगे बढ गया। रास्ते मे उसे विचार आया-मैंने व्यर्थ ही मना किया। जवान लडकी है क्यो न बैठाकर भगा ले जाऊ। ऐसा सोचकर वह रुक गया और पास आने पर दादी से कहा-ला, तेरी पोती को ऊट पर बैठा दू। दादी बोली-रहने दे भाई, जो तुझे कह गया, वही मुझे भी कह गया है। अर्थात् विचारो मे असद्‌भाव आ जाने से दोनो के मन के तार का तारतम्य बदल गया। ऊंटवाला चुपचाप चल दिया लज्जित होकर। कहने का अभिप्राय यह है कि विचारो मे पवित्रता तभी आ सकेगी जब स्वाध्याय किया जायगा तथा उस पर चिन्तन-मनन करेगे। सद्‌विचारो से ही तत्त्वज्ञान मिलता है और उससे आत्मा को विश्राम मिलता है। यही स्वाध्याय का मर्म है।

—यादव भवन,
तेलीपाडा का रास्ता,
जयपुर—3

स्वाध्याय और युवा-पीढ़ी

मिश्रीलाल जैन

स्वाध्याय-विमुख जीवन : जड़ता और पशुता का जीवन

स्वाध्याय, विचारो का मन्थन कर नवनीत उपलब्ध कराने की अद्‌भुत पद्धति है। स्वाध्याय लौकिक और पारलौकिक सुखो का द्वार है। स्वाध्याय वह सूत्र है, जो प्रकृति और जीवन के अनन्त रहस्यो को अनावृत करता है, प्रतिभा को जागृत कर उसका सरक्षण करता है। विश्व सस्कृति और साहित्य के इतिहास मे जितने भी नाम स्वर्ण-अक्षरो मे अकित हैं, वे स्वाध्याय का परिणाम है। स्वाध्याय से आत्मा और परमात्मा के मध्य की दूरी समाप्त होती है। मुक्ति के महान गतव्य के यात्री को भी स्वाध्याय की डगर से निकलना पडता है। स्वाध्याय से विमुख जीवन पशुता और जडता का जीवन है।

युवा पीढ़ी ! स्वाध्याय से विमुख क्यो ? :

वर्तमान पीढी की यह सबसे दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना है कि युवा पीढी स्वाध्याय के परम सुख से विमुख है। युवा-शक्ति देश की सबसे सुदृढ शक्ति है। देश का भविष्य युवा पीढी के भविष्य पर निर्भर करता है। इतिहास साक्षी है कि युवा शक्ति ही विश्व की क्रान्तियो का स्रोत है। युवा पीढी के स्वाध्याय से विमुख होने के कारण हैं—देश की वर्तमान आर्थिक, नैतिक और सामाजिक स्थिति। पाश्चात्य सस्कृति का निरन्तर सम्पर्क पाकर भारतीय सस्कृति और चरित्र प्रतिक्षण साँसे तोड रहे हैं। भौतिकवादी प्रवृत्तियाँ ऋषि-मुनियो के इस पवित्र देश की आत्मा को पतन का मार्ग दिखा रही है।

भारत के गौरवमय अतीत का श्रेय उसकी सम्पन्नता से अधिक उसके आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यो के कारण हैं, किन्तु स्वाध्याय की टूटती हुई प्रवृत्तियो के साथ-साथ उसका गौरवमय अतीत भी धूमिल होता जा रहा है। युवा वर्ग की स्वाध्याय की प्रवृत्ति मे अश्लील, कामोत्तेजक एव चलचित्र सम्बन्धी साहित्य का प्रचार और प्रसार सबसे बडी बाधा है। सबसे अधिक विडम्बना तो यह है कि असद्‌साहित्य सत्साहित्य की अपेक्षा बहुत सुगमता और सरलता से उपलब्ध हो जाता है। सत्साहित्य अधिक मँहगा होने के साथ-साथ सरलता से प्रत्येक स्थान पर प्राप्त नही होता। युवा-वर्ग की स्वाध्याय की टूटती हुई प्रवृत्तियो के लिये समाज ही दोषी है। जहाँ तक श्रमण साहित्य का प्रश्न है युवा-वर्ग की रुचि का साहित्य अनुपलब्ध है। युवा वर्ग के दृष्टिकोण से श्रमण-सस्कृति के साहित्य का निर्माण नही हुआ और न वर्तमान मे योजना है।

स्वाध्या के आयाम

कथा, सुन्दर सस्कारो के निर्माण का प्रभावपूर्ण माध्यम है। धार्मिक शिक्षा देने का सबसे प्रभावक साधन है। जैनाचार्यो ने सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि विविध भाषाओ मे कथा-साहित्य की सर्जना

की है। आरम्भिक स्वाध्यायी को कथानुयोग या प्रथमानुयोग का अध्ययन उचित है।

'उत्तराध्ययन', 'समयसार', 'तत्त्वार्थसूत्र' जैसे अध्यात्म के अमृत ग्रन्थो से जैनाचार्यों ने विश्व-साहित्य की श्रीवृद्धि की है। इन ग्रन्थो मे मानव-जीवन को समुन्नत बनाने की असीम शक्ति है। ऐसे ग्रन्थो के अध्ययन से सुखी जीवन जीने की कला आती है किन्तु समाज के सम्मुख आज एक साथ दो दुर्भाग्य उपस्थित हैं प्रथम युवावर्ग मे स्वाध्याय के प्रति आस्था का अभाव है दूसरे युवावर्ग की रुचि का साहित्य अनुपलब्ध है। यह दशा चिन्तनीय है। श्रमण सस्कृति के वर्तमान आराधको ने कभी सोचा ही नही कि समय के साथ भाषा वा प्रचलन बदले, परिवेश बदले, शैली बदलें। सस्कृत और प्राकृत भाषा के प्रति असीम निष्ठा होने के पश्चात् भी इन भाषाओं के ज्ञान का अभाव होने के कारण ऋषि-मुनियो, जैनाचार्यों की वाणी युवा वर्ग और सामान्य जनता के पास नही पहुँच पा रही है। इस सद्साहित्य को वैज्ञानिक पद्धति से प्रकाशन सम्बन्धी प्रयत्न ही नही हुआ, यदि हुआ भी है तो उसे पर्याप्त नही कहा जा सकता। वीर निर्वाण महोत्सव वर्ष ने हमारी सुपुप्त चेतना को झकझोरा है और समाज ने इस दिशा मे विचार प्रारम्भ कर दिया है। यह एक शुभ सकेत है इससे स्वाध्याय के लिये सभी वर्ग मे नये आयाम खुलेंगे।

स्वाध्याय-प्रवृति को प्रोत्साहन :

युग सन्त विद्यानन्दजी, आचार्य तुलसी, आचार्य हस्तीमलजी आदि श्रमण-सस्कृति के सतो के प्रसाद से टूटती हुई स्वाध्याय प्रवृत्ति को सबल मिला है। मुनि श्री विद्यानन्दजी की पावन प्रेरणा से स्थापित 'वीर निर्वाण भारती' मेरठ द्वारा विद्वानो को पुरस्कृत करने की महत्त्वपूर्ण योजना ने भी युवावर्ग को स्वाध्याय की ओर प्रेरित किया है। अगस्त मास मे 'वीर निर्वाण भारती' द्वारा आयोजित पुरस्कार समारोह मे पडित दलसुख मालवणिया ने यह कह कर युवा-वर्ग को स्वाध्याय की प्रेरणा दी और आयोजकों को नई दिशा प्रदान की कि 'मै यह निवेदन कर देना चाहता हूँ कि मेरे जैसे वृद्ध व्यक्ति को पुरस्कार देने की अपेक्षा होनहार नवयुवक विद्यार्थी को पुरस्कार दिया जाये, उससे पुरस्कार की उपयोगिता और भी दृढ हो जायेगी।'

विद्वान मालवणिया जी ने इन शब्दों द्वारा एक ओर पुरस्कार-चयनकर्त्ताओं के निर्णय और औचित्य को सम्बल दिया है, दूसरी ओर इस उक्ति को भी चरितार्थ किया है कि वृक्ष जितने भी अधिक फलीभूत होते है, उतने ही झुकते चले जाते है। साथ ही उन्होंने स्वाध्याय साहित्य-निर्माण हेतु युवा वर्ग को आमन्त्रित किया है। आशा है, स्वाध्याय की प्रवृत्ति को तीव्र गति देने के लिये समाज इस दिशा मे गभीरतापूर्वक विचार करेगा।

दो मुख्य प्रश्न :

युवा पीढी और स्वाध्याय के सन्दर्भ मे दो प्रश्न मुख्य है प्रथम तो युवा-वर्ग को स्वाध्याय हेतु किस प्रकार आकर्पित किया जाये और दूसरे उन्हे किस प्रकार की स्वाध्याय योग्य-सामग्री प्रदान की जावे।

स्वाध्याय की ओर युवा-वर्ग को आकर्पित करने हेतु परिचर्चायें, स्वाध्याय-स्मारिकाओ का नियमित प्रकाशन, सद्साहित्य पर आधारित लघु-नाटिकायें, कवि-सम्मेलन आदि कार्यक्रम समय-समय पर रखे जावे। सस्ते साहित्य के प्रति युवा-वर्ग के आकर्पण को तोडा जाना अत्यन्त आवश्यक है। एक बार आगमवाणी का जो रसास्वाद उन्होंने किया, तो सरस्वती के प्रति उनकी निष्ठा जीवन-पर्यन्त बनी रहेगी।

नगर-नगर, ग्राम-ग्राम मे सद्साहित्य को उपलब्ध कराया जाना भी आवश्यक है। सार्वजनिक

स्थलो मे पुस्तकालय की स्थापना की जावे। युवा-वर्ग को स्वाध्याय हेतु आकर्षित करने मे पत्र-पत्रिकाओ का योगदान भी महत्त्वपूर्ण है। एकाध पत्र-पत्रिकाओ को छोडकर सामान्य रूप से यह कहा जा सकता है कि जैन पत्रकारिता दीर्घ अवधि बीतने पर भी अपनी प्रारम्भिक अवस्था मे ही सासें ले रही हैं। जैन पत्र-पत्रिकाओ की सख्या तो बहुत अधिक है, पर इनमे लोक रुचि जागृत करने की क्षमता का अभाव है। युवा-वर्ग मे स्वाध्याय की प्रवृत्ति को पल्लवित करने हेतु पत्रकारिता के क्षेत्र मे क्रान्तिकारी परिवर्तन आवश्यक है। श्रमण सस्कृति के साहित्य तथा अन्य सद्साहित्य प्रकाशन करने वालो का नैतिक दायित्व है कि वे निर्वाण महोत्सव वर्ष मे जैन सम्पादको का एक सम्मेलन बुलायें और स्वाध्याय प्रवृत्ति से सम्बद्ध समस्याओ पर विचार करे। यह स्वस्थ प्रयत्न युवा-वर्ग के साथ-साथ सम्पूर्ण मानव-समाज के लिये भी कल्याणकारी होगा।

साहित्य-निर्माण की दिशा :

हमे एक ओर जहाँ सत्साहित्य के प्रकाशन की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देना है वहाँ दूसरी ओर स्वाध्याय हेतु साहित्य-निर्माण एव प्रकाशन की गति को भी तेज करना है। इस दिशा मे तीर्थङ्करो की अमृतवाणी व आचार्यो के गहन-चिन्तन को आधुनिक भाषा मे अनूदित कर जन-जन तक पहुँचाने के कार्य को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इसमे दोहरा लाभ होगा, तीर्थङ्करो की पवित्र वाणी विलुप्त होने से बचेगी और मानव समुदाय लौकिक और पारलौकिक सुखो के रहस्य से परिचित हो सकेगा और युवा-वर्ग के वासना और विकारो की ओर बढते चरण भी रुकेंगे।

इतिहास साक्षी है प्रत्येक युग मे जैनाचार्यो ने युगानुकूल भाषा मे साहित्य-निर्माण किया है। आचार्य कुन्दकुन्द ने प्राकृत मे 'समय-सार' ग्रन्थराज की रचना की। आचार्य अमृतचन्द्र ने समयानुकूल सस्कृत भाषा मे कलश रचे। संस्कृत जब प्रचलन से दूर हटने लगी, तो विद्वान पडित बनारसीदास जी ने हिन्दी मे 'समयसार' नाटक लिखने का सम्यक् कार्य किया। आज हिन्दी भाषा अपने नये परिवेश मे खडी है। गद्य, पद्य दोनो रूपो मे आमूल परिवर्तन हो चुका है। आवश्यकता इस बात की है कि आचार्यो की अमृतवाणी को आधुनिक भाषा का परिवेश प्रदान करे, अन्यथा हमारी सस्कृति और हमारा साहित्य अतीत की स्मृति बन कर रह जायेगा।

मूल और भावानुवाद :

श्रमण संस्कृति के साहित्य को रोचक और आकर्षक ढग से किस प्रकार अनूदित किया जा सकता है, इस दिशा मे मैंने कुछ प्रयत्न किया है इनके कुछ नमूने मैं यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ—

[१]

मूल :

नमः समयसाराय स्वानुभूत्या चकासते।
चिद् स्वभावाय भावाय सर्वभावान्तरच्छिदे॥

(समयसार मगलाचरण)

भावानुवाद :

स्वानुभव से प्राप्त
शुद्धात्मा,
समय का सार
चेतना गुण से सदा संयुक्त,
चर-अचर
अणु और स्कन्ध
जीवाजीव मे हर व्याप्त परिवर्तन
जिन्हो के ज्ञानदर्पण मे
प्रतिक्षण झलकता है,
वही है परमात्मा

वह परम ज्योति,
शिव, निरजन,
बुद्ध वह सर्वज्ञ
वीतरागी
आप्त अविनाशी कहो,
नाम बदला पर न बदला अर्थ ।
जो निरपेक्ष द्रष्टा है
उसे मेरा नमन ।

[२]

मूल

वदित्तु सव्वसिद्धे धुवमचलमणोवमं गइ पत्ते ।
वोच्छामि समयपाहुडमिणमो सुयकेवलीभणियं ॥

(समयसार गाथा क्रमाक १)

भावानुवाद :

जन्म मृत्यु परिभ्रमण से मुक्त
जो अन्तिम चरण
अन्तिम शिखर,
पंचम गति को प्राप्त
जो अनुपमेय
ऐसे केवली के ज्ञान-सिन्धु से
झरा मकरन्द
अमृत-छन्द
स्मृति-पटल पर अकित कर
वन्दनीय श्रुतकेवली
ससृति को रहे थे जो बांट ।
वही अमृत
उन्ही के
स्मृत-कलश से प्राप्तकर
स्वानुभव की कसौटी पर कस परीक्षित
सर्व-सिद्धो को नमन कर
मैं रहा हू बांट ।

[३]

मूल :

दुमपत्तए पंडुयए जहा निवडइ राइगणाण अच्चए ।
एव मणुयाण जीविय समय गोयम ! मा पमायए ॥
कुसग्गे जह ओसबिन्दुए, थोव चिट्ठइ लम्बमाणए ।
एव मणुयाण जीविय, समय गोयम ! मा पमायए ॥

(उत्तराध्ययन सूत्र अध्याय १० गाथा १-२)

भावानुवाद :

किसी रात के बीते, भोर जगे
पीले-पीले पात वृक्ष से झर जाते हैं ।
उसी भाति जीवन-यात्रा मे
चलते-चलते पाव किसी क्षण थक जाते हैं ।
ऐसा सत्य समझकर गौतम !
क्षणभर को विश्राम न करना ॥
जैसे कुश के अग्र भाग पर
स्थित नही बूंद ओस की
क्षण भगुर है कितनी ठहरी ।
किसे पता गौतम उड जाये
किस क्षण इन सांसो का प्रहरी ।
ऐसा सत्य समझकर गौतम !
क्षणभर को विश्राम न करना ॥

[४]

मूल .

असखयं जीविय मा पमायए
जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं ।
एव विजाणहि जणे पमत्ते,
किण्णु विहिंसा अजया गहिन्ति ? ॥

भावानुवाद :

जीवन एक खिलौना है,
जो नही टूटने पर है जुडता ।

जरा-पथ मे निश्चित मिलती,
बचकर चला नही जा सकता ॥
जो प्रमत्त है, जो हिंसक है,
सयमविहीन है जीवन जिनका।
विश्व - सिन्धु मे आश्रय हेतु,
उनको कब मिलता है तिनका ? ॥

स्वाध्याय ही जीवन

स्वाध्याय ही जीवन है। युवावर्ग को अपने जीवन के प्रति निष्ठा व्यक्त कर स्वाध्याय रूपी अमृत स्रोत सूखने नही देना चाहिये। माँ सरस्वती का स्वाध्याय रूपी आशीर्वाद विरलो को ही प्राप्त होता है। आशा है, देश का प्रत्येक युवा इस पक्ति मे सर्वप्रथम आने का प्रयत्न करेगा और वह क्षण श्रमण सस्कृति और भारतीय सस्कृति की साकारता का अद्भुत क्षण होगा।

मिश्रीलाल जैन, एडवोकेट
गुना (म प्र)

बदलते सामाजिक सन्दर्भों में स्वाध्याय

— डॉ० प्रेमसुमन जैन

वर्तमान युग के वदलते सन्दर्भो मे धर्म और दर्शन को सदेह की दृष्टि से देखने की आदत पड गयी है। इतना परिवर्तन हुआ है जीने के ढग और चिन्तन की प्रक्रिया मे कि प्राचीन मूल्य अर्थहीन प्रतीत होते है। किन्तु वास्तव मे ऐसा है क्या ? कही यह हमारी जिज्ञासा, प्रतिभा और सजगता की कुठा तो नही है ? परिश्रम और लागन से पलायन तो नही है ? गहरायी से सोचना होगा। समाज के हर वर्ग को, व्यवस्था को इसमे सम्मिलित होना होगा। साथ ही खोजनी होगी प्राचीन जीवन-मूल्यो की नयी व्याख्याएँ, नये सन्दर्भ। जीवन की कला स्वाध्याय पर भी यह मनन-चिन्तन आवश्यक है।

आज के समाज का सवसे वडा मूल्य है, अत्यधिक व्यस्तता। प्राचीन सिद्धान्तो को अपनाने मे यही सबमे वडी वाधा है। स्वाध्याय कव करें ? कहा करें ? जिजीविपा की दौड मे समय ही कहा है ? समाज के हर वर्ग के व्यक्तियो का यही सवाल है। उन्होंने देखा है वडे-वूढो को मदिरो और स्थानको मे शास्त्र पढते हुए। एकान्त मे सामायिक करते हुए। पूरी पवित्रता और शुद्धि का ध्यान रखते हुए। अत यह सव सुविधा कहा मे आये ? इसलिए स्वाध्याय ही वन्द। उसकी उपयोगिता पर ही विराम।

दूसरा जीवन मूल्य है तर्क का। हर परिणाम को नाप-जोखकर उस दिशा मे प्रवृत होने की वैज्ञानिकता का अनुगामी होने का। अच्छी वात है यह। किन्तु इसके परिणाम विपरीत भी हुए है। आज के व्यस्त मानव ने देखा-जो धर्म करता है, स्वाध्याय करता है उसे मिला क्या, उसके जीवन मे परिवर्तन कहा आया ? वह तो स्वाध्याय, धर्म के समय के अतिरिक्त मुझ से भी अधिक क्रोधी है, दुराग्रही है, जिज्ञासा से रहित है। इस समाज-दर्शन ने भी स्वाध्याय की सार्थकता को पीछे धकेल दिया। किन्तु क्या इससे स्वाध्याय का महत्त्व कम हो गया ? नही, उसे और गहरायी से जानने का मार्ग खुला है।

विश्वविद्यालयों की शिक्षण-व्यवस्था, राजनीति, दगे-फसाद आदि ने इस सम्बन्ध मे एक और परिणाम दिया। ८-१० वर्षों के निरन्तर अध्ययन और वैज्ञानिक प्रयोगो के वाद भी जव ग्रन्थो का अध्ययन एव प्रज्ञाओ का सत्सग स्नातक को मशाल लिये हुए सडक पर खडा करता है तो घडी दो घडी का स्वाध्याय व्यक्ति को क्या वना देगा ? यह तीसरा जीवन-मूल्य सोचने को विवश करता है कि स्वाध्याय और ढेर सारी कितावो का अध्ययन दोनो एक नही है। फिर है क्या स्वाध्याय, जिसकी सभी धर्मों मे इतनी प्रतिष्ठा है ? आज हजारो वर्ष वाद भी उसकी सार्थकता पर हम सोचना चाहते है ?

वस्तुत स्वाध्याय जीवन का पर्याय है। व्यक्ति जन्म-मरण की शृखला मे निरन्तर कुछ न कुछ सीखता रहता है। प्रवृति के पदार्थ एव चेतन द्रव्यो के हलन-चलन को देखकर व्यक्ति कुछ जान लेता है।

पेड से सेव टूटकर गिरा कि एक व्यक्ति ने पृथ्वी की गुरुत्त्वाकर्पण शक्ति का पता लगा लिया। यह स्वाध्याय है। यह जीवन है, सत्य के प्रति गहरी जिज्ञासा। इसमे अध्ययन का भारी वजन नही है, किन्तु जानने की सूक्ष्म सजगता है। वस्तुत जीवन के चारो ओर की घटनाओ के प्रति सजग, चौकस पहरेदारी ही स्वाध्याय है। सम्भवत इसीलिए किसी गुरू ने शिष्य को विदा करते हुए आशीष दी थी---

स्वाध्यायात् मा प्रमद

प्राचीन शास्त्रो मे स्वाध्याय को तप माना गया है। वडी अद्भुत वात है। स्वाध्याय द्वारा महावीर ने जीवन के सत्य को उद्घाटित किया है। वस्तुत जानने मे दो ही वस्तु महत्त्वपूर्ण होती है---ज्ञेय और ज्ञाता। इनमे से ज्ञेय को जानना विज्ञान है और ज्ञाता को जानना धर्म है। निष्प्रयोजन पदार्थों को जानना मिथ्या ज्ञान है और ज्ञाता के स्वरूप को जानना तप है, सार्थक है। अत महावीर ने कहा कि अपनी अनुपस्थिति को तोडने का नाम स्वाध्याय है। जव महावीर कहते है कि जागते हुए जिओ तो उसका आशय यही है कि स्वाध्याय मे जिओ। और जो जागता हुआ जियेगा, उसमे कुछ गलत नही हो सकता। यही उसका तप है। समस्त व्रतो का मूल है---

'सर्वेभ्यो यद्व्रत मूल स्वाध्याय परम तप ।'

ज्ञाता को जानना सरल नही है। साधना और एकाग्र मनन की इसमे आवश्यकता है। सम्भवत इस कारण ही धर्म और दर्शन के ग्रन्थो को पढने का क्रम स्वाध्याय के साथ जुडा होगा। इससे जड और चेतन के स्वरूप का सही ज्ञान हो जाय, इसके पीछे यह भावना थी। किन्तु आगे चलकर स्वाध्याय एक परिपाटी हो गयी, जिसने युवा वर्ग मे स्वाध्याय के प्रति अरुचि पैदा की। आज के वदलते सन्दर्भो मे यदि देख तो स्वाध्याय का ऐसा प्रचलन कभी नही हुआ। परिवार का हर सदस्य अपने-आप कुछ न कुछ पढता है। और एकान्त मे मनोयोग से पढता है। किन्तु परिणाम ठीक विपरीत दृष्टि गोचर होते है। क्योकि वह समय काटने के लिए पढता है, जानने के लिए नही, जो स्वाध्याय की पहली शर्त है।

स्वाध्याय का अर्थ है---आज से कल श्रेष्ठ होना। कल की श्रेष्ठता विना दृष्टि खोले नही आ सकती। सत्य को पकडना ही होगा। और जव अध्ययन करने वाला सत्यदर्शी होता है तो उसके दुराग्रह विदा होने लगते है। वह वस्तु के विभिन्न पक्षो को जान जाता है। उसका चिन्तन सापेक्ष हो जाता है। यही कारण है कि जिसने जीवन भर पढा हो, स्वाध्याय किया हो वह विचारो का कुवेर एव शव्दो का मितव्ययी हो जाता है। वहुत कम वोलता है, किन्तु सार्थक। ऐसे व्यक्ति को फिर पुस्तको के अध्ययन की आवश्यकता नही रहती। वह जहा देखता है, वही से कुछ न कुछ पढ लेता है। वस्तुत: स्वाध्याय का सही अर्थ यही है कि जहा अध्ययन मे, सत्य की अनुभूति मे आत्मा के अतिरिक्त और कोई सहायक न हो। यही स्वाध्याय आत्मा को परमात्मा वनाता है। साधक अध्यवसाय मे वहुत कुछ गुणो की वृद्धि करता है—

'प्रकास्तध्यवसायस्य स्वाध्यायोवृद्धिकारणम्'

आज का सवसे वडा फैशन है, नवीनता को ग्रहण करना। चाहे वह विज्ञान के क्षेत्र मे हो अथवा सभ्यता और कला के क्षेत्र मे। हर जगह नये प्रयोग देखने को मिलेगे। यह नयापन आता कहा से है, इसके लिए दो वाते आवश्यक है—नयी उमग एव अत्यधिक अध्ययन। एक से काम नही चलेगा। इसीलिए पुरानी पीढी अध्ययन करके और युवा पीढी नयी उमगें भरकर भी अधूरी है। जीवन मे जागृत नही है। इसलिए जो कुछ इनसे हो रहा है, थोडे दिन वाद गलत सावित हो जाता है। यहा स्वाध्याय मदद

कर सकता है। जानो, पूरी शक्ति और लगन से जानो। गलती होने की संभावना निरन्तर कम होती जायेगी। संसार तक जानोगे तो वैज्ञानिक हो जाओगे और ज्ञाता को भी जानोगे तो परमात्मा के पथ पर होगे। अत स्वाध्याय से हानि कहीं नहीं है। यह निःश्रेयस मार्ग है—

सज्झायएगन्तनिसेवणा य।
सुत्तत्थसचिन्तणाया धिई य॥ उत्त ३२/३

स्वाध्याय का एक सूत्र यह भी है कि जीवन मे कहीं आवरण को मत पकडो। अच्छा-बुरा जो भी किया है, उसका लेखा-जोखा दिन मे एक बार अवश्य करो। इससे बहुत कुछ मैल छन जायेगा। और यदि कहीं सद्ग्रन्थो का अध्ययन तथा सत्सग करने की आदत डाल ली तो स्वमेव जीवन से बनावटी पन समाप्त होने लगेगा। स्वाध्याय की यह निष्पत्ति है कि अपने जीवन को खुली किताब के समान रखो। उस हवादार और रोशनदान युक्त मकान की तरह, जिसमे प्रकाश आ सके और धूल के कण बाहर जा सकें। स्वाध्याय यही सिखाता है।

अपने द्वारा किया गया अध्ययन स्वाध्याय कहा जाता है। इसमे किसी गुरु की अपेक्षा आवश्यक नहीं। इस बात का गहरा अर्थ है। जब गुरु की अपेक्षा नहीं होती तो स्वाध्याय मे पुस्तक भी अनिवार्य नहीं है। वह एक साधन मात्र हो सकती है तथ्य तक पहुँचने का, किन्तु जानना 'स्व' को होगा। इसका अर्थ हुआ कि 'स्व' कहीं से भी, कुछ भी जान सकता है। शायद इसीलिए भारतीय साहित्य मे देशाटन को भी ज्ञानवृद्धि का एक उत्तम उपाय माना है। वहाँ भी स्वाध्याय हो सकता है। हमारे देश मे तीर्थवन्दना इसी स्वाध्याय के हेतु प्रचलित हुई थी। पर्वतों पर, एकान्त स्थानों पर तीर्थों का होना अकारण नहीं है। वहाँ जाकर व्यक्ति ससार की विचित्रता और आत्मा की विशेषता के सम्बन्ध मे गहराई से सोच सकता है।

स्वाध्याय का केवल धार्मिक और व्यक्तिगत महत्त्व ही नही है। समाज के अन्य क्षेत्रों मे भी वह शोधन प्रारम्भ करता है। यदि स्वाध्याय के मूलमन्त्र सापेक्ष चिन्तन को पकडा जाय तो आज जो दुराग्रहों, मतमतान्तरों को लेकर झगडे हैं, वे शान्त होंगे। आज जो सचय की प्रवृत्ति के कारण व्यक्ति दूसरों के हितों को छीनता है, वह 'स्व' के स्वरूप के सम्बन्ध मे अज्ञान ही है। वह शरीर को ही सब कुछ मानता है। अत उसकी सुविधा के साधन एकत्र करता है। स्वाध्याय मे जब उसे ज्ञात होगा कि शरीर और आत्मा मे भेद है। एक अपना है, एक पराया, तो वह स्वमेव पराये शरीर के लिए चिन्ता करना छोड देगा। समाज की बुराइया इससे दूर होंगी। अत स्वाध्याय व्यक्ति को सामाजिक और सुयोग्य नागरिक भी बनाता है। वर्तमान सन्दर्भों मे स्वाध्याय अपनी अर्थवत्ता पूर्ववत् ही बनाये हुए है, जरूरत उसके सही स्वरूप को उद्घाटित कर अपनाने की है।

4 रवीन्द्र नगर,
उदयपुर (राज)

परीक्षा में साफल्यलाभ का अमोघ उपाय–स्वाध्याय

श्री भवरलाल पोल्याका

मानव जीवन मे ज्ञान का बहुत बडा महत्त्व है। ज्ञान यद्यपि आत्मा का अविभाज्य गुण है, प्रत्येक आत्मा मे चाहे वह एकेन्द्रिय हो, द्वीन्द्रिय हो, तीन इन्द्रिय वाला हो, चतुरिन्द्रियधारी हो अथवा सैनी असैनी पचन्द्रिय हो ज्ञान तो रहता ही है, तथापि मानव के ज्ञान की एक विशेषता है। वह विशेषता है उसकी मनन करने की शक्ति। इस शक्ति-विशेष के कारण ही मानव, मानव सज्ञा से अभिहित किया जाता है। मानव के अतिरिक्त अन्य किसी भी आत्मा मे यह शक्ति नही कि वह अपने प्रकृति प्रदत्त ज्ञान मे प्रयत्न करके अभिवृद्धि कर सके। इसी कारण मानव के अतिरिक्त अन्य जीव मुक्ति का अधिकारी नही है।

ज्ञान मानव का तृतीय नेत्र है। यहाँ ज्ञान से हमारा तात्पर्य सब आत्माओ मे समान रूप से पाये जाने वाले ज्ञान से नही है। हमारा तात्पर्य मानव के उस विशेष प्रकार के ज्ञान से है जो विवेक कहलाता है और जिससे मानव अपने हिताहित की पहचान करने मे समर्थ होता है, ससार के गहन अन्धकार को नष्ट कर उसे आलोक बाटता है और जिसके अभाव मे मानव और पशु मे कोई भेद नही होता। इसीलिए शास्त्रकारो ने कहा है—'नह्यज्ञानादन्य पशुरस्ति'।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज मे ही उत्पन्न होता है, समाज मे ही बढता है, खाता है, पीता है और उठता-बैठता है। अत समाज के प्रति कृतज्ञता के नाते उसके कुछ कर्तव्य होते हैं। इसी प्रकार अपने कुटुम्बियो, देश एव सम्पूर्ण विश्व के प्रति भी उसके कुछ कर्तव्य है। आत्मोत्थान तो उसका आद्य कर्तव्य है ही। अर्थ यह है कि मनुष्य के कर्तव्य लौकिक और पारलौकिक इन दो भेदो मे विभक्त है और सभ्यता के आदिकाल से ही मानव इन दोनो प्रकार के कर्तव्य-कर्मों का भले प्रकार ज्ञान प्राप्त करने हेतु प्रयत्न करता रहा है। मानव-जीवन के प्रथम आश्रम ब्रह्मचर्य का एक मात्र उद्देश्य शिक्षण जो मानव को लौकिक और पारलौकिक दोनो प्रकार का जीवन जीना सीखा सके।

आज आश्रम व्यवस्था नही रही है किन्तु मानव मानव का प्राथमिक जीवन विद्यार्थी के रूप मे ही प्रारभ होता है। शिक्षण की परिपाटी मे भी परिवर्तन हुआ है। आज की शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान प्राप्ति उतना नही रहा है जितना कि परीक्षा पास करना। क्योकि आज मानव की योग्यता को उसके प्रमाणपत्रो से आका जाता है। आज भी शिक्षा जीवनयापन हेतु रोजगार आदि प्राप्ति का साधन समझी जाती है। अत आज के विद्यार्थी का ध्येय ज्ञानार्जन करना न होकर केवल येनकेनप्रकारेण परीक्षा पास करना मात्र रह गया है। वास्तव मे आज के विद्यार्थी के सामने परीक्षा मे पास होने की सबसे बडी समस्या है और इस समस्या का एक मात्र निदान है स्वाध्याय।

प्राय स्वाध्याय का अर्थ धार्मिक ग्रन्थो को पठन-पाठन ही समझा जाता है किन्तु वास्तव मे ऐसा है नही। यद्यपि आचार्य सोमदेव प्रभृति ग्रन्थकारो ने 'अध्यात्म विद्याया पाठ स्वाध्याय उच्चते' ऐसा कह

कर स्वाध्याय को आध्यात्मिक क्रियाओ की कोटि मे सम्मिलित कर दिया है किन्तु स्वाध्याय शब्द का एक और अर्थ भी ग्र थकारो ने इस प्रकार मे किया है-- 'सुष्ठु आ मर्यादया अध्ययनमध्यापन स्वाध्याय' अर्थात् प्रकृत विषय का भले प्रकार अध्ययन-अध्यापन भी स्वाध्याय की कोटि मे ही आता है और स्वाध्याय का यह पक्ष ही हमारी इस विवेचना का विषय है।

प्राय सब ही ग्र थकारो ने वाचना, पृच्छना, अनुप्रेक्षा, आम्नाय और धर्मोपदेश इस प्रकार स्वाध्याय के पॉच भेद किए है। जिस प्रकार मुमुक्षु स्वाध्याय के द्वारा ज्ञान की अभिवृद्धि कर अन्त मे अपने चरम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर लेते है उसी प्रकार विद्यार्थी भी स्वाध्याय के इन भेदो का आलवन कर अपने लक्ष्य-परीक्षा मे सफल होना, को निश्चित रूप से प्राप्त कर सकते है।

जिस विषय की पुस्तक का आपको अध्ययन करना है उसे इस प्रकार पढे कि उसके प्रत्येक शब्द का अर्थ भी आप समझ सके। अपने किसी साथी को भी यदि उसे समझाना है तो इसी प्रकार उसे उस विषय का ज्ञान करावें। अर्थात् पुस्तक के शब्दो और शब्दो के अर्थ को स्वय समझना एव दूसरो को समझाना अपेक्षित विषय के ज्ञानप्राप्ति की पहली सीढी है। इसे ही शास्त्रीय भाषा मे वाचना कहते हैं। लौकिक भाषा का 'वाचना' शब्द सस्कृत के इसी 'वाचना' शब्द से बना है।

दूसरी सीढी है पृच्छना। भाषा का पूछना शब्द इसी से बिगड कर बना है। पुस्तक पढते समय यदि शब्द या उसका अर्थ अथवा दोनो ही समझ मे न आवे विषय स्पष्ट न हो तो अपने से विशिष्ट ज्ञानी से पूछ कर उसे समझ लेना चाहिए। अपने किसी साथी को याद कराने हेतु भी यह ही क्रिया दोहरायी जा सकती है। इस क्रिया का उद्देश्य किसी की हँसी मजाक उडाना, किसी से झगडा आदि मोल लेना न होकर प्रकृत विषय की ज्ञान प्राप्ति मे उत्पन्न सशयो आदि को दूर कर उस विषय का वास्तविक ज्ञान प्राप्त करना है।

तीसरी सीढी है अनुप्रेक्षा अर्थात् जो भी पढा जाय उसका मन से बार-बार चिन्तवन किया जाय।

चौथी सीढी है आम्नाय। कही-कही इसे परिवर्तना नाम से भी कहा गया है। इसमे तात्पर्य है जो भी पढा है उसको बार-बार दोहराना।

जब विद्यार्थी उक्त चार प्रकार से अपेक्षित विषय मे निष्णात हो जावे तब वह उस विषय का उपदेश देने का, दूसरो को पढाने का अधिकारी बनता है, इससे पूर्व नही और यह ही अपेक्षित विषय के ज्ञान प्राप्ति की अन्तिम सीढी है।

आज कल प्राय ऐसा समझा जाता है कि शास्त्रो मे जो कुछ भी लिखा है, उसका सम्बन्ध केवल परा-विज्ञान से है, व्यावहारिक जीवन से उसका रचमात्र भी सबध नही है। इस समझ के कारण ही आज हमारे ग्र थो के पठन-पाठन का प्रचार कम होता जा रहा है। आज का युग भौतिकवाद का है। आज का मानव अध्यात्म की जगह भौतिकता को अधिक महत्व देता है। यदि आज के मानव को हमारे ग्रन्थो के पठन-पाठन की ओर आकृष्ट करना है तो हमे उनकी आज के परिपेक्ष्य मे नवीन ढग से व्याख्या करनी होगी, आज की भौतिक समस्याओ का समाधान उसे देना होगा, तभी वह इस ओर आकृष्ट होगा। नही तो हमारे ग्र थ आलमारियो की ही शोभा बढाते रहेगे।

५६६, जोशी भवन के सामने
मानिहारो का रास्ता
जयपुर-3

हमें कैसी पुस्तकें पढ़नी चाहिए ?

डॉ सर्वपल्लि राधाकृष्णन्

हम इस बात का पर्याप्त अनुभव नहीं कर पाते कि जो पुस्तकें हम पढ़ते हैं, विशेषत तरुणाई मे, उनका हमारे मानस के निर्माण पर कितनी दूर तक असर पडता है। आज हम कई साधनों से ज्ञान प्राप्त करते हैं—रेडियो, सिनेमा, समाचारपत्र और अब तो टेलीविजन भी इन मे शामिल हो गया है, किन्तु पुस्तक-पठन इन सबसे पुराना और सबसे ज्यादा प्रभावोत्पादक है। पुस्तक-पठन यान्त्रिक शिक्षण से भिन्न है इसीलिए स्वाध्याय अथवा अध्ययन हमारे लिए कर्तव्य माना गया है। जब हमारे पास पुस्तकें, साथी के रूप मे, होती हैं तब हम कभी अकेले नहीं होते।

एक महान लेखक ने कहा है कि जो कुछ मनुष्य अपने एकान्त के साथ करता है, वही धर्म है। यह केवल धर्म की ही बात नहीं है बल्कि कला, साहित्य, वैज्ञानिक अन्वेषण और औद्योगिकीय आविष्कार भी मानव अपने एकान्त के साथ जो कुछ करता है, उसीके परिणाम हैं। आधुनिक जगत् मे हम समूहचारी होते जा रहे हैं। जब हमे जरा फुरसत मिलती है तो हम प्रीति-भोजो, क्लबो या दूसरे सामाजिक कार्यों की ओर भागते हैं। हम अपने साथ अकेले रहने मे डरते हैं, बैठने और सोचने की कौन कहे, खडे होकर ताकने मे भी डरते हैं। हम दूसरो के साथ रहकर प्रसन्न होते है, अपने साथ रहकर नहीं। पैस्कल हमे बताता है कि ससार की समस्त बुराइया इस तथ्य से पैदा होती हैं कि मनुष्य एक कमरे मे शान्त होकर चुपचाप नही बैठ सकता। पुस्तक-पठन हममे एकान्त-चिन्तन और वास्तविक सुखोपभोग की आदत डालता है।

यह आम शिकायत है कि सभी क्षेत्रो मे जीवन के मानदड घटिया होते जा रहे हैं। जो नेता अपनी कर्तव्यभावना से च्युत् हो जाते हैं वे अपने अनुयायियो को गलत दिशा की ओर ले जाते हैं।

"प्रधाना धर्म उत्क्रम्य अधर्मेण प्रसा प्रवर्त्यन्ति ।"

रोग की जड मानव व्यक्ति मे है। यह हमारी राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक प्रथाओ मे है। हमको व्यक्ति का स्वभाव बदलना ही चाहिए। साहित्य मानवात्माओ के गुणो को उठाने का सर्वोच्च कार्य करता है। साहित्य शब्द 'सहित' से बना है और हेलमेल, ऐक्य और सामजस्य का प्रतिपादन करता है।

जब हम महत् ग्रन्थो को पढते हैं तो हमारे मानस उनके विचारों मे रंग जाते हैं। महान पुस्तकें पाठक का मानसिक स्वास्थ्य बढाती हैं। वे हममे मन की विशालता और प्रामाणिक दृष्टि पैदा करती हैं। वे हमे नैतिक सतोष देती हैं। आसक्ति या भोग सभ्य मूल्यो के प्रति द्रोह हैं।

ससार-विषवृक्षस्य द्वे फले अमृतोपमे ।
काव्यामृत रसास्वाद , सल्लाप सज्जनैसह ।।

कुछ पुस्तकें मनोरजन करती है, दूसरी शिक्षण देती हैं, और भी दूसरी हमारी प्रगति को उच्च स्तर पर ले जाती है। यह अन्तिम श्रेणी ऐसी पुस्तको की

है जिन्हे हमें पढना और मनन करना चाहिए। हमने मान लिया है कि मानव-जीवन का लक्ष्य आध्यात्मिक निष्पत्ति या उपलब्धि है। आनन्द विजय का लक्षण है। जो पुस्तकें हमे आनन्द देती हैं, वे उन पुस्तकों से भिन्न हैं जो हमे इन्द्रिय-सुख और सतोष देती हैं। आनद परिपक्वता का चिह्न है। जब हम किसी किताब के पढने से आनद पाते हैं तो हम जो कुछ पढते है उससे अपने ऐक्य का अनुभव करते हैं—वैसे ही जैसे सगीत को सुनते हुए उसमे तन्मय हो जाते हैं। आनद शरीर-सुख से ज्यादा स्थायी होता है और वेदना के अदर भी बना रहता हैं। जो ग्रन्थ आनद उत्पन्न करते है, निर्वैयक्तिक होते हैं और उनसे अहम् या देहाभिमान का क्षय हो जाता है। वे कच्ची भावना अथवा प्राविधिक चतुरता की अभिव्यक्तिया नही होते, अपितु विचारो मे पिरोये हुए मनोभाव होते हैं जिनका स्मरण शान्ति या निस्तब्धता मे किया गया रहता है। जो ऋषि नहीं है वह महत् साहित्य उत्पन्न नही कर सकता---न अऋषि कुरुते काव्यम्। हमारी जाति की कल्पना की सर्वोच्च सर्जनाए विश्व-साहित्य के श्रेष्ठ गौरव-ग्रथो मे गिनी जाती हैं। वे हमारे अतीत की सर्वोत्तम व्याख्याकार हैं और उनके पढते समय हम सहस्रो वर्ष पूर्व के महामनाओ के सपर्क मे होते हैं। यदि हम अपनी परपरा के प्रति चेतनायुक्त होना चाहते है तो हमको उन्हे पढना ही चाहिए।

हम केवल अपने पूर्वजो के शब्दो एव मूल्यो की पुनरुक्ति करके परम्परा को बनाए नहीं रखते। ऐसा करना तो उनको उनके महत्त्व से वंचित करना है। कोई भी परम्परा समीक्षात्मक एव रचनात्मक परिवर्तन के बिना, या समझदारी से किए गए नवीनीकरण के बिना जीवित नहीं रखी जा सकती।

हमारे युग के तीन प्रमुख अग है. वैज्ञानिक एव प्रौद्योगिकीय क्रान्ति, एशिया और अफ्रीका के पराधीन देशो की मुक्ति और विश्व की बढती हुई एकता। हमें ऐसी पुस्तकें पढनी चाहिए जो हमें वैज्ञानिक वृत्ति और दृष्टिकोण प्रदान करें। हमे विश्व की बढती हुई एकता के तथ्य पर भी विचार करना चाहिए। यदि हम भाषा दीवारो को तोड़ दे तो समस्त मानव जाति की बौद्धिक सम्पदा हममें से प्रत्येक की सेवा के लिए उपलब्ध हो जाएगी। समस्त अतीत और समस्त जगत को व्यक्ति के हृदय में जीवित करना चाहिए। ग्रथ वे साधन हैं जिनसे हम सस्कृतियो के बीच सेतु का निर्माण करते है। सस्कृतियो के विरोध को तोड डालने की आवश्यकता है ऐसे लोगो के बीच पडे जिनमें प्रेम करने की सामर्थ्य बहुत ही कम है और जो एक-दूसरे से भय तथा घृणा करते हैं, भावुक व्यक्तियो को सशय एवं भय दूर करने मे सहायता देनी चाहिए---सशय एव भय जो हममे समझदारी एवं प्रेम की अपेक्षा बडी आसानी से उठ खडे होते है। महत् ग्रथ ऐसे समय हमारे लिए उपयोगी हैं जब हमारे मूल्यो को भ्राति मे डाल दिया जाता है।

स्वाध्याय क्या, क्यों, और कैसे ?

श्री माईदयाल जैन

स्वाध्याय क्या ?

धर्मशास्त्रो व उनके विविध अगो का स्वाध्याय व अध्ययन सभी धर्मों मे गृहस्थो के कर्त्तव्यो मे पाया गया है। साधु-साध्विया भी इस स्वाध्याय से अपने ज्ञान को वढाती हैं। इस प्रकार धार्मिक शास्त्रो व उससे सवधित साहित्य का अध्ययन स्वाध्याय कहलाता है। यो उसका अध्ययन, पठन-पाठन भी इसी मे शामिल है, पर स्वाध्याय एक विशेष महत्व का कार्य माना जाता है। एक प्रकार से यह एक पारिभाषिक शब्द वन गया है। इस शास्त्रीय और पुस्तकीय स्वाध्याय के अतिरिक्त स्वाध्याय का एक और अर्थ मैं समझता हूँ। अपनी आत्मा-स्व-का अध्ययन व उसके वारे मे दर्शनिक रूप से चिंतन करना भी स्वाध्याय मे गिना जाता है, पर इसकी तरफ कम स्त्री-पुरुषो का ध्यान है। यदि विचार किया जाय तो मालूम होगा कि ससार के समस्त दर्शनो का मूल स्रोत इस प्रकार का स्वचिंतन--आत्म-चिंतन=ही है। इस की व्याख्या मे यहा जाना आवश्यक मालूम नही होता। केवल सकेत मात्र यहा करदिया गया है।

स्वाध्याय क्यों है ?

इस स्वाध्याय का वहुत वडा महत्त्व है। शास्त्रो के अध्ययन व स्वाध्याय से हम अपने पूर्ववर्ती-आचार्यों-कवियो व साहित्यकारो के विचारो, दर्शन, सिद्धान्त आदि पुराण-चरित्र साहित्य व द्रव्यो तथा लोक रचना आदि का ज्ञान प्राप्त करते हैं। इससे हमारे ज्ञान का क्षेत्र वढता है। उसमे गम्भीरता व विशालता आती है। आत्मा के अध्ययन व चिंतन से घट के द्वार व नेत्र खुलते हैं। आत्मा व शरीर का भेद व आत्मा का परमात्मा वनने का मार्ग भी हमारे हाथ लग सकता है। स्वाध्याय ज्ञान मदिर की कुजी—चावी है। हर एक स्त्री-पुरुष, युवा, युवती व किशोरो को स्वाध्याय नियत रूप मे करना चाहिए।

यद्यपि ऊपर के सक्षिप्त विवेचन से यह मालूम हो गया होगा, कि स्वाध्याय क्यो करना चाहिए, फिर भी इसके विषय मे कुछ और लिखना आवश्यक प्रतीत होता है। जैन दर्शन मे व्यक्ति और परमात्मा के बीच कोई एजेण्ट, पुरोहित, पुजारी आदि नही माना गया है। हर स्त्री-पुरुष को अपना धर्म-कर्म करना है, उसे स्वय अपने कर्म-वधन को काटना हैं और धर्म-मार्ग पर वढते हुए अपने तप-सयम और चरित्र-निर्माण आदि से परमात्मा पद पाना है। सम्यग् दर्शन-ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्ग 'तत्त्वार्थ सूत्र' का प्रथम सूत्र है। यो इन तीनो के सामूहिक रूप से मोक्ष मार्ग बनता है, पर यह वात हमे कभी न भूलनी चाहिए कि विना सम्यक् दर्शन के विश्वास-दृढता व चरित्र मे स्थिरता व निर्मलता नही आती। स्वाध्याय से ही यह सव प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त स्वाध्याय से हमे नित नये विचार व सैद्धान्तिक गुत्थियो को सुलझाने व शकाओ को दूर करने का मौका मिलता है।

स्वाध्याय कैसे ?

अब प्रश्न यह होता है कि स्वाध्याय कैसे किया जाय ? साधुओ को, गृहस्थो को स्वाध्याय करने का नियम दिलाते देखा व सुना है। यह अच्छी बात है। पर होता यह है कि किसी शास्त्र का दस-पाच मिनिट पढ लेना मात्र ही स्वाध्याय समझ लिया जाता है। यह एक रूढि पालन मात्र का स्वाध्याय है और हम अपने मन को यो कहकर भुलावे मे डाल सकते हैं, कि बिल्कुल न पढने से तो इस प्रकार स्वाध्याय करना अच्छा है। ठीक है। पर इससे वह लाभ नही होता जो स्वाध्याय से होना चाहिए। इस लिए हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम स्वाध्याय के ठीक ढग को अपनायें और समझें कि स्वाध्याय कैसा होता है।

आपने कालेजो के तीक्ष्ण बुद्धि छात्र-छात्राए देखे होंगे। जब वे कक्षा मे प्राध्यापक का व्याख्यान सुनते हैं तो अपनी कापियो मे नोट्स लेते हैं। घर या छात्रावास मे आकर या पुस्तकालयो मे जाकर उस विषय की दूसरी पुस्तको को पढकर उन मे और नोट्स लेते हैं। तब कही जाकर व अपने विषय का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। कुछ विद्यार्थी आपसमें चर्चा करके अपने ज्ञान को बढाते हैं।

स्वाध्याय मे उपर्युक्त पद्धति बडे काम की होती है। अपनी रुचि के अनुसार आप जिस ग्रंथ या पुस्तक का स्वाध्याय करें। उसकी उपयोगी बातो को एक कापी मे लिखे। यदि किसी पुस्तक विशेष के स्वाध्याय के लिए दस-पन्द्रह स्वाध्यायियो की गोष्ठी (study-circle) हो तो और भी अच्छी बात है। इस गोष्ठी मे हर एक स्वाध्यायी अपने विचार शकाए उपस्थित कर सकता है। स्वाध्याय सउद्देश्य (Purposeful) होना चाहिए। यो तो ज्ञान का भण्डार महान् है, पर हमे थोडा बहुत ज्ञान आत्मा, द्रव्यो, लोककल्पता, चारित्र साहित्य, तीर्थंकरो के जीवन व कथा साहित्य आदि का होना ही चाहिये। इसलिए इन सभी विषयो के साहित्य का पढना आवश्यक है।

स्वाध्याय तो चलता रहता है। पर इसको करने के कुछ विशेष ढग से है, जैसे तुलनात्मक समालोचनात्मक (critical), व ऐतिहासिक, क्रमिक विकासात्मक आदि तुलनात्मक स्वाध्याय का क्षेत्र बडा विशाल है। यह हमे सकीर्णता व कूपमण्डूकता से निकाल कर उदारता के क्षेत्र मे ले जाता है। समालोचनात्मक स्वाध्याय ही जैनो की परीक्षा प्रधानता का अग है। 'बाबा वाक्य प्रमाणम्' या अधविश्वास के यह विरुद्ध है। शास्त्रो के पाठ मे अशुद्धिया, क्षेपक, भूल से पाठ रह जाना, मुद्रण की अशुद्धिया, व जालीपन आदि भी होते हैं। इन सभी त्रुटियो को केवल तीव्र बुद्धि स्वाध्यायी ही पकड सकते हैं। ये शास्त्रो मे से नीर-क्षीर अलग-अलग करते हैं। ऐतिहासिक क्रमिक विकासात्मक स्वाध्याय से स्वाध्यायियों को आचार्यो की टीका महाभाष्यो आदि से किसी विषय या सिद्धान्त के विकास का समयवार पता चलता है। आचार्यों के मत भेद भी मालूम होते हैं। इस प्रकार के स्वाध्याय का अपना महत्त्व है, इसका अलग स्थान है। यदि स्वाध्यायी को किसी विशेष विषय में दिलचस्पी है, तो उसी विषय का साहित्य अधिक पढना चाहिए। पर यह काम विद्वान स्वाध्यायियों का है। यह विशेषज्ञो (स्पेशलिस्ट (specialists) का युग है। समाज को भी हरएक विषय के साधिकारी विशेषज्ञ विद्वान चाहिए।

क्या पढ़ें ?

साहित्य के बारे मे एक और बात जानने योग्य है। साहित्य को जीवन साहित्य व (Literature of life) ज्ञान साहित्य (Literaure of Knowledge) दो भागो मे बाटा जा सकता है। जीवन साहित्य मे दर्शन शास्त्र, महापुराण, चरित्र, काव्य, कला साहित्य, नाटक व इतिहास आदि आते है। ज्ञान साहित्य मे द्रव्य, जीव, त्रिलोक रचना, कर्म सिद्धान्त, कोष व विश्व कोष आदि आते हैं। जीवन साहित्य के स्वाध्याय से हमे नई प्रेरणायें मिलती है। ज्ञान साहित्य से हमारा ज्ञान बढता हैं।

स्वाध्याय या अध्ययन मे विषय सूची व अनुक्रम-

णिकाओं (indexes) को देखकर अपनी इच्छानुसार किसी विशेष विषय (Topic) को पढने मे सहायता मिलती है। पाठक को एक विषय को ढूढने मे इधर-उधर भटकना नही पडता, समय नष्ट नही होता। इस दृष्टि से शास्त्रो का सम्पादन व अनुवाद आदि प्रकाशित करते समय अनुक्रमणिकाओं व परिशिष्टियो से ग्र थो को तैयार करना चाहिए।

व्याख्याताओ, उपदेशको, लेखको, पत्रकारो व अनुसधानकर्त्ताओ (Research Scholars) को सद् शास्त्रो का अध्ययन-स्वाध्याय विशेष ढग से करना चाहिए और अपने काम की बातो के नोट्स लेकर अपना काम चलाना चाहिए। बडे-बडे संग्रह ग्रन्थ सकलन व विशेष विषयो के ग्र थ इसी प्रकार के स्वाध्याय के फल है। आज जो बडे-बडे शोध ग्रन्थ व कोष आदि तैयार हो रहे है, उनकी तैयारी मे ऐसे ही अध्ययन का योगदान है।

अनाप-शनाप अश्लील साहित्य व घटिया साहित्य को पढकर अपने मस्तिष्क व विचारो को न बिगाडना चाहिए। हमारे बहुत से नवयुवक व नवयुवतिया व विद्यालयो के छात्र आज जो साहित्य पढते हैं, वह विनाशकारी है। इससे बचना चाहिए। पर इसका इलाज नये उपयोगी साहित्य का निर्माण है, जो इन नये पाठको के हाथो मे दिया जा सके।

स्वाध्याय के सबध मे ऊपर सक्षिप्त रूप मे कुछ बता दिया गया है। इससे बहुत से स्वाध्यायियो —पाठको को मार्ग-दर्शन मिलेगा।

पत्र-पत्रिकाओं के पढने को स्वाध्याय या अध्ययन नहीं कह सकते। परन्तु आज के युग मे पत्र-पत्रिकाओं का पढने का विशेष महत्व है। विभिन्न विषयो की पत्रिकाए अपना अलग महत्त्व रखती हैं। यह विषय, अलग लेख मे सबध रखता है। ❁

4569 डिप्टीगज दिल्ली—६

हमारे स्वाध्याय की दिशा क्या हो ?

डॉ जयकिशनप्रसाद खण्डेलवाल

स्वाध्याय और भाव-विशुद्धि

स्वाध्याय को परम तप माना गया है। स्वाध्याय से हमारी भाव-विशुद्धि होती है। जैनधर्म मे स्वाध्याय को विशेष महत्त्व प्रदान किया गया है। शास्त्र का स्वाध्याय हमें ससार मे भटकने से वचाता है। अच्छे विचारो से वढकर सच्चा मित्र कौन हो सकता है, जो सुख-दुख मे समान आचरण रखे। महान पुरुपो के द्वारा जो यथार्थ विचार व्यक्त किये गए हैं, अपने अनुभव एव अनुचिन्तन को हमारे लिए सजोकर रखा है, हमे उसका स्वाध्याय मनन एव चिन्तन करके उसमे से अपने लिए विचार मौक्तिक चुनने चाहिए।

स्वाध्याय और अध्ययन।

स्वाध्याय और अध्ययन मे अन्तर है। स्वाध्याय स्व का अध्याय है, तो अध्ययन पर पदार्थ का ज्ञान है। भगवान महावीर ने जीव-अजीव का निरूपण करते हुए आत्म-अनात्म की व्याख्या की है। आत्म का अध्ययन और आत्मा का स्वाध्याय होता है। स्वाध्याय हमे ध्यान लगाने मे भी सहायता प्रदान करता है क्योकि तत्त्वज्ञान के उपरान्त ध्यान लगाना सहज संभव होता है और वह टिकता है।

स्वाध्याय और अस्तित्व बोध।

आज हमारे सामाजिक और आर्थिक जीवन मे वडी तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं। पाश्चात्य सभ्यता की तडक-भडक से आकर्षित होकर हम अपनी संस्कृति एवं सभ्यता को भूलने का प्रयास कर रहे हैं। इससे हमारे जीवन मे असामञ्जस्य एवं असन्तुलन हो गया है। सामाजिक जीवन मे स्थायित्व का अभाव हो रहा है। व्यक्ति से ही समाज वनता है। अत. व्यक्तिस्तर पर स्वाध्याय की आवश्यकता है। आज के परिवर्तनो की इस धूम मे स्वाध्यायी एव व्रती श्रावक ही अपनी धर्मनिष्ठा को वनाए रख सकता है। वह समय को पहचानता है और उसका सदुपयोग करता है। समय की पहचान के विना हमारा जीवन निरर्थक है। मुनि श्री विद्यानन्दजी का यह कथन अत्यन्त सारगर्भित है—'जो प्रकाश का समय रहते उपयोग कर लेते हैं, उन्हे अन्धकार घिरने पर आकृतित्व, अभाव और अपनी अस्तित्व समाप्ति का भय नही रहता।' अपने अस्तित्व की शाश्वतता का ज्ञान हमें स्वाध्याय के द्वारा होता है।

जिज्ञासा और लगन

स्वाध्याय करने के पूर्व यदि हममे जिज्ञासा एव ललक है, तो हमारा उपयोग शीघ्र वैठ जाता है और हम उसमे लवलीन हो जाते हैं। लोकमान्य तिलक की पीठ मे एक कारवकिल फोडा हो गया। उसका आपरेशन करने के लिए उन्हें बेहोशी की दवाई सु घाने की बात कही गई। उन्होने डाक्टर से कहा—इसकी कोई आवश्यकता नही, केवल मुझे धार्मिक पुस्तक पढने को दे दो।' वे पुस्त पढते रहे, आपरेशन होने के कुछ देर वाद उन्होंने पूछा—कितनी देर है ? पता चला कि आपरेशन हो चुका है। वे स्वाध्याय में लवलीन थे।

मुनिश्री विद्यानन्दजी पिछले तीस वर्षो मे अड़तालीस हजार ग्रन्थो का अध्ययन कर चुके हैं।

विगत दस वर्षो मे इन पक्तियो के लेखक ने भी उनसे स्वाध्याय की महती प्रेरणा प्राप्त की है। अभी पिछले ही वर्ष की बात है, एक अग्रेज विद्वान् ए एल वाशम की पुस्तक 'अद्भुत भारत' एक भक्त ने उन्हे भेंट की। उसमे जैनधर्म, कला एव पुरातत्त्व के सबध मे कुछ विशेष जानकारी थी। पोदनपुर (बाहुबलि की राजधानी) पाकिस्तान मे पेशावर के समीप है। वहाँ इसवी पूर्व का ब्राह्मी लिपि का एक शिलालेख है। वह उस पुस्तक मे छपा था। मुनिश्रीजी ने ब्राह्मी लिपि की लिपिमाला का अध्ययन कर उस अभिलेख का अध्ययन किया और उसे जैन शिलालेख सिद्ध किया। उनका जीवन स्वाध्याय से पूर्ण रहा है और आज भी कोई भी उच्चस्तरीय ग्रन्थ प्राप्त होने पर वे उसके अध्ययन मे लवलीन हो जाते हैं। आचार्य कुन्दकुन्द के सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक ग्रन्थ 'समयसार' का स्वाध्याय तो उनके जीवन का स्वारस्य है वे प्रतिदिन 'समयसार' का स्वाध्याय करते है और उसे जीवन मे वरेण्य मानते है। उनका स्पष्ट कथन है कि "जो चिन्तन के समुद्र पी जाते हैं, स्वाध्याय की सुधा का निरन्तर आस्वादन करते रहते हैं, सयम पर सुमेरू के समान अचल---स्थिर रहते हैं, वे ज्ञान-प्रसाद के अधिकारी होते हैं।

स्वाध्याय की दिशा क्या हो ?

प्रश्न यह है कि हमारे स्वाध्याय की दिशा क्या हो ? हम अनात्म से आत्म की ओर बढते है। अनात्म को जानकर हमारी बलवती जिज्ञासा आत्म को खोजना चाहती है। इस आत्म का परिचय हमे धर्मशास्त्रो का अध्ययन करने से प्राप्त होता है। 'तत्त्वार्थसूत्र' जैनधर्म एव दर्शन का ऐसा महान् ग्रन्थ है जिसमे सूत्र रूप मे धर्म एव दर्शन के स्वरूप का निदर्शन कराया गया है। हम द्रव्यसग्रह के द्वारा द्रव्य का स्वरूप समझते है और समयसार, प्रवचनसार आदि उच्चस्तरीय आध्यात्मिक ग्रन्थो का स्वाध्याय करके हम सच्चे अर्थो मे स्व का अध्याय करते हैं।

स्वाध्याय की चरम उपलब्धि है चारित्र। 'एक पख से पक्षी उड नही सकता और चारित्र विना ज्ञान और दर्शन का रथ घूम नही सकता।' अत स्वाध्याय के द्वारा हमे केवल दर्शन और ज्ञान ही नही प्राप्त करना है, वरन् उसे चारित्र मे पढा कितना, इसका मूल्य नही है किन्तु उसमे से कितने विचारो को हमने अपने जीवन मे अपनाया, यह महत्त्व की बात हैं। जबतक हम इस केन्द्रबिन्दु पर दृष्टि नही रखते, हमारा स्वाध्याय लाभप्रद नही कहा जा सकता। इसलिए आचार्य कुन्दकुन्द ने वाचन से पाचन को श्रेष्ठ बताया है। हमारे स्वाध्याय की दिशा चारित्र हो। हम उसे अपने जीवन का अग बनायें। स्वाध्याय एक महान् पुरुषार्थ है क्योकि इसके द्वारा कर्मों का आश्रव रुकता है अथवा शुभ कर्मों का आश्रव होता है। स्वाध्याय के आलोक मे हमे अपने अशुभ विचारो पर पश्चात्ताप होता है और इससे हमारे अशुभ कर्मों की निर्जरा होती है।

स्वाध्याय से जीवन की सार्थकता :

मुनिश्री विद्यानन्दजी ने लिखा है कि 'एक घूट पानी के लिए तरसकर मरने वाले के शव पर सहस्त्र कलशो का पानी उलीचना व्यर्थ है, वैसे ही समय चले जाने पर किया जाने वाला पुरुषार्थ भी फलशून्य हो जाता है।' अत हमे अपने क्षण-क्षण बीतते हुए जीवन को स्वाध्याय के द्वारा सार्थकता प्रदान करनी चाहिए। स्वाध्याय उन्नति का मुखद्वार है, यह हमारे चारित्र को उत्कर्ष प्रदान करने वाला सर्वोत्तम उपकरण है। स्वाध्याय द्वारा हमे शान्ति एव सच्ची राह का दिग्दर्शन मिलता है। जिन्होंने स्वाध्याय रूपी तप किया उन्होंने उसकी अग्नि मे तपाकर अपनी आत्मा को कुन्दन बना लिया। बिना डोरे की सुई हाथ से गिर जाने पर खो सकती है, किन्तु डोरे से युक्त सुई के खोने का भय नही रहता। इसी प्रकार स्वाध्याय मे लवलीन रहने वाली आत्मा इस ससार मे भटक नही सकती, खो नहीं सकती। ❋

१।२४०, बेलनगज आगरा-४

स्वाध्याय और सत्संग

आप किससे प्रभावित होते है ?

स्वर्गीय श्री यज्ञदत्त अक्षय

जितने मुंह उतनी बातें

एक बार एक वृद्ध सन्यासी एक विद्यालय मे गये। वहाँ ऊँची कक्षाओ के छात्र-छात्राओं से पूछा—'आप किससे प्रभावित होते है ?' किसी ने सिनेमा के अभिनेता-अभिनेत्रियो का नाम लिया कि हम उनकी वेषभूषा से प्रभावित होते हैं, उनकी केश-सज्जा का अनुकरण करते हैं। किसीने कहा कि हम सिनेमा के नृत्यगीतो से प्रभावित होते हैं, विवाह अवसरो पर विदोरियाँ, बरातो के आगे बैंड की धुन के साथ नाचना हमे अच्छा लगता है, सिनेमा के गाने गुनगुनाने मे मजा आता हैं। किसीने कहा हम तो बडे-बडे अफसरो से प्रभावित होते है कितनी शान-शौकत है उनकी ? दूसरो ने कहा कि बडे अफसर तो कम पढे मन्त्रियो, व्यापारियो के हुक्म के बंदे होते है। हम तो कोठियोवाले बडे-बडे व्यापारियो से प्रभावित है या फिर सत्ता पर जमे हुए मन्त्रियों से। व्यापारियों पर तो मन्त्रियो के हुक्म से छापे मारे जा सकते हैं, उन्हे अपमानित किया जा सकता है। मन्त्रियो के हाथ मे सर्वसत्ता है, हम तो बडे मन्त्री बनना चाहेगे। कुछ बोले नही हम तो अखबारो के लेखो, विज्ञापनो से प्रभावित होते हैं। उन मे लिखी नायक-नायिकाओ की बातो से हम अपना व्यवहार ढालते है। गर्ज यह है कि जितने मुंह उतनी बातें।

जैसा सोचोगे वैसा बनोगे

वास्तव मे मानव-मन बडा सवेदनशील है। मानव अपने चारो ओर की परिस्थितियो, घटनाओ, विचारो आदि से निरतर प्रभावित होता रहता है। जिस वातावरण मे वह रहता है उसी के सांचे मे ढल जाता है, सुरभित सुमनमय उद्यान मे पुलकित-प्रसन्न और दुर्गन्धपूरित गलियो मे विथकित व खिन्न हो जाता है। इस प्रभाव के कारण वह कभी पतित होता है, कभी उन्नत।

मानव की परिस्थितियाँ उनके विचारो और आकाक्षाओ का सृजन करती हैं। विचारो को उच्च स्तर पर ढालना मानवीय विकास की, उत्कर्ष की मूलभूत आवश्यकता है। कहा भी है कि As you thinketh, so you becometh जैसा सोचोगे वैसा बनोगे। परिष्कृत वातावरण मे रहने पर मनोभूमि उन्नत बनेगी। असस्कृत, अनुज्वल परिस्थितियों मे रहने पर मनोभूमि दिन दिन अध पतन की ओर अग्रसर होती जायगी।

सत्संग व्यक्तित्व की परख

व्यक्तित्व की उत्कृष्टता के लिए वे विचार आवश्यक हैं जो आदर्श से ओत-प्रोत हो और हमारी रुचि को परिष्कृत करें, हमारी श्रद्धा को श्रेयोभूमि पर प्रतिष्ठापित करें और श्रेय मार्ग की ओर अग्रसर होने

की प्रबल प्रेरणा प्रदान करें। ऐसे विचार किस प्रकार प्राप्त हो, इस दृष्टि से सत्सग का महत्त्व है। उच्च स्तरीय, उच्च चारित्र्यवान् पुरुषो का सान्निध्य, उनके विचारो को पुण्य प्रभाव का सतत सम्पर्क हमारे ज्ञान, विचार और आचरण को प्रफुल्लित पुष्पित करने मे समर्थ है। कहा है—A man is known by the company he Keeps आदमी अपनी सगति से पहचाना जाता है। कमरे मे लगे चित्रो से, पढ़ी जाने वाली पुस्तको से, रहन-सहन से, बोल-चाल से आदमी की परख हो जाती है कि उसमे कितना पशुत्व, कितना राक्षसत्व, कितना मानवत्व और कितना देवत्व है, वह किस दिशा मे बढ रहा है उसी आधार पर मानव को मान-सम्मान, अनादर-उपेक्षा मिलती है।

सत्सग का प्रभाव :

भर्तृहरि ने कहा है ---

'जाड्य धियो हरति, सिंचति वाचि सत्यम्
मानोन्नति दिशति, पापमपा करोति
चेत प्रसादयति, दिक्षु तनोति कीर्तिम्
सत्सगति कथय किन्न करोति पु सामू ?'

सत्सगति मनुष्य को क्या लाभ नही पहुँचाती ? वह उसकी बुद्धि की जडता को दूर करती है अर्थात् उसके विवेक को जागृत करती है, वाणी मे सत्य को सीचती है, मान और उन्नति का पथ-प्रदर्शन करती है, पापो को, बुराइयो को दूर करती है, चित्त को प्रसन्न करती है और चारो ओर सुयश का सौरभ फैलाती है। समझना चाहिये कि जो व्यक्ति तीव्र बुद्धि शाली और विवेकी है, सत्य और प्रिय, मधुर और हितकर बोलने वाला है, उत्कर्षशील है, वास्तविक प्रतिष्ठा सम्पन्न है, निकृष्ट विचारो, कार्यो, व्यवहारो से पृथक् है, सदा आपत्ति मे भी, मुख पर मुसकान धारण करने वाला है या मुख मुद्रा कैसी भी हो पर हृदय मे अनन्त हास्य रखने वाला है, जिसकी कीर्ति का गान मित्र परिचित तो करते ही है, शत्रु भी सम्मुख नही तो पीठ पीछे या मन मे करते है, वह व्यक्ति सत्सगति के प्रभाव से ही वैसा हुआ है।

सत्पुरुषो का सान्निध्य दुर्लभ :

किंतु ऐसा प्रभाव उत्पन्न करने वाला सत्सग बडा दुर्लभ है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने गाया है ---

विनु सत्सग विवेक न होई।
राम कृपा विनु दुर्लभ सोई॥

वास्तव मे प्रामाणिक पुरुषो का सान्निध्य बडा दुर्लभ है। किसी के माथे पर नही लिखा कि वह सज्जन है, प्रामाणिक है, सच्चरित्र है, श्रेष्ठ है। अधिकाशत तो साधु वेश मे दम्भी, ठग, धर्मध्वजी ही दिखाई पडते हैं। ऐसे लोगो की सख्या ही अधिक है। वाह्य रूप रग, वेषभूषा, वातचीत से किसी को साधु, सज्जन, सत्सगयोग्य मान लेना खतरे से खाली नही है। ऐसे व्यक्तियो के सग मे तो सत्सग की अपेक्षा कुसग ही हो जाने की आशका अधिक रहती है। फिर, सत्सग योग्य व्यक्तियो को कैसे और कहाँ ढूढा जाय ?

'यथा चतुर्भि कनक परीक्ष्यते,
निघर्षणच्छेदन तापताडनै।
तथा चतुर्भि पुरुष परीक्ष्यते,
त्यागेन, शीलेन, गुणेन, कर्मणा॥'

जिस प्रकार कसौटी पर कसने, छेद करने, तपाने और हथौडे की चोट मारने के द्वारा सोने की जाच की जाती है उसी प्रकार त्याग, शील, गुण और कर्म से पुरुष की परीक्षा होती है। त्यागी, शील, वरन्, सद्गुणवत और सत्कर्मशील पुरुष ही का सग सत्सग कहला सकता है, सत्सग का वास्तविक लाभ प्रदान कर सकता है। तथाकथित साधु-सन्यासी, मठाधीश महन्त, नेता, अभिनेता, लेखक, कवि, सम्पादक, समाज प्रतिष्ठित व्यापारी या उच्चाधिकारी, किसी का सग तब तक सत्सग नही कहला सकता जबतक

कि उनके अपने वास्तविक त्याग, शील, गुणो और कर्मों से वे उच्च चारित्र्यवान् नही प्रमाणित होते ।

विचारो का सत्सग दीर्घकालीन :

सौभाग्य से आपको ऐसे श्रेष्ठ प्रामाणिक पुरुष मिल गये । किंतु इसका ही क्या भरोसा कि वे अपने कार्यकलाप मे अत्यधिक व्यस्तता के कारण आपको आपके द्वारा वाछित समय दे ही पाये । ऐसी स्थिति मे दीर्घकालीन सत्सग की सम्भावनाए न्यून ही रहेगी । किन्तु साक्षात् सदेह सत्सग से भी अधिक लाभप्रद, प्राण पूरक सत्सग उनके विचारो का सत्सग है । विचारो का सत्सग दीर्घकाल तक प्राप्त होता रह सकता है, जब आवश्यकता हो तभी सहज सुलभ हो सकता है । विचारो के सत्सग के माध्यम से मस्तिष्क के सम्मुख चिरकाल तक श्रेष्ठ वातावरण बनाये रखा जा सकता है । विचारो का सत्सग ही तो स्वाध्याय है जो समीचीन प्रकाश प्रदान करने मे सक्षम है । भोजन-वस्त्र जुटाने की रातदिन की चिन्ता के साथ-साथ बौद्धिक क्षुधा और आत्मिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए स्वाध्याय को दैनिक कर्त्तव्य माना गया है, माना जाना चाहिए । क्यो ? क्यो माना जाना चाहिए ? इसलिए कि आज चारो ओर का वातावरण निम्नगामी है, निकृष्ठ मान्यता और, पतनकारी प्रवृत्तियो और अशुद्ध, अतथ्य, असत्य धारणाओ की प्रेरणा देने वाला है । इसके दुष्प्रभावो की काट करने के लिए, व्यक्ति एव समाज की वास्तविक जीवनोन्नति के लिए जरूरी है यह स्वाध्याय । घरो मे, गलियो मे, बाजारो मे 'नित्य निरतर जमने वाली, एकत्र होने वाली गदगियो, मलिनताओ को जिस प्रकार नित्य झाडा-बुहारा जाता है उसी प्रकार नित्य उत्पन्न होने वाली-चहुँ ओर की परिस्थितियो मे पैदा होने वाली मानसिक मलिनताओं के परिष्कार के लिए आवश्यक है यह स्वाध्याय रूपी झाडू ।

सत् साहित्य का अनुशीलन

स्वाध्याय का लोक प्रचलित प्रसिद्ध अर्थ है सत्साहित्य का अनुशीलन । सत्साहित्य के अनुशीलन से सत् ज्ञान की प्राप्ति के साथ अन्त साधना का पथ भी प्रशस्त होता है, इसमे सदेह नही । जीवित या दिवगत महात्माओ के विचार चाहे जब, चाहे जितने समय तक, हर समय उपलब्ध रहते है उनके साहित्य द्वारा उनके साहित्य का अवगाहन एक प्रकार से उनके ही निकट रहने का सा प्रभाव एव आनन्द प्रदान करता है । कहा जा सकता है कि स्वाध्याय सत्सग का ही दूसरा नाम है ।

इसीलिए मनीषी मुनियो ने कहा 'स्वाध्यान्मा प्रमदितव्यम्' स्वाध्याय मे प्रमाद नही करना चाहिये । प्रामाणिक महापुरुषो के मानस पुत्र उनके सद्ग्र थ ही होते हैं । उन श्रेष्ठ विचारपूर्ण पुस्तको का मूल्य यद्यपि स्वल्प ही होता है किन्तु प्रभाव व लाभ अमूल्य होता हैं । वह सद्ग्रंथ स्वरूप वह प्रेरक साहित्य सदा व्यक्तित्व, चरित्र, मनोबल और आत्मनिर्माण मे सहायक होता है । किन्तु सावधान ! रूढिवादी साहित्य हानिकार सिद्ध होगा । पौराणिक कहानियो की पोथियो को धर्मग्रंथ मानने की मूढता न कीजाय । वही साहित्य उपयुक्त, पठनीय, मननीय माना जाय जो गुण, कर्म, स्वभाव को परिष्कृत करे, व्यावहारिक मार्गदर्शन करे, दिनप्रतिदिन की उलझनें सुलझाने का बुद्धिसगत समाधान दे । आज परिस्थितिया प्राचीन युग की परिस्थितियो से भिन्न है । आज के युग के अनुरूप समाधानकारी हो वही साहित्य स्वाध्याय के योग्य समझा जाय । हर युग मे तत्त्वचिंतक, मनीषी, विचारक, युगद्रष्टा पुरुष होते है । वे युग के अनुरूप नये सदेश देते है । आज के युग की स्थितियो की उलझनो को सुलझाने का सदेश, पथप्रदर्शन आज के ऋषि दे सकते है । आज स्वाध्याय के लिए ऐसे ही साहित्य की अपेक्षा है जो प्राचीन और नवीन का, धर्म और विज्ञान का, युगानुरूप सम्यक् समन्वय करे, सत्यार्थ का प्रकाशक हो, सत्यामृत स्वरूप हो । दिग्भ्रान्त करने वाली पुस्तको के बजाय युग-निर्माण

कारी साहित्य स्वाध्याय के लिए चुना जाय, नित्य कर्म की तरह उसे दिनचर्या मे सम्मिलित किया जाय।

किंतु ठहरिये! सत्साहित्यानुशीलन मात्र ही स्वाध्याय नही है। स्वाध्याय के एक और महत्त्वपूर्ण अर्थ को न भूलिये। स्वाध्याय का अर्थ है स्व-अध्याय अर्थात् आत्म-निरीक्षण। कोई व्यक्ति कितनी ही शुभ श्रेष्ठ साधनाए क्यो न करता हो, उत्तमोत्तम साहित्य का अध्ययन क्यो न करता हो, यदि वह आत्म-निरीक्षण नही करता तो श्रेय मार्ग पर 'मार्च टाइम' करता रह सकता है, अग्रसर नही हो सकता। ब्रह्म की चर्या नही धारण कर सकता, निर्मल-निर्विकार नही हो सकता। आत्म-निरीक्षण,-अन्त प्रेक्षण से ही व्यक्ति को अपनी त्रुटियो-दोपो का ज्ञान होता हैं और वह उनसे मुक्त होने के साधन, उपाय कर सकता है। जीवन की न्यूनताओ, त्रुटियो, दोपो, छिद्रो का पता तो आत्मनिरीक्षण से ही लगता है और तभी उनके निवारण के उपाय किये जा सकते हैं अन्यथा दोपो के अम्बार एकत्र होते चले जाते हैं। स्वामी सत्यभक्तजी ने लिखा है—

'दिनभर करें जो काम उनका हित-अहित चिंतन करें।
निष्पक्ष होकर सत्य का निर्णय करें, पालन करें॥'

नित्य शयन से पूव अपने बिस्तर पर निश्चित आसन से बैठ कर, आखे, होठ वदकर, प्रात सोकर उठने से अव तक जो-जो कार्य किये है, गलत-सही विचार किये हैं, उन की हित करना, अहित करना की जाच करलें मनमे क्रोध, कुविचार तो नही उमगे, किसी के धन, वैभव, ऐश्वर्य, सौदर्य देखकर मानस मे विकार तो नही उमडे, कानो से किसी की निरर्थक निंदा, अश्लील और निरर्थक बातें तो नही सुनी, मुँह से कटु, असत्य, अनुचित वचन तो नही बोले, अभक्ष्य भक्षण, अपेय पान तो नहीं किया, हाथो से कोई अकरणीय कार्य तो नही किया, मन मे दुर्भाव तो नही उपजे, आलस्य या प्रमाद के कारण कर्त्तव्य पालन मे लापरवाही या शिथिलता तो नही वरती ?

इस प्रकार प्रति रात्रि सोने से पूर्व अन्त प्रेक्षण (Introspection) और आत्मनिरीक्षण, परीक्षण करें अपने दोपो पर दृष्टि डाल कर निरीक्षित दोपो को दूर करने का दृढ सकल्प करना सत्येश्वर से उस आत्म वल की प्रार्थना करना जिसके सहारे निर्मल, निष्पाप, निर्दोष और सन्मार्ग का, सत्य का शोधक-साधक वनना स्वाध्याय का महत्त्वपूर्ण एव वास्तविक सदुपयोग है। तभी आप छाती ठोक कर कह सकेंगे कि हम स्वाध्याय और सतसग मे प्रभावित होते हैं किसी अन्य से नहीं।

स्वाध्याय योग्य साहित्य कैसा हो ?

श्री सुन्दरलाल बी. मल्हारा

स्वाध्याय का अर्थ :

इसके पहले कि स्वाध्याय योग्य पुस्तकें कैसी हों, यह जान लेना आवश्यक है कि स्वाध्याय का अर्थ क्या है, इसके उद्देश्य कौनसे हैं ? 'स्वाध्याय' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है —'स्व'+'अध्याय' जिनका अर्थ है 'स्व' का अथवा 'स्व' सम्बन्धी अध्ययन करना। इस दृष्टि से पदार्थ के अध्ययन को 'पर' का अध्ययन कहेंगे। वैज्ञानिक इस प्रकार परा-ध्यायी हुए। स्वाध्याय में एक अर्थ और अभिप्रेत है- वह है स्वयम् अध्ययन करना। अर्थात् खुद ही खुद का गुरु और खुद ही खुद का शिष्य। इस प्रकार जैन दर्शन की दृष्टि से स्वाध्याय का अर्थ होगा—ऐसे साहित्य का स्वयम् अध्ययन करना जो हमें 'स्व' के सम्बन्ध में अधिकाधिक ज्ञात कराए।

'स्व' का ही अध्ययन क्यों है ?

ज्ञान 'स्व' का भी हो सकता है और पर का भी। 'स्व' का ज्ञान अथवा आत्मा का ज्ञान वास्तविक ज्ञान है। वही हमें परम आनन्द और पूर्ण स्वतन्त्रता की ओर ले जाता है। परन्तु 'पर' का अर्थात् पदार्थ का ज्ञान वास्तव में ज्ञान नहीं है क्योंकि वह हमें अधिकाधिक बाधता चला जाता है। इसे तो हम सिर्फ जानकारी भर कहेंगे। ज्ञान को हमारे यहाँ मुक्ति का साधन कहा है। इसीलिए हजारों वर्षों से स्वाध्याय को महत्त्व दिया जाता रहा है। आत्म-ज्ञान, ध्यान, तप, सयम आदि साधनाओं के माध्यम से भी प्राप्त किया जा सकता है। परन्तु यह साधना का मार्ग दुरुह है। अत आचार्यों ने विशेषकर श्रावक-श्राविकाओं के लिये स्वाध्याय का आदेश दिया है।

स्वाध्याय और साहित्य :

स्वाध्याय का अन्तिम उद्देश्य है पूर्ण स्वतन्त्रता, और उसे प्राप्त करने के लिये सत्साहित्य सीढ़ी का काम करता है। सत्साहित्य के वाचन व चिन्तन से हम अधिकाधिक आत्म-ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ हो पाते हैं। सत्साहित्य हमें विराट् जीवन की अनुभूति कराता है और इस प्रकार हमें स्वाध्याय में अत्यधिक सहयोग देता है। स्वाध्याय का जीवन में जब इतना स्थान है तो स्वाध्याय साहित्य के बारे में सोचना भी अनिवार्य हो जाता है। जीवन में हम अक्सर देखते हैं कि जीवन भर स्वाध्याय करने के बाद भी आत्म-ज्ञान की राह में हमारा एक कदम भी आगे नहीं बढ पाता है। ऐसा क्यों ? इसके दो ही कारण हो सकते है— प्रथम अयोग्य स्वाध्याय साहित्य और दूसरा अयोग्य मन। अत स्वाध्याय साहित्य यदि उत्तम है और मन वास्तविक अर्थों में सजग, सशक्त, ग्रहणशील व अनुसन्धान प्रिय है तो कोई कारण नहीं कि हमारे कदम ज्ञान की ओर न बढे। अब हम देखेंगे कि उत्तम स्वाध्याय साहित्य की क्या विशेषताएँ हैं।

स्वाध्याय-साहित्य के विभिन्न स्तर

स्वाध्यायप्रेमियों के ज्ञान का स्तर अलग-अलग होता है अत उनके लिये स्वाध्याय साहित्य भी अलग-अलग स्तर का होना चाहिये। सुविधा के लिये हम चार स्तर कर सकते हैं —

१ प्रारम्भिक (प्रवेशार्थियों के लिए)

२ मध्यम(जिन्हे स्वाध्याय का थोडा अनुभव हो)

३, उच्च (जो स्वाध्याय की गहराई मे उतरना चाहते हैं)

४ विशेष (जो अनुसधान करना चाहते हैं)

प्रारम्भिक स्तर

स्वाध्याय के क्षेत्र मे प्रारम्भ करने वालो के लिए सामान्य स्तर का साहित्य जरूरी है। ऐसे साहित्य छोटी-छोटी बोधप्रद कहानियाँ, महापुरुषो की सक्षिप्त जीवनियाँ व दैनिक जीवन की शिक्षाप्रद घटनाओ का समावेश हो। ये पुस्तके अधिकाधिक आकर्षक व चित्रमय हो, इनकी शैली अत्यन्त सुबोध व सरल हो।

मध्य स्तर

जिनकी स्वाध्याय मे थोडी पहुँच है उनके लिए ऐसा साहित्य हो, जिसमे जीवन को बोध कराने वाली कथाओ व अलग-अलग धर्मो व देशो के महापुरुषो की जीवनियो के साथ-साथ जीवन व धर्म को जोडने वाले सिद्धान्तो का भी समावेश हो। इस साहित्य मे सस्कृत व प्राकृत की व्याकरण की प्रारम्भिक पुस्तिकाए भी हो ताकि स्वाध्यायी धार्मिक ग्र थो का स्वयम् अध्ययन करने मे समर्थ हो सकें।

उच्च स्तर .

स्वाध्याय के उच्च स्तर के साहित्य मे विशेष रूप से विचारात्मक ग्रन्थो का व प्राकृत व सस्कृत व्याकरण की पुस्तको का समावेश हो। जैन-दर्शन के प्रमुख आगम व सिद्धान्तो का अध्ययन इस स्तर के स्वाध्यायिओ के लिये अपेक्षित हो। जैन साधना का एक विशेष स्थान है अत इसका परिचय भी स्वाध्यायियो को इस स्तर पर आने के बाद हो जाना जरूरी है।

विशेष .

उपर्युक्त तीनो स्तरो का स्वाध्याय साहित्य साधारणतया अधिकाश स्वाध्याय प्रेमियो के लिये है। परन्तु इनेगिने स्वाध्यायी जैन दर्शन की गहराइयो तक पहुँचकर उसका तुलनात्मक अध्ययन करना तथा दर्शन के अलग तत्वो मे अनुसन्धान भी करना चाहेगे जो कई दृष्टियो से जरूरी है। ऐसे व्यक्तियो के लिये ऊँचे दर्जे का स्वाध्याय साहित्य होना आवश्यक है। इस साहित्य मे जैन व अन्य दर्शनो के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ, विविध दर्शनो के तुलनात्मक दार्शनिक, समस्यात्मक, विविध साधनात्मक व मनोवैज्ञानिक ग्रन्थो का समावेश हो।

स्वाध्याय-साहित्य कैसा हो ?

1 स्वाध्याय-साहित्य की सबसे बडी विशेषता यह होनी चाहिये कि वह भेद-भाव साम्प्रदायिकता सकुचितता व पक्षपात से कोसो दूर हो। यह साहित्य जीवन की विराटता और गरिमा को उजागर करे। उसमे जीवन के शाश्वत सिद्धान्त हो ताकि प्रारम्भ से स्वाध्याय प्रेमी दृष्टिकोण विशाल बन सके।

२. समस्त स्वाध्याय-साहित्य मे एकसूत्रता हो। विसगतियाँ अथवा विरोधाभास न हो। साहित्य चाहे किसी भी स्तर का क्यो न हो सबका केवल एक ही उद्देश्य हो—सतत् आत्म-विकास की पगडडियो पर आगे बढते जाना।

३ स्वाध्याय-साहित्य मनोविज्ञान पर आधारित हो। जैन स्वाध्याय-साहित्य मे मनोवैज्ञानिक तत्त्व भरे पडे है अत इस दृष्टि से इसका अध्ययन किया जाना चाहिए।

४ अलग-अलग स्तर के साहित्य मे विषय वस्तु व भाषा की दृष्टि से एक क्रमवद्धता होना जरूरी है। प्रारम्भिक स्तर की पुस्तकें आसान, मध्यम स्तर की पुस्तकें थोडी कठिन व उच्च स्तर की पुस्तकें ज्यादा कठिन हो।

५ स्वाध्याय-साहित्य आधुनिक वैज्ञानिक अनुसन्धानो को नजर अन्दाज नही कर सकता। शास्त्रो का निर्माण श्रुतियो के आधार पर हुआ है और

वहुत सावधानी रखने के वावजूद भी सम्भव है शब्दो मे हेर फेर हो गया हो और अशुद्धियाँ हो गयी हो। अत ऐसे विषयो को जो विज्ञान से मेल न खाते हो, उन्हे जहाँ तक वने उन्हे प्रारम्भिक स्तरो पर न रखा जाय।

६ स्वाध्याय का उद्देश्य पूर्ण आनन्द उपलब्धि करना है ऐसी अवस्था मे स्वाध्याय-साहित्य मे उदासीनता व ऐकान्तता को ज्यादा महत्त्व न दिया जाय। जीवन मे सहज रूप से घटित होने वाले सुख-दुख दोनो का स्वाध्याय-साहित्य मे उचित स्थान हो। वहुधा वैराग्य और जीवन के प्रति उदासीनता को ही स्वाध्याय-साहित्य मे अत्यधिक स्थान दिया जाता है, जो ठीक प्रतीत नही होता।

७ आज हमारा व्यावहारिक जीवन धार्मिक जीवन से टूट गया है। दोनो के वीच एक गहरी खाई होगयी है जो वडे दुर्भाग्य का विषय है। धर्म से छूटा हुआ व्यावहारिक जीवन दो कौडी का है। अत स्वाध्याय-साहित्य की एक वहुत वडी जिम्मेदारी है कि वह इन दोनो मे समन्वय स्थापित करे तथा मानवी चेतना मे इस प्रकार का रूपान्तरित करे कि धर्म ऊपर से ओढी गयी वस्तु न रहकर एक स्वभाव वन जाय।

८ वर्तमान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह एक ओर भूतकाल का परिणाम है तो दूसरी ओर भविष्य का जन्मदाता। स्वाध्याय-साहित्य हमारे वर्तमान जीवन को प्रकाशित करता हुआ हममे एक ऐसी सजगता (Awareness) का विकास करे कि हर क्षण हमारे लिये वोधप्रद वन सके। हम क्षण-क्षण जीवित रह सकें। वर्तमान क्षण का उजागर करने वाला साहित्य वहुत कम दिखाई देता है। अधिकाश साहित्य या तो भूत से वोधित है या फिर भविष्य की कल्पनाओ से मडित।

९ स्वाध्याय का उद्देश्य सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना है न कि विचारो के वोझ से वोझित हो जाना। अत स्वाध्याय-साहित्य हमे दिमागी कसरत अथवा पांडित्य की ओर न ले जाकर अनुभूति की ओर, विचार-विमर्जन की ओर ले जाए। वहुत ज्यादा विचारो से भर जाना धार्मिक होना नही है। धार्मिकता है एक एसी अवस्था जहाँ विचार शान्त हो जाते हैं, मन अनुभूति के जगत मे विचरण करता है।

१० शरीर के माध्यम से ही हम अपनी आनन्दानुभूति की मजिल प्राप्त करते हैं। अत शरीर की जानकारी व स्वास्थ्य के नियमो का ज्ञान भी एक साधक के लिये अपेक्षित हैं। स्वास्थ्य साहित्य इस सम्वन्ध मे भी उपयोगी सिद्ध हो।

११ हमारा मन ही सुख और दुख का कारण है अत मन को समझना भी धार्मिक व्यक्ति के लिये अनिवार्य है मन के नियमो की अवहेलना के परिणाम घातक हुए हैं। सत्य अहिंसा व ब्रह्मचर्य के उपदेश हजारो साल से सुनते रहने वाद भी मानव आज हिंसा, असत्य और वासना से पीडित है। अत स्वाध्याय-साहित्य मे मनोविज्ञान का भी समावेश हो।

१२ स्वाध्याय और ध्यान का गहरा सम्वन्ध है। स्वाध्याय के क्षणो मे उठने वाली विचार तरगे ध्यान के समय हमारे अन्तर की गहराई मे उतर कर सम्यक्-चारित्र को जन्म देती है अत स्वाध्याय-साहित्य मे ध्यान प्रक्रिया का भी उचित मार्ग-दर्शन हो।

१३ स्वाध्याय के उद्देश्यों मे एक उद्देश्य अन्य स्वाध्याय प्रेमियो को मार्ग-दर्शन के लिये स्वाध्यायी श्रावक तैयार करना भी है। इसके लिए स्वाध्याय-साहित्य मे स्वाध्याय प्रशिक्षण सम्वन्धी पुस्तको का भी समावेश हो।

१४ जैनदर्शन मे स्व के अपेक्षित रूपान्तरण (Transformation) के लिये तीन सीढियाँ हैं--- सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान व सम्यक् चारित्र जो पूर्णतया मनोवैज्ञानिक हैं। पहले हम किसी वस्तु को समग्रता से देखते है फिर उसे हम समग्रता से समझते हैं

और अन्तमे हमारे व्यवहार मे अपेक्षित परिवर्तन घटित होता है, जिसे हम सम्यक् चारित्र कहते हैं। स्वाध्याय-साहित्य मे ऐसी पुस्तकें भी हो जो हमे अपने दैनिक जीवन मे सम्यक् दर्शन व सम्यक् ज्ञान के मार्ग बताए, उनकी प्रक्रिया समझाए।

१५ जीवन के खोये हुए जीवन-मूल्यो को फिर से प्रतिष्ठित करने का समय आगया है। स्वाध्याय-साहित्य अलग-अलग मार्गों से मानव मे करुणा, नम्रता, उदारता, समग्रता और प्रेम की प्रतिष्ठा करे। लेकिन ये मूल्य ऊपर ऊपर से नही थोपने हैं अपितु इनका सहज विकास करना है।

१६ स्वाध्याय-साहित्य सस्ता और सुलभ हो। इसका चुनाव व निर्माण करते समय स्वाध्याय-साहित्य समिति अधिकाधिक सावधानी व सतर्कता से काम ले। इस प्रकार चुनी गयी या लिखी गयी पुस्तको की प्रतिया प्रत्येक स्वाध्याय केन्द्र मे हो ताकि स्वाध्याय प्रेमी घर बैठे स्वाध्याय-साहित्य का पूरा पूरा उपयोग कर सकें।

अन्त मे मैं पुन अपनी बात दुहराना चाहूँगा कि आत्म-विकास के लिये अच्छे स्वाध्याय-साहित्य के साथ साथ सजग, जीवन्त, निष्पक्ष, और सशक्त मन भी हो। केवल अध्ययन काफी नही है, अपितु उसे रूपान्तरित कर सकने की क्षमता रखने वाला मन भी चाहिये अन्यथा सारा स्वाध्याय व्यर्थ हो जायगा।

एक बात और--स्वाध्याय-साहित्य आत्म-ज्ञान की मजिल की सीढी मात्र है। अत अन्त मे इससे मुक्त होना भी जरूरी है। सीढी की कीमत इसीलिये है कि वह मजिल तक पहुँचा दे और मजिल पर पहुँचने के बाद उससे भी मुक्त हो जाए। यदि सीढी मजिल तक नही पहुँचाती है तो उसे हम सीढी नही कहेंगे। अत स्वाध्याय-साहित्य की सार्थकता भी इसी मे है कि अन्त मे वह हमे मुक्त कर दे, हम उसके पार हो जाएँ और इसी मे स्वाध्याय की महानता है, सार्थकता है।

*

६४, जिलापेठ, जी पी ओ के सामने,
जलगाँव, (महाराष्ट्र)

शिक्षण संस्थाओं में स्वाध्याय का रूप क्या हो ?

स्वर्गीय प उदय जैन

शिक्षण सस्थाए स्वय स्वाध्यायी होती है। छात्र स्वाध्यायी एव अध्यापक स्वाध्यायी। यदि ऐसा न हो तो शिक्षा का नाम ही नही रहता है। जहाँ शिक्षण देने वाली सस्थाए हैं वहाँ अध्ययन आवश्यक वस्तु हैं। शिक्षण सस्थाओ मे अध्ययन करना ही पडता है। विना अध्ययन के कोई सस्था शिक्षण सस्था नही वन सकती। अध्ययन--पाठ्यक्रम के अनुसार पढाई, अध्यापक-पाठ्यक्रमानुसार पढाने वाला व्यक्ति, अध्ययन शाला--शिक्षण सस्थान। यह हुआ सारा परिक्रम।

स्वाध्याय, यह विशेप परिक्रम रखता है--अध्याय अध्ययन करने की वस्तु-पाठ्य सामग्री और स्वाध्याय निजी अध्ययन करने की वस्तु--पाठ्यसामग्री। स्वाध्यायी निजी अध्याय का अध्येता प्राणी। निजी अध्ययन--आत्म-चिन्तन मनन और अन्तरावलोकन के अर्थ मे आता है और ऐसी वस्तु को भी स्वाध्याय कहते है इनसे भिन्न एकान्त मे या अकेला अपने आप पाठ्य सामग्री का उपभोग करना भी स्वाध्याय कहलाता है। 'स्वाध्याय' शब्द धार्मिक एव सस्कारप्रद पुस्तको का पढना भी कहलाता है। ऐसा ही जैनियो मे प्रचलित है। मेरे ख्याल से शिक्षण सस्थाओ मे स्वाध्याय का रूप इसी प्रकार के अध्ययन से हो सकता है।

शिक्षण सस्थाए भी गीत, वाद्य यन्त्र, तन्त्र, ज्योतिप, कला, साहित्य आदि कई रूपो मे प्रचलित है। उनका विस्तार भी पृथ्वी के हर कोने मे है। प्रत्येक शिक्षण सस्था मे स्वात्म चिंतन परमआवश्यक वस्तु है लेकिन सभी सस्थाओ मे अपना चाहा धार्मिक अध्ययन होना वडा दुष्कर ही नही, असम्भव है। अत इस विपय की पुष्टि मे वर्णन करना स्वय स्वाध्याय का रूप निखार देगा।

सवसे प्रथम हमे यह देखना होगा कि किस प्रकार की शिक्षण सस्था है और उसमे स्वाध्याय का क्या रूप हो सकता है ?

प्रत्येक पृथ्वी खड मे अनेक विधि अध्ययन-क्रम चलता है उनमे अध्येता को स्वाध्यायी वनना ही पड़ता है। विना स्वाध्यायी वने उस विपय का ज्ञान प्राप्त नही कर सकता। मैं तो सही अर्थ मे यही मानता हूँ कि जो-जो प्राणी जिस-जिस विपय मे ज्ञान के लिए गति करता है वह स्वय अध्येता वन जाता है। स्वाध्यायी वन ही जाता है फिर ऊपर से स्वाध्याय थोपने की वस्तु ही शेप नही रहती।

लेकिन सभी धर्म-प्रचारकों का आग्रह रहा है कि हमारे धर्म--पथ का अध्ययन हमारी शालाओ और अन्य धर्मावलम्वियो की शालाओ मे भी चले ताकि उनको धार्मिक वनने का अवसर मिले। इसी अर्थ मे हमारा स्वाध्याय मडल भी गति कर रहा है। इस अर्थ मे इस प्रकार की गति उस प्रधान सघ या धर्म सगठन द्वारा प्रशसनीय मानी जाती है। ऐसे कार्य करने वाले को प्रशस्ति के साथ स्वर्ग और अपवर्ग तक की प्राप्ति होने का प्रावधान भी है।

वास्तविकता पर आने पर यह कहना पडेगा कि यह आत्मा क्या है ? कहाँ से आयी है ? इसका

वर्तमान लोक से क्या सम्बन्ध है ? और क्या करने से आत्म प्रकाश की प्राप्ति होती है ? आत्मा का दूसरी सामाजिक आत्माओ के साथ क्या कर्तव्य रहते है ? इन्ही विषयो का चिन्तन स्वाध्याय कहला सकता है। यह रूप सभी शालाओ मे और सभी धर्म-सघो मे प्रचलित रहे तो मानव समाज मे शाति और व्यवस्था के साथ मुक्ति का वरण भी हो सकता है।

अपने-अपने धर्म-ग्रन्थो का अध्ययन करना स्वाध्याय का अर्थ लिया जाता है तो सकुचित दायरे मे वस्तु अटक जाती है। क्या हमारे धर्म प्रवर्तक महोदय मेरे उक्त व्यक्त विचारो की तरफ भी ध्यान देकर विश्व को स्वाध्यायी वनाने का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे ?

महावीर के २५०० वे निर्वाण महोत्सव पर स्वाध्याय स्मारिका मे उनसे सवधित ग्रन्थो के स्वाध्याय की ओर ही विषय विवेचन का प्रधान लक्ष्य है अत मैं अब उसी दृष्टि से इसका विवेचन करता हूँ।

शिक्षण शालाओ मे महावीर के वताये मार्ग का अध्ययन करने का सभी को समान अवसर मिलने का भरसक प्रयत्न निम्न प्रकार से हो सकता है।—

(१) सभी भाषाओ मे वीर-वाणी का विश्व कल्याण-कारी सप्रदाय विहीन साहित्य का सर्जन कराकर प्रत्येक प्रान्त मे विश्व विद्यालयो, परीक्षा वोर्डो के पाठ्यक्रमो मे स्थान दिलाने का उत्तम प्रयास करना। इसके लिए योग्य व्यक्तियो का सघ और करोडो रुपयो की आर्थिक सयोजना आवश्यक है।

(२) विश्व मच के विद्यालयो या विश्व की सस्थाओ तक कार्य क्षेत्र नही वढाना है तो भारत की प्रत्येक यूनिवर्सिटी और परीक्षा वोर्ड मे वीर के विशुद्ध सम्प्रदाय रहित साहित्य का प्रकाशन और उनका पाठ्यक्रमो मे स्थान दिलाना।

(३) जहाँ जहाँ विश्व विद्यालयो और विद्यालयो मे वाचनालय और पुस्तकालय चलाये जाते हैं उनमे उपर्युक्त विषयक साहित्य को सिपुर्द कर छात्रो को पढाने मे विशेष रुचि पैदा करना। रुचि पैदा हो ऐसा आकर्षक वातावरण फैलाना।

(४) शिक्षण सस्थाओ मे ईश वन्दना के समय आत्म चिन्तना करने की परिपाटी कायम कराना तथा प्रार्थना के वाद पहले पीरियड मे सामायिक या समता भाव के विचारो का दोहन करना। प्राथी छात्रो के लिऐ अल्प समय के लिए भी ध्यान का प्रावधान करना सभी शिक्षण शालाओ के छात्र-छात्राओ को धर्म एव अनुशासन की ओर गति कराने का उत्तम मार्ग सावित होगा।

(५) शिक्षण शालएँ जो आवास के साथ चलती है उनमे अध्ययन काल के अलावा धार्मिक ग्रन्थो का वाचन का समय निर्धारित किया जा सकता है।

(६) सही माने मे शिक्षण शालाओ मे उनके सपूर्ण कार्यों को निष्ठा से करना ही सच्चा स्वाध्याय होता है।

(७) यदि पाठन काल के अलावा छुट्टियो के दिन रवि-वार, ग्रीष्मावकाश, शरदकालीन अवकाश एव पर्व के दिनो मे शाला चालक या समाज की स्वाध्याय मडल सघ अथवा अन्य तरीके की सस्थाए उनके समय का उपयोग करने के लिए छात्र-छात्राओ का आह्वान करे, शिविर लगावे या २ घटे की चलाए चलावें उनके नाश्ता आदि की व्यवस्था तथा पारितोपिक आदि का प्रावधान करे तो सस्थाओ मे शिक्षण के साथ यह खुराक सुपाच्य वन जाती है। यह कार्य शिक्षण शाला वाले और अन्य सघ वाले मिलकर करें तो अधिक फलदायी होगा।

(८) शिक्षण शालाओ मे एक घटा धर्माध्ययन का रखा जाना अत्यावश्यक है। उसमे नीति-शिक्षण की पुस्तको का अध्ययन स्वाध्याय का रूप ले सकता है। यह कार्य भी सभी शिक्षण शालाए अपने २ तरीके से कर सकती हैं।

(९) सबसे उत्तम तरीका धर्म का सही रूप "परस्परोपग्रह जीवानाम्" के सूत्रानुसार एक पाठ्य-क्रम सारे विश्व या भारत के शिक्षार्थियो के लिए निर्धारित किया जावे और उस साहित्य का पाठन प्रत्येक शाला मे एक कालाश के लिए आवश्यक तौर से रखा जावे। इस पाठ्य-क्रम मे मानव से लेकर छोटे से छोटे जीवाणु एक दूसरो के कितने सहयोगी हैं और हम भी उन्हे किस प्रकार सहयोग कर सकते है इसका उत्तम रीत्या प्रतिपादन होना चाहिए। ऐसे साहित्य मे क्षमा, अहिंसा, सत्य, अचौर्य, अपरिग्रह, शील, विनय, अनुशासन आदि तमाम गुणो का वर्णन स्वत आ जायगा। जो मानव स्वय जीना चाहता है, वह दूसरों को जीने मे सहयोग करे। सहयोग और प्रेम की भावना के प्रसार मे धर्म का सच्चा स्वरूप स्वाध्याय शाला मे निखर उठेगा।



जवाहर विद्यापीठ
कानोड (राजस्थान)

सज्झाएण णाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ। उत्तरा ०२९-१८

स्वाध्याय करने से ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होता है।



पचविहे सज्झाए पण्णत्ते तजहा--वायणा, पुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा, धम्मकहा---ठाणाग ५,

स्वाध्याय पाँच प्रकार का है —(१) वाचना (२) पृच्छना (३) परिवर्तना (४) अनुप्रेक्षा और (५) धर्मकथा



वायणाए ण णिज्जर जणयइ, सुयस्स अणु सज्जणाए अणासायणाए वट्टइ, सुयस्स अणुसज्जणाए अणासायणाए वट्टमाणे तित्थ धम्म अवलवइ, तित्थधम्मं अवलवमाणे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ।

उत्तरा २९-१९

श्रुत की वाचना से कर्मों की निर्जरा होती है। श्रुत की वाचना के अनुवर्तन से श्रुत की आशातना नही होती है। जिससे जीव तीर्थंकर धर्म का अवलवन करता है। फलत कर्मों की महा निर्जरा होती है और कर्मों का अत कर मोक्ष सुख को प्राप्त करता है।

स्वाध्यायोपयोगी कतिपय ग्रन्थ और मेरा अनुभव

श्री अगरचन्द नाहटा

विश्व के समस्त प्राणियो मे मनुष्यो को प्रकृति ने ऐसी कुछ विशेपताएँ दी हैं जिनसे वह नर से नारायण और आत्मा से परमात्मा वन सकता है। मनुष्य गति के सिवाय और किसी भी गति से मोक्ष प्राप्त नही किया जा सकता अर्थात् मावन जीवन ही मोक्ष का द्वार है। मोक्ष अर्थात् कर्मो से छुटकारा, आत्मा का पूर्ण स्वातन्त्र्य, सहजानन्द स्थिति, जिसे प्राप्त करने के वाद और कुछ भी प्राप्त करना अवशेप नही रहता। ससार मे भटकने का कारण है-कर्म, और कर्म-वन्ध का कारण है—राग-द्वेप। इमसे मुक्तात्मा के सारे शुभाशुभ कर्म समाप्त हो जाते है अत पुनरागमन का प्रश्न ही नही उठता।

अव प्रश्न यह रहता है कि वैसी उच्च स्थिति प्राप्त कैसे की जाय? इस विपय मे अनुभवी व्यक्तियो ने प्राणियो की रुचि और योग्यता मे अन्तर या भिन्नता देखकर साधना, धर्म या मोक्ष का मार्ग अनेक प्रकार का वतलाया है, जिनके द्वारा देर-सवेर आत्मा सिद्ध, वुद्ध और मुक्त हो सकती है। जैनधर्म मे सम्यक् दर्शन, ज्ञान और चारित्र को मोक्ष का मार्ग कहा गया है। अन्य दर्शनो ने इनमे मे एक-एक को प्रधानता देते हुए किसी ने ज्ञान को, किसी ने भक्ति को और किसी ने योग-कर्म को प्रधानता दी। पर जैन तीर्थंकरो ने तीनो का समन्वय आवश्यक वतलाया। वास्तव मे आगे चलकर ये तीनो एक ही हो जाते हैं।

सम्यक् दर्शन का अर्थ है, आत्म-दर्शन। जगत् के अन्य सव पदार्थों से यावत् अपने शरीर से भी अपनी आत्मा को भिन्न समझना- 'भेदविज्ञान' है, उसी से आत्मदर्शन होता है। दर्शन के साथ ज्ञान का अविनाभावी सवध हैं, अर्थात् मम्यक् दर्शन के विना जो भी जानकारी है, वह जैन दृष्टि से अज्ञान या कुज्ञान है। इसलिए आत्मदर्शन सवसे महत्त्व की वात है। अपने को ठीक से पहचाने विना मनुष्य स्व क्या है और पर क्या है, हेय क्या है, उपादेय क्या है? इसका सही निर्णय नही कर सकता। अकरणीय का त्याग और करणीय का स्वीकार ही चारित्र है। इसलिए चारित्र के लिए भी सम्यक् दर्शन की अनिवार्यता है।

अव हमे देखना है कि सम्यक् दर्शन कैसे प्राप्त किया जाय। वैसे तो शास्त्रो मे सम्यक् दर्शन के कई प्रकार और प्राप्ति के कई उपाय वतलाये हैं पर जहाँ तक निश्चय सम्यक् दर्शन का प्रश्न है, वह आत्मदर्शन से भिन्न नही है, अर्थात् स्व को केन्द्र मानना, अपने स्वरूप का सही ज्ञान प्राप्त करना वहुत ही आवश्यक है और उस ज्ञान प्राप्ति का मुख्य साधन है - स्वाध्याय इसमे 'स्व' ही मुख्य है, उसका वोध या ज्ञान जिसके द्वारा प्राप्त किया जाय उसी का नाम 'स्वाध्याय' है। अपनी सही और सच्ची पहचान प्राप्त करने के जो भी साधन हैं, उसे भी स्वाध्याय मे सम्मिलित कर लिया गया है। जैसे-गुरु-प्रदत्त ज्ञान या शास्त्र, सत्सग और सद्ग्रन्थो का अध्ययन भी स्वाध्याय है।

प्रश्न यह उठता है कि हम कौन से ग्रन्थो को पढ़ें और कैसे पढे? हमारा उद्देश्य क्या हो, और स्वाध्याय के फलित क्या हो? जैसे कि पहले कहा गया है, हमे अपने आत्मस्वरूप को ही जानना है पर

उसके लिए आत्मा से भिन्न पर पदार्थों का ज्ञान भी आवश्यक है जिससे हमारा यह ज्ञान विवेक परिपुष्ट हो जाय। पर पदार्थों का स्वरूप क्या है, आत्मा का स्वरूप क्या है,या आत्मा का स्वरूप कैसा है ? दोनो मे क्या भेद है, जिससे कभी भी पर को अपना और अपने को पर का मान लेने का भ्रम न हो। जैसे-जीव का लक्षण है, चैतन्य, अरूपी। अन्य सभी पदार्थ (४द्रव्य) चेतन रहित जड है। इनमे से केवल पुद्गल रूपी हैं, बाकी जड पदार्थ भी अरूपी हैं अर्थात् दृश्यमान सारा जगत् पुद्गल का खेल है और पुद्गल आत्मा से भिन्न है। इस तरह स्व और पर दोनो का जिन ग्रन्थो से बोध हो और जिनमे स्व ही प्रधान हो, वे ग्रन्थ स्वाध्याय योग्य हैं, केवल पर-पदार्थों की ही जिनमे चर्चा हो, वे स्वाध्यायोपयोगी ग्रन्थ नही कहे जा सकते। वैसे सम्यक्‌दृष्टि जीव मिथ्याशास्त्रो को भी अपने विवेक से सम्यग् शास्त्र के रूप मे परिणित कर लेता है। अत जिसको आत्मदर्शन हो गया हो उसके लिए पर-पदार्थ या शास्त्र भी बाधक नही होते। उसमे से आत्म-कल्याणकारी मार्ग या सन्देश को वह ग्रहण कर लेता है। जिन बातो का आत्मोत्थान में उपयोग न हो, वह सासारिक वस्तुओ और बातो से अपना सबध नही रखता। सारतत्व को ही ग्रहण करके आत्मोन्नति करता जाता है।

जिन महापुरुषो ने आत्म-साक्षात्कार किया और जीवन-मुक्त जैसी दशा प्राप्त की,उनकी वाणी बहुत प्रेरक और प्रबोधक होती है। इसलिए सबसे पहले वीतराग और आत्मज्ञानी महापुरुषो की वाणी का अध्ययन, चिन्तन एव मनन करना स्वाध्याय का पहला सोपान है। स्वाध्याय के बाद ध्यान किये जाने का आगमिक विधान है।

अब मैं स्वाध्याय सबधी अपने प्रिय ग्रन्थो की और स्वानुभव की कुछ चर्चा करू गा ताकि मेरे जीवन मे स्वाध्याय का क्या स्थान है, उससे मुझे क्या प्राप्त हुआ, मेरे प्रिय ग्रन्थ कौन-कौन मे रहे हैं, इसकी जानकारी स्वाध्याय-प्रेमियो को मिल सके और उनके जीवन मे भी सात्विक परिवर्तन आ सके। वैसे रुचि और योग्यता की भिन्नता के कारण सभी को किसी एक ही प्रकार के ग्र थ ही उपयोगी नही हो सकते या जैसा लाभ मुझे उनसे मिला, उनसे न्यूनाधिक भी दूसरो को मिल सकता है पर जो अनुभव मुझे हुआ है उसे दूसरो के सामने यहाँ रख देना उचित लगता है, आवश्यक समझता हूँ।

वैसे तो ४७ वर्षों से मेरा स्वाध्याय क्रम निरन्तर वृद्धिगत होता रहा है। हजारो ग्र थ और लाखो पेज (विविध विषयो के) मैं पढ चुका हूँ पर जिन ग्र थो का मेरे जीवन मे प्रारम्भ से अब तक अविस्मरणीय प्रभाव रहा है उनकी ही चर्चा करना यहाँ सभव होगा।

धार्मिक परिवार मे जन्म लेने के कारण अच्छे सस्कार और वातावरण मे मेरा विकास हुआ पर सम्वत् १९८४ की वसन्त पचमी का दिन मेरे लिए एक नया सूर्य लेकर आया, जिस दिन बीकानेर मे श्री जिनकृपा चन्द्र सूरिजी अपने शिष्यो के साथ पधारे और मेरे बाबाजी की कोटडी मे ठहरे। उनके और उनके शिष्य उपाध्याय सुखसागर जी का रोज व्याख्यान सुनता, शाम को प्रतिक्रमण करता, दोपहर में भी कोटडी हमारे घर के नजदीक होने के कारण जाना-आना बना रहता। कुछ धार्मिक प्रकरण आदि उनसे पढे, कुछ ग्र थ और पत्र-पत्रिकाएँ उनके यहाँ देखने को मिली। लगभग ढाई बरस पूज्य सूरि जी का अस्वस्थता के कारण बीकानेर और उसके आस-पास विराजना हुआ। अत अपने व्यापार केन्द्र सिलहट जाने के अतिरिक्त जब-तक बीकानेर मे रहना होता, उनसे निरन्तर लाभ मिलता रहता। अनेक आगमो के प्रवचन उनसे सुनने को मिले। 'भगवती सूत्र' जैसे महान् ग्र थ को श्री जिनकृपा चन्द्र सूरी जी से सुनकर काफी धार्मिक-ज्ञान प्राप्त किया। प्रकरण और कथा

ग्र थ भी सुनने और पढने को मिले पर आत्मा की ओर विशेष ध्यान देने का सुअवसर मिला, योगनिष्ठ बुद्धि-सागर सूरि के 'आत्म प्रदीप', श्रीमद् देवचन्द जी की 'आध्यात्मिक-गीता', श्रीमद् राजचन्द्र, आनन्दघनजी, चिदानन्दजी तथा विजयकेशर सूरि कतिपय ग्रन्थ व मेरा अनुभव आदि के ग्रन्थो मे व महापुरुषो की जीवनी पढने मे भी मेरी बहुत रुचि रही। दिगम्बर आध्यात्मिक ग्र थ भी महत्त्व के है।

जब मैं अपने व्यापार केन्द्र सिलहट जाता तो उपर्युक्त कुछ ग्र थो को साथ ले जाता और प्रात कालीन सामायिक मे उनका नियमित स्वाध्याय करता रहता। श्रीमद् आनन्दघनजी, चिदानन्दजी एव देवचन्दजी आदि आध्यात्मिक कवियो के गेय पदो को धीरे-धीरे गाते हुए एक मस्ती का अनुभव करता, आनन्दविभोर हो जाता। स्वाध्याय और गायन मे मन ऐसा स्थिर या मगन हो जाता कि दूसरी सारी बातो का ध्यान स्वय छूट जाता। वैसे अन्य ग्र थो का पढना भी जारी था। बगला-साहित्य के भी अच्छे-अच्छे ग्र थ पढे, क्योकि सिलहट की जिला लायब्रेरी बहुत अच्छी थी और मुझे पढने की इतनी रुचि थी कि कही भी कोई नया और अच्छा ग्र थ देखता तो उसे पढे बिना चैन नही पडती। जाते-आते कुछ दिन कलकत्ते रहना होता तो वहाँ के पुस्तकालयो से भी काफी लाभ उठा लेता। फिर तो बहुत से ग्र थ अपने घर मे भी रहने चाहिए, इस दृष्टि से सग्रह भी करना प्रारम्भ कर दिया। इधर साहित्यिक शोध, सग्रह और सरक्षण का काम भी बढता गया, इसी का सुपरिणाम है कि आज हमारे अभय जैन ग्र थालय मे हस्तलिखित एव मुद्रित करीब एक लाख प्रतियाँ है। ग्र थालय के लिए जो तीन तल्ला स्वतन्त्र भवन बनाया गया था, उसमे रखने की कोई जगह नही है फिर भी ग्र थो को मगाने व खरीदने का काम चालू ही रहता है।

हमारे ग थालय से केवल मुझे ही नहीं, अनेक साधु-साध्वियो, विद्वानो, शोधकर्त्ताओ को सामग्री और जानकारी सहज ही मिलती रहती है। इससे स्व और पर के ज्ञान विकास मे बहुत अधिक प्रगति हुई है।

विशाल अध्ययन के कारण ही इतना अधिक लेखन, सम्पादन और जिज्ञासुओ के मार्गदर्शन का काम हो सका। अब तक ४०० पत्र-पत्रिकाओ मे चार हजार से भी अधिक मेरे लेख प्रकाशित हो चुके हैं। पचासो ग्र थ सपादित किये या लिखे हैं। यह सब निरन्तर स्वाध्याय का ही सुपरिणाम है।

सवत् १९८५ से जो नियमित सामायिक और स्वाध्याय चालू किया था उसमे भी बराबर प्रगति होती रही है। पहले प्रात काल की सामायिक मे स्वाध्याय और सध्याकालीन सामायिक मे प्रतिक्रमण चालू किया था। फिर प्रात कालीन सामायिक एक की जगह दो शुरू की और सध्याकालीन प्रतिक्रमण मे उतना रस नही आने से स्वाध्याय चालू कर दिया। ज्यो-ज्यो नए और अच्छे ग्र थ मिलते गये, पढने मे समय अधिक लगाता गया। सामायिक की सख्या मे वृद्धि होती गई। अब प्रात तीन-चार और शाम को दो सामायिक प्राय करता हूँ और उसमे मुख्य रूप से ग्र थो और पत्र-पत्रिकाओ का पढना चालू रहता है। इसीलिए मेरे ग्र थालय मे जो शताधिक पत्र-पत्रिकाएँ और नये-नये ग्र थ आते रहते हैं, उन सब को मैं अपने स्वाध्याय-काल मे प्राय रोज का रोज देख लेता हूँ। ग्र थ बडे होने पर भी मेरे लिए वे सहज-स्वाध्याय योग्य हैं।

अध्ययन मे मेरी इतनी रुचि रहती है कि स्वास्थ्य के लिए बहुत ही आवश्यक होते हुए भी मैं प्रात काल का घूमना प्रारम्भ नही कर पाता। व्यापारिक कार्यों मे पहले नौ महिने का समय देता था, वहाँ अब केवल एक महीना मात्र निरीक्षण के लिए जाता हूँ। जिसमे भी एक दुकान मे तीन, सात या दस दिन से ज्यादा ठहरना नही होता। बीकानेर मे रहते हुए भी मैं घर की कोई चीज खरीदने बाजार नही जाता, न कही

दूसरो से मिलने-जुलने या वातचीत करने मे ही विशेष ममय लगाता हूँ। ग्र थालय भवन पास मे ही हैं, अत घर से ग्र थालय और ग्र थालय से घर, वस इतना ही आना-जाना होता है। वाकी प्रात काल से लेकर रात तक उपर्युक्त मामायिक के अतिरिक्त भी अधिकाश समय हस्तलिखित प्रतियो को पढ़ने, सूची वनाने, पत्र-पत्रिकाओ और ग्र थो को पढने, लेख लिखाने व पत्र व्यवहार करने मे ही लगता है।

मेरी पटाई तो वहुत ही कम हुई है पर केवल अध्ययन-रुचि तथा सामायिक और स्वाध्याय के पुण्य प्रताप से ही मैं कुछ वन सका हूँ। इसलिए मैं निरन्तर सभी को यह प्रेरणा करता हूँ कि सामायिक और स्वाध्याय का लाभ अवश्य उठावें। जिसका आनन्द मैं स्वय अनुभव कर रहा हूँ वह दूसरो को भी मिले, यही सात्विक प्रेरणा मन मे चलती रहती है। जैनधर्म मे स्वाध्यायको आभ्यतरिक तप मे सम्मिलित किया गया है। तप से निर्जरा होती है। सामायिक व स्वाध्याय से सवर होता है, और सवर और निर्जरा ही मोक्ष का प्रधान कारण है।

अभय जैन, ग्र थालय,
वीकानेर।



निःशेषलोक व्यवहारदक्षो ज्ञानेन मर्त्यो महनीय कीर्तिः।
सेव्यः सतां संतमसेन हीनो विमुक्ति कृत्यं प्रतिबद्धचित्तः ॥

ज्ञान से मनुष्य लौकिक समस्त व्यवहारो मे चतुर होता है। अपनी समस्त लौकिक आवश्यकताओ को सुगमता से सपादन कर लेता है ज्ञान से मनुष्य की निर्मल कीर्त्ति फैलती है, ज्ञान से मनुष्य सज्जनो की सेवा का पात्र वनता है—सज्जन लोग भी उसकी सेवा करने लग जाते हैं और ज्ञान से ही सासारिक समस्त विषयो से विरक्ति हो मोक्ष की तरफ चित्त लगता है विना ज्ञान के हित-अहित का मिचार नही होता।

शिक्षा और संस्कार-शिविर

डॉ नरेन्द्र भानावत

सही जीवन-दृष्टि :

मानव सृष्टि का सर्वोत्तम प्राणी है। उसमे हिताहित सोचने का विवेक है। उसे मृत्यु का वोध है। वह जानता है कि एक दिन सवको मरना है। दूसरे प्राणियों को यह वोध नही होता। इसलिए मानव अपने जीवन को सार्थक वनाकर मृत्यु को गौरवान्वित कर सकता है। प्रश्न यह है कि जीवन की सार्थकता किसमे है? जडवादी विचारक भौतिक ऐश्वर्य की प्राप्ति और वाह्य इन्द्रियो के विषय-सेवन मे जीवन की सार्थकता मान वैठे है। पर यह सही जीवन-दृष्टि नही है। क्योंकि सुख या शान्ति जड पदार्थो मे अथवा वाह्य भौतिक ऐश्वर्य मे नही है। वह सुख सच्चा सुख नही है जो शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। सच्चे सुख का स्रोत वाहर नही है, जड पदार्थ नही है। उसका अखण्ड स्रोत आत्मा है। आत्मा मे ही अनन्त शक्ति निहित है, आत्मा मे ही प्रकाश का अनन्त तेज है। उस पर अज्ञान का, कर्म का आवरण पडा हुआ है। इस कारण हम उसकी शक्ति का अनुभव नही कर पाते हैं। आत्मा की शक्ति का अनुभव किये विना, हम जो कुछ जड पदार्थ एकत्र करते रहेगे वे हमे सुख के स्थान पर दु ख, सत्रास वैचेनी और द्वन्द्व के ससार मे ही भटकायेगें।

इस आत्म-ज्ञान या तत्व-ज्ञान के अभाव के कारण ही आज ससार मे हिंसा, शोपण, उत्पीडन और पाशविक अत्याचारो का जोर है, जीवन मे शान्ति का अभाव है, परिवार मे घुटन और विखराव है। धर्म, मजहव और सम्प्रदाय मे कैद है। शिक्षा जैसा पवित्र भाव भी गदलाया हुआ है।

इन सारे रोगो की जड नैतिक शक्ति की कमी है। सदाचार का अभाव है। इस कमी को दूर करने का दायित्व शिक्षा का है। पर दुर्भाग्य से शिक्षा के नाम पर ज्ञान का आकलन करना ही मुख्य रहा, उसे जीवन मे उतारा नही गया। फलस्वरूप ज्ञान दृष्टिहीन वन गया, लक्ष्यहीन वन गया। वह नि शक नही वन सका। विचार आचार के साथ मेल न पा सके। कथनी और करनी मे अन्तर वढता गया। दिमाग का आकार फैलता गया और हृदय का रस सूखता गया। हृदय सिकुडकर कमजोर हो गया उसकी तेजस्विता नष्ट हो गई।

शिक्षा के साथ सस्कार जुड़े .

आज की सवसे वडी आवश्यकता उस शिक्षा की है जो हमारी सुषुप्त आत्म-शक्ति को जगा सके, जो हमारी नयी पीढी मे सद्‌गुणो का विकास कर सके, जो हममे भाईचारा, सर्वधर्म समभाव और सर्वजाति समभाव जैसी विश्वजनीन भावनाओ का उद्रेक कर सके। जव तक व्यावहारिक शिक्षण के साथ नैतिक शिक्षण की यह कार्यपद्धति नही जुड जाती तव तक ग्रीष्मकालीन सस्कार-शिविर इस दिशा मे महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं।

ग्रीष्मकालीन अवकाश का सदुपयोग

ग्रीष्मकालीन अवकाश को औसत भारतीय विद्यार्थी फिजूल का समय समझता है। वह उसे ताश खेलने, जुआ खेलने, दिनभर सोने और निरुद्देश्य भटकने मे व्यतीत कर देता है। वह उसे आने वाले नये सत्र की 'तैयारी का काल' नही मानता। बहुत हुआ तो वह मनोरजन के लिए तथाकथित क्लबो का सदस्य बन जाता है। यदि ग्रीष्मकालीन अवकाश का उपयोग योजनाबद्ध तरीके से सस्कार-निर्माण मे किया जा सके तो वैचारिक क्राति और मूल्य-निर्धारण की प्रक्रिया मे बडी सहायता मिल सकती है।

शिविरों का आयोजन

पिछले दस-ग्यारह वर्षो मे ऐसे शिक्षण-शिविरो के आयोजन का क्रम चला है।

इनमे विशेषत स्कूल और कालेज के स्थानीय तथा प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रो से आये हुए छात्र सम्मिलित होते हैं। शिविर मे तत्त्वज्ञान के साथ-साथ योगाभ्यास, सगीत, लेखन-कला, वक्तृत्व-कला आदि के विकास के लिए भी पर्याप्त अवसर प्रदान किया जा सकता है। एक निश्चित पाठ्यक्रम के अनुसार योग्य अध्यापको द्वारा छात्रो का प्रतिदिन नियमित रूप से अध्यात्म-शिक्षण दिया जाता है। शिविर के अन्त मे लिखित-मौखिक परीक्षण होता है और योग्य छात्रो को आकर्षक पुरस्कार भी प्रदान किये जाते है। सुविधानुसार विशिष्ट सत-सतियो एव विद्वानो के व्याख्यान भी आयोजित कराये जाते हैं। छात्रो की अनुशासनबद्ध नियमित जीवन-चर्या और परस्पर मेल-जोल की दृष्टि से यह शिविर पूर्ण सफल रहते देखे गये हैं।

रचनात्मक सुझाव

ग्रीष्मकालीन इन सस्कार शिविरो को और अधिक व्यवस्थित, शक्तिमान और स्फूर्तिशील बनाने के लिए निम्नलिखित बिन्दुओ की ओर शिविर आयोजको का विशेष ध्यान जाना अपेक्षित है—

१ शिविरो का आयोजन करते समय एक दीर्घ-सूत्री योजना अवश्य मस्तिष्क मे रहे। भौतिक प्रगति के लक्ष्यो की पूर्ति के लिए जैसे पचवर्षीय योजनाए बनाई जाती है उसी तरह नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षण के लिए भी निश्चित वर्षक्रम का (पचसालाना या जैसी अनुकूलता हो) पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाना चाहिये।

२ पाठ्यक्रम का निर्धारण करते समय इस बात विशेष ध्यान रखा जाय कि वह सम्प्रदायगत या दलगत न बन जाय। उसमे ऐसे तात्त्विक सिद्धान्तो को ही सम्मिलित किया जाये तो व्यक्ति के दृष्टिकोण को उदार, नैतिक एव आध्यात्मिक अनुभूतिप्रवण बनाये। उसमे मानवीय, राष्ट्रीय एव सौमनस्य की भावना को प्रमुखता मिलनी चाहिए। ससार के महान् आध्यात्मिक पुरुषो की जीवनिया, उनके उपदेश, नीतिविषयक सुभाषितो के तुलनात्मक एव सद्भावनापूर्ण अध्ययन का समावेश इस दृष्टि से बड़ा उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

३ शिविरो मे सम्मिलित होने वाले छात्र-छात्राओ को एसे अवसर सुलभ कराये जायें कि वे लगातार तीन-चार शिविरो मे सम्मिलित होकर अपना निर्धारित पाठ्यक्रम पूर्ण कर सकें। इस लक्ष्य की पूर्ति मे पत्राचार पाठ्यक्रम बड़ा सहायक सिद्ध हो सकता। शिविरार्थियों से वर्षभर सपर्क बना रहे। इसके लिए आवश्यक है कि उन्हे पत्राचार के रूप मे कुछ नैतिक शिक्षण के पाठ भेजे जायें। उनके साथ अभ्यास प्रश्न भी हो जिन्हे हल करके वे परीक्षण के के लिए भेजें। परीक्षण करने के पश्चात् आवश्यक निर्देश के साथ वे पुन शिविरार्थियो को लौटाये जायें। यह क्रम चलता रहना चाहिए।

४ शिविर समिति का अपना एक समृद्ध पुस्तकालय एव वाचनालय भी होना चाहिये जिसमे जीवन को प्रेरणा देने वाली श्रेष्ठ पुस्तकें सग्रहीत हो। शिविर-स्थल पर शिविरार्थी उन पुस्तको का उपयोग कर सकें, ऐसी व्यवस्था हो। इससे शिविरार्थियो मे स्वाध्याय करने की प्रवृत्ति का विकास होगा। इसके लिए प्रतिदिन एक घटे का समय भी निर्धारित किया जा सकता है।

५ शिविरार्थियो मे लेखन एव वक्तृत्व शक्ति का विकास हो, इस ओर भी विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। इसके लिए विचार-गोष्ठी एव ज्ञानचर्चा के लिए पृथक् समय निर्धारित किया जाना चाहिए। यदि अनुकूलता हो तो 'शिविर-पत्रिका' का प्रकाशन भी किया जा सकता है।

शिविर: सर्जनात्मक शक्ति के स्रोत :

अन्त मे, यह नि सकोच कहा जा सकता है कि इन शिविरो की उपयोगिता के कई पहलू हैं। ग्रीष्मावकाश का सदुपयोग होने के साथ-साथ, शिविरार्थियो को सामूहिक जीवन जीने की पद्धति का विशेष अवसर मिलता है जिससे उनमे सामाजिक सहकार, धार्मिक वात्सल्य और वैचारिक औदार्य का भाव विकसित होता है और धीरे-धीरे एक ऐसे युवा-युवती सगठन की सभावना के द्वार खुलते जाते है जो आगे चलकर परिवर्तनशील समाज के लिए अदम्य एव अखूट सर्जनात्मक शक्ति के स्रोत सिद्ध हो सकते है।



सी-२३५ ए. तिलकनगर,
जयपुर—४

**शक्यो विजेतुं न मनःकरींद्रो, गंतुं प्रवृत्तः प्रविहाय मार्गं।
ज्ञानांकुशेनात्र विना मनुष्यैर्विनांकुशंमत्तमहां करीव ।।**

जिस प्रकार मत्त हाथी विना अकुश के वश नही होता। मार्ग छोड कुमार्ग पर चलने के लिए उद्यत हुआ सुमार्ग पर नही आता उसी प्रकार यह मनुष्य का मनरूपी मत्त हाथी भी ज्ञानरूपी अकुश के विना सुमार्ग (सुकार्य) पर नही चलता। भावार्थ मनुष्य का मन चचल है, प्रयत्न करने पर भी कुमार्ग की ओर ही दोडता है, बुरी से बुरी वस्तुओ के अनुभव करने मे भी नहीं हिचकिचाता। परन्तु ऐसा तब ही तक होता है जबतक कि ज्ञानरूपी अकुश की इस पर मार नही पडती। ज्ञान से इसकी रूकावट नही की जाती और ज्ञान मे रूकावट करने पर तो यह तत्काल वश मे हो जाता है।।

स्वाध्यायी के रूप में मेरा अनुभव

श्री माणकमल भण्डारी

स्वाध्याय शब्द जैन सस्कृति का सुपरिचित शब्द है। स्वाध्याय का सधि विच्छेद स्व+अध्याय है। स्व अर्थात् स्वय अध्याय अर्थात् अध्ययन। अत स्वाध्याय का सामान्य अर्थ है स्वय का अध्ययन। मानव अपनी ज्ञानवृद्धि के लिए जो अध्ययन करता है वह स्वाध्याय की परिभाषा मे आता है। श्री उमास्वामी ने तत्त्वार्थ सूत्र मे मोक्षमार्ग के साधन बताते हुए लिखा है —

सम्यग् ज्ञान दर्शन चारित्राणि मोक्ष मार्ग

अर्थात् सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन और सम्यग् चारित्र मोक्ष के साधन हैं और इन के उपार्जन से मानव मोक्ष का अधिकारी बना सकता है। ज्ञानोपार्जन के लिए स्वाध्याय एक आवश्यक अग है। मानव अपने अपने ज्ञान को अपने तक ही सीमित न रखे वरन् वह उसे दूसरो को भी बाँटे, इस हेतु स्वाध्याय का क्षेत्र विस्तृत करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी मा० सा० ने लगभग २८ वर्ष पूर्व स्वाध्याय की योजना को मूर्त रूप दिया था। उन्होंने यह महसूस किया कि साधु—साध्वियो की संख्या दिन प्रतिदिन घटती जा रही है और और इस कारण देश के अनेको ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ साधु—साध्वी अपनी मर्यादा एव सीमित सख्या के कारण पहुँच नही पाते। ऐसे स्थानो के व्यक्ति धर्म से विमुख न हो जायें, इसलिए यह आवश्यक है कि वहाँ यदि अधिक दिनो तक के लिए नहीं, तो कम से कम पर्यूषण के आठ दिनो में तो धर्म-जागरण हो सके। इसलिए कुछ ऐसे श्रावक तैयार किए जायें जो उन पावन दिनो मे वहाँ जाकर धर्म-प्रवृत्ति को बढावा दे सकें। स्वाध्याय सघ की स्थापना इसी उद्देश्य की पूर्तिहेतु एक रचनात्मक कदम था। आज हम देखते है कि स्वाध्याय सघ के माध्यम से प्रतिवर्ष सैकडो की सख्या मे देश के सुदूर भागो मे स्वाध्यायी पहुँच कर वहाँ धर्म की ज्योति जगाते हैं।

अनुभव इस बात का साक्षी है कि ऐसे अनेको ग्राम व शहर हैं वहाँ श्रमण वर्ग के न पहुँचने के कारण वहाँ के धर्म स्थानो के दरवाजे तक नही खुल पाते, और वहाँ नियमित रूप से सफाई आदि भी नही होती। कई एक स्वाध्यायियो ने अपने अनुभव बताए कि जब वे किसी ग्राम मे स्वाध्याय हेतु पहुचे तो उनके वहाँ पहुँचने पर ही वहाँ के धर्म-स्थानो के ताले खुल पाए।

जहाँ तक मेरे अपने अनुभव का प्रश्न है, मेरे मन मे एक प्रकार का भय था कि किस प्रकार बाहर जाकर सूत्रो का वाचन, व्याख्यान आदि दे पाऊँगा और इसी भय के कारण लम्बे समय से स्वाध्याय के लिए बाहर नही जाता था। मेरा प्रथम प्रयास सन् १९७२ मे सागरियामडी जाने का हुआ। यद्यपि मैं वहाँ सह स्वाध्यायी के रूप मे ही गया था परन्तु आठ दिन वहाँ रहने के पश्चात् एव प्रवचन आदि देने की हिम्मत करने के पश्चात् मन मे एक आत्म-विश्वास हो गया कि भविष्य मे अब किसी प्रकार का भय अथवा शका नही रहेगी। सन् १९७२ मे कुछ कारणोवश मैं अपनी सेवाएँ नही दे पाया। जब मैं व हमारे प्रमुख स्वाध्यायी श्री पारसमल जी बाफना सागरिया मडी पहुँचे तो वहाँ के श्रावको ने हमे अपना पूर्ण स्नेह प्रदान किया तथा प्रथम दिन ही हमे पाटे पर बैठकर प्रवचन

देने का आग्रह किया। हम तो चाहते थे कि हम नीचे जमीन पर बैठकर ही वाचन करें, परन्तु वहाँ के श्रावको के आग्रह भरे अनुरोध के कारण हमे पाटे पर बैठना पडा। जब व्रत मे हम पाटे पर बैठे तो तो हमे ऐसा लगा मानो हम कुछ समय के लिए साधु हो गए हो और अब इस पाटे की मर्यादा एव शान रखना हमारा अपना कर्त्तव्य था। पूज्य गुरुदेव के प्रताप से हमारा कार्य सफलतापूर्वक चल पडा और हमने आठो दिन बडे उत्साह और लगन के साथ शास्त्र वाचन, व्याख्यान आदि सम्पन्न किए। इतना ही नही, हमारे वहाँ से जाने के पश्चात् भी धर्म-स्थान खुला रह सके इस हेतु प्रेरणा कर पाँच-सात श्रावको ने प्रतिदिन वहाँ आकर नियमित रूप से सामायिक करने के नियम लिए। इस सबध मे सागरिया मडी के श्री धर्मचन्द जी जैन, श्री बाबूलाल जी जैन एव श्री नेमीचन्द जी जैन का हमे विशेष सहयोग मिला। उस क्षेत्र के सभी श्रावको ने हमे अपने मे समेट लिया मानो हम वही के मूल निवासी हो। इस प्रकार स्वाध्याय सघ की प्रवृत्ति राष्ट्रीय एकता की भावना के साथ भगवान महावीर की विश्वमैत्री के सदेश को भी सुदृढ करती है।

प्राय हम देखते हैं कि मानव का व्यावहारिक जीवन उसके आध्यात्मिक जीवन के विपरीत होता है। जहाँ हम एकेन्द्रिय जीवो की हिंसा तक मे पाप समझते हैं वहाँ हम अधिक व्याज लेकर दूसरे की आत्मा को को दु खी कर परोक्ष रूप मे हिंसा के भागीदार बनते हैं। इसी प्रकार खोटे माप तौल और मिलावट कर हम कही-कही प्रत्यक्ष-रूप मे भी हिंसा को अपना लेते हैं। आज एक जैन की पहिचान इसी मे रह गई है कि वह रात्रि को भोजन नही करता अथवा हरी वनस्पति का प्रयोग नही करता। आज एक जैन की पहिचान इसलिए नहीं है कि वह जैन है इसलिए मिलावट नही करेगा अथवा रिश्वत नही लेगा आदि। अत आवश्यकता इस बात की है कि हमारा व्यावहारिक जीवन हमारे धार्मिक जीवन के अनुरूप हो। स्वाध्याय की प्रवृत्ति हमारे नैतिक जीवन के उत्थान मे मुख्य भूमिका अदा कर सकती है।

इस सबध मे यहा यह बता देना उपयुक्त होगा कि चरम तीर्थंकर श्रमण भगवान महावीर की २५०० वी निर्वाण तिथि के शुभ अवसर पर अ भा वीर निर्वाण साधना समिति जोधपुर ने अपने पच्चीस-सूत्रीय कार्यक्रमो मे स्वाध्याय और सामायिक को विशेष महत्त्व दिया है। एक ओर जहाँ समिति ने पर्युषण के आठ दिनो मे अपनी सेवाएँ देने वाले कम से कम २५० सक्रिय स्वाध्यायियो को तैयार करने हेतु सकल्प किया है वहाँ दूसरी ओर प्रेमी स्वाध्यायी के रूप मे १५ मिनट प्रतिदिन स्वाध्याय करने वाले ऐसे २५०० व्यक्तियो को तैयार करने का भी लक्ष्य रखा है। हम देखते है कि हमारे बहुत से बन्धु विशेषत नवयुवक और नवयुवतियाँ अधिकतर अपना समय कहानियो, उपन्यासो और कथाओ आदि के पढने मे व्यर्थ गवाते हैं ऐसे वर्गों से समिति ने यह आह्वान किया है कि वे १५ मिनट प्रतिदिन धार्मिक पुस्तकें पढने का नियम ले तो हमारी यह धारणा है कि वे धर्म के नजदीक आ सकेंगे और उन्हे धर्म के सही स्वरूप की पहचान हो सकेगी। हमे प्रसन्नता है कि हमारे आह्वान पर २३४ व्यक्तियो ने सक्रिय स्वाध्यायी के रूप मे अपनी सेवाए देने की स्वीकृति प्रदान की है एव २६९० व्यक्तियो ने १५ मिनट स्वाध्याय करने की प्रतिज्ञाएँ की हैं।

स्वाध्यायी का हर कदम उसके व्यक्तित्व को उजागर करने वाला होता है अत स्वाध्यायी को कोई ऐसा कार्य नही करना चाहिए जिससे उसकी प्रवृत्ति का बुरा असर सामान्य व्यक्ति पर पडे। प्रत्येक स्वाध्यायी को सप्त दुर्व्यसनो जैसे माँस, मदिरा, जुआ, परस्त्रीगमन, वैश्यागमन, चोरी, शिकार से मुक्त होना चाहिए। स्वाध्यायी का जीवन एक त्यागी के समान होना चाहिए। प्रत्येक स्वाध्यायी को चाहिए कि वह प्रतिदिन एक सामायिक करने अथवा १५ मिनट स्वाध्याय करने का सकल्प अवश्य ले। यदि हर स्वाध्यायी ऐसा कर सके तो वह वीर प्रभु के प्रति अपनी सही एव सम्यग् श्रद्धाजलि अर्पित कर सकेगा।

*

नये स्वाध्यायी : नया साहित्य

श्रीमती अरुणा जैन

धार्मिक साहित्य का स्वाध्याय, अध्ययन व पठन धर्मानुरागी स्त्री-पुरुषो व युवक-युवतियो की प्राचीन क्रिया है। कम शिक्षा प्राप्त व्यक्ति भी पाठ-स्तोत्र, कथाएँ व चरित्र आदि पढते हैं। जो स्त्री-पुरुष स्वय नही पढ सकते, वे दूसरो से उन्हे पढवा कर सुनते हैं। इस स्वाध्याय, अध्ययन व शास्त्र सुनने का बडा महत्त्व रहा हैं। इससे धर्म के सिद्धान्तो व धार्मिक आचरण का ज्ञान होता है व धर्म मे आस्था बढती है। साधु-साध्वियो के प्रवचनो व पडितो की शास्त्र सभाओ मे भी यह शास्त्र-पठन व उपदेश होता है।

भारत मे शिक्षा के अधिक प्रचार से शिक्षितो की सख्या बढ रही है। ज्यो ज्यो पीढिया बदल रही है पीढियो मे खाई या अन्तर हो रहा है। जिसे अग्रेजी मे (Generation gap) कहते हैं, पढने वालो की रुचिया (tastes) बदल रही हैं। पढने के विषय बदल रहे हैं। धार्मिक साहित्य को पढने मे अरुचि हो रही है। पर इसका अर्थ यह नही है कि स्वाध्याय या अध्ययन का युग उठ गया है, उसकी आवश्यकता नही रही। हमारे धार्मिक सस्कार इतने गहरे हैं कि यह स्वाध्याय व अध्ययन चलता रहता है, भविष्य मे भी चलता रहेगा। विपत्ति या सकट काल मे, वृद्धावस्था मे या अवकाश प्राप्ति—रिटायरमेन्ट के बाद स्वाध्याय की तरफ बहुतो का झुकाव होता है।

जैन साहित्यो को पढने वाले जैनेतर स्त्री-पुरुष व विद्वान भी बढ रहे है। उनकी भी जैन साहित्य के अध्ययन मे रुचि बढ रही है। यह शुभ चिन्ह है।

पाठशालाओ, कन्या विद्यालयो, स्कूलो, व महा विद्यालयो आदि मे भी जैन पुस्तको के पढने और उनमे परीक्षाएँ लेने के लिए कई परीक्षा बोर्ड भी है। चाहे सरकार की नीति, सरकारी मान्यता व सहायता प्राप्त शैक्षणिक सस्थाओ मे धर्मविशेष की शिक्षा देने के विरुद्ध है पर वह नैतिक शिक्षा (Moral Education) के पक्ष मे है, यह बहुत हद तक ठीक भी है, तब भी धार्मिक शिक्षा की निजी तौर पर व सार्वजनिक तौर पर आवश्यकता बनी रहेगी।

एक प्रकार से इन्हे नये स्वाध्यायी, नये पाठक कहा जा सकता है और यह कहना कोई अतिशयोक्ति नही हैं, कि ये नये पाठक पुराने पाठको से बहुत भिन्न हैं। उनमे और इनमे बडा अन्तर है। धार्मिक श्रद्धा या विश्वास के नाम पर इनके गले के नीचे किसी बात को उतारना कठिन है। जब वे जिज्ञासापूर्वक अपने माता-पिता, शिक्षको, साधु-साध्वियो या विद्वानो से किसी विषय के सम्बन्ध मे तर्कपूर्ण ढग मे क्यो, कैसे आदि प्रश्न करते है, तब हमारे बहुत से विद्वान उनको सन्तुष्ट नही कर सकते। अजैन पाठको व अध्येताओ को सन्तुष्ट करना तो और भी कठिन है। ये भी नये अध्येता या स्वाध्यायी हैं।

प्राकृत, सस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी व दक्षिण की प्रविष्ठ भाषाओ जैसे-कन्नड, तमिल, तेलगू व मलयालयम् आदि के मूल साहित्य से श्रमण सस्कृति व साहित्य को पढने व अध्ययन करने की रुचि बढ रही है। पर

यह पूरा साहित्य भी कहाँ उपलब्ध है ? इन नये पाठको की आवश्यकता पूरी करने का प्रश्न भी महत्त्व-पूर्ण है।

ऊपर के विवेचन से नये स्वाध्यायियो व पाठको के भिन्न-भिन्न वर्ग, आयु ग्रुप (age, groups), रुचियाँ व उनकी अपेक्षाएँ मालूम हो गई होगी।

अब प्रश्न यह है, कि इन नये स्वाध्यायियो व पाठको के लिए नया साहित्य कैसे तैयार किया जाय ? यह बात तो कहना गलत होगा कि जैन समाज इस नये साहित्य को तैयार नही कर रही है। गत पचास वर्षो से मुद्रणालयो के बढते प्रचार से देशी-विदेशी विद्वानो के सम्पर्क या अनुकरण से जैन समाज के सभी सम्प्रदाय अपने प्राचीन साहित्य को मूलरूप मे व अनुदित रूप मे, नये ढग से सम्पादित करके व स्त्रीयो व बालको के लिए नया साहित्य प्रकाशित कर रहे हैं। पर यह कहने मे कोई अतिशयोक्ति नही है कि जिस परिणाम व जितने सुन्दर व अद्यतन ढग से भारत का प्राचीन सस्कृत हिन्दू साहित्य व बौद्ध साहित्य प्रकाशित हुआ है, उतना जैन साहित्य प्रका-शित नही हुआ। उसका स्तर भी आदर्श नही कहा जा सकता।

इस दिशा मे जो कार्य हो रहा है, न वह योजना-बद्ध है, न बडे परिमाण मे हो रहा है। जैन समाज मे अच्छे लेखको की कमी नही है, परन्तु उन्हे न पूरा प्रोत्साहन मिलता है. न प्रकाशन सुविधाएँ, और न पारिश्रमिक। पुस्तको के मुद्रण, कागज, गेट-अप आदि भी कुछ सस्थाओ के साहित्य को छोडकर निम्न श्रेणी का होता है। फिर उस साहित्य की बिक्री या खपत भी कहाँ है ? स्तोत्रो, व्रत कथाओ, चरित्रो, व पूजापाठ सम्बन्धी साहित्य की तो कुछ बिक्री है भी पर उच्चकोटि के गम्भीर साहित्य की तो पाँच-सात सौ प्रतियाँ भी पाँच-सात वर्ष मे नही निकलतीं। पर यह दूसरा विषय है।

प्रश्न नये साहित्य की तैयारी व प्रकाशन का है। आज के व्यस्त युग मे विद्वानो व लेखको से यह आशा करना कि वे हवा-पानी खा-पीकर नया साहित्य तैयार करें व उसके प्रकाशन के लिए प्रकाशको के द्वार खटखटाते फिरें, एक दुराशा पात्र है।

इसके लिए जैन समाज को विद्वान व अधिकारी लेखको की साहित्य एकादमियाँ स्थापित करनी होगी, साहित्यकारो को तैयार करना होगा। भिन्न-भिन्न भाषाओ के जैन साहित्य का अनुवाद करने के लिए बहुभाषी या कम से कम द्वि-भाषी विद्वान लेखक तैयार करने होंगे। महिलाओ, बालिकाओ, युवक-युवतियो, किशोरो, शिशुओ, जैन विद्यार्थियो, अजैन व विदेशी विद्वानो के लिए-सभी के लिए-नया साहित्य तैयार कराना होगा। इसके लिए अनेक प्रकाशन सस्थाएँ, धार्मिक ग्रथ ट्रस्ट, शिशु-साहित्य ट्रस्ट व अनुवाद सस्थाएँ स्थापित करनी होगी। इसके लिए विपुल धन की आवश्यकता होगी, जिसका प्रबध करना जैन समाज के लिए कठिन नही है, केवल अपने दान को शाखा दान, प्रकाशन व साहित्य निर्माण की इस नई आवश्यक प्रवृत्ति मे लगाना है।

बाल-साहित्य व अजैनो के लिए साहित्य मे कठिन भाषा व पारिभाषिक शब्दो का कम से कम न के बराबर प्रयोग हो। बाल-साहित्य को बालको की रुचि को ध्यान मे रखकर सरल सुबोध भाषा मे सुन्दर मुद्रण के साथ सचित्र प्रकशित करना चाहिए। अजैनो के लिए साहित्य तैयार करने मे भी विशेष सावधानी की आवश्यकता है। अनुवाद कार्य बहुत कठिन है। उसमे मूलग्रन्थ के भावो व भाषा शैली आदि के सरक्षण का ध्यान रखने की जरूरत है। इटली मे एक कहावत है कि अनुवादक भाषाद्रोही होते हैं, (Translators are traitous) एक महान् विद्वान ने अनुवाद कार्य को कला कहा है। ये दोनो बातें ठीक हैं। हमे भाषाद्रोही अनुवादक नही चाहिए, वरन् कलाकार अनुवादक चाहिए। जैन

समाज को ऐसे अनुवादक तैयार करने चाहिए, करने होगे। यह अतिआवश्यक है कि पाँच सौ वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दो के सग्रह, उनके विभिन्न भाषाओ मे पर्यायवाची शब्दो के साथ, प्रकाशित किये जायें।

जैन समाज मे प्राचीन काल मे साहित्य रचना का बहुत बडा काम आचार्यों-साधुओ के द्वारा हुआ है। शास्त्र प्रचार या उन्हे लिखवा कर शास्त्र भण्डारो को शास्त्र देना सेठो, दानियो व गृहस्थो का काम था। जैन समाज मे अच्छे लेखक साधु बहुत ही कम हैं। पाँच-छह हजार जैन साधु-साध्वियोंमे यह सख्या बहुत नगण्य है। हमारे साधु-साध्वियो को युग की मांग व पाठको के दृष्टिकोण को समझना चाहिये। उन्हे भी इस नये साहित्य की रचना के लिए तैयार करना आवश्यक है। उन्हे साम्प्रदायिकता से ऊपर उठकर सत्यशोधी साहित्यके रूप को अपनाना होगा। स्कूलो व महाविद्यालयो और विश्वविद्यालयो के शिक्षको व प्राध्यापको मे साहित्य-निर्माण का काम विशेष रूप मे लेना चाहिए। उन्हे सब प्रकार की सुविधाएँ देनी चाहिये।

यदि भगवान महावीर की २५ वी निर्वाण शताब्दी की शुभवेला मे जैन समाज ने इस कार्य की ओर समुचित व योजनाबद्ध ढंग से काम किया, तो श्रमण सस्कृति के प्रचार व उसकी प्रभावना मे नया युग, नया दौर आयेगा और उसका प्रभाव भविष्य मे युगों-युगोतक बना रहेगा।

४५६९, डिप्टी गंज,
दिल्ली—६

करोति संसार शरीर भोग विराग भावं विद्याति रागम्।
शील व्रतः ध्यान तः कृपासुज्ञानी विमोक्षाये कृतप्रयागनः ।।

जो लोग ज्ञान सहित होते है वे मोक्षाभिलाषी ही सासारिक विषय वासनाओ मे नहीं फँसते। सर्वदा विरक्त ही रहते हैं। शील व्रत ध्यान तप कृपा प्रभृइ गुणो मे हमेशा अपना चित्त लगाते हैं।

स्वाध्याय के सुखद अनुभव

श्री चांदमल कर्णावट

स्वाध्याय की ज्योति जब से जगी, तब से वह निरन्तर जीवन-पथ को आलोकित कर रही है। जीवन-लीला समाप्त होने के विकट प्रसगो मे भी स्वाध्याय का बल संबल बना और विकट सकट से मुक्ति मिल सकी। प्रेतात्मा के द्वारा भयकर सकट उपस्थित किये जाने पर भी पच परमेष्ठी के आस्था पूर्वक स्मरण एव वीतराग वाणी के आत्मा की अमरता, कर्मवाद जैसे सिद्धान्तों पर अटल विश्वास बना रहा। फलस्वरूप सकट के घने मेघ टल गये और जीवनाकाश हर्ष और उत्साह के प्रकाश से जगमगा उठा। सिर की विकट पीडा से एक माह पर्यंत पीडित रहा। अनेक उपचार किये गये। परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। अन्तत एक स्कध ग्रहण करने का दृढ सकल्प ग्रहण करने पर सिर की पीडा शान्त हो गई और सुख चैन की श्वास मिली। यह स्वाध्याय प्रवृत्ति का ही फल था जिससे प्राणहारी सकट मे भी जिनवाणी के महिमान्वित सिद्धान्तो के ज्ञान और आचरण ने मुझे सकटो से उबार लिया और मेरी आस्था अधिक दृढ बन गई। आज भी उसका सुफल मुझे प्राप्त हो रहा है।

स्वाध्याय प्रवृति का शुभारम्भ—

बाल्यकाल से ही कोमल मानस पर जो प्रभाव अकित हुए, वे आज भी स्थायी हैं। जीवन के उषाकाल से ही स्वाध्याय का प्रेरक वातावरण प्राप्त हुआ जिस जैन शिक्षण सस्था मे अध्ययन हेतु मेरा प्रवेश हुआ, वहाँ के अधिकारियो की कृपा से और मेरे सद्भाग्य से शाला के दैनिक कार्यक्रम मे स्वाध्याय की प्रवृत्ति के अकुरण एव विकास के लिए नियमित अवसर प्रदान किये जाते थे। विद्यालय के सभी छात्र प्रतिदिन वहाँ विराजित पूज्य साधु-साध्वियो के दर्शनार्थ जाते और उनका व्याख्यान प्राय श्रवण किया करते। चातुर्मासकाल मे तो नियमित रुप से व्याख्यान श्रवण का लाभ हमे मिलता। एक लम्बे समय तक का साधु-साध्वियो का समागम मेरे जीवन मे वरदान सिद्ध हुआ। उनके धर्मोपदेश सुन जहाँ मुझे शास्त्रों के अनेक प्रसगो, कथा भागो एवं तत्त्वो की जानकारी उपलब्ध हुई, वहाँ बाल्यकाल से तदनुसार क्रिया करने की प्रबल प्रेरणा भी मिली। जिसके फलस्वरुप मैंने 11 वर्ष की लघुवय मे ही कई छोटे-बडे नियम व्रत ग्रहण कर लिए, जिनमे आज तक उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है और जीवन मे एक अनिर्वचनीय आनद का अनुभव हुआ है।

विकास के चरण —

अध्ययन और अध्यापन काल मे यह स्वाध्याय की प्रवृत्ति नियमित चलती रही और इस अवधि मे कई आध्यात्मिक पुस्तको, पत्र पत्रिकाओ के स्वाध्याय एव तदनुसार नियम व्रत पालन का सुअवसर मिला स्वाध्याय प्रवृत्ति के विकास मे कुछ प्रसग विशेष सहायक और प्रेरक बने जैसे धार्मिक शिक्षण शिविर स्वाध्यायी शिक्षण शिविर, एव पर्युषण पर्वाराधना मे सेवा।

ग्रीष्मकाल मे आयोजित बालको के लिए धार्मिक शिक्षण शिविर मे नियमित रुप से कई बार शिक्षक

के रुप मे सम्मिलित होने का अवसर उपलब्ध हुआ। अध्यापन के प्रसगो मे पाठ्यक्रम के अनुकूल आवश्यक कई ग्र थो का स्वाध्याय कर सका जिनमे जैन तत्त्व, जैन दर्शन, जैन इतिहास तथा आध्यात्मिक भावनाएँ परिपूर्ण थी। इससे ज्ञानवृद्धि हुई और शिविरो के आध्यात्मिक धार्मिक वातावरण मे धार्मिक क्रियाओ की आराधना भी की।

स्वाध्यायी शिक्षण शिविरो ने स्वाध्याय की ज्योति को प्रज्ज्वलित ही नही रक्खा, प्रत्युत् उसकी अभिवृद्धि मे सहयोग प्रदान किया। स्वाध्यायी शिक्षको एव प्रौढ व्यक्तियो के शिक्षण की यथायोग्य तैयारी के लिए, उनकी शकाओ का समाधान कर सकने हेतु पर्याप्त सन्दर्भ साहित्य पढने की आवश्यकता थी। स्वय की जिज्ञासा तो सदा ही आध्यात्मिक धार्मिक एव नैतिक साहित्य के पठन की रही है इस पर यह प्रेरक वातावरण अधिक लाभदायक बना, और इन शिविरो मे अनेक ग्रन्थो, शास्त्रो पत्र-पत्रिकाओ के अध्ययन का सुअवसर प्राप्त हुआ।

विशेष उल्लेखनीय बात यह थी कि स्वाध्याय से क्रियाराधना की प्रेरणा मिलती रही और क्रियाओ से स्वाध्याय की। इस अन्योन्य सम्बन्ध ने जीवन को समुचित दिशा मे आगे बढाया।

जिस स्वाध्याय से मुझे जीवन मे सुखानुभूति हुई और होती है क्यो न उस प्रवृत्ति को अधिकाधिक व्यक्तियो तक पहुँचाया जाय, मेरी इस भावना से मैं हर स्वाध्यायी शिविर मे पहुँच कर कार्य करता रहा। फिर इनमे मेरा बडा स्वार्थ भी पूर्ण होता था, जिससे मैं भी ज्ञानवृद्धि के साथ क्रियाराधना कर पाता। आज भी मेरी यह प्रवृत्ति चल रही है। कैसी भी स्थिति हो, मैं इन शिविरो मे सम्मिलित होने का समय निकाल ही लेता हूँ।

स्वाध्याय के इन प्रसगो मे मैं कितना खो जाता जाता हूँ। यह मैं स्वय भी नही जानता घर-परिवार आदि का बहुत कम ध्यान मुझे इस अवधि मे रहता है। इतनी तन्मयता स्वप्रेरणा का ही फल हो सकती है। इन स्वाध्याय के प्रसगो मे जो आनन्दानुभूति मुझे मिलती है, वह अन्यथा दुर्लभ ही होगी।

इन स्वाध्यायी शिक्षण शिविरो मे स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार की अनेक योजनाओ पर चर्चाएँ होती हैं। इसी के माध्यम मे **स्वाध्यायी पत्राचार पाठ्यक्रम योजना** का उद्भव हुआ जिसके द्वारा पत्राचार से स्वाध्यायी शिक्षण की प्रवत्ति का प्रसार सभव हो सका है।

पर्युषण पर्वाराधना के पसग मे महाराष्ट्र प्रान्त के ऐसे स्थानो पर जाने का अवसर मिला जहाँ सत सतियो के चतुर्मास नहीं थे। आठ दिनो तक पर्वाराधना के प्रात काल से रात्रि तक के प्रार्थना, प्रवचन, शास्त्र वाचन, प्रतिक्रमण प्रश्नोत्तर आदि को विविध कार्यक्रमो मे सबधित साहित्य का पठन कर सका। अनेक प्रकार के प्रश्नो के समाधान स्वरुप पठित साहित्य का अनुप्रयोग करने की सामर्थ्य मे वृद्धि हुई और व्रताराधन के सुअवसर तो मिले ही। अत मे वहाँ ऐसे स्वाध्यायी मडलो की स्थापना हो सकी जिनमे सामयिक स्वाध्याय की प्रवृत्ति आज भी चल रही है।

केवल इन शिविरो एव पर्वपर्युषण के प्रसगों मे ही नही, जहाँ भी रहा, स्वाध्याय की अभिरुचि ने मुझे सदा स्वाध्याय की ओर अग्रसर किया है। सत सतियो, त्यागी महात्माओ के दर्शन और प्रवचन सुनने की उत्कट इच्छा सदैव उनके चरणो मे पहुँचाती रही है। इन्ही के माध्यम से और स्वाध्याय से नैतिक आध्यात्मिक भावनाओ को सबल मिलता है, उनमे जागृति बनी रहती तथा दृढता उत्पन्न होती है।

स्वाध्याय प्रवृत्ति के प्रसार मे योग—

शिक्षण और अध्यापन के व्यवसाय मे एकाधिक स्थानो पर रहना पडा। जहाँ भी रहा वहाँ स्वाध्याय योग्य वातावरण का सृजन करने का प्रयास करता

रहा। वालको, युवको के धार्मिक नैतिक शिक्षण के कार्यक्रमो की व्यवस्था करके उनमे स्वय भाग लेता रहा। मेरी यह दृढ धारणा है कि शिक्षा मे नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यो का स्थान सर्वोपरि है। यदि इन्हे यथा योग्य स्थान नही दिया गया तो हमारी आधुनिक शिक्षा लाभकारी न होकर हानिकारक ही सिद्ध होगी।

वर्तमान मे सघ सेवा की भावना से उदयपुर साधुमार्गी जैन सघ की विभिन्न प्रवृत्तियो मे सक्रिय दायित्व वहन कर रहा हूँ। यहाँ धार्मिक नैतिक शिक्षण केन्द्रो को आरभ करने मे सफलता मिली है। जिनमे वालक वालिकाओ को धार्मिक ज्ञान देने के साथ संस्कारी वनाने का प्रयास किया जा रहा है। अपने महाविद्यालय के व्याख्यानो मे मेरा वल नैतिक वल नैतिक आध्यात्मिक मूल्यो की शिक्षा पर रहता है जो मेरी अत करण की प्रेरणा हैं। शैक्षिक पत्र पत्रिकाओ, सगोष्ठियो, शोधनिवन्धो के पठन और लेखन मे मेरा झुकाव स्वाध्याय योग्य साहित्य के निर्माण पर रहा है।

स्वाध्याय और जीव-व्यवहार—

स्वाध्याय का आनन्द केवल आभ्यतर की वस्तु ही रहा और जीवन व्यवहार मे नही झलक पाया, तो उसकी सार्थकता सदिग्ध ही वनी रहेगी। मुझे स्वाध्याय के वल पर ही जीवन व्यवहार मे नैतिकता प्रमाणिकता, के सद्गुण प्राप्त हो सके हैं। जिनका मैं यथाशक्ति पूर्ण निर्वाह करने हेतु प्रयत्नशील रहता हूँ। कषायो के उपशमन का प्रयास सदैव वना रहता है। जीवन के अनेक प्रतिकूल प्रसगो मे भी कषायो के उपशमन के ये प्रयास पर्याप्त सफल रहते है, यह स्वाध्याय की उस ज्योति के ही प्रभाव है जो अज्ञान के अधकार से इस जीवन को सुरक्षित रखते हैं।

आचार्य प्रवर पूज्य श्री हस्तीमलजी म सा की अनुकम्पा से स्वाध्यायी के नौ नियम पिछले दो साल से ग्रहण किये। तव से जीवन मे आध्यात्मिक भावनाओ मे औरवृद्धि हुई है और प्रतिदिन १५ मिनट नवीन स्वाध्याय से ज्ञानवृद्धि मे पर्याप्त योग मिला है। प्रतिदिन १५ मिनट ध्यान से एकाग्रता, इत्यादि भावनाओ के चिंतन से त्याग-वैराग्य एव १५ मिनिट प्रतिदिन समाज सेवा अथवा २ घटे सप्ताह मे समाज सेवा के नियम से जीवन और व्यवहार मे स्वाध्याय का घनिष्ठ सवध स्थापित हो रहा है। सादगी और और निर्व्यसनी जीवन स्वाध्याय की ही देन है। श्रावक के वारह व्रतो का परिपालन, चौविहार, वनस्पति का त्याग, प्रतिदिन दो सामायिक, प्रतिदिन ४५ मिनट स्वाध्याय के छोटे वडे अनेक नियम व्रत जीवन नौका को लक्ष्य की ओर अग्रसर कर रहे हैं। ❉

विद्या भवन क्वार्टर्स
उदयपुर

परिचर्चा

स्वाध्याय स्वरूप एवं महत्ता

आयोजक--श्री अजीत कठावत

प्रस्तुत प्रश्न---

१ आपकी दृष्टि मे स्वाध्याय एव अध्ययन मे क्या अन्तर है ?

२ आप स्वाध्याय मे क्या पढते है ? और उससे आपका आचार-विचार कहाँ तक प्रभावित होता है ?

३. आपके स्वाध्याय मे अन्य पारिवारिक सदस्यो की कितनी रूचि रहती है, विशेषकर बच्चो और युवको पर क्या प्रभाव पडता है ?

४ क्या नियमित स्वाध्याय करने मे सामाजिक और आर्थिक हानि होना सम्भव है ?

५ स्वाध्याय सम्बन्धी आपके विशेष अनुभव क्या है ?

विचारक विद्वान

[१] **श्री चान्दमलजी जैन न्यायतीर्थ** --आदरणीय मास्टर साहब अपनी विद्वता के लिये केवल स्थानीय जैन समाज मे ही नहीं बल्कि बाहर के जैन समाज मे भी प्रसिद्ध हैं। आपकी ही प्रेरणा से रामपुरा मे करीब डेढ दो वर्षों से स्वाध्याय सघ चल रहा है। परिचर्चा का प्रारम्भ भी मैंने आपसे ही किया। आप दयाव्रत मे थे।

१ अध्ययन हर एक विषय का हो सकता है। अध्ययन करने वाला एकान्त रूप मे आत्म निरीक्षण नही कर पाता। स्वाध्याय से आत्म निरीक्षण की ओर प्रवृत्ति बढ सकती है जिससे आत्म निरीक्षण या तत्व को समझने का अभ्यास हो सकता है, उसे स्वाध्याय कहा जा सकता हैं। केवल धर्म ग्रन्थो को पढना ही स्वाध्याय नहीं है। शास्त्रकारो ने स्वाध्याय के पांच भेद बताये हैं। वाचना, पृच्छना, अनुप्रेक्षा, परावर्तन और धर्मोपदेश। गुरु महाराज से वाचना लेना, प्रश्न पूछना और परावर्तन, प्रत्यालोचना वस्तु का बार-बार आलोचन प्रत्यालोचन करना उस तत्व को अध्यात्म रूप मे धार्मिक भावो मे पचाना अनुप्रेक्षा चिन्तन-मनन करना और वीतराग वाणी के द्वारा धर्मोपदेश देना यह सब स्वाध्याय के अन्तर्गत हैं। भगवान महावीर से गौतम स्वामी ने ३६००० प्रश्न पूछकर स्वाध्याय का मार्ग प्रस्तुत कर दिया है। स्वाध्याय ही आत्म चिन्तन का राजमार्ग है।

२ मैंने स्वाध्याय का प्रारम्भ युग प्रवर्तक पू० श्री जवाहरलालजी महाराज सा० के साहित्य से किया। अब विशेषकर मूल आगम का ही स्वाध्याय करता हूँ। समय-समय पर सन्त-सतियो को आगम पढाने का सुअवसर प्राप्त होता है वह भी मेरे स्वाध्याय में सहायक होता है। स्वाध्याय से आचार-विचार मे अन्तर आया है, आशा है मानसिक विकारो को दूर करने मे और आत्मिक गुणो को प्रकट करने मे यह अवश्य सहायक बनेगा।

३ मेरे परिवार मे भी स्वाध्याय की रूचि है। और समय-समय पर दशवैकालीक, नन्दीसूत्र आदि आगमो का स्वाध्याय मेरे घर से करते हैं, बच्चियाँ भी भाग लेती हैं। यदि इसी तरह हर एक परिवार मे रूचि हो तो भावी पीढी पर अच्छा प्रभाव पड सकता है। युवको को भी अपने जीवन को मोडना हो तो

स्वाध्याय की तरफ अपनी रुचि जागृत करनी चाहिए।

४ नियमित स्वाध्याय करने मे सामाजिक और धार्मिक विचारो मे प्रगति होती है। धार्मिक विचारो का प्रचार होता है। आर्थिक क्राति मे भी स्वाध्याय मददगार साबित हो सकता है।

५ स्वाध्याय की ओर रूचि होने से मैंने अपने १२ साथियो को प्रेरणा देकर रामपुरा क्षेत्र मे स्वाध्याय सघ की शाखा प्रारम्भ की और आज १०-११ सदस्य ऐसे तैयार हो गये है। जो पर्युषण पर्व मे बाहर जाकर मैसूर, बैंगलोर, कोयम्बटूर आदि क्षेत्रो मे जाकर सैकडो और हजारो लोगो के बीच प्रभु महावीर की वाणी का प्रचार करने मे सहायक हो रहे है। स्वाध्याय ही आज समाज को स्थायित्व देने मे सहायक है।

२ **श्री सतोषचन्द जी कर्णावट 'एम ए'** -- कर्णावटजी स्वाध्याय सघ के सदस्य है।

१ स्वाध्याय का अर्थ अपने आपका अध्ययन करना है, आत्म स्वरूप का अध्ययन मनन करना है। यह अध्ययन आध्यात्मिक धार्मिक ग्रन्थो मे ही हो सकता है जब तक अध्येता की दृष्टि आत्म लक्षी नही होती है वह अध्ययन कहलाता है, स्वाध्याय नही।

२ स्वाध्याय मे मैं सूत्र वाचन, मूल पाठ का स्वाध्याय व चिन्तन मनन करता हूँ। सम्यक्त्व, व्रत, नियम आदि स्वाध्याय का ही फल है। सासारिक मोह माया जाल से दूर रहने की प्रेरणा भी इसी से प्राप्य है।

३ मेरे स्वाध्याय से परिवार मे धार्मिक भावना बढी है। वैसे ११ वर्षीय प्रदीप करनावट पर तो पूर्ण प्रभाव प्रत्यक्ष है जिसे अल्पायु मे ही सामायिक, प्रतिक्रमण भक्तामरस्तोत्र आदि मौखिक हैं।

४ निश्चित है। स्वाध्याय के वशीभूत होकर जब हम अपरिग्रह पर चिन्तन मनन करेगे तो क्यो न अजीत हमारी धारणाएँ अपरिग्रही होगी, अपरिग्रह के माध्यम से हम समाजवाद लाकर सामाजिक व आर्थिक क्राति ला सकते हैं।

५ स्वाध्याय से मुझे आत्मिक सुख की प्राप्ति होती है व उसका अनुभव होता है वर्तमान मे विचारो पर प्रभाव है किन्तु भविष्य मे विश्वास है आचार भी प्रभावित होगा।

३ **श्री सम्पतराजजी कड़ावत** ---आदरणीय ताऊजी भी स्वाध्याय सघ के सदस्य है।

१ स्वाध्याय का सामान्य अर्थ है-स्वय का स्वय द्वारा अध्ययन। वैसे अध्ययन मे अन्य सामग्री भी आ जाती है। जैसे आज का अर्थहीन निस्सार साहित्य, इतिहास, कथा कहानी को पढना अध्ययन हैं। ऐसे अध्ययन से आत्म कल्याण नही हो सकता। आत्म-कल्याण, स्वाध्याय के माध्यम से होने वाले चिन्तन-मनन का आचार विचार पर पडने वाले प्रभाव से सम्भव है। यही अन्तर है स्वाध्याय और अध्ययन मे।

२ स्वाध्याय मे मैं धार्मिक ग्रन्थ शास्त्रो के प्रमाण युक्त श्लोको के भावार्थ आदि का अध्ययन करता हूं। स्वाध्याय से आचार तो वर्तमान मे कुछ कम मात्रा मे प्रभावित है। किन्तु विचार पूर्ण रूपेण प्रभावित है। वैसे स्वाध्याय की प्रवृत्ति का जन्म कुछ समय पूर्व ही हुआ है। फिर भी विश्वास है आचार भी अति शीघ्र भोग से त्याग की ओर मुडे गे।

३ मेरे स्वाध्याय से परिवार मे निश्चित धार्मिक भावनाए पूर्व की अपेक्षा दृढ हुई है। देखो! तुम स्वय सामायिक, प्रतिक्रमण, भक्तामर २५ बोल का थोकडा आदि सीख चुके हो और भी तुम्हारे भाइयो की इस ओर रूचि स्पष्ट है ही।

४ जरूर अजीत जरूर! सामाजिक और आर्थिक क्राति आ सकती है यदि एक व्यक्ति स्वाध्याय करता है। वह भगवान महावीर के जीवन को पढता हैं मनन करता है तो सोचता है ओहो, इतने वैभव-शाली होते हुए भी उन्होंने ससार त्याग दिया, मानव

सोचता है--'मेरे पास क्या है फिर भी मैं मोहममता के जाल मे जकडा हुआ हूँ ।" यह विचार शीघ्रातिशीघ्र मानव आचार पर प्रभाव डालते है। तो क्यों न ऐसे विचार आते ही सामाजिक आर्थिक क्रांति आयेगी।

५ स्वाध्याय से मानसिक शांति रहती है। मन प्रसन्न एव दिन भर मे ज्यादातर कम झूठ बोलने-तोलने की आदत हो जाती है। मैं काफी प्रसन्न हूँ कि मुझमे यह प्रवृति आगई मैं सभी उन प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष प्रेरणा प्रदान करने वालो का तहेदिल से आभारी हूँ।

४ **श्री सूरजमलजी सिसोदिया** --आप भी स्वाध्याय सघ के सदस्य हैं।

१ अध्ययन का अर्थ पढना है। पर स्वाध्याय का अर्थ केवल पढना ही नही वरन् पढकर अमल मे लाना, उक्त विषय पर चिन्तनमनन करना है।

२ धार्मिक ग्रन्थ पू श्री जवाहर लाल जी मा कृत 'जवाहर किरणावली' मेरे स्वाध्याय की सामग्री होती है। स्वाध्याय से जीवन मे पवित्रता आती है दुर्व्यसनो से बचाव होता है, चरित्र के ऊपर ध्यान रहता है, नम्रता आती है।

३ वैसे मैं स्वय अपने अग्रज से प्रभावित हूँ। परिवार पूर्व धार्मिक सस्कारो से प्रेरित है।

४ हाँ ! स्वाध्याय के माध्यम से हम सामाजिक व आर्थिक क्राति ला सकते है। अपरिग्रह के सिद्धान्त को चिन्तनमनन करके अमल मे लाये तो निश्चित विश्वास करो अजीत ! सामाजिक आर्थिक क्राति आ सकती है।

५ स्वाध्याय से मानसिक शाति, आत्मिक सुख, धर्म के प्रति प्रेम प्राप्त होता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विचारो से ज्ञात होता है कि-स्वाध्याय करने से, आत्म-चिन्तन करने से, भेद विज्ञान जानने से मानव अपना जीवन उत्कृष्ट बना सकता है।

स्वाध्याय का सामान्य अर्थ स्वयं का स्वयं द्वारा अध्ययन मैं कौन हूँ ? कहाँ से आया हूँ ? किसका बना हूँ ? मुझे आगे कहाँ जाना है ? आदि कई प्रश्न पैदा होते हैं। किन्तु प्रश्न केवल आज के ही नहीं हैं वरन् अनन्त काल से साधकों के समक्ष रहे हैं और साधक इन गुत्थियों को स्वाध्याय द्वारा ही सुलझाकर तीर्थंकर व केवली पद प्राप्त कर चुके हैं। जबकि अध्ययन का सामान्य अर्थ पढना है। कोई भी साहित्य हम इसलिये पढ लेते हैं कि समय कट जायेगा या मन बहल जायेगा किन्तु वर्तमान में जनमानस में प्रचलित सस्ता साहित्य व्यक्ति को चिन्तनमनन करने को प्रेरित नहीं करता, उससे आत्मविकास नहीं होता। जबकि स्वाध्याय से व्यक्ति के आत्म विकास एव कल्याण का रास्ता सही मार्ग प्रशस्त होता है।

स्वाध्याय में धार्मिक ग्रन्थो एव अन्य शास्त्रो के श्लोकों के भावार्थ का अध्ययन ही मुख्य लक्ष्य हो। वैसे स्वाध्याय यानि 'स्वय का अध्ययन' है इसलिये हमे अपने प्रतिदिन के कार्यो को बडी बारीकी के साथ देखना चाहिये एव हुई गल्तियो को भविष्य में न करने का सकल्प करना चाहिये, तभी हमारा आचार-विचार प्रभावित होगा।

स्वाध्याय से परिवारजनों पर निश्चित ही प्रभाव पडता है क्योकि जैसे सस्कार परिवार के अन्य बुजुर्ग भावी पीढी पर डालेंगे वैसा ही उनका जीवन बनेगा, क्योकि अनुभव बताता है-सिगरेट पीने वाले पिता की सतान निश्चित सिगरेट पीती है। तो यदि हम स्वाध्याय द्वारा अपने आचार विचार अनुशासित करेंगे तो हमारी पीढी भी अनुशासित आचार विचार वाली होगी।

नियमित स्वाध्याय करने से हमारे आचार-विचार मे सासारिक मोह-माया जाल का घेरा सकीर्ण होता जायेगा, हम अपने जीवन को महापुरुषो के जीवन के जैसा बनाने का प्रयास करेंगे, जिनका जीवन त्याग का अनुपम उदाहरण है। यदि हम परिग्रह त्याग

करेंगे तो हमारे पास एकत्रित सामग्री समाज के काम आयेगी जिससे समाज सम्पन्न एव शातिमय बनेगा।

स्वाध्याय से कई लाभ हैं मेरा स्वय का अनुभव है। स्वाध्याय मे मानसिक शाति प्राप्त होती है। जब मानसिक उलझन न होगी तो मनोविज्ञान साक्षी है कि शुद्ध विचार आयेंगे, शुद्ध विचार शुद्ध आचार के जनक है। साथ ही मानसिक शाति शारीरिक स्वस्थता को भी प्रभावित करती है।

कामना है मेरी कि पू हस्तीमलजी मा सा की तरह अन्य मुनिवर भी नवयुवको मे स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढाने का प्रयास करें। मुझे कुछ समय पूर्व कोटा मे प्रथम बार पू हस्तीमलजी मा सा के दर्शन का सौभाग्य मिला, मैं वहाँ आपकी प्रेरणा से स्थापित नवयुवक स्वाध्याय सघ की बैठक मे गया, देखा! बडा आनन्द विभोर हो गया। जिन छात्र-छात्राओ को नमस्कार मत्र भी नही आता था अब वे सामायिक प्रतिक्रमण पूरा कर रहे है। और सम्यक्ज्ञान, सम्यक् दर्शन जैसे विषयो पर सारभूत विचार बडी निर्भीकता से रख रहे हैं। निश्चित ही युवा पीढी स्वाध्याय से धर्म की ओर मुड सकती है। ✱

बड़ा बाजार,
रामपुरा (म. प्र)

——

रत्नत्रयी रक्षति येन जीवो विरज्यतेऽत्यत शरीर सौरण्यात्।
रुणद्धिपायं, कुरुतेविशुद्धि, ज्ञान तदिष्टं सकलार्थविद्धि॥

अर्थ---जिसकी सहायता से यह जीव सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, और सम्यक्-चरित्र रुप रत्नत्रय की रक्षा करता है, क्षण स्थायी शारीरिक सुख से विरक्त हो जाता है, पापो के आसव को रोकता है, धर्म करता है वह ज्ञान है और ऐसा ही ज्ञान सर्वज्ञ द्वारा श्रेष्ठ माना गया है।

स्वाध्याय के लाभ : मेरे अपने अनुभव

श्री जशकरण डागा,

"मुख की शोभा शुभवचन, मन शोभा सुविचार।
कर की शोभा दान है, तन शोभा पर उपकार।'

शुभ वचन एव सुविचार मनुष्य के ऐसे आभूषण हैं कि जिनका प्रभाव सभी पर पडता है। यह दोनो आभूषण सत्सग एव सद्साहित्य के पठन से प्राप्त होते हैं। सत्सग सर्वत्र सदा सुलभ नही होता है। किन्तु सद्साहित्य सरलता से सदा सर्वत्र उपलब्ध हो जाता है। सद्साहित्य पठन का साहित्यिक और नैतिक दृष्टिकोण से बहुत महत्त्व है। कहा है —

'काव्यशास्त्रविनोदेन,
कालोगच्छति धीमताम्।
व्यसनेन, च मूर्खाया,
निद्रया कलहेन वा॥'

अर्थात् बुद्धिमानो का समय सद्शास्त्रो के पठन पाठन मे व्यतीत होता है जबकि मूर्खों का समय व्यसनो मे, निद्रा मे या कलह मे व्यतीत होता है। काव्य शास्त्रो मे उन शास्त्रो का पठन पाठन उत्तम है जो धर्म तत्त्व प्रधान हैं। जैन परम्परा मे इसे 'स्वाध्याय' कहा गया है। स्वाध्याय का पूर्ण अर्थ है— जिनवाणी सग्रह रूप आगमो का अस्वाध्याय के कारणो को टालकर भाव-सहित पठन करना, तत्-सबधी पृच्छना, पुनरावर्त्तन एव चिंतन मनन करना व कथा कहना 'स्वाध्याय' है। भक्ति बहुमान एव एकाग्र चित्त से जिनवाणी का स्वाध्याय करना महान-श्रेष्ठ फलदायक है। स्वाध्याय आभ्यंतर उत्तम तप का कारण है। कहा भी है 'न सज्झाय सम तवो।'

स्वाध्याय सबधी कुछ निजी अनुभव यहां प्रस्तुत कर रहा हूँ—

(१) साधना का सरल एवं श्रेष्ठ साधन—

नियमित स्वाध्याय मे साधना के अगम दुरूह पथ मे सहज ही प्रवृत्ति हो जाती है, जिसमे विशिष्ट एव अत्यन्त दुरूह 'साध्य' भी सिद्ध होते हैं। इसीलिए मेरा यह अनुभव है कि—

'जप तप साधन कुछ न बने
तो सरल मार्ग को अपना लो।
चचल मन स्थिर करना हो
स्वाध्याय को अपना लो।
ज्ञान ज्योति हृदय मे जगमग ले चलो
धर्म की गगा बहाते चलो।'

(२) स्वाध्याय से ज्ञान का विशिष्ट विकास—

ज्ञान वृद्धि का स्वाध्याय उत्तम साधन है कारण 'सज्झाएण नाया वरणिज्ज कम्म खवेई। (उत्तरा २९।१८) के अनुसार स्वाध्याय से ज्ञानावरणीय कर्म क्षय होते हैं। इस सबध मे मेरा निजी अनुभव है। मैं जब विद्यार्थी जीवन मे था मेरा धार्मिक ज्ञान साधारण था, किन्तु जब से नियमित स्वाध्याय आरम्भ किया तब से मेरा ज्ञान निरन्तर बढ रहा है। आगमो के स्वाध्याय करने से थोडी इतनी जानकारी तो हो हो गई कि कभी २ सत भी मेरे से यह पूछ लेते हैं कि आपने ये धारणाएँ और जानकारी किन से प्राप्त की? मेरा उत्तर होता है कि सत-सतियो का समागम तो (इस क्षेत्र मे कम पदार्पण होने से) कम मिलता है

फिर भी जो थोडा सीख पाया हूँ वह सब स्वाध्याय की ही कृपा है।

(३) स्वाध्याय जीवन को सुसस्कृत करता है—

जैसे शरीर, वस्त्र एव आभूषणो सुशोभित होता है, वैसे ही मन, मस्तिष्क, हृदय और आत्मा स्वाध्याय से ज्ञान का प्रकाश प्राप्त कर विभूषित होते हैं। स्वाध्याय अतर का वह दीपक है जो न केवल अन्तः करण को अपूर्व ज्योति से जगमगा देता है वरन् भाषा साहित्य, काव्य, सस्कृति आदि का ज्ञान विकसित कर जीवन को सुसस्कृत बना देता है।

(४) मन को स्थिर करने का सर्वोत्तम साधन—

मन बहुत चचल है। वर्षों साधना करने वाले योगियो के लिए भी मन को स्थिर रखना कठिन होता है। जप, तप, कीर्तन आदि कुछ भी हो मन एक मिनिट भी स्थिर नही रहता,किन्तु यह अनुभूत सत्य है कि स्वाध्याय के माध्यमसे आप मिनिटो ही नही घन्टो मन को नियत्रित कर सकते हैं। स्वाध्यायी इस तथ्य को जानते हैं कि एक सामायिक ले स्वाध्याय करने बैठें और घडी पर ध्यान नही रखा तो कभी २ दो-तीन सामायिक का काल निकल जाने पर भी सामायिक से अरूचि नही होती व पारने का विचार ही नहीं आता है।

(५) स्वाध्याय से आत्म-गुणो का विकास—

साधना का मुख्य साध्य है—मोह, अज्ञान एव कषाय से आत्मा को अलग कर निज स्वभाव मे स्थिर होना। स्वाध्याय से सभी वैभाविक वृत्तियाँ आत्मा से सहज ही दूर हो जाती है। निज स्वाभाव उसी तरह प्रगट होने लगता है जिस तरह सूर्य के उदय होने से पूर्व ही अधकार नष्ट हो प्रकाश फैलने लगता है। कर्म क्षय का मुख्य साधन तप माना गया है और तप मे भी श्रेष्ठ तप स्वाध्याय है। कहा है—"न वि अत्थि न वि आ हो ही, सज्झाय सम तवो कम्मं ॥" (वृहद कलम भा ।११६९)। अर्थात् स्वाध्याय के समान तप न अतीत मे कभी हुआ और न वर्तमान मे कही है और न भविष्य मे होगा।

(६) स्वाध्याय धर्म को दृढ़ नींव लगाता है—

सत-सतियो की प्रेरणा से जो विशाल साधना-स्थल भर जाया करते हैं, उनके पीछे भी यदि स्वाध्याय का बल नही होता तो वे सफल नही होते। जिन स्थानको मे पैर रखने की जगह नही रहती, पर सत-सतियोंके चले जाने पर उनके ताले भी नही खुलते ऐसी स्थिति मे जहाँ स्वाध्यायी होते हैं वहाँ सत-सती के अभाव मे भी स्थानको मे नियमित शास्त्र वाचन व तत्त्व चितन होते हैं। स्वाध्याय, मिथ्यात्वी मे सम्यक्त्व की सम्यक्त्वी मे विरति की विरति मे सर्व विरति की और सर्व विरति मे पूर्ण वितराग होने की नीव लगाता है। धर्माचरण मे जो शिथिलाचारी हैं उन्हें भी दृढ एव स्थिर करता है।

(७) आगम स्वाध्याय सर्वोत्तम है—

जैनागमो का स्वाध्याय करना श्रेष्ठ है, किन्तु आगम का भावार्थ न समझ कर मात्र वाचना करना कोई विशेष उपयोगी नही होता। कारण वह तो शुकवत रटन करना है। आगम स्वाध्याय सबधी कुछ भ्रम भी जनसाधारण मे प्रचलित हैं। कुछ की मान्यता है कि 'जो वाँचे सूत्र वाँका मरे पुत्र।' इस कारण 'गृहस्थ को शास्त्र वाचन नही करना चाहिए, किन्तु यह मान्यता 'अपुत्रस्य गति नास्ति' की तरह ही निराधार एव मिथ्या है। श्रावक के९९ अतिचारो मे ज्ञान के १४ अतिचार भी हैं जिनमे सुत्तागमे, अत्थागमे,तदुभयागमे भेद से शास्त्र वाचन की स्पष्ट पुष्टि होती है। प्राचीन काल मे जब शास्त्र लिखित मे अनुपलब्ध थे व उनका कण्ठस्थ स्वाध्याय चलता था, तब भी अनेक श्रावक आगमज्ञ होते थे। उदाहरणार्थ 'समवायाग' व 'नदी सूत्र' मे आनंदजी, कामदेवजी श्रावको के लिएसूयँ परिगाहा तवो वहाणाइ' (सूत्र को ग्रहण किए हुए उपधान

आदि तप सहित थे) विशेषणता मिलते हैं। श्रावको के लिए ही उत्तराध्ययन अ २० मे लिखा हैं - 'निग व थे पावयणे सावए से वि को विए ।' अर्थात् वह निर्ग्रंथ प्रवचन मे कोविद (पडित) थे । यही नही श्राविकाएँ भी वहुश्रुता होती थीं । राजमति दीक्षा लेते समय 'वहुश्रुता' थी जैसा कि उत्तराध्ययन सूत्र अ २२ मे लिखा है—'सीलवता वहुस्सूया ।'

इस प्रकार सुस्पष्ट है कि श्रावक-श्राविकाएँ भी जव आगमज्ञ हो सकते हैं तो फिर वे आगम-स्वाध्याय क्यो नही कर सकते ? इसी सवध मे एक तर्क और भी दी जाती है कि 'व्यवहार सूत्र' मे जव मुनियो के लिए भी विभिन्न आगम पढने हेतु विभिन्न मर्यादाएँ दीक्षा पर्याय आदि नियत है तो फिर गृहस्थ विना दीक्षा लिए उन्हे कैसे पढ़ने का अधिकारी माना जा सकता है ? इस सवध मे निवेदन है कि जो दीक्षा पर्याय का काल नियत उल्लेखित हैं वह सामान्य वुद्धि के शिष्यो के लिए है, सभी के लिए नही । क्योकि 'व्यवहार सूत्र' मे ही तीन वर्ष की दीक्षा पर्याय वाले को उपाध्याय और पाँच वर्ष की दीक्षा पर्याय वाले को आचार्य पद स्थापन करने का भी विधान है। अव विचारिये कि एक ओर तो तीन वर्ष की दीक्षा पर्याय वाला ही आचाराग पढ सकता है और दूसरी ओर तीन वर्ष की दीक्षा पर्याय वाला वहुश्रुत उपाध्याय होकर दूसरो को शास्त्र भी पढा सकता है। इस प्रकार सिद्ध है कि जो वय व दीक्षा पर्याय मर्यादा नियत है वह सामान्य वृद्धि के साधुओ की अपेक्षा से है, किन्तु श्रावको के लिए ऐसा कोई नियम नहीं है। उन्हें तो योग्यतानुसार आगम श्रुत के स्वाध्याय का अवश्य अभ्यास करना चाहिए ।

८ कुरूढ़ियो एव अन्ध विश्वासों का नाशक—

कुछ वर्षो पूर्व हमारे घर मे परम्परा से कुल-देव भोमिया जी, शीतला देवी, माताजी भैरु जी, दोनपाल जी आदि अनेक अदेवो के पूजन की प्रथा एव मृतात्मा के श्राद्ध आदि करने के अध विश्वास पूर्ण प्रथाए प्रचलित थीं । अनेक सत-सातियो के आग्रह पर भी इनका त्याग नहीं किया जा सकता था, किन्तु यह स्वाध्याय की ही कृपा है कि जैसे-जैसे वस्तुस्वरूप का यथार्थ ज्ञान हुआ, वैसे-वैसे यथार्थ श्रद्धा वढी, देव, गुरुदेव, धर्म, कुधर्म गुरू, कुगुरू का भेद समझ मे आया और उक्त सव कुरूढियो एव अध विश्वासो का हमारे घर से पलायन हो गया । इस प्रकार कुरूढियो एव अध विश्वासो की जननी मिथ्यात्व (कुमति) को समाप्त करने मे स्वाध्याय की महत्वपूर्ण भूमिका है ।

९ स्वाध्याय से सर्वतोमुखी विकास.—

जितने भी महापुरुष हुए हैं, या होंगे, वे सव स्वाध्याय के वल मे ही महान वनते हैं। जीवन मे मुख्य चार पुरुषार्थ हैं—धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष । स्वाध्याय से गृहस्थ मे भी धर्म की प्रवृत्ति विकसित होती है और अर्थोपार्जन मे वह न्यायनीति का ध्यान कराता है । गृहस्थ दशा मे रहते काम की प्रवृत्ति वेदोदय से होते हुए भी वह स्वाध्याय की कृपा से शील-वंत सद्भोगी वनता है । उसका जीवन प्रमाणित एव आदर्श होता है और स्वाध्याय के माध्यम से ही वह 'मोक्ष' तत्व का अपूर्व रस पान का अनुभव पूर्ण चरित्र ग्रहण किए विना भी करने मे समर्थ होता है । इस प्रकार स्वाध्याय से साधक का सर्वतोमुखी विकास होता है ।

१० स्वाध्याय परम मित्र है —

आत्मार्थियो के लिए स्वाध्याय से वढ कर उत्तम अन्य कोई मित्र नही हो सकता । कारण 'सज्झाएण निइत्तेण सव्व दुक्ख विमोकवेय । उत्तरा १२६/१०/' के अनुसार स्वाध्याय से समस्त दु खो से मुक्ति मिलती है । महा दु खो एव कष्टो के आने पर भी स्वाध्याय से धैर्य एव शान्ति नष्ट नहीं होते । और अशुभ का उदय भी सहज ही रुक जाता है ।

अत मे निवेदन है कि 'स्वाध्याय' सव सुखो का मूल और आत्मा का परम हितैषी होने मे इसे सर्वत्र अपनाया जाना चाहिए । स्वाध्याय की प्रवृत्ति

नियमित चलाई जावे । अक्सर स्वाध्याय करने के बजाय सामूहिक गोष्ठी रूप मे स्वाध्याय करना अधिक श्रेष्ठ है। इसके लिए कोई एक विशेष जानकार आगम का पठन करें व अन्य श्रोताका एकाग्र चित्र से श्रवण करें। स्वाध्याय प्रत्येक साधक के लिए उतना ही आवश्यक है जितना शरीर के लिए भोजन। इसी कारण श्रमणो के लिए भी स्वाध्याय का प्रत्येक दिन व रात की आठ प्रहर मे चार बार (चार प्रहर) नियमित, एव अनिवार्य रूप मे करने का विधान 'उत्तराध्ययन सूत्र' मे भगवान ने इस प्रकार बताया है —

'पदम पोरसिं सज्झायं, बीय झाणं झियायई।
तइयाए भिक्खा यरिय, पुणो च उत्थीए सज्झाय ।।

प्रत्येक श्रमणोपासक के लिए भी तीन मुख्य नियम पालन हेतु बताए हैं जो मेरे शब्दो मे इस प्रकार है —

"नर जीवन को सफल हो करना
तीन तत्व साधन करलो।
स्वाध्याय, सामायिक, बंदन,
ये तीन नियम चित्त मे धरलो ।।"

साराश यह है कि स्वाध्याय साधना का मूल है जिसकी उपेक्षा कर कोई भी साधक साधना मे सफल नहीं हो सकता है। अत एवं सभी को स्वाध्याय को अपने जीवन मे प्राथमिकता देकर उसे सर्वाधिक महत्व देना चाहिए।

स्वाध्यायी के रूप में मेरे अनुभव

श्री सुजानमल मेहता

प्रत्येक व्यक्ति सुख की कामना करता है और उसको प्राप्त करने के लिये निरंतर प्रयत्नशील भी रहता है। सुख की कल्पना सब की समान नहीं होती कोई भौतिक सुख (खाना, पीना, ऐश और आराम) मे ही अपने जीवन की इति श्री समझ लेता है तो कोई आध्यात्मिक सुख (आत्म शान्ति) की खोज मे सलग्न रहता है। जब उसका ध्येय आत्म शान्ति, निर्धारित हो जाता है तो वह उसको प्राप्त करने की दिशा मे आगे बढने का प्रयत्न करता है और "मैं कौन हूँ यह कौन है" का चिंतन उसके मन-मस्तिष्क को आन्दोलित करने लगता है। यही स्वाध्याय की प्रथम सीढी है। अब उसे सद्गुरु और सद् साहित्य की शरण आवश्यक हो जाती है और सतगुरु के निर्देशानुसार जब वह चिन्तन और मनन करता है तो स्व-पर का भेद उसे स्पष्ट होने लगता है और किंचित आत्म शान्ति का अनुभव होता है। उसके सुख दुःख की कल्पना स्वयम् के सकुचित दायरे से आगे बढती है और स्वयम् के लिये सुखकर या दुःख कर वह दूसरो के लिये भी सुखकर या दुःख कर है, ऐसा वह समझने लगता है। अब वह जन साधारण से स्वाध्यायी की कोटि मे आ जाता है।

परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म सा के दिशा निर्देशन मे सम्यक्ज्ञान प्रचारक मण्डल के तत्वाधन मे स्वाध्याय सघ की स्थापना हुई। इसका उद्देश्य महान और कार्य क्षेत्र विशाल है। सक्षेप मे मैं अपने शब्दो मे कहूँ तो इसका उद्देश्य आत्म शान्ति का अनुभव और उस अनुभव मे सबको साझेदार बनाना है।

उक्त स्वाध्याय सघ का मैं भी एक साधारण कोटि का सदस्य हूँ। सघ की सदस्यता का मधुर फल जो मुझे मिला वह है व्रत नियम, सामायिक-साधना के क्षेत्र मे यथा शक्ति प्रगति। जब एक स्वाध्यायी की, इतनी तैयारी होती है तो उसको अपनी सेवाएँ शासन हित व समाज हित मे अपनी स्थिति के अनुसार समर्पित करनी होती है। पर्युषण पर्वाराधन करने कराने के लिये उसको सघ के आदेशानुसार कही भी जाना पड सकता है। पर्युषण पर्व मे अन्यत्र सेवा देने मे आत्म शान्ति की जो अनुभूति होती है वह अनुभव गम्य है। पारिवारिक व व्यवसायिक झझटो से मुक्त उसका अधिकाश समय सवर सामायिक मे व्यतीत होता है और यह आठ दिन का समय स्वाध्यायी के लिये पाठशाला का समय जैसा होता है। श्री अन्तगड सूत्र कल्प सूत्र का वाचन तथा अन्य जीवन निर्माण के विषयो पर भी उसको अपने विचार प्रकट करने होते है किन्तु उसके बोलने का आधार पाँडित्य नही—स्वानुभव होता है, भाषा-आदेशात्मक नही किन्तु स्व-पर प्रेरणा दायी होती है। एक अपरिचित क्षेत्र मे साधर्मी बन्धुओ का प्रेम वात्सल्य उसको मिलता है, वह गद्गद् हो जाता है और उसके जीवन की दिशा ही बदलने लगती है। यह सब कुछ परम पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज साहब के मार्ग दर्शन का ही प्रतिफल है अत आचार्य श्री के चरण कमलो मे शत २ वन्दन।

जिन क्षेत्रो में संत-सतियाँ जी का पदार्पण कम होता है उन क्षेत्रो मे स्वाध्याय सघ के प्रति आकर्षण बढ रहा है। स्वाध्यायियो को पर्युषण पर्वाराधन के लिये बुलाने मे वे अधिक रुचि लेने लगे है। स्वाध्यायियो के वाचन और विचारो को उसी तन्यमता और रुचि के साथ सुना जाता है जिस तन्यमता और रुचि से सत-सतियाँजी के वाचन और विचारो को सुना जाता है। स्वाध्‍ ...त्कार और सम्मान भी वडे प्रेम और उत्साह के साथ होता है। मुझे ऐसा लगता है कि श्रावक सघो की रुचि जिस गति से स्वाध्यायियो को पर्वाधन के लिये बुलाने मे बढ रही है उस ही गति से हमने अगर नये स्वाध्यायी तैयार नही किये तो हम उनकी मागो को पूरा करने मे पिछड जावेंगे अत हमे पूरी तत्परता से नये योग्य स्वाध्यायी तैयार करने की ओर ध्यान रखना चाहिये।

चौथ का बरवाडा
(सवाई माधोपुर) राज-

क्रोध धुनीते, विदधाति शांति, तनोति मैत्री, विहिनस्ति मोहं।
पुनाति चित्त, मदन लुनीते, येनेह बोध तमुशति सत ॥

अर्थ---जिसके कारण क्रोध का नाश हो जाय, शांति का साम्राज्य छा जावे, समस्त प्राणियो से शत्रुता न होकर मित्रता बढ जावे, मोह का नाश हो, चित्त मे अपवित्रता छोड पवित्रता आ जावे, और काम देव का प्रभाव घट जाय, मन वचन और काया मे किसी प्रकार के विकृत भावो का उदय न हो वह ज्ञान है ऐसे ही ज्ञान को सज्जन लोग वास्तव मे ज्ञान नाम से पुकारते है अन्य को नहीं।

चिन्तन कण स्वाध्याय के

डॉ. जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल

भगवान् महावीर ने कहा था –

'स्वाध्याय के समान दूसरा तप न कभी हो सका है, न आज कही है और न कल कभी होगा।'

'हमारे जीवन मे मिथ्यात्व ऐसे घने कुहासे की तरह व्याप्त है कि जिधर देखो उधर ही इसका बोल-वाला है। माया की चकाचौंध मे सब अपने को भूल रहे हैं। हमारी प्रवृत्ति ही कुछ ऐसी बन गयी है कि मिथ्यात्व के सिवाय कुछ अच्छा लगता ही नहीं। स्वाध्याय ही ऐसा साधन है जिसके आलोक में हम अपने को पहचानकर मिथ्यात्व का त्याग कर सकते हैं। अपने को अपने मे पहिचानने के लिए स्वाध्याय अत्यन्त उपकारी है। जब आत्मशक्ति का विश्वास हो जाता है, अपने अनन्त शौर्य का भान होता है, तब प्राणी किसी के अधीन नही रहता—

सुख दुःख दाता कोई न आन,
मोह राग रुप दुःख की खान।
निज को निज पर को पर जान,
फिर दुःख का नहिं लेश निदान।

कहा गया है कि अनादिकाल से सम्भूत कषाय विषमग्रह है। जीवों के साथ कषाय अनादि मे लगी है। जब स्वरुप दृष्टि से देखते हैं, तभी अनन्त दुर्वार दुःख सम्पादन क्षमता वाले कषायों से मुक्ति मिल सकती है। आचार्य का उपदेश है—

तस्मात्प्रशममालम्ब्य क्रोधवैरी निवार्यताम्।
जिनागममहाम्भोधेरव गाहश्च सेव्यताम्॥

हे आत्मज्! शान्त भाव का अवलम्बन कर। क्रोध रुपी वैरी का निवारण कर और जिन आगम रुप महासमुद्र का अवगाहन कर, स्वाध्याय कर। स्वाध्याय के द्वारा शान्त भाव की प्राप्ति हो सकती है। श्रुत परम्परा के ज्योतिर्धर आचार्य हरिभद्र ने शास्त्र स्वाध्याय का महत्व इन शब्दो मे व्यक्त किया है

मलिनस्य यथात्यन्त जल वस्त्रस्य शोधनम्।
अन्तःकरणरत्नस्य तथा शास्त्र विदुर्बुधा॥

——

समाज और गुणी

श्री विवेक जैन

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल-जयपुर की प्रमुख प्रवृत्तियो मे एक प्रवृत्ति "समाज मे विद्वान चरित्रवान समाज सेवीयो का प्रतिवर्ष गुणी-अभिनदन करना भी शामिल है। यो स्पष्ट रुप से इस प्रवृत्ति का उल्लेख होना। इस मण्डल की विशेषता समझता हूँ। क्योकि यदा-कदा तो अभिनदन हर एक सस्था करती रहती हैं, पर इसे अपनी एक मुख्य प्रवृत्ति वताना दूसरी वात है। इसलिए मण्डल की यह घोषणाप्रशसनीय व अनुकरणीय है।

समाज के नव निर्माण, उन्नति व प्रभावना मे विद्वानो लेखको, साहित्यकारो, पत्रकारो, आविष्कारको उद्योग-पतियो, दानियो, चरित्रवान स्त्री-पुरुषो, का विशेष और दूसरे विशिष्ट गुणो के धारी स्त्री-पुरुषो का विशेष स्थान हैं। वे समाज की उन्नति मे सहायक होते है। समाज को नया पर्ण दर्शन करते हैं व देश मे उसकी प्रतिष्ठा बढाते हैं। समाज उनके ऋण मे कभी उऋण नही हो सकती। आज हमारे देश व समाज मे जो विभिन्न प्रकार की सस्थाए चल रही हैं, उनके सस्थापक उपर्युक्त प्रकार के महापुरुष ही थे। साहित्यकार व कवि आदि समाज को नया साहित्य नया चितन देते हैं। चरित्रवान स्त्री-पुरुष देश व समाज के सामने अपने उज्जवल चरित्र से नया प्रेरणा दायक उदाहरण स्थापित करते हैं। उनके सतसग व सम्पर्क मात्र से दूसरे आदमियो के जीवन मे नया मोड आ सकता हैं। उनका प्रभाव स्थायी होता हैं, क्योकि वह निर्मल चरित्र के धारक है। समाज सेवियो की वात तो अलग है। समाज सेवी तन-मन धन अपने अनुभव से समाज रचना के अनेक काम करते हैं। कभी-कभी वे समाज के अनेक विरोधो को सहकर भी नई क्राति लाते है। उनके कारण समाज मे वडे परिवर्तन होते हैं। समाज सुधारको व समाज सेवियो का मार्ग कितना कष्टपूर्ण विरोध पूर्ण होता है, उसे इतिहास के महान सुधारको के जीवन वृत्तात पढने से जाना जा सकता है। और जव यह सुधार धर्म की गली-सडी रूडियो व अध-विश्वासो के विरुद्ध होता है, तव तो समाज का दोष अनेक रुपो मे प्रकट होता है। मार्टिन लूथर, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर व श्री राममोहन राय आदि इस के प्रमाण है। जैन समाज मे समाज सुधारको व धर्म सुधारको को अनेक विरोधो का सामना करना पडा। पर वे अपने उद्देश्य से न डिगे।

इसलिए छोटे-वडे जो भी विद्वान साहित्यकार व चारित्रवान स्त्री पुरुष आदि है, उन सवका समाज पर वडा उपकार है।

अव प्रश्न यह होता है कि समाज का उनके प्रति क्या कर्त्तव्य है। जो समाज ऐसे महापुरुषो या विद्वानो आदि के कामो व सेवाओ से लाभ उठाता है, क्या उसका उनके प्रति कुछ कर्त्तव्य नही है? है अवश्य है। पर इस गुण ग्राहकता व प्रदानो के लिए समाज मे गुण ग्राहकता होनी चाहिए।

उर्दू भाषा का एक शेर है —

कद्र-ए-जट जरगर विदानद, कद्र-ए जौहरी,
कद्र-ए-गुल वुलवल सनाशद, कद्र-ए-अम्बर रा अली

अर्थात् सोने की कद्र सुनार जानता है हीरे जवाहारात की कद्र जौहरी जानता है, फूल की कद्र गुण वुल्वुल जानती है और इत्र की कद्र सुगन्धी जानता है।

इसी प्रकार विद्वानो, साहित्यकारो, समाज सेवियो, चारित्रवान व दूसरे महापुरुषो की कद्र इन गुणो के धारक स्त्री-पुरुप ही जान सकते हैं। इस कद्र दानी व गुण ग्राहकता की जाच पड़ताल के लिए सभा-सोसाइटियो की प्रवध समितिया अपनी उप समितिया प्रति वर्ष एक दो वार इन उपर्युक्त विशिष्ट स्त्री-पुरुपो के सम्मान-अभिनन्दन आदि की व्यवस्था कर सकती है। इस अभिनन्दन के भी अनेक रुप होते हैं। पुरस्कार, पदक, प्रशास्ति पत्र व अभिनन्दन पत्र आदि कुछ रूप है यदि विद्वान आदि आर्थिक सकट या शारीरिक कष्ट मे हैं, तो उनकी सहायता की जा सकती है। यदि उनके परिवार मे वालक-वालिकाएं या स्त्रिया किसी अभाव मे हैं, उन्हे आर्थिक सहायता की जरूरत है, तो वह भी दी जानी चाहिए।

सभा-सोसाइटिया भारत सरकार द्वारा दिये जाने वाले अनेक पुरस्कारो व पदको से प्रेरणा प्राप्त कर सकती हैं। यह काम केवल सरकार के वलवूते का नहीं है। समाज को सभा सोसाइटियो को भी इस काम को करना चाहिये।

सभा सोइटियो के अतिरिक्त समाज के दानी व गुण ग्राहक धनीयानी प्रतिष्ठित पुरुष अपने आस-पास शहर, कस्वे व प्रात आदि के विद्वानो, गुणियो, साहित्यकारो व समाज सेवियो आदि का मान-सम्मान व सहायता कर सकते है। यह सहायता विद्वानो व गुणियो के स्वाभिमान को ठेस लगाए विना, प्रदर्शन किये विना व गुप्त रुप से हो तो वडी अच्छी बात है। इस सहायता व अभिनन्दन आदि मे सकीर्णता-भेद भाव न होना चाहिये। साम्प्रदायिकता से ऊपर उठ कर समस्त जैन समाज को अपना क्षेत्र वनाना चाहिये।

अभी हमारे सामने पूज्य मुनि श्री विद्यानंद जी ने जैन समाज के साहित्यकारो, विद्वानो व कलाकारो के मान-सम्मान पुरस्कार की प्रवृत्ति 'मेरठ की वीर निर्वाण भारती' के द्वारा चलाई है। अब तक वीस से अधिक विद्वानो को ढाई-ढाई हजार रूपयेकी भेंट व प्रशस्ति पत्र व उपाधि से सम्मानित किया जा चुका है। पर यह काम केवल उसके सामर्थ्य का ही नही है और सस्थाओ को भी इस कार्य को करना चाहिये।

आवश्यकता इस बात की है, कि साम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर, वीर निर्वाण भारती मेरठ, के समान दूसरी सस्थाए भी इस प्रवृत्ति को आगे वढायें। यत्र-तत्र गुप्त काम से सहायता कार्य भी चलना चाहिये।

यह इतनी लाभदायक प्रवृत्ति है, कि उसका फल कालान्तर मे मालूम होगा। इस से गुणियो का मान-सम्मान तो होगा ही, साथ ही दूसरे आदमियो को भी आगे वढने की प्रेरणा मिलेगी।

✱

दो प्रेरक प्रसंग

श्री मोतीलाल सुराणा

(१) स्वाध्याय का प्रकाश—

अधकार ने गिडगिडाते हुए प्रार्थना की कि भगवान् ! प्रकाश आते ही सबसे पहले मुझे भगा देता है। अत: आप मुझे अपने पास रहने की आज्ञा दे दीजिये। मैं कहाँ-कहाँ मारा मारा फिरू ?

भद्र पुरुष ने कहा—एक बार हम प्रकाश से भी तो पूछलें कि क्या बात है ?

प्रकाश से जवाब तलब किया गया। भगाना तो दूर की बात, मैंने तो आज तक अधकार को देखा ही नही कि उसकी शकल-सूरत कैसी है—प्रकाश ने कहा।

सच है, जहाँ स्वाध्याय रूपी प्रकाश है वहा पाप रूपी अधकार का क्या कामो मोक्ष-मार्ग का प्रारभ स्वाध्याय से ही है।

(२) स्वाध्याय की सीख—

चप्पल टूट गई तो जूते वाले की दूकान पर गया। दस बीस जोडे देखे। किसी का चमडा हल्का तो किसी की बनावट कम सुन्दर। आखिर एक जोडा पसद किया। पाच रुपये की चप्पल पहनने वाले मैंने जोश-जोश मे बीस रुपये का बूट जोडा खरीद लिया।

घर आने पर परिग्रह ने नाच दिखाना शुरू किया। क्या पेण्ट अच्छा न खरीदोगे ? पेण्ट के लिये बात मानी तो कोट का नम्बर आ गया। पेण्ट अच्छा बूट नये तो क्या कोट फटे कालर का ? धीरे-धीरे इच्छाओ ने परिग्रह का साथ दिया तथा सभी कुछ नया खरीदने का मुझसे वचन ले लिया।

बाहर खडे स्वाध्याय (के ज्ञान) ने मुझे चुपके से बुलाया। बोला—परिग्रह तो दुख का कारण है। चुपचाप चप्पल पहन लो। बूट छोटे भाई को दे दो नही तो सहज मे परिग्रह के चारे लगकर सौ दो सौ के खर्च मे उतर जावोगे और नाहक कर्जदार बन जावोगे।

सच है, स्वाध्याय से जो ज्ञान प्राप्त होता है, उसके द्वारा हम सही मार्ग को जान सकते है।

दो कविता

श्री मोतीलाल सुराणा

स्वाध्याय से जानी बात—

तप से तो क्षय होते, पहले के किये पाप।
आत्मा है हलकी होती, आत्मा का हो विकास ।।
ऋद्धि देख दूसरों की, तप का जो नियाणा करे।
सोने की साँकल सा, तुच्छ फल प्राप्त करे ।।
धन मिले पुण्य से, पर सम्भव हो पाप करे।
केवल पाप क्षय की, गुणीजन इच्छा करे ।।
स्वाध्याय से जानी बात, बधन रहित बनने की।
साकल तो बधन है, चाहे हो सोने की ।।
नित जो स्वाध्याय करे, गुणों का खजाना मिले।
वीर की राह गहे, जीवन मे फूल खिले ।।

स्वाध्यायी पार गहे—

पीला पत्ता झडा झाड से,
दूर जमी पर जाय गिरा ।।
वय सम्पूरण हो जाते ही,
मानव जीवन खतम हुआ ।।
नदी पार कर ली है गौतम,
तट पर आ क्यो बैठ रहे ।।
क्षण भर का जो प्रमाद न हो,
तो स्वाध्यायी पार गहे ।।

द्वितीय खण्ड

स्वाध्याय संघ

एवम्

स्वाध्यायी परिचय खंड

> शास्त्र का बार-बार अध्ययन कर लेने पर भी यदि उसके अर्थ की साक्षात् स्पष्ट अनुभूति न हुई हो, तो वह अध्ययन वैसा ही अप्रत्यक्ष रहता है, जैसा कि जन्मान्ध के समक्ष चन्द्रमा प्रकाशमान होते हुए भी अप्रत्यक्ष ही रहता है।

स्वाध्याय संघ जोधपुर

* श्री सम्पतराज डोसी, संयोजक

स्वाध्याय की आवश्यकता और उपयोगिता :

जिस प्रकार भौतिक अर्थात् व्यावहारिक ज्ञान के अभाव मे व्यक्ति को गृहस्थ जीवन मे अनेक प्रकार की कठिनाइयो एव दुखो का सामना करना पडता है, इसी प्रकार आध्यात्मिक ज्ञान के अभाव मे भी व्यक्ति न इस जीवन में सुखी बन सकता है न उसको भवान्तर मे ही सुख की प्राप्ति होती है। आध्यात्मिक ज्ञान ही व्यक्ति और परिवार से लेकर विश्व भर मे सच्ची शान्ति एव वास्तविक सुख का सरल एव सुगम उपाय है।

जिस प्रकार व्यावहारिक ज्ञान के अभाव मे किया गया व्यापार, रसोई बनाना, रेल, मोटर आदि यंत्र चालन आदि प्रत्येक कार्य खतरे से मुक्त नही होता, उसी प्रकार आध्यात्मिक ज्ञान के अभाव मे की हुई क्रिया भी प्राय निरर्थक सी रहती है। इसी कारण शास्त्रकारो ने भी दशवैकालिक सूत्र के चौथे अध्ययन मे कहा 'पढम नाण तओ दया' परन्तु समाज मे ज्ञान के प्रति विशेष लगाव नही देखा जाता है। हजारो जैनियो मे सामायिक, प्रतिक्रमण जैसे सामान्य ज्ञान के जानने वाले भी प्राय बहुत कम मिलते हैं। श्रावक वर्ग मे शास्त्र के ज्ञाता, लेखक, वक्ता आदि तो बहुत ही कम पाये जाते हैं। इसी के फलस्वरूप जिन-जिन क्षेत्रो मे संत सतियो का विचरण नही होता है, वहाँ पर धार्मिक सस्कारो मे प्राय. कमी होती जाती है। इस कमी को दूर करने हेतु प्रातः स्मरणीय परम श्रद्धेय बाल ब्रह्मचारी आचार्य प्रवर १०८ श्री हस्तीमलजी म० सा० के सदुपयोग से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अन्तर्गत स्वाध्याय प्रचार की प्रवृत्ति स० २००२ से जोधपुर नगर मे चालू की गई, जिसके उद्देश्य निम्न है—

(१) भौतिकवाद की ओर अन्धाधुंधी से बढते हुए मानव समाज को सम्यग्ज्ञान द्वारा आध्यात्मिकता का सही दिग्दर्शन कराना।

(२) सामायिक एव समभाव के आचरण द्वारा मानव का नैतिक एव आध्यात्मिक जीवन ऊँचा उठा कर उसे इहलौकिक-पारलौकिक सच्चा सुख एव शान्ति प्राप्त कराना।

(३) जिनवाणी का विश्व भर मे प्रचार-प्रसार करना।

उपर्युक्त उद्देश्यो की पूर्ति हेतु स्वाध्याय सघ वर्तमान मे निम्न प्रवृत्तियाँ चला रहा है

(१) मानव मात्र मे आध्यात्मिकता के प्रचार-प्रसार हेतु स्वाध्यायी, धार्मिक अध्यापक, प्रचारक एव समाज सेवी कार्यकर्ता तैयार करना।

२) भारत के विभिन्न प्रान्तो मे मुनिराजो एव महासतियांजी के चातुर्मासो से वचित क्षेत्रो मे पर्वाधिराज पर्युषण के पावन प्रसग पर योग्य एव निपुण स्वाध्यायियों को भेजकर उन क्षेत्रो का सरक्षण करना।

(३) स्वाध्यायो, धार्मिक अध्यापको एव कार्यकर्ताओ को शास्त्रवाचन, भाषण, गायन आदि सभी प्रकार का प्रशिक्षण देने हेतु अलग-अलग प्रान्तो मे स्वाध्यायी एव धार्मिक प्रशिक्षण शिविर लगाना एव पत्राचार परीक्षा कार्यक्रम चलाना।

(४) नगर-नगर के घर-घर मे वालक वालिकाओ, नवयुवको, पुरुषों एवं महिलाओ मे स्वाध्याय द्वारा नवजागरण लाने हेतु स्थानीय शिविरो का आयोजन करना।

(५) देश-विदेश में जिनवाणी के प्रचार-प्रसार हेतु विशिष्ट स्वाध्यायियो मे से साधु एव गृहस्थ के मध्य का साधन एवं प्रचारक वर्ग तैयार करना।

(६) धर्म के व्यावहारिक जीवन मे प्रयोग कराने हेतु साधना शिविरो का आयोजन करना।

(७) ज्ञान एव क्रिया के मार्ग मे आगे वढाने वाले सत्साहित्य का प्रकाशन एवं वितरण करना।

(८) चल पुस्तकालयो द्वारा घर-घर मे धार्मिक साहित्य उपलब्ध कराकर स्वाध्याय की प्रवृत्ति को वढाना।

(९ सभी कार्यकर्त्ताओ के आपस में सम्पर्क एव परिचय वढाने हेतु स्वाध्यायी सम्मेलनो का आयोजन करना।

पर्युषण पर्व पर धर्म आराधना मे योगदान .

भारतवर्ष जैसे विशाल देश मे सैकडो गाव तथा नगर ऐसे हैं जहां संत एवं महासतियो के चातुर्मास तो दूर रहे, वर्षो तक उनके दर्शन भी दुर्लभ होते हैं। वहा पर रहने वाली जैन-अजैन जनता सच्चे और वास्तविक सुख के आधारभूत धर्म के श्रवण की जिज्ञासा रखने पर भी उन्हें कोई सुनाने या समझाने वाला नहीं मिल पाता। धर्म के प्रचार और प्रसार के लिए समाज प्राय सन्त-सतियो पर ही निर्भर रहता है। पहली वात तो यह है कि संत एव सती कोई विरले ही पुण्यवान आत्मा वनती हैं फिर उनका जीवन इतना त्यागमय होता है कि वे यत्र आदि वैज्ञानिक साधनो का प्रयोग नही करने के कारण चाहे जितना प्रचार-प्रसार नहीं कर सकते, परन्तु ये सव वाधाएँ गृहस्थो के लिए नही होतीं। गृहस्थ वर्ग अगर अच्छी धार्मिक जानकारी प्राप्त करले और पर्वाधिराज पर्युषण के अवसर पर अगर १०-१५ दिन का समय निकाल ले तो स्वय को भी घर छोड देने के कारण ज्यादा समय धर्म आराधना मे मिल सकता है तथा उनके निमित्त से छोटे-वडे अनेक क्षेत्रो मे रहने और उत्सुकता पूर्वक वुलाने वाले सैंकडो स्वधर्मी भाई-वहिनो, वालक-वालिकाओ को भी धर्म आराधना करवाने मे निमित्त वनकर जिन शासन रक्षा मे अपना अमूल्य योगदान देकर स्व और पर दोनो का हित साध सकते हैं।

सम्पूर्ण जैन समाज मे वर्ष भर मे चातुर्मास और चातुर्मास मे भी पर्युषण पर्व अपना विशेष महत्व रखता है। इस पर्व पर वच्चो से लेकर वृद्धो तक मे धार्मिक स्पर्धा एव उत्सुकता रहती है। धर्म प्रचार का समय भी इससे सुन्दर और कोई नही हो सकता।

स्वाध्याय सघ द्वारा सैकडो की सख्या मे स्वाध्यायी पजाव, उत्तर, प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाड, कर्नाटक आदि विभिन्न प्रान्तो के जलगाव, जामनेर, सरदार शहर, भूसावल, नागपुर, देहरादून, अलवर, सवाई माधोपुर, काधला, भरतपुर, गगापुर सिटी, मद्रास, बैंगलोर जैसे सैकडों हजारों जैन घरो की आवादी वाले क्षेत्रो मे तथा तमिलनाडु में उत्तरामेरूर, चिंगलपैट, तिरतनी, मेवाड, में वोहेडा, कुथवास दाता रासमी, सवाई माधोपुर मे टोक, देई, दूनी, चौथ का वरवाडा, अलीगढ, श्यामपुरा, आलनपुर, खातौली, मारवाड मे पालासनी, वावडी, धनारीकला आदि जैसे १५-२० जैन घरो की आवादी वाले क्षेत्रो में भी स्वाध्यायी भेजे जाते हैं। विकट भौगोलिक परिस्थिति वाले

क्षेत्र जैसे बाडमेर, साचौर, जालौर, बालोतरा आदि जहा कभी १०-१५ वर्षों मे भी चातुर्मास नही हो पाते वहा पर स्वाध्यायी हर वर्ष भेजे जाते हैं। प्राय जो भी क्षेत्र एक बार स्वाध्यायीयो को बुला लेता लेता है, फिर हर वर्ष जब भी वह क्षेत्र सत-सतियो के चातुर्मास से वचित रहता है, अवश्य स्वाध्यायीयो को बुला लेता है। क्षेत्र चाहे छोटा हो या बडा दूर हो या निकट, बुलाने पर हर सम्भव प्रयत्न करके स्वाध्यायी भेजे जाते हैं।

स्वाध्यायियो के जाने से उन-२ क्षेत्रो मे प्रात ५ बजे से लेकर रात्रि मे १० बजे तक विविध प्रकार के कार्यक्रम जैसे प्रार्थना, व्याख्यान, चौपाई, प्रतिक्रमण, प्रश्नोत्तर चर्चा आदि धार्मिक प्रवृतियो के साथ साथ सैंकडो हजारो सामायिके, दया, पोषध, एकासन, उपवास, वेले, तेले अठाई आदि तप एव त्यागपूर्वक धर्म साधना होती है, आडम्बर, फिजुलखर्ची, व आरम्भ-समारम्भ रहित इस विशेष रचनात्मक प्रवृति से विशुद्ध सस्कृति तथा क्षेत्रो के सरक्षण के साथ-साथ जिनवाणी का अच्छा प्रचार व प्रसार होता है।

स्वाध्यायियो की विशेष प्रेरणा से कई स्थानो पर बारह मास सामायिक स्वाध्याय की प्रवृतियो, कई स्थानो पर धार्मिक पाठशालाएँ स्थानीय शिविर आदि की भी प्रवृतियाँ चालू कराई जाती हैं: प्रत्येक स्वाध्यायी कम से कम से कम ९-१० दिन एव कई तो दूर दूर जाने वाले १५-२० दिन तक के लिए अपना काम धन्धा छोडकर या नौकरी आदि से छुट्टियाँ लेकर जाने से तथा नि शुल्क एव निस्वार्थ सेवाएँ देने से उन क्षेत्रो मे अच्छा प्रभाव पडता है। दृढ श्रद्धा, अच्छे धार्मिक ज्ञान तथा त्याग तप की विशेषता वालो अथवा अच्छे वक्ता एव गायक स्वाध्यायियो से तो जनता और भी अधिक प्रभावित होती है। स्वाध्यायियो को भी स्व के साथ-साथ पर के कल्याण मे निमित्त बनने से विशेष आनन्द व प्रोत्साहन मिलता है। प्राय हर स्वाध्यायी को पहली बार भेजने के लिए तैयार करने मे काफी कठिनाई रहती है क्योकि भाषण आदि का पूरा अभ्यास न होने से उनको भय रहता है कि हम व्याख्यान कैसे देंगे, पर एक बार जो पहले छोटे क्षेत्र मे चला जाता है फिर उनको बडा आनन्द आता है और बाद मे खुशी-2 जाते है। प्राय. हर नये स्वाध्यायी को पहले प्रशिक्षित एव अनुभवी स्वाध्यायियो के साथ भेजा जाता है किन्ही-किन्ही को दो पुरानो के साथ तीसरे नम्बर मे भी भेजा जाता है ताकि उनको सकोच या भय न रहे।

स्वाध्यायियो की योग्यता सम्बन्धी नियम :

(१) जो व्यक्ति देव अरिहत, गुरु निर्ग्रंथ एव केवली प्ररुपित दयामय धर्म के साथ शुद्ध आचार-परम्परा मे अटल विश्वास रखने वाला हो;

(२) जिस व्यक्ति को कम से कम सामायिक प्रतिक्रमण एवं पच्चीस बोल का ज्ञान हो एव अन्तगढ सूत्र का शुद्ध वाचन कर सके।

(3) जो सप्त कुव्यसन के त्याग के साथ बीडी, सिगरेट तथा खोटेमाप तोल व मिलावट करने का त्यागी हो।

(४) जो प्रतिदिन कम से कम २० मिनट स्वाध्याय करे।

५) जो यथा सभंव वर्ष मे कम से कम ८ दिन सेवा देने वाला हो।

पर्युषण पर्व पर सेवा सम्बन्धी नियम

(१) प्रत्येक स्वाध्यायी को सामायिक आदि के पूरे उपकरण अर्थात् धोती दुपट्टी, पूंजनी, आसन आदि साथ लेकर आना चाहिये।

(२) पर्युषण पर्व में किसी प्रकार का बहुमूल्य आभूषण या ज्यादा नगद अपने पास नही रखने चाहिए।

(३) पर्युषण मे हरी लीलोती व रात्रि भोजन का त्याग रखना चाहिये ।

(४) जहाँ तक हो सके दया, सवर, पोषध आदि मे रहना चाहिए ।

(५) पर्युषण या बाद मे भी इस निमित्त किसी प्रकार की निजी भेंट स्वीकार नही करनी चाहिये ।

(६) किसी भी सघ या सस्था का चन्दा चिट्ठा एव पुरानी वसूली आदि न करे ।

(७) व्याख्यान चौपाई के अलावा समय मे भी ज्ञान सीखने तथा दुर्व्यसनो के त्याग आदि करने की प्रेरणा करनी चाहिये ।

(८) नित्य प्रति सामायिक, स्वाध्याय, धार्मिक पाठशाला आदि तथा स्थानीय शिविर आदि की प्रेरणा करनी चाहिये ।

सवत् २००२ मे शुरु हुई यह प्रवृत्ति २०१५ तक अपने बाल्यकाल की तरह लडखडाती स्थिति मे चली और बद भी हो गई पर सवत् २०१६ अर्थात् सन् १९६०मे जयपुर मे इसे फिर प्रेरणा दी गई । श्रीमान् ऋषभराजजी ललवानी एव श्रीमान् सरदारचन्दजी सा० भण्डारी के सयोजकत्व मे इसके पैर मजबूत हुए, तब से प्रतिवर्ष विधिवत् स्वाध्यायी भेजे जाने लगे । निम्नाकित तालिका मे इस प्रवृत्ति की प्रगति दिखाई गई है —

सन्	क्षेत्र	स्वाध्यायियों की सख्या
१९६०	५	१०
१९६१	१८	३४
१९६२	१३	२८
१९६३	१३	२६
१९६४	९	१६
१९६५	६	१३
१९६६	६	१२
१९६७	१०	२०
१९६८	१२	२२
१९६९	११	२२
१९७०	१८	३२
१९७१	१९	३५
१९७२	४२	९५
१९७३	४७	९७
१९७४	५५	१०८
१९७५	८८	१८०
१९७६	१२६	२८१
१९७७	१२९	२८३
१९७८	१२४	२५६

विभिन्न प्रान्तो के जिन-जिन क्षेत्रो में स्वाध्यायी जा चुके हैं, वे निम्न प्रकार हैं —

महाराष्ट्र अमरावती, इगतपुरी, औरगाबाद, कन्नमसरा, खण्डाला, गोदिया, चालीसगाँव, जलगाव, जामनेर, ढाणकी, दोदवाडा, नन्दुरबार, नागपुर, परली, पाचोरा, फतेहपुर, भूसावल, बागलकोट, बाघली, बोरकुण्ड, भूसावल, मनमाड, मलकापुर, माधवनगर, वणी, (नाशिक) वणी (भवतमाल, बाकोद श्रीगोदा, सिंदखेडा ।

दक्षिण भारत : (तामिलनाडु, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश एवकेरल)अन्डरसन पेट,आवडी,उटकमण्ड, उत्तरामेरूर, कल्लाडीपेठ, कोयम्बटूर, गुडियात्तम, चिंगलपेट, टेडि-

यारपेट, तिडीवनम्, तिरतन्नी, तिरुपुर, पाडिचेरि, वागलकोट, बैंगलूर, वेलूर, मद्रास, मण्ड्या, मैसूर, यशवन्तपुर, वानमवाडी, विजयानगरम्, हैदराबाद, होस्पेठ, त्रिचनापल्ली ।

गुजरात पालनपुर

मध्य प्रदेश : आकोदियामण्डी, करजू, कसरावद, खण्डवा, खिरकिया, खेतिया, चारवा, छोटी कसरावद, जमुनियाकला, जावद, दानपुर, नृसिंगगढ, पाडल्या, पिपल्या बुजुर्ग, बलकवाडा, बागली, बागोद, बालाघाट, बैतूल, भोपाल, मनावर, महावीरनगर, महीदपुर, विरमावल, सारगपुर, सिंघनूर, सीतामऊ, सिवनी मालवा सिहोर, सुजालपुर, हरसूद, हाट पीपल्या ।

उड़ीसा केसिंगा ।

उत्तर प्रदेश . काधला, देहरादून ।

पजाब पट्टी

असम गोहाटी

मेवाड़ आकोला, आरणी, इण्टाली, कानवन, काकरोली, कुंथुवास, कुवारिया, खेडी, ख्वेदोदा, गडवाडा, मानसोल, गुडली, जिलूण्ड, गगापुर, घासा, चित्तौडगढ, छोटी भटवाडा, जाश्मा, डिडोली, दाता, दानपुर, नवाणिया, निकूम, निम्बाहेडा, पहुना, पाटोदी, पारसोली, पाण्डोली, पोटला, फतेहनगर, फलोचडा, बनेडिया, बासवाडा, बीनोता, वेगू, बेनोडिया, बोहेडा, भटवाडा, भदेसर, भादसोडा, भारडा, भीण्डर, भीमगढ, भूपाल सागर, मदार, महाराज की खेडी, मावली जक्शन, मोरवन, मोही, मगलवाड, धावागिरी, राश्मी, रूण्डेडा, रूद, रेलभरारा, लागच, शिवपुर, सरवाड, सिंगपुर, सिंगोली, सिंघनूर, सिन्धु, हथियोना और हरदा ।

मारवाड़ अजीत, आसोप, करलू, किशनगढ, कोसाणा, खाण्डप, खारीया, मीठापुर, खेतडीनगर, गोविन्दगढ, चोमहला, जज्ज, जयपुर, जालोर, जुड, जैतारण, दासपा, दुन्दाडा, धनारीकला, निमाज, पचभदरा, पाचू, पालासनी, पादू बडी, पीपाड़ सिटी, पींसागन, पीह, फालना, बडू, वागावास, बाडमेर, बालोतरा, बावडी, बिलाड़ा, भारण्डा, भावी, भोपालगढ, मथानिया, मेडता सिटी, रणसीगाव, रास, रोहट, लाडपुरा, लूणी, लोहावट, विसलपुर, सरदार पुरा, सरदारशहर, सागरियामण्डी, साचोर, सादडी, सारग, सालावास, सोजट सिटी और सोमेसर ।

सवाई माधोपुर क्षेत्र अलवर, अलीगढ, आदर्शनगर, आलनपुर, इन्द्रगढ, उखलाणा, उनियारा, एण्डवा, करमोदा, कुण्डेरा, कुस्तला, कंथूदा, कजोली, खट्टपुरा, खातोली, खिजूरी, खोह, गाडोली, गगापुर सिटी, चकेरी, चोथ का बरवाडा, चोरू, जरखोदा, जैनपुरी, टोंक, डागरवाडा, डेहरा, डेहरामोड, दूणी, देई, देवली, नेनवा, पचाला, पहरसर, पाटोली, पावाढेडा, पीपलवाडा, फलोदी क्वारीज, फाजिलाबाद, बगावदा, बणज्यारी, बरगवा, बावई, बारा, बीलोता, बूंदी, बेहतेड, भरतपुर, भेडोला, मई, महुआ, मण्डावर, मानटाउन वजरिया, मई, मोजपुर, मोहम्मदपुरा, रवाजना, रसीदपुर, रावल, लहसोडा, वजीरपुर, श्यामपुरा, समीदी, सवाई माधोपुर, सुमेरगजमण्डी, सूरवाल, हरसाना ।

स्वाध्यायी एव धार्मिक अध्यापक प्रशिक्षण शिविर

स्वाध्यायियो के ज्ञान, श्रद्धा व धर्म निरन्तर वृद्धि होती रहे इस हेतु तथा नये-नये स्वाध्यायी, धार्मिक अध्यापक प्रचारक आदि भी प्रतिवर्ष तैयार होते रहे इसलिए सघ द्वारा ग्रीष्मावकाश एव शीतकालीन अवकाशो मे विभिन्न प्रान्तो मे शिविरो का आयोजन किया जाता है ताकि उस प्रान्त के स्वाध्यायी आदि उसमे आसानी से भाग ले सकें। इन शिविरो मे अधिकाश कालेज स्तर के छात्र, अध्यापक एवं कई

नौकरी पैशे वाले तथा व्यापारी स्वाध्यायी भी भाग लेते हैं।

सुविधाएँ

शिविरो मे प्रत्येक स्वाध्यायी को आने-जाने का पूर्ण मार्ग व्यय, भोजन, आवास व्यवस्था एव धार्मिक साहित्य नि शुल्क दिया जाता है। सघ द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम की परीक्षाओ मे उत्तीर्ण होने पर तथा विविध प्रकार की अन्य योग्यताओ पर पारितोषिको से प्रोत्साहित भी किया जाता है।

शिक्षण व्यवस्था :

शिविरो मे विभिन्न कक्षाओ के पाठ्यक्रमो के साथ सामायिक, प्रतिक्रमण का शुद्ध उच्चारण, शास्त्र वाचन, कथा, चौपाई, थोकडे, व्याख्यान, भाषण आदि विविध प्रकार की तैयारी कराई जाती है। ५-७ या ९ दिन जैसे अल्पकालीन शिविर स्वाध्यायियो व धार्मिक अध्यापको के लिए वहुत उपयोगी होते हैं। इन शिविरो के माध्यम से हर एक व्यक्ति स्वाध्यायी, योग्य धार्मिक अध्यापक, सफल शिविर सचालक एव सुन्दर प्रचारक वन सकता है।

स्व-पर कल्याण के साथ अर्थोपार्जन भी :

खास तौर से अध्यापक एव सरकारी सेवा निवृत अथवा सेवारत व्यक्तियो व कालेज के नवयुवको के लिए वहुत उपयोगी होते हैं। धर्म एव समाज सेवा के लिए जितना समय उपर्युक्त वर्ग के व्यक्तियो को मिल सकता है उतना प्राय अन्य वर्ग को नही मिल पाता। इन शिविरो मे प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति पर्यु पण मे सेवा देने योग्य अच्छा स्वाध्यायी वन सकता है। वही व्यक्ति जहा कही रहता, वहाँ धार्मिक पाठशाला का सचालन कर सकता है। ग्रीष्मावकाश या अन्य अवकाश के दिनो मे प्रचार आदि का कार्य करने धर्म एव समाज सेवा के साथ आवश्यकतानुसार अर्थोपार्जन भी कर सकता है।

धार्मिक अध्यापकों की आवश्यकता

प्राय हर प्रान्त मे अनेको शहरो व गावो मे धार्मिक पाठशालाओ के लिये तथा स्थानीय शिविरो के लिएं धार्मिक अध्यापको की बहुत आवश्यकता रहती है। पढे लिखे व्यक्ति १–२ शिविर मे भाग लेने पर ही धार्मिक अध्यापक तो आसानी से वन सकते हैं। सरकारी कर्मचारी किसी गाँव या शहर मे रहता हो, वहा अपनी ड्यूटी के अलावा धर्म आराधना कराने मे सेवाएँ दे सकता है। साथ-साथ मे उचित अर्थोपार्जन भी कर सकता है।

सबसे बडा लाभ :

कुछ वर्षों से इन शिविरो मे एक विशेष कडी और भी जोडी जाती है, वह है धर्म को व्यावहारिक जीवन मे कैसे उतारा जाय। सरल उपायो से जीवन सुखमय कैसे बनाया जा सकता है, आज के युग में धर्म का वास्तविक स्वरूप जो प्राय लुप्त सा हो गया है उसका सही दिग्दर्शन क्रियात्मक रूप से सिखाया जाना है। इस कारण इन शिविरो की सख्या तथा इसमे भाग लेने वालो की संख्या भी प्रतिवर्ष बढती जाती है। सन् १९६८ से जहाँ-जहाँ स्वाध्यायी शिविर लगे, वे निम्न प्रकार हैं —

क्र० सं०	नाम स्थान	सन्	शिविरार्थी संख्या	अवधि से	तक
१	पाली	१९६८	१५	२३-१०-६९	३०-१०-६८
२	नागौर	१९६९	४८	२६-१०-६९	५-११-६९
३	जयपुर	१९७०	८९	२०- ५-७०	२८- ५-७०
४	आलनपुर	१९७१	२१	२१- ५-७१	५- ६-७१
५	सवाई माधोपुर	१९७२	५२	४- ५-७२	४- ६-७२
६	जोधपुर	१९७२	१४३	७- ६-७२	२१- ६-७२
७	कोटा	१९७३	९५	१०- ६-७३	२४- ६-७३
८	जयपुर	१९७३	३२	५-१०-७३	९-१०-७३
९	आलनपुर	१९७४	३०	९- ६-७३	२३- ६-७३
१०	सवाई माधोपूर	१९७४	४०	३-१०-७४	१०-१०-७४
११	सवाई माधोपुर	१९७४	३८	१०-१०-७४	१७-१०-७४
१२	अलीगढ	१९७५	११५	१४- ६-७६	२२- ६-७६
१३	कपासन	१९७५	५५	२४- ६-७५	२९- ६-७५
१४	ब्यावर	१९७५	५१	९-१०-७५	१६-१०-७५
१५	देई	१९७६	१३०	४- ६-७६	१३- ६-७६
१६	जाश्मा	१९७६	१००	२२- ५-७६	२६- ५-७६
१७	सिंगोली	१९७६	३५	१५- ६-७६	१७- ६-७६
१८	मानटाउन	१९७७	४१	३१-१२-७६	२- १-७७
१९	कपासन	१९७७	८२	१७ -६-७७	२२- ६-७७
२०	श्री महावीरजी	१९७७	१७५	१९- ६-७७	२३- ६-७७
२१	भूपाल सागर	१९७८	४०		
२२	इन्दौर	१९७८	१४३	२२-१०-७८	२६-१०-७८

महिला स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर :

गत ३ वर्षों से जोधपुर मे स्थानीय कालेज स्तर की छात्राओ का भी शिविर लगाया जाता है जिसके फलस्वरूप महिला समाज में भी अनेको वहिनें तथा महिलाएँ स्वाध्यायी वनी। समाज के उत्थान मे महिलाओ का बडा योगदान रहता है। भावी पीढी की संरचना मे महिलाओ का बडा महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस कारण अगर नवयुवतियों व प्रौढ महिलाओ का जीवन आदर्श वन पाता है तो ही समाज के उज्ज्वल भविष्य की आशा की जा सकती है। देई, श्री महावीरजी एवं इन्दौर के शिविरों मे महिलाओ ने भी भाग लिया।

धार्मिक पाठशालाएँ :

सघ की ओर से जहाँ-जहाँ भी स्वाध्यायी पर्युषण मे सेवाएँ देने जाते हैं, वहाँ के सघो की वालक-वालिकाओ मे धार्मिक सस्कार डालने हेतु धार्मिक पाठशालाओ को चलाने की प्रेरणा के फलस्वरूप अनेको स्थानो पर धार्मिक पाठशालाओ के चलाने मे भी अध्यापको की सेवाओ का व कही आर्थिक आदि सहयोग भी दिया जाता है।

सवाई माधोपुर क्षेत्र मे कई पाठशालाएँ सुव्यवस्थित रूप से चलती हैं। अनेक क्षेत्रो से धार्मिक अध्यापको की मागे आती हैं, परन्तु कुछ तो सुयोग्य

अध्यापकों की कमी के कारण तथा कुछ सिर्फ धार्मिक अध्यापन के लिए अध्यापकों का खर्च समाज के लिए भारी पडता है, परन्तु जिन-जिन क्षेत्रों मे सरकारी मुलाजिम जैनी हो, वह अगर धार्मिक योग्यता रखता हो तो, आसानी से पाठशालाएँ चल सकती हैं।

स्थानीय शिक्षण शिविरो की उपयोगी योजना।

जिन-जिन गावो व शहरों मे धार्मिक अध्यापकों की कमी के कारण अथवा किसी अन्य कारण से धार्मिक पाठशाला नही चल पाती, उन-उन क्षेत्रो मे स्थानीय ग्रीष्मावकाश अथवा शीतकालीन अवकाशो मे १०-१५ दिन अथवा महीने भर का स्थानीय शिविर लगाना अति लाभदायक होता है। इस योजना मे सघ की ओर से जो भी क्षेत्र धार्मिक अध्यापक बुलाना चाहते हैं, उनको योग्य अध्यापक भेजे जाते है। अध्यापको को जाने-आने का व्यय तथा १०-१५ तक प्रतिदिन के हिसाव से पारिश्रमिक भी दिया जाता है। जो सघ स्वय खर्चा वहन कर सकते हैं वो स्वय करते हैं वरना सघ की ओर से भी अध्यापक भेजे जाते हैं। अवकाश के दिनो मे वालक-वालिकाओ के समय के सदुपयोग के साथ-साथ उनमे धार्मिक सँस्कार डालने की दृष्टि से यह योजना अत्यन्त लाभ-प्रद है। अन्य वाहर के शिविरो की अपेक्षा इन शिविरो मे निम्न विशेष लाभ होते हैं—

(१) उसी गाव या शहर के शिविरार्थि होने से उनके लिए भोजन व आवास की व्यवस्था का भारी खर्चा नही करना पडता।

(२) छात्रो को आने-जाने का मार्ग व्यय तथा भोजन आवास का आरम्भ-समारम्भ भी वच सकता है।

(३) स्थानीय होने से छोटी-वडी बालिकाएँ भी भी भाग ले सकती हैं।

(४) उसी स्थान के शिविरार्थी होने से शिविर के वाद मे भी उनसे सम्पर्क रखना आसान होता है।

(५) अवकाश के दिनो मे लगने से अध्यापक भी उपलव्ध हो सकते हैं तथा पढाई की तैयारी भी अच्छी हो सकती है। जहाँ भी स्थानकवासियो के २५-३० घर हो, वहाँ स्थानीय शिविर लग सकता है। धार्मिक पाठशाला के लिए इतने अध्यापक उपलव्ध होने तथा उनके मासिक खर्चे का भार वहन करना कठिन होता है, परन्तु एक महीने के शिविर मे ७-८ घटे रोज पढाई होने से लगभग १२ मास तक १-१ घटे रोज पढने जितनी तैयारी हो सकती है। इस प्रकार के शिविरो की माग प्रति वर्ष वढती जा रही है। आरम्भ-समारम्भ से रहित और कम खर्चे की इस सस्ती सुन्दर और टिकाऊ योजना से समाज अत्यन्त लाभान्वित हो रहा है। विगत वर्षों से निम्न स्थानो पर स्थानीय शिविर लगाये गये। इस नई प्रवृत्ति का शुभारम्भ सर्व प्रथम जोधपुर, अलीगढ और श्यामपुरा मे प्रशिक्षण शिविर लगाकर किया गया जिसमे भारी सफलता प्राप्त हुई। इसके वाद स्थानीय शिविरो का कार्य चालू रखा व निम्न स्थानो पर स्थानीय शिविर लगाये गये—

क्र सं	नाम स्थान	अवधि से	अवधि तक	शिविरार्थी सख्या
१	जोधपुर	४- ५-७२	४- ६-७२	५५
२	जोधपुर	१७- ५-७३	३- ६-७३	४०
३	अलीगढ़	३०- ९-७३	४-१०-७३	३८
४	श्यामपुरा	३०- ९-७३	४-१०-७३	३५

क्रम सं	नाम स्थान	अवधि से	अवधि तक	शिविरार्थी संख्या
५	जोधपुर	२२- ५-७४	९- ६-७४	५९
६	सवाई माधोपुर	२८- ५-७४	४- ६-७४	५०
७	भरतपुर	२८- ५-७४	५- ६-७४	७८
८	आलनपुर	२८- ५-७४	४- ६-७४	५०
९	गगापुर सीटी	२८- ५-७४	४- ६-७४	४५
१०	फाजिलावाद	२८- ५-७४	४- ६-७४	२५
११	अलीगढ	२८- ५-७४	४- ६-७४	१७
१२	श्यामपुरा	२८- ५-७४	४- ६-७४	३१
१३	नवाणिया	१४-११-७४	१७-११-७४	२५
१४	गगापुर सिटी	२४-१२-७४	३१-१२-७४	४५
१५	वोहेडा	२५- ३-७५	२९- ३-७५	४५
१६	वरगवा	१- ६-७५	१०- ६-७५	३३
१७	डेहरामोड	२९- ५-७५	६- ६-७५	२७
१८	पहरसर	२९- ५-७५	६- ६-७५	२७
१९	फाजिलावाद	२८- ५-७५	९- ६-७५	१७
२०	भरतपुर	२८- ५-७५	६- ६-७५	८३
२१	दूनी	२९- ५-७५	७- ६-७५	२९
२२	कन्जोली	३०- ५-७५	८- ६-७५	३२
२३	अलवर	२- ६-७५	१७- ६-७५	२०
२४	जोधपुर	३- ७-७५	२०- ७-७५	५५
२५	गगापुर	२४- ७-७५	२९- ७-७५	४०
२६	धारियावास	१०- १-७५	१२- १-७५	२०
२७	शेखपुरा	२१- ५-७६	३०- ५-७६	२०
२८	डेहरामोड	१९- ६-७६	२८- ६-७६	३०
२९	फाजिलावाद	२१- ५-७६	३०- ५-७६	३०
३०	गगापुर सीटी	२१- ५-७६	३०- ५-७६	१८
३१	पहरसर	२०- ६-७६	२८- ६-७६	२०
३२	वीलोता	२२- ५-७६	३०- ५-७६	२२
३३	वरगवा	२१- ५-७६	३०- ५-७६	३५
३४	कजोली	२१- ५-७६	३०- ५-७६	३५
३५	दूनी	२२- ५-७६	३०- ५-७६	१७
३६	डेहरा	२१- ५-७६	३०- ५ ७६	१५

क्रम स	नाम स्थान	अवधि से	तक	शिविरार्थी सख्या
३७	जोधपुर	१०- ६-७६	४- ६-७६	४५
३८	खोह	२२- ५-७७	३१- ५-७७	२३
३९	सुमेरगजमन्डी	२४- ५-७७	२- ६-७७	१८
४०	शेरपुर	२१- ५-७७	२७- ५-७७	३६
४१	टेहरा	२६- ५-७७	१- ६-७७	१४
४२	फाजिलावाद	९- ५-७७	२७- ५-७७	२३
४३	गगापुर सिटी	२२- ५-७७	३१- ५-७७	३७
४४	दूनी	२२- ५-७७	३१- ५-७७	३६
४५	खोह	८- ६-७८	१६- ६-७८	२६
४६	फाजिलावाद	६- ६-७८	१४- ६-७८	११
४७	भरतपुर	९- ६-७८	१५- ६-७८	२५
४८	चोरू	११- ६-७८	२६- ६-७८	२५
४९	वरगवा	९- ६-७८	१५- ६-७८	३५
५०	पहरसर	६- ६-७८	१४- ६-७८	२३
५१	खेतडी नगर	२०- ५-७८	१५- ६-७८	३८

साधक सघ की स्थापना :

सरकारी सेवा अथवा व्यापार आदि से निवृत विशिष्ठ स्वाध्यायियो को स्वय की साधना मे विशेष रूप से आगे वढाकर तथा जिनवाणी के प्रचार-प्रसार एव शासन की सेवा मे विशेप समय का भोग दे सकने वाले, साधु एव गृहस्थ वर्ग के बीच के ऐसे साधक वर्ग की समाज मे काफी समय से अत्यन्त आवश्यकता एव परम उपयोगिता महसूस की जाती रही थी। प्रचार-प्रनार मे सहायक विविध साधनो का उपयोग करके यह साधक वर्ग देश के सुदूर प्रान्तो व विदेशो तक मे सुगमता से प्रचार-प्रसार कर सकता है। काफी वर्षो से विचाराधीन इस योजना को भी १९७६ में आचार्य श्री के सानिध्य मे तीन वैरागिन बहिनो के भागवती दीक्षा के महान् शुभ प्रसग पर भोपालगढ में दिनाक ८-४-७६ को क्रियात्मक रूप देकर स्वाध्याय सघ के अन्तर्गत साधना-विभाग के रूप मे साधक सघ की स्थापना की गई तथा श्रीमान् चादमल जी सा कर्नावट एम ए, एम एड उदयपुर निवासी, इसका सयोजन कर रहे हैं।

उद्देश्य :

(१ साधक वर्ग मे साधना, सेवा एव स्वाध्याय की प्रवृत्ति को विकसित करने के लिए समुचित व्यवस्था करना।

(२) पूज्य साधु-साध्वीजी एव गृहस्थ समुदाय के बीच का एक साधक वर्ग तैयार करना जो सामान्य गृहस्थ से अधिक त्यागमय जीवन बिताते हुए देश-विदेश में जैन धर्म का प्रचार-प्रसार कर सके।

(३) समाज एवं धर्म के लिए साधक वर्ग की सेवाएँ उपलब्ध करना।

इस प्रवृत्ति को मण्डल के तत्वावधान मे कार्यरत स्वाध्याय सघ के अन्तर्गत साधना विभाग के नाम से

रखा गया, परन्तु व्यवस्था की दृष्टि से इसका अलग गठन किया जा रहा है, जिससे स्वाध्याय सघ के वढते हुए कार्यक्रम के संचालन मे असुविधा न हो।

साधकों की सामान्य आचार संहिता

साधक विभाग की संचालन व्यवस्था की रूपरेखा प्रस्तुत न करने से पूर्व साधको की सामान्य आचार संहिता का उल्लेख किया जा रहा है। इस सहिता के लिखित सभी नियमो का पालन करना प्रत्येक साधक के लिए आवश्यक होगा। साधक आचार सहिता निम्नलिखित है।

(१) देव अरिहत, गुरू निग्र थ एव केवलीपरूपितदयामय धर्म मे आम्था रखना एवं तदनुसार प्रवृत्ति करना। मिथ्या देवो की मान्यता न रखना।

(२) सप्त कुव्यसनो का त्याग करना।

(३) धूम्रपान का त्याग करना।

(४) प्रतिदिन नियमितरूपेण एक सामायिक करना। विशेष कारणवश प्रतिदिन सामायिक न कर सकने की दशा में महीने ३० मे सामायिक कर लेना।

(५) जीवन मे प्रामाणिकता का निर्वाह करना।

(६) पर स्त्री का त्याग रखते हुए मर्यादित ब्रह्मचर्य का पालन करना।

(७) यथासम्भव रात्रि भोजन का त्याग करना करना एव प्रतिदिन तीन मनोरथ और चौदह नियम चिंतवन करना।

(८) विभाग द्वारा आयोजित साधना शिविर मे यथासम्भव भाग लेना।

साधकों की श्रेणियां .

साधना के आधार पर साधको की तीन श्रेणियाँ बनाई गई है—

(१) साधक (२) विशिष्ट साधक (३) परमसाधक

साधक :

यह साधको की प्रथम या प्रारम्भिक श्रेणी होगी। साधक वे होंगे जो.—

(१) देव अरिहत, गुरु निग्रन्थ एव केवली परूपित दयामय धर्म मे आस्था रखेंगे और तदनुसार प्रवृत्ति करेंगे और मिथ्या देवो की मान्यता नही रखेंगे।

(२) साधको की सामान्य आचार सहिता का पालना करेंगे।

(३) श्रावक के पाच अणुव्रतो को धारण करें।

(४) प्रतिमाह १ अथवा वर्ष मे १२ दया, उपवास या पौषध करेंगे।

(५) जो वर्ष मे २० दिन या प्रतिमाह ४ दिन का समय सुविधानुसार धर्म प्रचार साधना, एव समाज सेवा के लिए देंगे।

(६) प्रतिदिन नियमित रूप से एक सामायिक करेंगे, जिसमे ३० मिनट स्वाध्याय एव १० मिनट आत्मचिंतन मे अवश्य लगायेंगे।

(७) प्रति दिन नियम धारण करके क्रोधादि कषायो को विजय करने का प्रयत्न करेंगे।

(८) जो स्वाध्याय सघ द्वारा निर्धारित स्वाध्यायियो के प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम का अध्ययन कर लेंगे और साधना विभाग द्वारा निर्धारित साधना की प्रारम्भिक जानकारी प्राप्त करेंगे।

विशिष्ठ साधक वे होंगे जो :

(१ साधको के लिए निर्धारित सामान्य आचार सहिता का पालन करेंगे।

(२) श्रावक के १२ व्रतो को धारण करेंगे।

(३) प्रतिदिन १ घण्टा साधको की (सामान्य आचार सहिता मे निर्धारित 1 सामायिक के अतिरिक्त) सामायिक साधन एव चिन्तन देंगे।

(४) माह मे २ या वर्ष मे २४ दया, उपवास या पौषध करेंगे।

(५) तिविहार का त्याग रखेंगे।

(६) साधक की सामान्य आचार सहिता मे ग्रहण की हुई मर्यादित ब्रह्मचर्य पालन की सीमा मे और वृद्धि करेंगे। माह मे कम से कम २५ दिन ब्रह्मचर्य का पालन करेंगे।

(७) वर्ष मे एक माह का समय एक साथ या सुविधानुसार साधना, समाजसेवा एव धर्म प्रचार मे देंगे।

(८) सात्विक, सरल एव सादा जीवन विताते हुए साधना मे अग्रसर होगे और प्रतिदिन नियम धारण करके कषाय विजय का प्रयास करेगे।

(९) अपनी दैनिक डायरी मे साधना, स्वाध्याय एव सेवा का विवरण रखेंगे।

(१०` स्वाध्याय सघ द्वारा स्वाध्यायियो के लिए द्वितीय वर्ष के निर्धारित पाठ्यक्रम का अध्ययन करेंगे।

परम साधक वे होंगे जो

(१) साधकों के लिए निर्धारित सामान्य आचार सहिता का पालन करेंगे। विशेष यथाशक्य सचित्त खानपान नही करेंगे।

(२) पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत धारण करेंगे।

(३) अपने गृहस्थ जीवन से लगभग पूर्ण निवृत होगे और नाम मात्र के लिए ही परिवार से सम्बन्धित रहेगे।

(४) जीवन मे साधना स्वाध्याय और सेवा मे ओत-प्रोत रहेंगे तथा स्वाध्याय सघ द्वारा स्वाध्यायियो के लिए निर्धारित तृतीय एव चतुर्थ वर्ष का अध्ययन पूर्ण कर लेंगे।

(५) चोविहार का त्याग करेंगे।

(६) समाजसेवा, साधना एव धर्म प्रचार के लिए साधना विभाग की आवश्यकतानुसार अधिकाधिक समय देंगे या जीवनदानी होंगे।

साधना शिविरो का आयोजन :

स्वाध्याय के माध्यम से प्राप्त ज्ञान जब तक जीवन मे नही उतरता, तब तक वह विशेष आनन्द-दायक एव स्व-पर कल्याणकारक भी नही होता। आज धर्म मात्र रूढ क्रियाओं मे ही समझ लिया गया।वर्षो से सुनने व धर्म साधना करने वालो का व्यवहारिक जीवन प्राय जहाँ का तहाँ ही रह जाता है। वर्षो से अपरिग्रह का उपदेश सुनने पर भी आज धन की दौड मे कौन पीछे रहता है। वर्षों से क्रोध नही करने की वात सुनने व भगवान् महावीर, गजसुखमाल जी आदि का दृष्टान्त सुनने वाले व्यक्ति के जीवन मे क्षमा कितनी प्राप्त होती है। आज धर्म सिर्फ स्थानको मे करने की क्रिया मात्र रह गया। व्यवहारिक या घरेलू जीवन मे उसका कोई उपयोग नही रहा। इस कारण धर्म से जो सुख और शान्ति इस जीवन मे मिलनी चाहिये व अन्यो पर जो प्रभाव पडना चाहिये, वह नहीवत् ही पडता है। इन सब कमियो के निवारण हेतु साधना विभाग के अन्तर्गत साधना शिविरो का आयोजन भी भी इस वर्ष से शुभारम्भ कर दिया गया। पहला शिविर २९-५-७६ से १-६-७६ तक जोधपुर मे लगा जिसमे २१ साधको ने भाग लिया। दूसरा शिविर अगस्त में वालोतरा व तीसरा ३०-९-७६ से २-१से-७६ तक भी वालोतरा मे सम्पन्न हुआ। इन शिविरो मे ध्यान, मौन, समभाव, प्रतिदिन के जीवन मे किस तरह वढता रहे, इसका अभ्यास करने का प्रशिक्षण दिया गया। डॉ० नरेन्द्र भानावत एम०ए०पी०एच०डी०, श्रीमान् नथमल जी हीरावत, श्रीमान् चांदमलजी कर्नावट, श्रीमान् कन्हैयालालजी लोढा, श्रीमान् जसकरणजी डागा जैसे विद्वान् साधको ने स्वय इन शिविरो मे-भाग

लेकर, अन्य साधको को मार्ग दर्शन एव सहयोग प्रदान किया। अब तक ३५ साधको ने इसकी सदस्यता स्वीकार की तथा पर्युषण के अलावा १० दिन से लेकर कईयो ने २ महीने तक नि शुल्क सेवा देने की स्वीकृति प्रदान की। इन साधको के नैतिक एव व्यवहारिक जीवन मे भी धर्म का साक्षात्कार कराकर साधना क्षेत्र मे विशेष आगे बढकर तथा विभिन्न प्रान्तो मे जाकर प्रचार-प्रसार करने का प्रशिक्षण देने हेतु वर्ष मे कम से कम दो बार साधना शिविरों का आयोजन करना निश्चित हुआ।

धर्म प्रचार योजना

जोधपुर मे साधना शिविर के तुरन्त पश्चात् ही साधको के तीन दल प्रचारार्थ भेजने का भी निश्चय किया गया और तदनुसार एक दल मे श्रीमान् चन्दनमलजी सा. भूतपूर्व विधायक म० प्र०, श्री नवरत्नमल जी डोसी एव श्री मोहनराजजी चामड जोधपुर दिनाक २४-६-७६ से ३०-६-७६ तक मध्य प्रदेश इन्दौर, आष्टा, देवास, मक्सी, शाजापुर, आकोदिया मण्डी, शुजालपुर, ब्यावरा, भोपाल, सिहोर आदि १२ क्षेत्रो मे पधारे और उन क्षेत्रो मे प्रचार किया। दूसरे दल मे श्रीमान् मोतीलाल जी सुराणा इन्दौर, श्रीमती सुशीला बोहरा, तथा श्री मगराज जी सा कुम्भट जोधपुर ने भी मध्य-प्रदेश मे बडवाह, पिपलिया, करही, मण्डलेश्वर, महेश्वर, धमनोद, कसरावद, गोपालपुर, खरगोन, उज्जैन रतलाम, सैलाना आदि १८ क्षेत्रो मे प्रचार किया। तीसरा दल श्रीमान् चौथमलजी जैन मान-टाउन वालो के नेतृत्व मे ७ व्यक्तियो का दल पल्लीवाल क्षेत्र मे गया जिन्होने गगापुर' महुआ, रसीदपुर, जटवाडा, वागल, मण्डावर मण्डी, विचगाव, हरसाना, व भोजपुर इन १० क्षेत्रो मे प्रचार किया। इसी तरह तीनो दलो ने कुल ४० क्षेत्र सम्भाले जिससे कई क्षेत्रो मे धार्मिक जागृति आई, कई मे स्वाध्यायी बुलाये गये, कई क्षेत्रो मे स्वाध्याय की प्रवृत्ति चालू हुई। कुछ नये स्वाध्यायी कार्यकर्ता भी बनाये गये। इस प्रकार यह योजना भी अतीव लाभप्रद सिद्ध हुई। इसके अलावा भी श्रीमान् सुजानमल जी मेहता, निर्देशक सवाइ माधोपुर शाखा, श्री कल्याणमल जी, श्री लल्लूलाल जी जैन और श्री मागीलाल जी आदि ने भी पोरवाल, पल्लीवाल आदि क्षेत्रो को सभाला व प्रचार किया। इनमे अधिकाश क्षेत्र ऐसे हैं जो साधु सतो के चौमासे से तो दूर रहे, 10-10, 15-15 वर्षों तक जिन्हे उनके दर्शन भी नही होते। ऐसे अभी सैकडो क्षेत्र अनेको प्रान्तो मे शेष हैं जिनको सभालना अत्यन्त आवश्यक है। इस साधक वर्ग का प्रमुख उद्देश्य अपनी साधना के साथ-साथ ऐसे क्षेत्रो का और स्वधर्मी बन्धुओ का सरक्षण करना भी है जिन्हे साधु वर्ग नही सभाल पाता।

जोधपुर मे चल पुस्तकालय

घर-घर मे स्वाध्याय की रुचि जागृत करने हेतु जोधपुर नगर मे चल पुस्तकालय की व्यवस्था का शुभारम्भ भी 1976 मे पोप सुदी 14 को किया गया। सघ की ओर से घर-घर मे प्रति सप्ताह नई-नई पुस्तको को पहुँचाया जाता है, जिससे घर के सभी सदस्य उन पुस्तको का लाभ उठाते है। विविध सस्थाओ द्वारा प्रकाशित जीवनोपयोगी हजारो रुपयो का नया साहित्य खरीद एव वितरण कर, घर-घर मे स्वाध्याय की प्रवृति को बढाया गया। लगभग 250 परिवार वर्तमान मे इस योजना से लाभान्वित हैं। सघ की योजना है कि प्रत्येक जैन घर को इस योजना से लाभान्वित किया जाय। जासूसी गंदे उपन्यासो के स्थान पर, ऐसे सत् साहित्य का जीवन पर बडा सुन्दर प्रभाव पडता है। बडे-बडे शहरो में अगर सब जगह ऐसी व्यवस्था हो तो कितना सुन्दर प्रचार हो सकता है।

पूज्य श्री दौलतराम जैन पुस्तकालय :

आचार्य श्री के सवाँई माधोपुर चातुर्मास मे यह पुस्तकालय आजकल मानटाउन बजरिया में चल रहा है। इस पुस्तकालय मे अनेक महत्वपूर्ण सदर्भ ग्रन्थ, पत्रिकाओ की वार्षिक फाइलें जिनमे धर्म, दर्शन, समाज, राजनीति, शिक्षा एव इतिहास आदि अनेक विषयो की पुस्तकें सग्रहीत हैं। प्रारम्भ मे इस पुस्तकालय को श्री कपूरचन्दजी एव श्री चौथमलजी ने विकसित किया और आजकल स्वाध्याय सघ के अन्तर्गत चल रहा है।

अत्यन्त उपयोगी व प्रभावशाली साहित्य का प्रकाशन व वितरण

सघ द्वारा प्रकाशित 'स्वाध्याय स्तवन माला' जो कि प्रत्येक स्वाध्यायी एव प्रत्येक गाव के लिए घर-घर मे उपयोगी सिद्ध हुई, द्वितीयावृति की 2000 पुस्तकें भी समाप्त हो चुकी हैं। इसकी तृतीयावृति भी प्रकाशित हो चुकी है। दो वर्षों मे 4000 प्रतियों की खपत इसकी आवश्यकता और उपयोगिता का सवल प्रमाण है। इनकी चतुर्थ आवृति की भी तैयारी चल रही है। उसमे और भी अच्छे स्तवन, आलोयणा आदि जोडने की योजना है तथा इसके अलावा सामायिक सूत्र एव प्रवेशिका परीक्षा पाठ्यग्र थ, सिरिअन्तगडदशाओ, जैन स्वाध्याय देनन्दिनी 1979, उत्तराध्ययन सूत्र (पद्यानुवाद और आचार्य प्रवर के ब्यावर, जयपुर, वालोतरा, अजमेर के पर्यु षण के व्याख्यानो का श्री गजेन्द्र व्याख्यानमाला भाग 1-2-3-4 के रूप मे प्रकाशन हुआ है। पाथर्डी, सैलाना, आगरा, बीकानेर, ब्यावर एव पडित विनयचंद जी म सा के साहित्य की अनेक पुस्तकें आदि भी स्वाध्यायियो को उपलब्ध करायी गई जिससे उनकी वक्तृत्व कला मे और जीवन सुधार मे विशेष योगदान मिला है। सघ हजारो रुपये का साहित्य प्रतिवर्ष स्वाध्यायियो को व अनेक सघो को नि शुल्क भेंट करता है।

आर्थिक परिस्थितियां :

सघ की प्रत्येक प्रवृत्ति आडम्बर, फिजूल खर्ची अथवा विशेष आरम्भ-समारम्भ से रहित साथ ही सामायिक और स्वाध्याय जैसी महान् सवर-निर्जरा की क्रियाओं से ओत-प्रोत है। ऐसी महान रचनात्मक प्रवृतियो की आवश्यकता और उपयोगिता को देखते हुए सघ का खर्च बिलकुल नगण्य है। जैसे-जैसे प्रवृतियो का विस्तार व उत्तरोत्तर नई-नई महान् उपयोगी प्रवृतियों का शुभारम्भ होता जा रहा है, त्यों-त्यों सघ के अत्यन्त आवश्यक एव न्यूनतम होते हुए भी खर्च का वढना स्वाभाविक है। हालाकि पर्यु षण मे सेवा देने हेतु शिविरो मे अध्ययन हेतु आने, प्रचार-प्रसार मे जाने आदि सभी प्रवृतियो मे स्वाध्यायी अपना बहुमूल्य समय नि शुल्क देते हैं परन्तु सैकडो कार्यकर्ताओ के उपर्यु क्त प्रवृतियो मे आने-जाने का मार्ग व्यय, भोजन, आवास का अथवा साहित्य आदि का खर्च तो देना संघ का भी नैतिक कर्तव्य हो जाता है। वैसे तो अन्य समाजो मे एक एक कार्यकर्ता, प्रचारक तैयार करने के लिए सैकडो हजारो के खर्च की भी परवाह नही की जाती, पर इस सघ ने अल्पतम खर्च मे एक दो नही वरन् पिछले पाच वर्षो मे लगभग 500 नये स्वाध्यायी एव कार्यकर्ता तैयार किये हैं।

आर्थिक स्थिति मे सहयोग हेतु सर्व प्रथम सन् 1971 मे अकेले श्रीमान् उमरावमल जी साहब सेठ ने अपने सद् प्रयत्नो से ₹51-00 रुपये पाच वर्ष तक प्रतिवर्ष देने वाले 51 सदस्य बनाये। पाच वर्षों मे सघ ने आशातीत प्रगति की व अनेक नई प्रवृतियाँ भी चालू की। सन् 1971 मे जहा मात्र 75 स्वाध्यायी थे वहा अब 537 है। इसी प्रकार सन् 71 तक जहा मात्र 15-20 क्षेत्रो मे स्वाध्यायी भेजे जाते, वहा अब 125-150 मे भेजे जाते हैं। प्रतिवर्ष लगभग 100 स्वाध्यायी व कार्यकर्ता बढते जाने से सघ का खर्च भी लगभग 10 हजार रुपया प्रतिवर्ष बढ़ता

गया। इस हिसाब से एक नये स्वाध्यायी को बनाने, उसको प्रशिक्षण देने व उससे विविध प्रकार की वर्ष भर सेवाएँ लेने का खर्च मात्र 200 रुपये आता है जो विल्कुल नगण्य है। सभी तरह की प्रवृतियो के विस्तार व नई-नई प्रवृतियो का शुभारम्भ इन कार्यकर्ताओ की उपलब्धि से ही तो हो पाया है। सघ की अनेक नई प्रवृतियो उगते हुए पौधे के समान हैं। इनको निभाने और वढाने के लिए सघ की आर्थिक स्थिति को मजवूत करना अव अत्यन्त आवश्यक हो गया है। स्वाध्याय सघ के लिए एक पैसे का भी रिजर्व फण्ड नही है तथा सन् 71 मे 5 वर्ष के लिए जो 251-00 रुपये के 51 सदस्य वने, वे भी सन् 1975 तक के लिए ही थे।

जन साधारण मे प्राय यह धारणा रहती है कि स्वाध्यायी जिन क्षेत्रो मे जाते है, उन क्षेत्रो से सहायता आ जाती है, फिर चन्दे की आवश्यकता ही क्या रहती है? इसका स्पष्टीकरण करना भी अत्यन्त आवश्यक हो जाता है। पहली वात तो जैमे इस वर्ष 129 क्षेत्रो मे स्वाध्यायी गये। उनमे से मात्र 50 क्षेत्रो से सहायता प्राप्त हुई। दूसरी वात प्रति वर्ष 100-150 नये स्वाध्यायी वनाने के लिए कितना प्रचार-प्रसार, स्वाध्यायियो की योग्यता वढाने हेतु प्रशिक्षण शिविरो का आयोजन, एक स्वाध्यायी को अगर 10 रुपये का साहित्य भी प्रति वर्ष दिया जाय तो कम से कम 5000/- खर्च हो सकते हैं। इसके अलावा भी धार्मिक पाठशालाएँ स्थानीय शिविर, साधना शिविर, साधको का प्रचार खर्च, विभिन्न प्रमुख क्षेत्रो मे शाखाओ का संचालन खर्च, प्रचारको का खर्च आदि आवश्यक एवं न्यूनतम होते हुए भी कार्य के विस्तार से अव यह कम से कम 70-80 हजार प्रतिवर्ष तो हो ही जाता है। सभी महान् रचनात्मक प्रवृतियो की ओर गहराई से चिन्तन किया जाय तो प्रतिवर्ष सैकडो क्षेत्रो के हजारो लाखो लोगो को स्वाध्याय और विविध धार्मिक क्रियाओ मे सहयोग दिया जाता है और उनमे अधिकाश ऐसे क्षेत्र हैं, जहा साधु मुनिराज वर्षों तक नही पधार पाते हैं। सही अर्थ मे जैन सस्कृति के सरक्षण, प्रचार व प्रसार की यही एक महान् रचनात्मक योजना है, जिससे व्यक्ति का स्वय के साथ पर का भी कल्याण होता है। यही भगवान् महावीर की व उनके शासन की सच्ची सेवा है।

सघ के लिए अव 2-3 लाख का रिजर्व फण्ड एव अगले पाच वर्षों के लिए कम से कम 251-00 प्रति वर्ष के हिसाव से पाच वर्ष तक देने वाले कम से कम 200 दानी सदस्य वनाना अति आवश्यक है। सघ ने रिजर्व फण्ड के लिए 5001-00 एक मुक्त मे या 1000 प्रति वर्ष देकर भी पूरा करने वाले स्तभ, 2501-00 रुपये देने वाले सरक्षक, 1001-00 रुपये देने वाले आजीवन सहायक सदस्य। इसी प्रकार पाच वर्ष तक 501-00 देने वाले दानवीर, 251-00 रुपये देने वाले दानी एव 101-00 रुपये देने वाले सहायक सदस्य वनाने की योजना रखी है। आशा है, इस योजना मे आप सवका आत्मीयता पूर्वक उदार सहयोग मिलेगा।

२५१-०० रुपये प्रतिवर्ष देने वाले १९७१ से १९७५ तक के दानी सदस्यों की सूची

१ श्रीमान सम्पतसिंहजी सा भाडावत जोधपुर
२ ,, पूरणराजजी सा अवाणी ,,
३ ,, डा. कल्याणमलजी सा लोढा ,,
४ ,, धनराजजी विरदीचंदजी सुराणा ,,
५ ,, हुकमीचद सा एडवोकेट ,,
६ ,, सोहननाथजी सा मोदी ,,
७ ,, श्रीकृष्णमलजी सा लोढा ,,
८ ,, थानचदजी सा. मेहता ,,
९ ,, खेमचदजी सा मेहता ,,
१० ,, डा. शिवनाथचदजी सा. मेहता ,,
११ ,, मुन्नीमल सा सिंघवी ,,
१२ ,, सोभागमलजी सा. डागा ,,
१३ ,, नथमलजी सा गोलिया ,,
१४ ,, अमृतमलजी सा मेहता ,,
१५ ,, उदयराजजी पीरचदजी चोरडिया ,,
१६ ,, वाफना दाल मिल ,,
१७ ,, जालमचंदजी रिखबचदजी बफाना भोपालगढ
१८ ,, धोकलचंदजी सुकनचदजी ओस्तवाल ,,
१९ ,, अशोककुमारजी कुम्भट मद्रास
२० ,, कल्याणमलजी कवलमलजी चोरडिया ,,
२१ ,, कैलाशचन्द्रजी सा दुगड ,,
२२ ,, शा भीवराजजी रेखराजजी अजमेर
२३ ,, सम्पतमलजी लोढा ,,
२४ ,, उमरावमलजी ढढ्ढा ,,
२५ ,, श्रीलालजी सम्पतराजजी कावड़िया ,,
२६ ,, शा. मानमलजी विजेराजजी सिंघवी ब्यावर
२७ ,, हस्तीमलजी मनोहरमलजी वालिया ,,
२८ ,, विजयराजजी चौधरी ,,
२९ ,, पुनमचदजी सा वरडिया अहमदाबाद
३० ,, छोटमलजी सूरजमलजी गाग ,,
३१ ,, पृथ्वीराजजी सा कवाड़ मद्रास
३२ ,, सूरजमलजी सा. मेहता बी ए. अलवर
३३ ,, प्यारचदजी सा. राका सैलाना
३४ ,, शा हस्तीमलजी केसरीमलजी पाली
३५ ,, मदनचदजी सा मेहता उमरगाव
३६ ,, नवरत्नमलजी सा राका जयपुर
३७ ,, सरदारमलजी सा. चौपडा ,,
३८ ,, टीकमचदजी सा. हीरावत ,,
३९ ,, हरीचदजी हीरावत ,,
४० ,, नारायणदासजी मेहता ,,
४१ ,, नथमलजी कीर्तीचदजी ढढा ,,
४२ ,, नथमलजी सा हीरावत ,,
४३ ,, जीवनसिंहजी उग्रसिंहजी बोथरा ,,
४४ ,, अनोपचद सिरेमलजी बम्ब ,,
४५ ,, गोपीचदजी उमरावमल सेठ ,,
४६ ,, पूनमचदजी वडेर ,,
४७ ,, श्रीचंदजी गोलेछा ,,
४८ ,, पदमचदजी प्रेमचदजी हीरावत ,,

स्वाध्याय संघ के पंचवर्षीय दानवीर सदस्य ५०१-०० रुपये देने वालो की नामावली

१ श्रीमान हसराज सा इन्दरचद सा भण्डारी मद्रास
२ ,, मोहनमल सा प्रसन्नचद दुगड ,,
३ ,, कैलाशमल सा सुरेशमल सा दुगड़ ,,
४ ,, अशोककुमारजी सा कुम्भट ,,
५ ,, कनकमल सा चोरडिया ,,
६ ,, पृथ्वीराजजी सा कवाड ,,
७ ,, उमरावमलजी सा. सुराणा ,,
८ ,, सुमनकुमारजी सा कुम्भट ,,
९ ,, ज्ञानराजजी अवाणी सेवा ट्रस्ट जोधपुर
१० ,, सुकनचंद एण्ड सन्स ,,
११ ,, चम्पालालजी धारीवाल पाली
१२ ,, मागीलालजी प्रकाशचदजी रूणवाल मैसूर
१३ ,, लुणकरण पुखराज एण्ड कम्पनी, कोयम्बतूर

स्वाध्याय संघ के दानी सदस्य २५१-०० रुपये देने वालों की नामावली

१ श्रीमान रिखबचदजी काकरिया मद्रास
२ ,, प्रकाशमलजी चोरडिया ,,
३ ,, भूमरमजी सा वाघमार ,,
४ ,, सुमेरमल सा चोरडिया ,,
५ ,, गजराज सा. मुथा ,,
६ ,, सुमेरमलजी उम्मेदमलजी लुणावत ,,
७ ,, एस लालचदजी वाघमार ,,
८ ,, घीसूलालजी हुक्मीचदजी वाघमार ,,
९ ,, गणेशलालजी चम्पालालजी सेठिया ,,
१० ,, रेखचदजी खिवसरा ,,
११ ,, अनराजजी चोरडिया ,,
१२ ,, मागीचदजी मोहनलालजी वाघमार ,,
१३ ,, गणपतलालजी सुराणा ,,
१४ ,, पारसमलजी शिखरचदजी ,,
१५ ,, सोनराजजी भवरलालजी वाघमार ,,
१६ ,, अनराजजी पारसमलजी पन्नालालजी वेलेचरी मद्रास
१७ ,, प्यारेलालजी कोठारी पहाडी मद्रास
१८ ,, रतनलालजी प्रकाशचदजी कोठारी तामरम, मद्रास
१९ ,, श्रीकृष्णमल सा लोढा जोधपुर
२० ,, हुकमीचद सा जैन ,,
२१ ,, उषा मेहता पुत्री श्रीपारसमलजी रेड ,,
२२ ,, मुन्नीमल सा सिंघवी ,,
२३ ,, सायरचद सा काकरिया ,,
२४ ,, चचलमल सा चोरडिया ,,
२५ ,, मिश्रीमल सा भवरलाल सा चोपडा ,,
२६ ,, कुन्दनमल सा भसाली ,,
२७ ,, माणकचदजी किशनलालजी ओस्तवाल ,,
२८ ,, मोहनराजजी असन्तराजजी भसाली ,,
२९ ,, नथमलजी मुल्तानमलजी मेहता ,,
३० ,, पुखराजजी पारसमलजी गिडिया जोधपुर
३१ ,, जैन स्टूडियो मेहता मार्केट ,,
३२ ,, डा सम्पतसिह सा भांडावत ,,
३३ ,, उदयराजजी पीरचदजी चौरडिया ,,
३४ ,, खेमचदजी सा मेहता ,,
३५ ,, रतन एण्ड कम्पनी ,,
३६ ,, सुगनचदजी लोढा ,,
३७ ,, सायरचदजी किशोरमलजी वाफना ,,
३८ ,, जवरीमलजी सुजानमलजी सचेती ,,
३९ ,, सोहनलालजी सुजानमलजी सचेती ,,
४० श्रीमती कमला सचेती धर्मपत्नि श्री गणपतलालजी जोधपुर
४१ ,, शोभागमलजी डागा ,,
४२ ,, मिश्रीमलजी नरपतराजजी चोपडा ,,
४३ ,, सरस्वती दालमिल, भोपालगढ वाले ,,
४४ ,, वस्तीमलजी सुमेरमलजी वाफना ,,
४५ ,, विजय दाल मिल ,,
४६ ,, किशोरमलजी पटवा ,,
४७ ,, अनिल मेहता ,,
४८ ,, मगीवाई दीपचदजी राका ,,
४९ ,, मीमकवर धर्मपत्नि श्री शोभचदजी सर्राफ ,,
५० ,, वक्शीरामजी भवरलालजी जैन बालोतरा
५१ ,, ओगडमलजी गोमचदजी सालेछा ,,
५२ ,, मोहनलालजी मुलतानमलजी भसाली ,,
५३ ,, लालचदजी नवलमलजी श्रीश्रीमाल ,,
५४ ,, भडारी खीवराजजी मलूकचदजी ,,
५५ ,, मीठालालजी जेसलमलजी मधुर ,,
५६ ,, दलीचदजी सिरेमलजी तातेड ,,
५७ ,, चम्पालालजी दोलतरामजी पाटोदी वाला ,,
५८ ,, मोतीलालजी दीपकुमारजी ,,
५९ ,, प्रेमचदजी धनराजजी चोपडा ,,

२०१-००

६० ,, सावनमलजी बुधमलजी वाघमार बालोतरा
२०१-००

६१ ,, धींगडमलजी रूपचदजी जीरावला ''
२०१-००

६२ '' विरदीचदजी नरसिंहमलजी ''
सालेच्छा २०१ ००

६३ '' घेवरचदजी दाती ''
२०१-००

६४ '' भगवतजी मुल्तानमलजी हुण्डिया ''
२०१-००

६५ ' मिश्रीमलजी जेसमलजी गोटी ''
२०१-००

६६ '' धनराजजी गरगपतमलजी दाती ''
१५१-००

६७ '' फनेहराजजी भवरलालजी नागौर

६८ '' मोतीमलजी उम्मेदमलजी सुराणा ''

६९ '' मोतीलालजी भीकमचदजी
ओस्तवाल भोपालगढ

७० '' जितेन्द्रकुमारजी एडवोकेट दिल्ली

७१ '' विजयमल तेजमन मेहता अहमदावाद

सहायक दानी सदस्य १०१-०० रुपये

१ श्रीमान भवरलालजी चम्पालालजी वोथरा मद्रास
२ '' एच रिखवराजजी वाघमार ''
३ '' एच चुन्नीलालजी बाघमार ''
४ '' गणपतलाल सा. चौधरी जोधपुर
५ '' सायरचदजी सा. रेड ''
६ '' मागीलालजी राका ''
७ '' इन्द्रमल सा रेड ''
८ '' उम्मेदचद सा सिंघवी ''
९ '' कचनदेवी पत्नि श्री जगमोहनलालजी
सुराणा जयपुर
१० '' रेखचदजी सायरमलजी रामपुरीया
बालोतरा
११ '' माणकलालजी चम्पालालजी
सालेच्छा ''
१२ '' परसरामजी माणकलाल चोपडा ''
१३ '' सोहनराजजी गोतमचदजी भसाली ''
१४ '' दीपचदजी सुराणा नागोर
१५ '' सूरजमलजी जावतराजजी पालासनी
१६ '' जोहरीमलजी प्रकाशमलजी राका ''
१७ '' भवरलालजी पोकरणा नवाणिया
१८ ,, वसन्तीलालजी सेठिया रतलाम
१९ '' मगराजजी कुम्भट जोधपुर
२० '' पारसमलजी चोरडिया उज्जैन



पढमं नाणतओ दया, एवं चिट्ठइ सव्व संजए ।

प्रथम ज्ञान फिर आचरण,

इसी प्रकार सब सयमी व्यवहार करते हैं ।

स्वाध्यायियों का परिचय

१ श्री सरदारमल जी मुणोत (किशनगढ़) :— आयु ५० वर्ष आप अच्छे समाज के कार्यकर्त्ता तथा श्रावक सघ किशनगढ के मत्री हैं। आप स्वाध्याय-सघ को अपनी सेवायें लाडपुरा, जैतारण, बुड़ेरा, जलगाव, जामनेर, महीदपुर, वासवाडा, पाचौरा, सारगपुर, चौथ का वरवाडा, भीडर आदि क्षेत्रों मे पधार कर दी है।

२. श्री नेमीचन्द जी मूथा (पीपाड) - आयु ४६ वर्ष। आप किराणा के व्यापारी और अच्छे सगीतज्ञ हैं। आपने रणसी गाव, दुन्दाडा, कोसाणा, गगापुर, बागसी पधार कर स्वाध्याय सघ को सेवाएँ दी है।

३ श्री झबरचन्द जी कोठारी (पीपाड) —आयु ५२ वर्ष। सोने-चांदी के व्यापारी, आप पीपाड श्रावक सघ के मत्री हैं एव जलगाव, मिचनापल्ली पधारकर स्वाध्याय सघ को सेवा दी है।

४ श्री ताराचन्द जी मेहता (पीपाड़) :—आयु ६२ वर्ष। हिन्दी संस्कृत, मारवाडी, प्राकृत आदि भाषाओ के ज्ञाता है। आपका शास्त्रीय-अध्ययन भी अच्छा है। पदपदरा, पाचोरा, खेजडला, कोसाणा, सोमेसर पधारकर स्वाध्याय-सघ को अपनी सेवाएँ दी हैं।

५ श्री राजेन्द्रकुमार जी कोठारी (पीपाड़) — आयु २५ वर्ष। किराणा के व्यापारी। स्वाध्याय प्रेमी है। पर्युषण पर्व मे वाकोड व आकोदिया पधारकर सेवा दी है।

६ श्री ललित कोठारी (पीपाड़) —आयु २२ वर्ष। किराणा के व्यापारी। स्वाध्याय मे अच्छी रुचि रखते हैं। पर्युषण में वागली व शुजालपुर मे सेवाएं दी है।

७ श्री इन्दरचन्द जी कोठारी (पीपाड) —आयु २१ वर्ष। किराणा के व्यापारी। स्वाध्याय प्रेमी हैं। पर्युषण पर्वमे पाचोराव वणी मे धर्मा राधन कराया है।

८. श्री प्रकाशचद जी कोठारी (पीपाड) —आयु २२ वर्ष। आप उदीयमान स्वाध्यायी हैं। पर्युषण पर्व मे कोसाना, वेंगू, सोमेसर पधारकर सेवा दी है।

९ श्री गौतमचंद जी कटारिया (पीपाड़) — आयु २० वर्ष। आपकी धार्मिक रूचि सराहनीय हैं। सुजालपुर में धर्माराधना कराया है।

१० श्री पुखराजजी कांकरिया (भावी) —आयु ५५ वर्ष। वर्तमान मे आप बोरडी (महाराष्ट्र) मे व्यवसायरत हैं। आपकी सेवा सराहनीय है। आपने हरसोद, निकुम आदि क्षेत्रो मे पधार कर सेवा दी है।

११. श्री पारसमल जी खिवसरा (बिलाडा) — आयु ४५ वर्ष। आप बिलाडा श्री सघ के अध्यक्ष हैं। आपकी धार्मिक रूचि व सेवा भाव सराहनीय है।

आपको थोकडो व शास्त्रों का अच्छा ज्ञान है। पर्युषण पर्व मे वेगू पधार कर सेवा दी है।

१२ श्री बालचदजी पालोचा (दुन्दाडा) :— आपको समाज सेवा की धुन है। सामाजिक व धार्मिक कार्यो मे सदैव आगे रहते है। आपका कठ मधुर है। तत्वो का अच्छा ज्ञान है। पर्युषण पर्व मे दुदाडा आदि क्षेत्रो मे पधार कर सेवाए दी है। वयोवृद्ध होते हुए भी आप कर्मठ कार्यकर्ता हैं। आपका उत्साह सराहनीय है।

१३ श्री बुधमलजी झामड (मेडता सिटी) :— आयु ४५ वर्ष। व्यवसायी एव कर्मठ कार्यकर्ता हैं। रास, सारगपुर पधारकर धर्माराधना कराया है।

१४ श्री धर्मचद जी नागौरी (फालोड) :— आयु २४ वर्ष। B Sc उत्तीर्ण जैन सिद्धान्त विशारद हैं। आप शिविरो, छात्रालयो, पाठशालाओ मे धार्मिक शिक्षण के कार्य मे पूर्ण सफलता प्राप्त की है। आपकी समाज सेवा व साधना मे विशेष रुचि हैं। आपका उत्साह व लग्न सराहनीय है।

१५ श्री धर्मचदजी कटारिया (रणसीगाव) — आयु ३६ वर्ष। व्यवसायी एवं स्वाध्याय-प्रेमी हैं। रणसीगांव व दुन्दाडा मे धर्माराधना कराया है।

१६ श्री रतनलाल जी डुगड (जैतारण) — व्यवसायी हैं। आपको शास्त्रो का अच्छा ज्ञान है। अच्छे समाज सेवी हैं। रणसीगाव, पादू, गोविन्दगढ आदि नगरो मे पधारकर सेवा दी है।

१७. श्री घीसूलाल जी बाघमार (कोसाणा) :— आयु ४८ वर्ष। आप सफल व्यवसायी एवं अच्छे समाज सेवी कार्यकर्त्ता हैं।

१८ श्री चांदमल जी मसाली (जालोर) —जन्म-स्थान जोधपुर। आयु २६ वर्ष। कपडे के व्यापारी हैं। आपको लगभग ३५ थोकडो का ज्ञान है। शास्त्रो के भी आप अच्छे ज्ञाता है। आपकी धार्मिक अध्ययन मे विशेष रुचि है। जोधपुर, जालोर, सिवाना, पीपाड पधार कर सेवा दी है।

१९. श्री घीसूलाल जी हींगड़ (आकोला)— आयु २३ वर्ष। B Com उत्तीर्ण हैं। आपको ४० थोकडो का ज्ञान है एव शास्त्रो मे अच्छी रुचि है। आप सगीत के विशेष प्रेमी एव सेवाभावी है। वर्तमान मे उटकमण्ड मे जैन पाठशाला मे धार्मिक अध्यापन मे कार्यरत हैं। बुद्धि तीक्ष्ण है। पर्युषण पर्व मे उत्तरामेरूर, तिरुनी, जामनेर उटकमड, होस्पेट मे पधारकर सेवा दी है।

२० श्री पारसमल जी बाफणा (भोपालगढ़) — आयु ५४ वर्ष। धर्मरत्न परीक्षा उत्तीर्ण हैं। अच्छे धार्मिक जानकार है। स्वाध्याय सघ के पुराने स्वाध्यायियो मे से एक हैं। आपने अपने जीवन का अधिकाश समय समाज-सेवा के लिए अर्पित कर दिया है। आप श्री जैन रत्न विद्यालय के मत्री व कोषाध्यक्ष भी रह चुके हैं। कोसाणा, इगतपुरी, सगनूर, सारगपुर, तिरुपुर, जामनेर आदि नगरो मे पधार कर स्वाध्याय-सघ को अपनी विशेष सेवाऐ अर्पित की हैं।

२१ श्री सुगनचन्द जी ओस्तवाल (भोपालगढ)— आयु ५६ वर्ष। आप सरल स्वभावी हैं। वर्तमान मे श्री जैन रत्न विद्यालय भोपालगढ के मत्री हैं। अच्छे कार्यकर्त्ता हैं। आपने इगतपुरी, जालोर, धनारी, बाडमेर पधार कर धर्माराधन कराया है।

२२ श्री सुगनचद जी बाफणा (भोपालगढ) — आयु ५५ वर्ष। आप दाल मिल के मालिक और कपडे के व्यापारी हैं। अच्छे सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। पर्युषणो मे कोसाणा, भोपालगट, निवाज, सलामवास मे पधार कर सेवा दी है।

२३. श्री सपतराज जी बाफणा (भोपालगढ़) — आयु ३६ वर्ष। व्यवसायी हैं। आप अच्छे वक्ता,

समाज-सेवी एवं स्वाध्याय मे विशेष रुचि रखने वाले हैं। आप धनारी, वैतूल, सारगपुर, कोसाणा, जलगांव, भिंडर, फालना भुसावल आदि नगरो मे पधार कर स्वाध्याय-सघ को अपनी सेवा दी हैं।

२४ **श्री गुदडमल जी कांकरिया (भोपालगढ़)**— आयु ३० वर्ष। व्यवसायी एव अच्छे सगीतज्ञ हैं। आपने सरवाड, सिधनूर, गोदिया, हरसूद पधार कर स्वाध्याय-संघ को अपनी सेवा दी हैं।

२५ **श्री किस्तूरचद जी बाफणा भोपालगढ़)**— आयु ३२ वर्ष। जैन सिद्धान्त विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण है। आप अच्छे संगीतज्ञ व समाज-सेवी हैं। तथा जैन रत्न विद्यालय के मत्री पद पर कार्य कर रहे है। सालावास, भूसावल, देहरादून आदि क्षेत्रो मे पधार कर सेवा दी है।

२६ **श्री राजमल जी ओस्तवाल (भोपालगढ)**— आयु ४७ वर्ष। व्यवसायी, अच्छे सगीतज्ञ व सफल वक्ता हैं। श्री रत्न जैन छात्रावास भोपालगड के गृह-पति रहे हैं। जालोर, जलगांव, वाडमेर, खँडवा पधारकर स्वाध्याय-सघ को अपनी सेवा दी है।

२७ **श्री नेमीचद जी करणावट (भोपालगढ़)**— आयु २८ वर्ष। B Com B ed उत्तीर्ण एव अच्छे सगतीज्ञ हैं। आपने सफलता पूर्वक धार्मिक शिक्षण-सस्याओ का सचालन किया है। श्री जयमल जैन छात्रावास मेडता मिटी के आप अधीक्षक रहे हैं। आपकी सेवा सराहनीय है। इगतपुरी, कोसाणा, सिंधनूर, गोविन्दगढ,उटकमड मे धर्माराधन कराया है।

२८. **श्री सुभाषचन्द मुण्डीवाल (भोपालगढ)** — आयु २८ वर्ष। B Com एव अच्छे सगीतज्ञ हैं। स्वाध्याय के प्रति अच्छी रूचि है। सागरिया मडी, फतहपुर, दानपुर पधारकर धर्माराधन कराया है।

२९. **श्री प्रकाशचद जी हुण्डीवाल (भोपालगढ)** आयु २४ वर्ष। अभी आप जैन छात्रावास कुचेरा मे गृहपति पद पर हैं। स्वाध्याय में विशेष रुचि है। आपने गोहाटी मे धर्माराधन कराया है।

३० **श्री कमल किशोर काकरिया (भोपालगढ़)**— आयु १७ वर्ष। उत्साही वाल स्वाध्यायी हैं। लाडपुरा पधार कर सघ को सेवा दी है।

३१ **श्री सुभाषचंद जी पारख (भोपालगढ)**— आयु १७ वर्ष। आप उत्साही स्वाध्याय प्रेमी है। खडवा पधारकर सघ को सेवा दी है।

३२ **श्री प्रकाशचद जी ओस्तवाल (भोपालगढ़)** आप स्वाध्याय प्रेमी है। आपने वागली व तिरूपुर पधार कर सेवा दी है।

३३ **श्री गौतमचद जी ओस्तवाल (भोपालगढ)** आयु १७ वर्ष। आप सक्रिय स्वाध्यायी श्री राजमल जी ओस्तवाल के सुपुत्र हैं। आपने पर्युषण पर्व मे दासपा पधार कर अपनी सेवायें दी है।

३४. **श्री हस्तीमलजी रेड (पाली)** आयु ५८ वर्ष। आप व्यवसायी है। आपको थोकडो व सूत्रो का अच्छा ज्ञान है। आप धार्मिक शिविरो का आयोजन वडी सफलता पूर्वक करते हैं। आप वडे ही सेवा-भावी, मधुर-स्वाभावी एव निवृत्ति-प्रधान भावना वाले महानुभाव हैं। शिक्षण शिविर समिति जोधपुर के मत्री हैं एव धार्मिक क्रिया के प्रति विशेष रूचि है। आपने रोहट, सालावास, जाशमा, गिलूण्ड पधार कर सघ को सेवा दी है।

३५. **श्री चपालालजी धारीवाल (पाली)** — आयु ४७ वर्ष आप व्यवसायी हैं। आप अच्छे सामाजिक कार्यकर्ता एव सगीतज्ञ है। आप की सघ-सेवा सराहनीय है। आपने वालाघाट, मलकापुर, फतेहपुर, उटकमड पधारकर सेवा दी है।

३६ **श्री जेठमल जी श्री श्रीमाल (पाली)**— आयु ४५ वर्ष। आप लगभग ४० थोकडो के जानकार है। शास्त्र स्वाध्याय मे भी विशेष रुचि हैं। अच्छे वक्ता एव सगीतज्ञ हैं। आपने रोहट, कोयम्बटूर, वेंगलोर पधारकर अपनी सेवायें प्रदान की है।

३७ **श्री घीसीलाल जी तातेड (पाली)**—आयु ४५ वर्ष। आप अच्छे सगीतज्ञ व कथाकार हैं। आप

वर्षो से स्वाध्याय-सघ को अपनी सेवाये दे रहे हैं। आपने मालावाम, वालोतरा, भूपालसागर, वाडमेर, आदि नगरो मे पधार कर सघ को सेवा दी है।

३८ श्री सुखलाल जी तातेड़ (पाली) —आयु १९ वर्ष मर्गाने के व्यापारी हैं। थोकडो का अच्छा ज्ञान है। रोहट, मनमाड आदि स्थानो पर सघ को सेवा दी है।

३९ श्री अमृतलाल जी मूथा (पाली) — आयु १८ वर्ष। आपकी स्वाध्याय मे विशेष रुचि है। सालवास वर्णी, भदेसर, पधार कर सघ को सेवा दी है।

४०. श्री नेमीचद जी वोहरा (पाली) —आयु २५ वर्ष। आपकी स्वाध्याय मे विशेष रुचि है। वागावान, जाम्मा, गिलूण्ड आदि क्षेत्रो मे सघ को सेवा दी है।

४१ श्री माणक चदजी चोपडा (पाली) आयु ४० वर्ष आपको थोकडो का अच्छा ज्ञान है एव स्वाध्याय मे विशेष रुचि है। अटरसनपेट पधार कर सेवा दी है।

४२ श्री प्रकाशचद जी जैन कटारिया (पाली) आयु ७० वर्ष। कपडे के व्यवसायी है। स्वाध्याय मे विशेष रूचि रखते है। भुसावल, भदेसर मे अपनी सेवायें दी है।

४३ श्री आनन्दराज जी तलेसरा (पाली) — आयु २१ वष। आप C A कर रहे ह। आपकी धर्म के प्रति अच्छी रुचि है। त्रिचनापली, मलकपुर आदि क्षेत्रों मे सेवा दी है।

४४. श्री मोहनलाल जी मूथा (पाली) —आप सेवाभावी, स्वाध्याय प्रेमी एव तत्त्वचिन्तक हैं। आपको ३०० से अधिक थोकडों का ज्ञान है। आप अपनी जानकारी का लाभ सत-सतियों को देने मे तत्पर रहते हैं। सरल शैली एव अल्प समय मे पर्याप्त धार्मिक ज्ञान सिखाने मे बडे कुशल हैं। आपका जीवन सयममय है। आप आदर्श श्रावक हैं।

४५. श्री दुलेराज जी सिघवी (पाली) —आयु ५६ वर्ष। आप राजकीय सेवा-निवृत्त स्वाध्यायी हैं, आपको लगभग १०० थोकडो का ज्ञान है। धार्मिक शिक्षण शिविरो मे अध्यापन का कार्य किया है। वर्तमान मे आप श्री महावीर जैन धार्मिक शिक्षण-शाला मे अपनी सेवा दे रहे हैं। भूपाल सागर, वाडमेर आदि क्षेत्रों मे पधारकर सघ को सेवा दी है।

४६ श्री सुरेशचन्द जी पारख (पाली)— आप स्वाध्याय प्रेमी है।

४७ श्री कानमलजी पारख (पाली,—आपकी स्वाध्याय मे अच्छी रुचि हैं।

४८ श्री हीरालालजी वोहरा (पाली) - आयु ४५ वर्ष। आप थोकडो व शास्त्रो के अच्छे ज्ञाता हैं। समय-समय पर धार्मिक शिक्षण-शिविरो मे अध्यापक के रूप मे अपनी अमूल्य सेवाये दी हैं। पाली मे आपने सैंकडो वालक-वालिकाओ मे धार्मिक रुचि जागृत की है तथा अनेको स्वाध्यायी तैयार किए हैं। आप मे प्रेरणा जागृत करने की अद्भुत लगन एव शक्ति है। आपने व्यवसाय से निवृत्ति ले ली है तथा निवृत्ति मार्ग पर आगे वढ़ रहे हैं।

४९ श्री जतनराजजी मेहता (मेडता सिटी)— आप प्रसिद्ध समाज सेवी, कर्मठ कार्यकर्ता लेखक व चिन्तक हैं। आपकी गुरुभक्ति सराहनीय है। अनेक सामाजिक व धार्मिक सस्थाओ के पदाधिकारी हैं। ध्यान, योग व साधना मे विशेष रुचि रखने वाले हैं। स्वाध्याय-सघ की ओर से रास, सहारनपुर, उटकमड, जामनेर क्षेत्रों मे धर्माराधना करवायी है।

५०. श्री हरकचन्दजी ओस्तवाल (मद्रास)— आप भोपालगढ के निवासी हैं। वर्तमान मे मद्रास मे कपडे का व्यवसाय है। आपने साहित्य, धर्म व जैन सिद्धान्त मे विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की है। आपने भोपालगढ विद्यालय मे अध्यापक के रूप मे कार्य करने

के साथ वालोतरा विद्यालय मे प्रधानाध्यापक, राणावास व कुचेरा मे गृहपति पद पर कार्य किया है। आप अच्छे स्वाध्यायी सगीतज्ञ व लेखक है। आपने इगतपुरी, वालोतरा, पचभद्रा, पावडी, नीलगिरि, जलगांव, भुसावल, जामनेर, एव मैसूर आदि क्षेत्रो मे धर्माराधनार्थ सेवायें प्रदान की हैं।

५१ **श्री प्रसनचन्दजी ओस्तवाल (मद्रास** — आयु २० वर्ष। आप भोपालगढ निवासी हैं। आपने B Com व धर्म विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप अच्छे वक्ता व सगीतज्ञ है। आपने सागरिय,मडी, पांचोरा, तिरुतनी, भूसावल, उत्तरामेला मे स्वाध्याय सघ की ओर से अपनी सेवायें प्रदान की हैं।

५२ **श्री महावीरचन्दजी ओस्तवाल (मद्रास)**— आयु २० वर्ष। आप भोपालगढ निवासी ी हरक चन्दजी ओस्तवाल के सुपुत्र हैं। आपने B Com व जैन सिद्धान्त परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप उदीयमान स्वाध्यायी है। आपने सहारनपुर, वेतूल, आवरी, चिगलपेट, उटकमण्ड आदि क्षेत्रो मे जाकर धर्माराधना कराई है।

५३ **श्री महावीर चदजी काकरिया (मद्रास)**— आयु २१ वर्ष। जन्म-स्थान—भोपालगढ। आप अच्छे वक्ता व सगीतज्ञ हैं। आपने तिरुतनी एव काराडीपेट धर्माराधन कराया है।

५४ **श्री पारसमलजी सुराणा (मद्रास)**—आयु ५७ वर्ष। आप नागौर निवासी हैं व मद्रास मे फाइनेन्स का व्यापार करते हैं। आपकी धार्मिक रुचि सराहनीय है। जामनेर, मैसूर पधारकर पर्युषण पर्व में अपनी सेवायें प्रदान की हैं।

५५ **कुमारी सरला कांकरिया (मद्रास)**—आयु १६ वर्ष। आप श्री ऋखब चन्द जी काकरिया की सुपुत्री है। आपने गुडियातम वाडमेर आदि पधारकर पर्युषण पर्वाराधना कराया है।

५७ **श्रीमती झंकार बाई कांकरिया (मद्रास)**— आयु ५३ वर्ष। आप श्री मोहनलालजी साहल काकरिया की धर्मपत्नी हैं। थोकडो व शास्त्रो का अच्छा ज्ञान है। आपने गुडियातम एव कावारीपेठ पधार कर पर्युषण पर्वाराधन कराया है।

५८ **पुष्पा दुगड (मद्रास)**—आयु ५०। आपको थोकडो व शास्त्रो का अच्छा ज्ञान है। चिगलपेठ, टढियारपेठ, तिरुतनी पधार कर पर्युषण पर्वाराधन करवाया है।

५९ **श्री रतनकवर बाई दुगड (मद्रास)**– आयु ५५ वर्ष। आप स्वर्गीय श्री नेमीचन्द जी दुगड की धर्मपत्नी है। आप थोकडो की जानकार हैं। आपने चिलगल्पेठ और गुडियातम पधार कर धर्माराधन कराया है।

६० **कुमारी चचल ओस्तवाल (मद्रास)**—आयु १५ वर्ष। आप स्वाध्यायी श्री हरक चन्द जी ओस्तवाल की सुपुत्री है तथा चिगलपीठ पधारकर पर्वाराधन कराया है।

६१ **उर्मिला बहिन मेहता (मद्रास)**—आयु ५० वर्ष। आपकी धर्म मे विशेष रुचि है। पाडीचेरी आदि पधारकर पर्वाराधन कराया है।

६२ **श्री केवलमल जी लोढा (जयपुर)**—आयु ६१ वर्ष। B A L L B। आप राजकीय अवकाश प्राप्त अधिकारी है। आपको थोकडो व शास्त्रो का अच्छा ज्ञान है आप सरल स्वभावी, सेवाभावी, जीवन दानी, सादगी-प्रिय व स्वाध्याय सघ के सक्रिय सदस्य हैं। आपका जीवन निवृत्ति-प्रधान साधना प्रिय व त्याग-प्रिय है। आपने पर्युषण पर्व में सारंगपुर, ईमागण, चालीसगांव, जैतारण, अलीगढ, वरवाडा, जामनेर, कुचेरा, गगापुर, कलमसरा, फागणा, बोदमोडा, धुलिया आदि क्षेत्रो मे पधारकर सेवाये प्रदान की हैं।

६३ **श्री कन्हैया लाल जी लोढ़ा (जयपुर)**— आयु ५५ वर्ष। आप हिन्दी मे एम ए है। आप धनोप (भीलवाडा) निवासी हैं। प्रधानाध्यापक पद से सेवा-निवृत्त होकर अब सामाजिक व धार्मिक कार्यों मे अपना जीवन दे रहे हैं। स्वाध्याय सघ के कर्मठ कार्यकर्ता व परामर्शदाता है। वर्तमान मे श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण सस्थान जयपुर के अधिष्ठाता पद पर कार्य कर रहे हैं। धार्मिक एव सामाजिक सेवाओ के उपलक्ष्य मे सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर की ओर से आपको अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया है। आप प्रसिद्ध लेखक, चिन्तक, सेवाभावी तथा साधना प्रिय हैं। पर्युषण पर्व मे पचभद्रा, अलवर आदि स्थानो पर सेवायें दी हैं।

६४ **श्री चुन्नी लाल जी ललवाणी (जयपुर)**— सामायिक व स्वाध्याय संघ के प्रचार-प्रसार मे आपने उल्लेखनीय योगदान दिया है। अखिल भारतीय सामायिक सघ व जीवदया के मुख्य प्रचारक हैं। अनेक सस्थाओ के कर्मठ कार्यकर्ता हैं। बीमा व्यवसाय मे जैसी प्रसिद्धि प्राप्त की है उसी प्रकार धार्मिक प्रचार के कार्य में भी ख्याति-प्राप्त की है। आपका धार्मिक उत्साह प्रशसनीय है।

६५ **श्री राजेन्द्र कुमार जी पटवा B A (जयपुर)**—आयु ४० वर्ष। आप अच्छे सगीतज्ञ व थोकडो के जानकार हैं। महावीर जैन नवयुवक मडल जयपुर आदि सस्थाओ के कार्यकर्ता व पदाधिकारी हैं। पर्युषण पर्व मे अलीगढ, सारंगपुर, चौथ का बरवाडा, वागली, कलमसरा, बडू आदि स्थानो पर पधारे हैं।

६६ **श्री पारसमल जी कुचेरिया (जयपुर)**— आप बडू ग्रामवासी व आढत के व्यापारी हैं। अंग्रेजी, हिन्दी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओ के जानकार हैं। आपकी धार्मिक क्रिया मे विशेष रुची है। वर्द्धमान स्थानकवासी शिक्षा समिति जयपुर के सयोजक हैं। आपने पर्युषण पर्व मे जैतारण, बैतूल, मद्रास, सवाई माधोपुर, बडू आदि क्षेत्रों मे पधारकर सेवायें प्रदान की हैं।

६७ **श्री जैनेन्द्र कुमार जी जैन एडवोकेट B A LL B (दिल्ली)**—आप सर्वोच्च न्यायालय में एडवोकेट, अच्छे वक्ता और समाजसेवी हैं। आप अनेको सामाजिक, धार्मिक व राष्ट्रीय संस्थाओ के पदाधिकारी और कार्यकर्ता हैं। पर्युषण पर्व में जलगाव, जामनेर, बाडमेर, मलकापुरी, देहरादून आदि क्षेत्रो मे पधारकर अपनी सेवायें प्रदान की है।

६८ **श्री आनन्दराज जी मेहता (बम्बई)**— आयु ७२-वर्ष। जन्म स्थान बैंगलोर। आप जवाहरात के व्यवसायी है। आपने जैन न्यायतीर्थ, व्याकरण तीर्थ एवं सिद्धान्त विशारद की परीक्षायें उत्तीर्ण की हैं, आपका धार्मिक अध्ययन अति गहन है। ब्यावर मे जैन वीराश्रम व जैन पाठशाला मे अध्यापन तथा सचालन का कार्य किया है। हिन्दी साहित्य समिति इन्दौर मे हिन्दी शीघ्र लिपि के अध्यापन का कार्य किया। आप पर्युषण पर्व मे पाँचोरा, मलकापुर, दोदवाडा आदि नगरो मे अपनी सेवायें प्रदान की हैं।

६९ **श्री महावीर कुमार जी नागौरी (कानोड)**— आयु २३ वर्ष। आप बम्बई टेक्स टाइल इजीनियरिंग मे तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। जैन सिद्धान्त विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की है। अच्छे समाजसेवी व उत्साही युवक हैं। धार्मिक शिविरो मे अध्यापन कार्य भी कराया है। पर्युषण पर्व मे भुसावल मे सेवा प्रदान की है।

७०. **श्री सरदारचन्दजी भडारी (जोधपुर)**— आयु 45 वर्ष। आपको थोकडो व शास्त्रो का अच्छा ज्ञान है। वर्षों तक आपने स्वाध्याय सघ जोधपुर के संयोजक एव कोषाध्यक्ष के पदों पर रहकर स्वाध्याय-सघ को गति दी है। धार्मिक प्रवृत्तियो मे विशेष रुचि रखते हैं। बडे सरल स्वभावी, सेवाभावी एव उदार-मना हैं। पर्युषण पर्व मे रणसीगाव, बिलाड़ा,

सारगपुर, लूनी, जालौर, खडाल, दुंदाडा, वावडी, झालावास, पाचौरा, वाडमेर, भूंगालसागर, भीडर आदि स्थानो पर पधार-कर सेवा प्रदान की है।

७१. डा पदमचन्दजी मुणोत M Sc P H D (जोधपुर) —आयु 45 वर्ष, आप जोधपुर विश्व-विद्यालय मे गणित के व्याख्याता हैं। थोकडों व शास्त्रो को अच्छी जानकारी है। महावीर जैन कन्या पाठशाला घोडो का चौक व धार्मिक पाठशाला सरदारपुरा का संचालन कर रहे हैं। आप स्वाध्याय सघ जोधपुर के सयोजक रह चुके हैं। आप सरल हृदय, समाज सेवी व कर्मठ कार्यकर्ता हैं। पर्युषण पर्व मे फालना व सरदारपुरा मे सेवायें दी हैं।

७२ श्री प्रसन्नचन्दजी बाफणा B Com (जोधपुर) —आयु 27 वर्ष। आपने स्वाध्याय सघ जोधपुर मे सयोजक पद पर काय किया हैं तथा स्वाध्याय सघ को आपका सहयोग निरतर मिलता रहता है।

७३ श्री सपनराजजी डोसी (जोधपुर) :—आयु 37 वर्ष, आप डाक-तार विभाग मे पदाधिकारी है। आप वडे मधुर स्वभावी, सेवाभावी हैं। आप स्वाध्याय व साधना की प्रेरणा देने मे विशेष रुचि रखते हैं। आपकी प्रेरणा मे सैकड़ो नवयुवक धर्माराधन में लगे है। आप सफल लेखक, वक्ता और सगीतज्ञ हैं। वर्तमान मे आप स्वाध्याय सघ के सयोजक हैं। आप के सयोजकत्व काल में स्वाध्याय सघ ने उल्लेखनीय प्रगति की है। आपकी सेवाओ को सम्मान देते हुए सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर ने आपका अभिनन्दन किया हैं। पर्युषण पर्व में आपने सोजतसिटी, जलगाव, वैगलोर, कोयम्वतूर, मैसूर, हैदरावाद, फत्तेपुर आदि स्थानो पर पधारकर सेवायें दी हैं। आप अनेक सस्थाओ के पदाधिकारी व कर्मठ कार्यकर्ता है। आपका अधिकाश समय साधना व सेवा मे लगता है। आप-शास्त्रो व थोकडो के अच्छे ज्ञाता, तत्वचिनक हैं। स्वाध्याय सघ की रीढ है। सांप्रदायिकता के मोह से रहित आपका धर्म प्रचार-प्रसार प्रशमनीय हैं। स्वाध्याय सघ व समाज को आपसे वहुत आशा है।

७४ श्री मोहनराज जी मेहता (जोधपुर) :—आयु 57 वर्ष। आप राजकीय सेवा निवृत्त है। आप थोकडो के अच्छे जानकार है। आप मृदुभाषी, सरल, स्वभावी, सगीतज्ञ, समाज सेवी व कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। आप अपना अधिकांश समय धर्म के प्रचार-प्रसार, साधना एव सेवा मे देते हैं। श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ जोधपुर के मत्री हैं। आप ने पर्युषण पर्व मे गगापुर, गोविन्दगढ, सारगपुर, खारिया, मीठापुर, चोह मेला आदि क्षेत्रो मे अपनी सेवायें दी है।

७५. श्री अनराजजी बोथरा (जोधपुर) :—व्यवसायी, आप अच्छे धार्मिक जानकार हैं। स्तवन तथा भजन मे विशेष रुचि है। श्री जैन रत्न विद्यालय भोपालगढ के उपाध्यक्ष व मन्त्री, स्वाध्याय-सघ, जोधपुर के कोषाध्यक्ष के रूप मे आपकी सेवाये उल्लेखनीय है। आप अत्यन्त सरल प्रकृति व सेवाभावी है। पर्युषण पर्व मे नरवाड, लौहावट, विसलपुर, मालावास, वाडमेर, मथानिया, कोसावा, खण्डवा, दुन्दाडा, आदि स्थानो पर अपनी सेवायें दी हैं।

७६ श्री रिखवराजजी कर्णावट B.A LL B जोधपुर आप अनेक शैक्षणिक, सामाजिक एव धार्मिक सस्थाओ के पदाधिकारी व कार्यकर्ता हैं। जोधपुर विश्वविद्यालय की अनेक कमेटियो के आप सदस्य रहे हैं। राष्ट्रीय कार्यों मे भी आपका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। सर्वोदय एव खादी-सस्थाओ मे भी आप अपनी सेवायें देते रहे हैं। कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता रहे हैं। स्वतन्त्रता-आदोलन मे भाग लिया है, आप स्वाध्याय संघ के आपनी प्रारभिक सदस्य है और २५ वर्षो से स्वाध्याय सघ को अपनी निरन्तर सेवाये दे रहे हैं। आप सरल स्वभावी, समाज सेवी, मृदुभाषी है। पर्यु-पर्व मे सीतामऊ, पट्टी, देहरादून, वाडमेर, सादडी,

पंचभद्रा, जैतारण, जामनेर, सांचोर, सोजत आदि स्थानो पर अपनी सेवायें दी हैं।

७७. श्री दौलत रुपचन्दजी भडारी (जोधपुर) : आप प्रसिद्ध भजनीक व सगीतज्ञ हैं। लगभग ५० वर्ष से आप निरन्तर समाज सेवा करते आ रहे हैं। आप आशुकवि, मधुर भाषी, सरल स्वभावी, सेवाभावी है। आप कई धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं से सम्बन्धित हैं। आपने मादडी, पचभद्रा, पालनपुर, जलगाव, गोविन्दगढ, पट्टो, भोपालगड, मरदारपुरा, मे पर्युषण पर्व मे अपनी सेवायें प्रदान की हैं। आप सगीत की जब आलाप छेडते हैं तो समा मे सभा बध जाता है।

७८ श्री धनराजजी जी. ओस्तवाल M A. भोपालगढ आयु 37 वर्ष आपने जैन सिद्धान्त विशारद व हिन्द विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण की है। वर्तमान में जालना मे व्यापाररत हैं। अच्छे मक्ता व सामाजिक कार्यकर्ता है। आपने पर्युषण पर्व में सारगपुर, खडाला, साचौर, नन्दूरबार, मेडता आदि क्षेत्रो मे अपनी सेवायें प्रदान की हैं।

७९ श्री नरपतराजजी भडारी B Com जोधपुर - आयु ३६ वर्ष आप सरल स्वाभावी, सेवा-भावी एव पुराने स्वाध्यायी है। पर्युषण पर्व मे रास, जलगाव, जैतारण, धेतूल, इगतपुरी, सिधनूर, पार-सोली, मेडता, खेतडी आदि नगरोमे जाकर सेवायें प्रदान की हैं।

८०. श्री नवरतनमलजी डोसी जोधपुर : आयु ३८ वर्ष आप थोकड़ो के अच्छे जानकार हैं। आप अच्छे धर्म प्रचारक, संगीतज्ञ, वक्ता एव उत्साही समाज सेवी हैं। आपके जोशीले वक्तव्य वडे प्रेरणादायक आकर्षक व रोचक होते हैं। धार्मिक कार्यो मे आपकी वहुत रुचि है। नवयुवको को प्रोत्साहित करने मे वडे निपुण हैं। पर्युषण पर्व में जैतारण, बाड़मेर, साचोर, जालोर, बेंगलोर, खंडप, काकरोली, निम्बाहा, जल-गांव, आदि स्थानो में अपनी सेवायें दी हैं।

८१. श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना C A जोधपुर आयु २५ वर्ष लघुवय मे ही आप सामाजिक क्षेत्र मे अच्छे कार्यकर्ता के रुप मे उदय हुए हे। आपका सेवाभाव व उत्साह सराहनीय है। आचार्य श्री शोभा चन्द्रजी म सा. दीक्षा शताब्दी समारोह समिती और जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ के आप मन्त्री हैं। भारतीय वीर निर्वाण साधना समारोह समिति के सयोजक के रुप मे आपने सराहनीय कार्य किया है। श्री जैन रत्न विद्यालय भोपाल गढ़, श्री सम्यग्ज्ञान उपचारक मण्डल जयपुर के सयुक्त मत्री रहे हैं। आपसे समाज को बहुत आशायें हैं। पर्युषण पर्व मे जामनेर, बाड-मेर, महीदपुर, भिंडर, फालना अदि क्षेत्रो में सेवाये दी हैं।

८२ श्री नरपतराजजी सा चोपडा M Com जोधपुर आयु २७ वर्ष आप संगीतज्ञ व थोकडो के जानकार हैं। पर्युषण पर्व मे धुनारीकलाव, गोंदिया, जामनेर, फतेपूर आदि स्थानो पर सेवायें प्रदान की है। आप जैन शिक्षण शाला घोडों का चौक जोधपुर के मत्री पद पर भी रहे हैं।

८३ श्रीमती सुशीला बोहरा M. A B ed जोधपुर : आप श्री महेश टीचर्स ट्रेनिंग कालेज में व्याख्याता हैं। महावीर जैन श्राविका समिति जोधपुर की अध्यक्ष हैं। आपकी धार्मिक रुचि व सेवाभावना सराहनीय है। अनेक धार्मिक शिक्षण शिविरो में अध्यापन कार्य कराया है। स्वाध्याय संघ के प्रचार-प्रसार के लिए आपने मध्य प्रदेश मे अपनी सेवायें दी हैं। पर्युषण पर्वो मे सवाई माधोपुर, जामनेर, सनवाड, वाडमेर आदि क्षेत्रो मे धर्माराधना करायी है।

८४ श्री भंवरलालजी चोपड़ा (जोधपुर)— आयु ३० वर्ष, आप सेवाभावी व थोकड़ो के अच्छे जानकार हैं। स्वाध्याय सघ को आप तन-मन से सहयोग देते है। पर्युषण पर्व मे वाडमेर, गोटन, सांचोर, सोमेश्वर आदि स्थानो पर सेवाये दी हैं।

८५. श्री सम्पतराज खिवसरा B A (जोधपुर) आयु ५० वर्ष आप अच्छे गायक व कवि हैं। महावीर जैन नवयुवक मण्डल के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष आदि पदो पर तथा खिवसरा वन्धु समिति के मत्री पद पर रहकर सेवायें प्रदान की है। पर्युषण पर्व मे नन्दुरवार, गोदिया, वालाघाट, मलकापुर, त्रिचनापली आदि क्षेत्रो मैं धर्माराधना कराया हैं।

८६ श्री मोहनराजी जीरावला M. A. (जोधपुर)—आयु २९ वर्ष आप अच्छे वक्ता, समाज सेवी, मृदुभाषी, सरल स्वभावी व कर्मठ कार्यकर्ता हैं। स्वाध्याय सघ व निर्वाण समिति की प्रगति मे तथा धार्मिक शिविरो मे आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पयुर्षण पर्व मे दुंधाडा, वागावाम, विजयानगर पधारकर अपनी सेवायें प्रदान की है।

८७. श्री धनराज जी मुणोत (जोधपुर)—आयु २८ वर्ष, आप अच्छे वक्ता व थोकडो के जानकार हैं धार्मिक प्रचार-प्रसार मे रुचि रखने वाले उत्साही व कार्यकर्ता हैं। कई सस्थाओ के पदाधिकारी हैं। पर्युषण पर्व मे सोजत सिटी, गोदिया, पाचोरा आदि क्षेत्रो मे धर्माराधना कराया है।

८८ श्री माणकमल जी भडारी B Com (जोधपुर)—आयु ४३ वर्ष, आप वडे उत्साही एव कमठ कार्यकर्ता है। आपने जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ के मत्री तथा भगवान महावीर निर्वाण साधना समारोह समिति के सहमत्री पद पर सराहनीय कार्य किया है। आप हिन्दी, अग्रेजी आशुलिपि के जानकार हैं। पर्युषण पर्व सागरिया मण्डी, आकोदिया मडी आदि स्थानो पर पधारकर सेवायें दी है।

८९ श्री रगरुप मल जी डागा (जोधपुर)—आपने विद्युत अभियांत्रिकी डिप्लोमा किया है। आपकी सामाजिक व रचनात्मक कार्यो में विशेष रुचि हैं। धार्मिक पाठशालाओ में संचालक व अध्यापक का कार्य भी करते रहे है। पर्युषण पर्व में पचभद्रा व मेडता पधारकर धर्माराधन करवाया है। आपकी साधना की रुचि सराहनीय है।

९०. श्री पारसमल जी गिड़िया (जोधपुर)—आयु २८ वर्ष। आप सामाजिक व धार्मिक कार्यों मे सक्रिय सहयोग देते रहे हैं। सगीत में विशेष निपुण हैं। पर्युषण पर्व मे इगतपुरी, फतेहपुर, पाचोरा, मेडतासिटी आदि क्षेत्रो मे अपनी सेवायें दी हैं।

९१ श्री सुगनचन्दजी भडारी (जोधपुर) - आयु ५६ वर्ष। आप रेलवे विभाग मे सेवारत है। धार्मिक पाठशालाओ मे सराहनीय अध्यापन कार्य कराया है। अच्छे सामाजिक कार्यकर्ता है। पर्युषण पर्व मे वाडमेर, जामनेर, कानवान, हरदा बलकवाडा आदि क्षेत्रो मे अपनी सेवायें दी हैं।

९२. श्री भंवरलाल जी लोढा M A, (जोधपुर) आप सिधुग्राम निवासी व स्टेट बैंक ऑफ वीकानेर में केशियर हैं। आप को अच्छी धार्मिक जानकारी है। आपने अनेक स्थानो पर एव शिविरो मे धार्मिक अध्यापन कार्य अति सफलता पूर्वक कराया है। आप अच्छे सगीतज्ञ कर्मठ कायकर्ता हैं। पर्युषण पर्व मे मोजत सिटी, भोपालगढ, पाचोरा आदि क्षेत्रो मे धर्माराधन कराया है।

९३. श्री पुखराज जी गिडिया (जोधपुर)—आयु ३ वर्ष। आप अच्छे सगीतज्ञ हैं। पर्युषण पर्व मे वागावास, वावडी, पासवां, सालावास आदि स्थानो पर पधारकर सेवायें दी है।

९४ श्री जौहरीमलजी चामड (जोधपुर)—आयु ३८ वर्ष। आप राजकीय सेवा मे है। धार्मिक पाठशाला मे अध्यापन कार्य कराया है। स्वाध्याय सघ, वीर निर्वाण समिति, जैन रत्न हितैषी श्रावक सघ सस्थाओ की सेवा मे रत हैं। सरल स्वभावी, सेवाभावी व थोकडो के जानकार हैं। पर्युषण पर्व मे वाडमेर, पालासणी, लवाणिया, दासवा, वागाली, आदि क्षेत्रो मे धर्माराधन कराया है।

९५ श्री मोदाल चन्द जी सेठिया (जोधपुर)—आयु ४० वर्ष। आप लेखाकार पद पर कार्य कर रहे हैं। पर्युषण पर्व में दुधाड़ा, वागावास आदि क्षेत्रों में पधारकर सेवायें दी हैं।

९६ श्री मागीलाल जी रांका (जोधपुर)—आयु ६४ वर्ष। आप स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के एजेण्ट पद से सेवा निवृत्त हुए हैं। आप अच्छे जानकार, मधुर स्वभावी, सेवाभावी हैं। आप स्वाध्याय संघ जोधपुर, जैन नवयुवक मंडल अजमेर आदि संस्थाओं के कार्यकर्ता भी रह चुके हैं। पर्युषण पर्व में मयानिया, दानपुर, कोसाणा, बरडिया, लाडपुरा, विजयनगर आदि क्षेत्रों में अपनी सेवायें दी हैं।

९७ श्री मदनराज जी मेहता (जोधपुर)—आयु ५२ वर्ष। आपकी धार्मिक रुचि सराहनीय है व थोकडों की अच्छी जानकारी है। पर्युषण पर्व में गंगापुर आदि क्षेत्रों में पधार कर सेवा दी है।

९८ श्री करणराज जी मेहता (जोधपुर)—आयु ४१ वर्ष। आप सरल स्वाभावी एवं सादगी प्रिय व्यक्ति हैं। पर्युषण पर्व में खारिया, मीठापुर, बारमोली, तिरपुर आदि क्षेत्रों में पधारकर अपनी सेवायें दी हैं।

९९ श्री आनन्द राज जी मुणोत B A -(जोधपुर)—२८ वर्ष। आप अच्छे जानकार, समाजसेवी व उत्साही कार्यकर्ता हैं। पर्युषण पर्व में नन्दरबार, इगतपुरी, फतेपुर आदि क्षेत्रों में अपनी सेवायें प्रदान की है।

१०० श्री लाल चन्द जी मांड (जोधपुर)—आयु ५२ वर्ष। आपका कण्ठ मधुर है। आपकी संगीत व धार्मिक विषयों में अच्छी रुचि है। जालोर पधार कर अपनी सेवायें प्रदान की है।

१०१ श्री धनराज जी भटारी (जोधपुर). आयु ६० वर्ष आप सरकारी सेवा निवृत्त, सरल स्वभावी व सेवाभावी हैं। पर्युषण पर्व में [illegible] कोसाणा, मलयापुर, [illegible], बारडा आदि क्षेत्रों में सेवायें दी है।

१०२. श्री अनराज जी मेड़तिया (जोधपुर)—आयु ६० वर्ष। आपको धर्म की अच्छी लगन व जानकारी है। धर्म-दलाली मे विशेष रुचि है। पर्युषण पर्व मे बारडा, कोसाणा, मोई आदि स्थानों मे आपने सेवायें दी हैं।

१०३. श्री हरिशचन्द जी सचेती M A B Sc Bled (जोधपुर)—आप अध्यापक हैं व धार्मिक पाठशालाओ मे भी अध्यापन कार्य कराते हैं। आपने पर्युषण पर्व मे कुचूवास सेवा दी है।

१०४ श्री दशरथ जी कोठारी B A (जोधपुर)—आयु २७ वर्ष। आप सरकारी सेवा मे कार्यरत हैं। पर्युषण पर्व मे उत्तरा मेरू क्षेत्र मे पधारकर सेवा दी है।

१०५ श्री पारस मल जी हींगड M Com (जोधपुर)—आयु २१ वर्ष। आकोला निवासी। आप अच्छे धर्म प्रेमी व सामाजिक कार्यकर्ता हैं। धर्म-प्रचार कार्य मे महाराष्ट्र का दौरा किया तथा स्वाध्याय संघ कार्यालय मे भी तीन वर्ष से सेवा दे रहे हैं। पर्युषण पर्व मे माधवनगर, शिवपुर, हैदराबाद, होसपेठ आदि क्षेत्रो मे पधार कर सेवा प्रदान की है।

१०६ श्री अर्जुनराज जी मेहता (जोधपुर)—आयु ३६ वर्ष। आप अच्छे संगीतज्ञ हैं। पर्युषण पर्व मे बाडमेर, मेडता, नालावास, बड्‌ आदि क्षेत्रो मे पधार कर अपनी सेवा दी है।

१०७ श्री राजेन्द्र प्रसाद जी सर्राफ B Com (जोधपुर)—आयु २० वर्ष। आपकी धर्म मे अच्छी रुचि व जानकारी है। पर्युषण पर्व मे खंडप, पालासनी, निम्बाटा आदि क्षेत्रो मे पधारकर सेवा दी है।

१०८ श्री रतनराज जी बालड B Com (जोधपुर)—आयु २० वर्ष। पर्युषण पर्व मे खिरकिया, तिगनी, बागलकोट, टिंडिवल आदि क्षेत्रो मे पधारकर सेवायें दी है।

१०९ श्री सोहन लाल जी जीरावला (जोधपुर)—आयु २० वर्ष। धार्मिक भावना आपके

रोम-रोम मे समाई हुई है। सामाजिक एवं धार्मिक प्रवृत्तियो मे सक्रिय भाग लेते हैं। पर्युषण पर्व मे पलामनी, रसूद, वागावास, ढाणकी मे अपनी सेवाये दी है।

११० श्री महिपाल राज जी मेहता B Com (जोधपुर)— आयु २० वर्ष। आप अच्छे सगीतज्ञ तथा सेवाभावी व्यक्ति हैं। धार्मिक शिविरो मे अच्छे कार्यकर्ता के रूप मे ,सेवायें दी है। पर्युषण पर्व मे बेतूल, फतेपुर, माधवनगर, वाडमेर, हरदा, कलमसरा आदि क्षेत्रो मे पर्वाराधान कराया है।

१११ श्री सुरेन्द्र मल जी जैन (खिवसरा) B Com (जोधपुर) —आयु १९ वर्प। आप की स्वाध्याय व सगीत मे अच्छी रूचि है। आपने कोरिया, मीठापुर और साचोर मे पर्वाराधना कराई है।

११२ श्री हंसराज जी डागा B. Com (जोधपुर) — आयु १९ वर्प। आपकी धर्म मे अच्छी रूचि है। चौमहला, वादली, त्रिचनापली मे पधारकर अपनी सेवायें दी हैं।

११३ श्री कुशल चन्द जी डोसी C. A (जोधपुर): — आयु २२ वर्ष। आपकी धर्म मे अच्छी रूचि है तथा आप सगीतज्ञ हैं। पर्युषण पर्व मे मैसूर निम्बाडा आदि क्षेत्रो मे पधारकर सेवायें दी है।

११४. श्री मेघराज जी पटवा (जोधपुर)— आयु २० वर्प। आपकी धर्म के प्रति अच्छी रूचि है। पर्युषण पर्व मे पट्टी, नन्दुखार आदि स्थानो मे पधार कर सेवाये प्रदान की है।

११५ श्री महेन्द्र कुमार जी कूमट B Com (जोधपुर) — आयु १८ वर्प। आपकी स्वाध्याय मे अच्छी रूचि है। पर्युषण पर्व मे मेडता सिटी, देहरादून आदि क्षेत्रो मे पधारकर सेवायें दी है।

११६. श्री रिखव राज जी छाजेड B Com. (वासनी हरिसिह) — आयु २४ वर्ष। आपको थोकडो व सूत्रो की अच्छी जानकारी है। श्री जैन रत्न छात्रावास भोपालगढ व श्री जयमल जैन छात्रावास मेडता सिटी, सस्थाओ मे सेवायें प्रदान की है। पर्युषण पर्व मे भुसावल आदि क्षेत्रो मे पधारकर सेवायें प्रदान की हैं।

११७ श्री प्रसन्न चन्द जी मेहता B Com. (वासनी हरिसिह)— आपको थोकडो व सूत्रो की जानकारी है। पर्युषण पर्व मे नन्दूरवार पधार कर सेवा दी हैं।

११८. श्री शांति लाल जी मेहता (जोधपुर) — आयु २५ वर्ष। आप शिक्षण का कार्य कर रहे हैं। पर्युषण पर्व मे काकरोली, जलगांव पधारकर कर सेवा प्रदान की है।

११९ श्री गोपाल राज जी B. Com. (जोधपुर) — आयु २१ वर्ष आप ज्ञानमुनि जी के सासारिक भाई है। पर्युषण पर्व मे देहरादून, दुंदवाडा आदि क्षेत्रो मे पधारकर अपनी सेवायें प्रदान की है।

१२० श्री पारसमल जी संचेती B Com. (जोधपुर) — आयु २० वर्प। आपका जीवन त्यागमय रहा है। आप अत्यन्त विनम्र और सरल स्वभावी हैं। पर्युषण पर्व मे भोपालगढ मे आपने सेवा दी है।

१२१ श्री अशोक कुमारजी काणोत (जोधपुर) — आयु १८ वर्ष। आपकी स्वाध्याय मे अच्छी रूचि है। पर्युषण पर्व मे वलगवाडा मे अपनी सेवा दी है।

१२२ श्री राजेन्द्र जी मेहता (जोधपुर):—आप का उपनाम चुन्नू है। आपके दूसरे भाई मुन्नू है। इस प्रकार चुन्नू-मुन्नू की आपकी जोडी है। स्वाध्याय व धर्म के प्रति आपकी अच्छी रूचि है। पालासनी, हरदा, जामनेर पधार कर आपने पर्युषण पर्व में सेवा दी है।

१२३ श्री सुरेश जी सुराणा B Com (जोधपुर) — आयु १८ वर्प। आपकी स्वाध्याय के प्रति विशेष रूचि है। अपने दुदाडा पधार कर सेवा प्रदान की है।

१२४ श्री ओमचन्द जी भंडारी (जोधपुर) — आयु २२ वर्ष आपने वाडमेर आदि क्षेत्रो मे पधार कर सेवा प्रदान की है।

१२५. श्री विजयराज जी खिवसरा, B Com. (जोधपुर) —आयु १९ वर्ष, आपकी स्वाध्याय के प्रति अच्छी रुचि है। आप अच्छे वक्ता हैं। आपने भागलकोट पधार कर पर्वाराधन कराया है।

१२६. श्री सरदारमल जी सामसुखा (जोधपुर) — आयु ४० वर्ष। आप मुनीम का कार्य करते हैं। अच्छी लग्न है। पर्युषण पर्व मे पादोवडी, यादागिरी, पाचोरा, जुड मे पधार कर सेवा दी है।

१२७ श्रीमती सुलोचना बहिन (जोधपुर)— आयु ३८ वर्ष। आप धार्मिक अध्ययन काय करती है। थोकडो व शास्त्रो की अच्छी जानकारी है। पर्युषण पर्व मे साचोर, रोठ आदि क्षेत्रों मे पधार कर सेवायें प्रदान की हैं।

१२८ कुमारी इन्दु डागा M A. (जोधपुर) — आयु १९ वर्ष। आप श्री महावीर जैन महिला श्राविका समिति की कार्यकर्त्री हैं। समाज सेवा में विशेष रुचि है। पर्युषण पर्व मे जामनेर, बावडी, दधारीकला पधार कर सेवा प्रदान की है।

१२९ कुमारी साधना शाह (जोधपुर) — आप की धार्मिक जानकारी अच्छी है। आपने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया है। पर्युषण पर्व मे साचोर व रोठ पधार कर अपनी सेवायें दी हैं।

१३० श्रीमती गुमान जी बाई (जोधपुर) —आयु ५० वर्ष। आप श्री शिवनाथ मल जी सुराणा की धर्म-पत्नी है। आपने पालासनी व बावडी पधार कर पर्युषण पर्वाराधन कराया है।

१३१ श्रीमती उगम बाई जोधपुर —आयु ४२ वर्ष। आप श्री जसवन्त मल जी गाधी की धर्म-पत्नी है। धर्म मे आपकी अच्छी रुचि है। आपने वागावास पधार कर पर्युषण पर्वाराधन कराया है।

१३२ श्रीमती शांती बाई मुणोत (जोधपुर) — आयु २५ वर्ष। आप श्री जेठमल जी मुणोत की धर्म-पत्नी हैं। आपकी धार्मिक जानकारी अच्छी है। आप धार्मिक शिक्षण का कार्य भी करती हैं। श्री महावीर जैन श्राविका समिति की उपमत्री हैं। आपका जीवन सरल, सेवाभावी, व धार्मिक प्रवृत्ति का रहा है। आप का पूरा परिवार धार्मिक प्रवृत्ति वाला है। आपने पर्युषण पर्व मे वागावास पधार कर अपनी सेवा दी है।

१३३ कुमारी सोहन गांधी (जोधपुर) — आप की धर्म मे अच्छी रुचि है। वागावास पधार कर धर्माराधन कराया है।

१३४ कुमारी शकुन्तला मेहता LL B (जोधपुर):—आप अच्छी वक्ता व लेखक हैं। पर्युषण पर्व मे कोसाणा पधार कर सेवा दी है।

१३५ श्री पारस कुवर रांका (जोधपुर)—आयु ३० वर्ष। आपकी धार्मिक रुचि एव धार्मिक अध्ययन मे तत्परता प्रशसनीय है। आपने पालासनी पधार कर पर्युषण पर्व मे सेवा दी है।

१३६ कुमारी मीना बोथरा (जोधपुर) आयु ३० वर्ष। आपकी स्वाध्याय में अच्छी रुचि है। पर्युषण में पालासनी पधार कर अपनी सेवा दी है।

१३७ कुमारी पुष्पा गाधी (जोधपुर)—आपकी स्वाध्याय में अच्छी रुचि है। पर्युषण पर्व मे पालासनी पधार कर सेवा दी है।

१३८. श्री चचल मल जी चौरडिया इलेक्ट्रिकल इञ्जीनियर (जोधपुर) — आयु ३५ वर्ष। स्वाध्याय सघ के आप सक्रिय कार्यकर्त्ता है। तन-मन-धन से समाज सेवा मे तत्पर रहते हैं। श्री महावीर जैन नवयुवक मण्डल जोधपुर के आप मत्री हैं। आपकी पत्नी श्रीमती रतन कवर चौरडिया श्री महावीर जैन श्राविका समिति जोधपुर की मत्री है।

१३९. श्री पारस मल जी रेड (जोधपुर) —आयु ६२ वर्ष। आप कपडे के व्यवसायी है। आप स्वाध्याय सघ को तन-मन-धन से सहयोग प्रदान करते हैं। आप धर्म प्रिय व समाज सेवी है। स्वाध्याय सघ को आर्थिक सहयोग दिलाने में आपने विशेष रुचि दिखाई है।

१४० श्री मुन्नालाल जी भडारी (जोधपुर).—आयु २५ वर्ष। आपकी धार्मिक रुचि अच्छी है। आप सगीतज्ञ भी है। कण्ठ मधुर है। पर्युषण पर्व मे भोपाल सागर व भीडर पधार कर सेवा दी है।

१४१ श्रीमति कमलाबहिन जैन(इन्दौर)-आपका समाज सेवा सदैव सराहनीय रही है। आपकी रुचि अहिंसा व सम्याग् ज्ञान के प्रचार-प्रसार मे रही है। वीरवाल समाज की प्रगति मे आपका विशेष योगदान रहा है। स्वाध्यायी एवं महिला शिविरो मे आपका पूरा-पूरा सहयोग मिलता रहता है।

१४२ श्री सुकन राज जी पगारिया (बंगलोर)—आयु ६१ वर्ष आप व्यवसायी है। अब आपने व्यवसाय से निवृति लेकर अपना जीवन सामाजिक एव धार्मिक कार्यो मे अर्पित कर दिया है। आप अच्छे वक्ता, मधुर-स्वभावी एव मिलनसार व्यक्ति है। आप धार्मिक शिविर समिति पाली के अध्यक्ष एव स्वाध्याय सघ बैंगलोर शाखा के सयोजक हैं। आप अच्छे जानकार एव सेवाभावी हैं। बामनवाडी, उटकमड आदि क्षेत्रो में पधार कर सघ को सेवा दी है।

१४३ श्री ज्ञानराज जी मेहता (बेंगलौर)—आयु २७ वर्ष। आपने बी कोम एल एल.बी. परीक्षा उत्तीर्ण की है एव टैक्स सलाहकार एव एडवोकेट का कार्य कर रहे हैं। आपको अच्छी धार्मिक जानकारी है आप अच्छे वक्ता, सेवाभावी, नवयुवक स्वाध्यायी हैं। बैंगलोर श्रावक सघ तथा जैन शिक्षण शिविर शिक्षण समिति के मत्री पद पर कार्य कर रहे है। आप बचपन से ही धर्म-प्रेमी स्वाध्यायी रहे है। अ डरसन पेट पर पधार कर सेवा दी है।

१४४. श्री कुन्दनमलजी भंडारी (बेंगलोर)—आयु ५२ वर्ष। कुचेरा निवासी हैं। आप बैंगलोर मे छात्रो को धार्मिक अध्ययन कराते है। आप बडे ही सरल स्वभावी, समाज-सेवी कार्यकर्त्ता हैं। अ डरसन पेट बामन वाडी, वेलूर मे सघ को सेवा दी है।

१४५ श्री सोहन लाल जी जैन (बेंगलोर) :—आयु २६ वर्ष। आप पाली निवासी व्यवसायी है। आप अच्छे सगीतज्ञ, सेवाभावी, धर्म-प्रेमी, गुरु-भक्त स्वाध्यायी हैं। उटकमड, वेलूर आदि नगरो मे सघ को सेवा दी है।

१४६ श्री सुन्दर लाल जी होंगड (मैसूर)—आयु २६ वर्ष। आप आकोला निवासी है। मैसूर मे धार्मिक अध्यापन का कार्य कर रहे हैं। आप बडे ही सेवाभावी, सरल स्वभावी एव धर्म-प्रेमी कार्यकर्त्ता है। पर्युषणो मे जल गांव, चिंगलपेट. निकलनी मैसूर मे सघ को सेवा दी है।

१४७ श्री शाति लाल जी गु रेचा (हैदराबाद)—आयु २७ वर्ष। आप व्यवसायी है। आपकी स्वाध्याय व सेवा मे अच्छी रुचि है। पाचोरा व दादवाड़ा में संघ को सेवा दी है।

१४८ श्री दीप चन्द जी मुणोत P. U. C. (हैदराबाद)—आयु ३३ वर्ष। धर्म-प्रेमी एव सेवा-भावी है। आपने भुसावल सघ को सेवा दी है।

१४९ श्री नथमल जी लू कड (जलगाव).—आप महाराष्ट्र प्रान्त के प्रमुख सेवा भावी एव कार्य-कर्त्ता हैं। आपकी स्वाध्याय,चितन व प्रवचन मे विशेष रूचि है अनेको सामाजिक, धार्मिक एव राष्ट्रीय समितियो के आप पदाधिकारी रहे हैं। आप कान जी सिह जी ओसवाल जैन बोर्डिंग, जलगाव वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ जलगाव, पिंजरा पोल सस्था जलगाव, भारत जैन महामण्डल व अखिल भारतीय श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस दिल्ली के सेक्रेट्री रहे है। विभिन्न संस्थओ के सक्रिय-पदाधिकारी रहने के साथ साथ आप सफल व्यवसायी व उद्योगपति भी है। आपने अमरावती भुसावल, हैदराबाद, चालीस गाव, जलगाव पाचोरा आदि स्थानो पर जाकर पर्युषण पर्व मे अपनी सेवायें दी है।

१५०-श्री गणेश मल जी बाफणा (जलगाव)—आयु ४० वर्ष। आप व्यवसायी, अच्छे

स्वाध्यायी, समाज-सेवक व संगीतज्ञ हैं। का शि.श्री जैन बोर्डिंग, श्री जैन नवयुवक मण्डल जलगाव आदि सस्थाओ को आप अपनी सेवाएं दे रहे हैं। आपने अमरावती, भुसावल, हैदराबाद चालीस गाव, पाचोरा आदि स्थानो पर पर्वाराधना, करायी है।'

१५१ श्री रतन लाल जी बाफणा (जलगाव) - आयु ३८ वर्ष। आप भोपाल गढ के निवासी व लब्ध प्रतिष्ठ व्यापारी हैं और अच्छे संगीतज्ञ, गुरु-भक्त एव स्वाध्याय-प्रेमी हैं। आपने जलगाव मे पर्युषण-पर्व पर सेवाये दी हैं।

१५२ श्री मोती लाल जी सुराणा (इन्दौर) — आयु ६० वर्ष आपने इन्दौर तथा मध्य प्रदेश के अनेको सामाजिक, धार्मिक सस्थाओ के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मन्त्री आदि पदो पर रह कर अपनी सेवाए दी हैं। अनेको राजकीय सस्थाओ के भी आप सदस्य हैं। भगवान महावीर की २५ सौंवी निर्वाण-तिथि के अवसर पर आपकी सेवाए सराहनीय रही हैं। आप सफल वक्ता एव प्रसिद्ध कथा-लेखक भी हैं। आप बहुत उत्साही कार्यकर्त्ता एव सेवाभावी हैं। आपने माधव नगर, जामनेर मे पर्वाराधना कराई है।

१५३ श्री सज्जन सिह जी डागा (भोपाल) — आयु ५० वर्ष। आपको थोकडो व सूत्रो की जानकारी है। आपने पर्युषणपर्व मे रतलाम, अलवर, हिंगना नागपुर, अमरावती, भोपाल आदि स्थानोपर सेवाए प्रदान की हैं।

१५४ श्री केवल चन्द जी भण्डारी (समदडी) — कपडे के व्यापारी हैं। स्वाध्याय मे अच्छी रुचि है। स्वाध्याय-सघकी ओर से समय-समय पर सेवा देते रहे हैं।

१५५. श्री चन्दन मल जी बनवट (आष्टा) — जन्मस्थान-बोंचन। आप कुशल व्यवसायी व अच्छे समाज सेवी हैं। आपने लगभग २५ सस्थाओ के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष पद को सुशोभित किया है आप विधान सभा में सदस्य भी रहे हैं। आपकी धर्म प्रचार की एव साधु-साध्वियो को शिक्षण देने का रुचि सराहनीय है। पर्युषण पर्व मे पाचोरा पधार कर सेवा दी है।

१५६ श्री लक्ष्मी चन्द जी जैन एम ए बी एड साहित्य रत्न (कसरावद) — आयु ३८ वर्ष। आप अध्यापन कार्य मे रत, अच्छे कार्यकर्त्ता एव समाज सेवी हैं। आपने पर्युषण पर्व मे अपनी सेवाये दी है।

१५७ श्री रतन लाल जी माडोत (अजमेर) — आयु ५० वर्ष आप चाँदी-सोने के व्यापारी हैं। आप अनेक थोकडो एव शास्त्रो के ज्ञाता हैं। आप नियमित स्वाध्यायी हैं और दूसरे श्रावको को प्रतिदिन नियमित रूप से ज्ञानाभ्यास कराते है। आप कई सस्थाओ के पदाधिकारी व सदस्य हैं। आपने गोविंद गढ सारगपुर, बालोतरा, बाडमेर, चित्तौडगढ आदि क्षेत्रो मे अपनी सेवाये प्रदान की हैं।

१५८ श्री अमर चन्द जी कासवा (अजमेर) — आयु ४८ वर्ष। आप अच्छे धार्मिक जानकार एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। आप अनेक संस्थाओ के पदाधिकारी रहे हैं। आप जलगांव, साचोरा, काकरोली, त्रिचनापली मे धर्माराधनार्थ पधारे हैं।

१५९ श्री सुरेश कुमार जी पाडलेचा B Com, (ब्यावर) —आयु ३० वर्ष। आप जोधपुर निवासी, हैं। आपको धार्मिक ज्ञान मे विशेष रुचि है। आपने अजमेर, राणावास, पाली, जोधपुर, सिवाना के धार्मिक शिविरों मे भी भाग लिया है स्वाध्याय सघ की ओर से आप खण्डवा पधारे हैं।

१६० श्री हीरालाल जी गाधी (वर्तमान मे श्री हीरा मुनि) — आपका जन्म ३८ वर्ष पूर्व पीपाड शहर मे हुआ था। आप श्री मोतीलाल जी गाधी के सुपुत्र हैं। स्वाध्याय सघ की ओर से आपने कोसाणा आदि क्षेत्रो मे पधार कर अपनी सेवाए प्रदान की है। आप की बचपन मे ही स्वाध्याय और धर्म के प्रति विशेष रुचि रही है। २५ वर्ष की आयु मे सन् १९६३ मे श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म० सा० के सान्निध्य में आपने भागवती दीक्षा अगीकार की।

१६१. श्री भीमराज जी कर्णावट (वर्तमान मे श्री भाद्रिक मुनि):—आप भोपालगढ निवासी श्री चन्दनमल जी कर्णावट के सुपुत्र हैं। आप ४१ वर्ष की अवस्था में विरक्त हुए। वैराग्यावस्था मे दु धाडा, अजीत, आदि स्थानो मे पूरा चातुर्मास व्याख्यान दिया। आपने ४७ वर्ष की आयु मे सन् १९७५ मे श्रद्धेय आचार्य प्रवर १०८ श्री हस्तीमल जी म० सा० के सान्निध्य मे भागवती दीक्षा अगीकार की और वर्तमान में आप भाद्रिक मुनि जी के नाम से प्रसिद्ध है।

१६२ श्री ज्ञानराज जी अब्बाणी (वर्तमान में श्री ज्ञानमुनि)—आप जोधपुर निवासी श्री गुलराज जी अब्बाणी के सुपुत्र हैं। आपका जन्म स० २००५ मे हुआ। आपने श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण सस्थान मे रहकर जैन सिद्धान्त प्रभाकर परीक्षा उत्तीर्ण की। अनेक स्वाध्याय-शिक्षण शिविरो में शिक्षण देने का कार्य किया। स्वाध्याय सघ की ओर से मनावर व कोयम्बटूर मे सेवायें दी। आपने बचपन से ही ब्रह्मचर्य रहने का कठोर व्रत धारण किया। दिनाक २५-५-७५ को आपने आचार्य प्रवर १०८ श्री हस्तीमल जी म० सा. के सान्निध्य मे जोधपुर मे भागवती दीक्षा ग्रहण की।

१६३ श्री महेन्द्र कुमार जी लोढा (वर्तमान मे श्री महेन्द्र मुनि).—आप जोधपुर (महामदिर) निवासी पारसमल जी लोढा के सुपुत्र हैं। आपका जन्म स० २०११ मे हुआ। आप B Com. के साथ-साथ धार्मिक शिक्षण मे भी गहरी रुचि लेने लगे। २१ वर्ष की आयु मे आपने जैनाचार्य १०८ श्री हस्तीमल जी म० सा० के सान्निध्य मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

१६४ श्री चम्पालाल जी (वर्तमान मे श्री चम्पक मुनि)—आप पीपाड निवासी श्री जीवराज जी मूथा के सुपुत्र हैं। आपमे बचपन से ही वैराग्य-भावना जागृत हुई। श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान मे रह कर आपने धार्मिक अध्ययन प्राप्त किया। आपने स्वाध्याय सदस्य के रूप मे कडलू, बुढ आदि क्षेत्रो मे पधार कर पर्वाराधन कराया। आपने २२ वर्ष की आयु मे सन् १९७४ मे श्रद्धेय आचार्य प्रवर १०८ श्री हस्तीमल जी म० सा० के सान्निध्य मे आगरा मे भागवती दीक्षा स्वीकार की।

१६५ श्री मणिलाल जी बेलजी कोठारी (तिरुपुर-दक्षिण भारत)—आयु ५६ वर्ष। आपको अच्छी धार्मिक जानकारी है। आप शास्त्र-वाचन, धर्म-चर्चा एव स्वाध्याय मे विशेष रुचि रखते हैं। आपका जीवन त्याग और साधनामय रहा है। आपने २ वर्ष तिरूपुर मे शास्त्र वाचन आदि करके पर्युषण मे सेवायें प्रदान की है। वर्तमान मे आपने भागवती दीक्षा स्वीकार कर ली है।

१६६ कुमारी रतन जैन—आप जोधपुर निवासी श्री आनन्दराज जी जैन की सुपुत्री हैं। बचपन से ही आपकी रुचि धार्मिक प्रवृत्ति की रही ओर है। आपको थोकडो और शास्त्रों का अच्छा ज्ञान है। आपने पर्युषण पर्व मे मालावास पधार कर अपनी सेवायें दी। आपने भागवती दीक्षा स्वीकार की है।

१६७ श्रीमती राजुल बाई—आयु ५५ वर्ष। आप जोधपुर निवासी स्वर्गीय श्री विजयमल जी कुमट की धर्म-पत्नी हैं।

१६८ श्री चान्दमल जी कर्णावट M. A. M Ed साहित्यरत्न (उदयपुर) जन्मस्थान कुड़ी जोधपुर। आप विद्याभवन शिक्षक महाविद्यालय उदयपुर में प्राध्यापक हैं। 'धर्मभूषण' व 'धर्मरत्न' की परीक्षाए उत्तीर्ण की हैं। आप गभीर विषयों को सरल सुबोध शैली मे प्रस्तुत करने मे निपुण हैं। आप जिनवाणी के सम्पादक, मण्डल में भी रहे। आप १२ व्रतधारी सुश्रावक हैं। आपके कई वर्षों से चौविहार, कच्चे पानी व बनस्पति आदि का त्याग है। आप साधक सघ के संचालक हैं। आप साधुमार्गी जैन शिक्षण सस्थान उदयपुर के मन्त्री पद पर कार्यरत है। आप अच्छे लेखक, वक्ता एव कवि हैं। स्वाध्याय शिविरो का आपने सफलता पूर्वक सचालन किया है। आपकी उल्लेखनीय सेवाओ के लिए सम्यग्ज्ञान प्रचा-

रक मण्डल की ओर से आपका अभिनन्दन भी किया गया। आप ने पर्युषण पर्व पर भूमावल, जामनेर आदि क्षेत्रो मे सेवायें दी हैं। आपकी धर्म पत्नी भी धार्मिक भावना वाली हैं तथा धार्मिक-प्रचार प्रसार मे पूरी सेवा देती है।

१६९. श्री फूलचन्द जी मेहता B A. (उदयपुर) — आयु ५० वर्ष। आप थोकडो व शास्त्रों के अच्छे ज्ञाता हैं। श्री स्था. जैन विद्यालय सचालन समिति डूगला मे निरीक्षक पद पर हैं। प्रति रविवार धार्मिक पाठशालाओ का निरीक्षण करने एव स्वाध्याय सघ के प्रचार-प्रसार हेतु बाहर पधारते हैं। स्वाध्याय शिविरो का सचालन एव अध्यापन कार्य भी कुशलता पूर्वक करते रहे हैं। आप कई वर्षों से पर्युषण पर्वो मे सेवा देते रहे है।

१७० श्री शांति लाल जी जारोली M A. B. Ed (मोरवन राज), आप अध्यापक एव स्वाध्याय प्रेमी हैं। पर्युषण पूर्व में उत्तरामेरु, मोरवन्द मे धर्माराधन कराया है।

१७१ श्री रंग लाल जी धाकड़ (फलीचड़ा) — आयु ५७ वर्ष। व्यवसायी। आपने पर्युषण मे फलीचड़ा मे सेवायें दी हैं।

१७२ श्री भवर लाल जी पोखरणा (नवानिया) — आयु ५४ वर्ष। आप जैन विद्यालय सचालन समिति डूगला के प्रचार मन्त्री हैं। आप सेवाभावी, सरल स्वभावी व धार्मिक रुचि रखने वाले व्यक्ति हैं। आपने आलनपुर, नवानियां में पर्युषण पर्व मे सेवायें दी हैं।

2, ३. श्री नाथूलाल जी बाफणा (भोपालसागर) — आयु ५० वर्ष। आप भोपालसागर श्रावक सघ के मन्त्री हैं। आपकी धार्मिक रुचि सराहनीय है। पर्युषण पर्व में रासमी, नवानिया, सिवनी, सींगपुर आदि स्थानो मे पधारकर अपनी सेवायें दी है।

१७४. श्री धनराज जी बाफणा (भोपालसागर).— आयु ६० वर्ष। आप भोपालसागर श्रावक संघ के अध्यक्ष हैं। आपने पर्युषण पर्व में शिवनी, खेडी, फलीचडा आदि स्थानो मे अपनी सेवायें प्रदान की हैं।

१७५. श्री बालचन्द जी पीतलिया (पारसोली) — आयु ४३ वर्ष। आप व्यवसायी हैं। आयु २६ वर्ष। आप व्यवसायी हैं। आपने पर्युषण पर्व मे राणमी एवं बहुना पधारकर अपनी सेवायें दी है।

१७६. श्री मागी लाल जी नागौरी (पारसोली).— पर्युषण पर्व मे राक्षमी और पहुना पधाकर सेवाये दी है।

१७७. श्री शकर लाल जी बडालिया (कुवारिया, उदयपुर — आप व्यवसायी हैं। आपकी सगीत मे अच्छी रुचि है। पर्युषण पर्व मे कुवारिया एव खैरुदा मे अपनी सेवायें दी हैं।

१७८. श्री मदनलाल जी सांखला (हथियाणा) — आयु ५० वर्ष। आप न्याय पंचायत पांडोली के चेयरमेन रहे हैं। आपकी प्रकृति वहुत ही सरल हैं। पर्युषण पर्व में कुवारिया, हथियाना में सेवायें दी हैं।

१७९ श्री नाथूलाल जी खैरोदिया (खैरोदा) — आयु ३४ वर्ष। आप व्यवसायी हैं। धार्मिक प्रवृत्ति मे विशेष रुचि है। पर्युषण पर्व मे नवानिया, धीलूड आदि स्थानो पर पधार कर सेवायें दी है।

१८० श्री शान्तिलाल जी धींग B. S. T. C साहित्यरत्न खरोदा, —आयु ४० वर्ष। आप जैन सिद्धान्त विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की है। पर्युषण पर्व मे नवानिया, खैरोदा एव धीलूड पधार कर सेवायें दी है।

१८१ श्री मगनलाल जी माडू (खैरोदा).—आयु ४५ वर्ष। आप स्वाध्याय प्रेमी है। पर्युषण पर्व मे गिलुण्ड मे सेवा दी है।

१८२ श्री लालचन्द जी डागी (बडी सादडी) — आयु ३२ वर्ष। आप व्यवसायी हैं। स्वाध्याय में विशेष रुचि है। पर्युषण पर्व में रूण्डेडा व कुथुवास मे सेवायें दी है।

१८३ श्री सुगनमल जी मारू (बड़ी सादड़ी)–आयु ५० वर्ष। आपको शास्त्र वाचन का अच्छा अभ्यास है। पर्युषण पर्व मे रूंडेडा, कुंथुवास एवं भादसोडा मे सेवायें दी है।

१८४. श्री हीरालालजी रांका (बोहेड़ा)—आयु ३३ वर्ष। आप शिक्षक व सरल स्वाभावी हैं। पर्युषण पर्व मे कुंथवास, दाता, पारसोली मे सेवायें दी हैं।

१८५—श्री चतरसिंह जी मेहता (बोहेड़ा):—आयु २० वर्ष। आप स्वाध्याय प्रेमी हैं। पर्युषण पर्व मे मॉडर व हथियाना में सेवायें दी है।

१८६ श्री दलपतसिंह जी धींग (बोहेड़ा)—आयु २० वर्ष। आप उत्साही स्वाध्यायी हैं व धर्म के प्रति विशेष रुचि है। पर्युषण पर्व में वेगू पधार कर सेवा दी है।

१८७ श्री हस्तीमल जी सांखला (जाशमा):—आयु २५ वर्ष। पर्युषण पर्व मे गढवाड़ा मे सेवा दी है।

१८८ श्री मदन लाल जी सांखला (जाशमा:—आयु २५ वर्ष। पर्युषण पर्व मे गढावाड़ा में सेवा दी हैं।

१८९. श्री मदनलाल जी धींग M. A. B. Ed. (कुंथुवास) – आयु ३० वर्ष। आप अच्छे कार्यकर्त्ता, समाज सेवी हैं। थोकडो की अच्छी जानकारी है। आप अच्छे वक्ता एवं अध्यापक हैं। पर्युषण पर्व मे भूसावल, खेतड़ी व खेदिया मे सेवा दी है।

१९० श्री मदनलाल जी सरूपरिया (मदेसर)—आयु ५० वर्ष। आपने व्यापार आदि से निवृत्ति ले ली है तथा अपना सारा समय धार्मिक कार्यों मे ही व्यतीत करते हैं। आपकी स्वाध्याय व साधना की रुचि सराहनीय हैं। पर्युषण पर्व मे चौथ का बरवाड़ा एवं बनेड़िया पधार कर सेवायें दी हैं।

१९१ श्री रोशनलाल जी नाहर (भादसोड़ा):–आयु ४० वर्ष। आप बहुत ही सरल स्वभावी व सेवाभावी हैं। तथा धार्मिक संस्थाओं के पदाधिकारी व सदस्य है? पर्युषण पर्व मे आलनपुर व भादसोडा मे सेवा प्रदान की है।

१९२ श्री मनोहरलाल जी पोखरणा (भादसोड़ा):—आयु २९ वर्ष। आप सरल स्वभावी व सेवाभावी एवं स्वध्याय प्रेमी है। आपने पर्युषण पर्व मे तिकतनी आदर्श नगर व पाडलिया मे अपनी सेवायें दी है।

१९३. श्री नाथुलाल जी बडालिया (भादसोडा):—आयु ४८ वर्ष। आप महावीर जैन शिक्षण शाला व जैन स्वाध्याय मण्डल के अध्यक्ष व कोषाध्यक्ष पद पर है। पर्युषण पर्व में बानखाड़ी, आदर्श नगर मे पधार कर सेवा दी है।

१९४. श्री भवर लाल जी खैरोडिया (भादसोड़ा):—आयु ५२ वर्ष। आप स्वाध्याय संघ व नवयुवक मण्डल भादसोडा के अध्यक्ष व जैन शाला भादसोडा के मंत्री है? आप बड़े ही सरल स्वभावी व सेवाभावी हैं। पर्युषण पर्व मे तिरूपुर, अलीगढ रामपुरा व बीगोद मे सेवा दी है।

१९५ श्री नानालाल जी मादवा (भादसोड़ा)–आयु ५२ वर्ष। आपको थोकडो की अच्छी जानकारी है। स्वाध्याय प्रेमी हैं। पर्युषण पर्व मे अलीगढ व बागोप पधार कर सेवा दी है।

१९६ श्री शंकरलाल जी लोढा (भादसोड़ा)—आयु ३० वर्ष। आप स्वाध्याय प्रेमी है। पर्युषण पर्व मे भजड पधार कर सेवा दी है।

१९७ श्री शान्तिलाल जी माडावत (भादसोड़ा):—आयु ४२ वर्ष। आप अध्यापक हैं। आपकी स्वाध्याय मे विशेष रुचि है। पर्युषण पर्व मे पीपलिया, बुजुर्ग पधार कर सेवा दी है।

१९८ श्री मनोहर लाल जी चोरड़िया (भादसोड़ा)—आयु २५ वर्ष। आप स्वाध्याय प्रेमी है। पर्युषण पर्व मे आदर्शनगर मे सेवा दी है।

१९९. **श्री छगनलाल जी चंडालिया (कपासन)**— आयु ६१ वर्ष। आप सेवा निवृत्त पुलिस अधीक्षक है। आप स्वाध्याय प्रेमी व विनम्र स्वभावी है। पर्युषण पर्व मे मगलवाड, निकुम एव निवाणिया मे सेवायें दी है।

२०० **श्री चांदमल जी हींगड़ (कपासन)** – आयु ४० वर्ष। आप उत्साही स्वाध्यायी हैं। आपकी धार्मिक रुचि सराहनीय है। आपको थोकडो की अच्छी जानकारी है। पर्युषण पर्व मे धासा, कुंथुवास, पहुना व भटवाडा पधार कर सेवायें दी हैं।

२०१. **श्री मांगीलाल जी बाघमार (कपासन)** – आयु ६० वर्ष। आप थोकडों व शास्त्रो के अच्छे जानकार है। आप अत्यन्त सरल स्वभावी, सेवाभावी व समाज सेवी हैं। कपासन मे धार्मिक पाठशाला का वर्षों से सफल सचालन कर रहे हैं। नवयुवकों व प्रौढो मे धार्मिक ज्ञान एव प्रेरणा प्रदान कर आपने अनेकों अच्छे स्वाध्यायी तैयार किए हैं। आपके विनम्र स्वभाव व असांप्रदायिकता के कारण आपका प्रभाव विशेष रूप पडता है। पर्यूषण पर्व में आकोला, आहती, व रूड आदि स्थानो मे पधार कर सेवायें प्रदान की हैं।

२०२. **श्री शांतिलाल जी चंडालिया (कपासन)** – आप अच्छे वक्ता है। पर्युषण पर्व मे खैरोदा, मोखण व काकरोली पधार कर सेवा प्रदान की है।

२०३ **श्री मानमल जी दक B. A. (कपासन)** आयु ३२ वर्ष। आपको स्वाध्याय मे विशेष रुचि है। पर्युषण पर्व मे मनावर, कुथावास व कांकरोली पधारकर सेवा दी हैं।

२०४. **श्री रिखब राज जी मारू (कपासन)** - आयु ४२ वर्ष। आपको थोकडो व शास्त्रो की अच्छी जानकारी है। पर्युषण पर्व मे चौथे क वरवाडा, रेलमगरा व रूघ मे सेवायें दी है।

२०५ **श्री सागर मल जी चंडालिया कपासन)** — आयु ५१ वर्ष। आप स्वाध्याय प्रेमी हैं। पर्युषण पर्व में कुवारिया व काकरोली पधार कर सेवा दी है।

२०६. **श्री मोती लाल जी चंडालिया (कपासन)**. आयु ४५ वर्ष। आप सेवाभावी, सरल स्वध्यावी है। धार्मिक रूचि सराहनीय हैं। पर्युषण पर्व मे निकुम व पहुना पधारकर सेवा दी है।

२०७ **श्री मिश्री लाल जी चंडालिया (कपासन)** — आयु ३० वर्ष। आप स्वाध्याय प्रेमी हैं। पर्युषण पर्व मे आरणी, सिंगपुर में पधार कर सेवा दी है।

२०८ **श्री माधू लाल जी गांधी (सिंगोली)**— आयु ३५ वर्ष। आप स्वाध्याय व सगीत प्रेमी हैं। पर्युषण पर्व मे पाडोली, व सिंगोली पधार कर सेवायें दी हैं।

२०९ **श्री शांति लाल जी गांधी (सिंगोली)** — आयु २७ वर्ष। आप स्वाध्याय प्रेमी हैं। पर्युषण पर्व मे पाडोली व सिंगोली पधार कर सेवा दी है।

२१० **श्री भवर लाल जी कछारा** B A. **(सिंगोली)**— आयु ३१ वर्ष। आप जैन सिद्धान्त विशारद उत्तीर्ण हैं। आप नवयुवक कार्यकर्ता व अच्छे सगीतज्ञ हैं। पर्युषण पर्व मे पारसोली, व सिंगोली में सेवा दी है।

२११. **श्री चांदमल जी दक** B A **साहित्यरत्न, सिद्धान्त विशारद (कानोड़)** — आयु ४० वर्ष। आप नवानिया में अध्यापक हैं। आप अच्छे वक्ता, सेवाभावी, व कर्मठ कार्यकर्ता हैं। पर्युषण पर्व में गोलिया, श्यामपुरा, महाराज की खेड़ी मे अपनी सेवायें दी हैं।

२१२ **श्री चेतन मल जी नागोरी बी काम (कानोड)**— आयु २३ वर्ष। आपने जैन सिद्धान्त विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप धार्मिक अध्यापन कार्य भी कराते हैं। आप अच्छे सगीतज्ञ, वक्ता एव शिक्षक हैं। पर्युषण पर्व में देहरादून, बानमवाडी मे सेवायें दी हैं।

२१३. **श्री अनिल कुमार बया (कानोड़):**— आयु २० वर्ष। आप अच्छे संगीतज्ञ हैं। पर्युषण पर्व मे मनावर व पीपलिया में सेवायें दी है।

२१४ **श्री सुभाष चंद जी राका (कानोड़)**.— आयु २० वर्ष। स्वाध्याय मे अच्छी रूचि है। आपने मनावर मे धर्माराधन कराया है।

२१५. **श्री भगवती लाल जी तेजावत (कोनोड)** — आयु २० वर्ष। आप स्वाध्याय प्रेमी हैं। आपने खेडी में धर्माराधन कराया है।

२१६. **श्री धनराज जी धींग (कानोड़)** — आयु ४० वर्ष। आप स्वाध्याय प्रेमी हैं। पर्युषण पर्व मे भरतपुर, मगनवाड, बामणोत आदि क्षेत्रो मे अपनी सेवायें प्रदान की है।

२१७. **श्री गौतम कुमार जी डूगरमाल वी काम. (कानोड़)** — आयु २० वर्ष। आप अच्छे उत्साही नवयुवक स्वाध्यायी हैं। पर्युषण पर्व मे चौथ का का वरवाडा पधार कर सेवा दी है।

२१८ **श्री मूल चद जी हींगड़ (आकोला)** — आयु १७ वर्ष। आपको अच्छी धार्मिक जानकारी है। सरल स्वभावी व सेवाभावी हैं। आकोला सघ के अध्यक्ष हैं। पर्युषण पर्व में मगलवाड, चादवा, उत्तरामेरू व वाकोद मे अपनी सेवायें दी हैं। स्वाध्यायी श्री घीस्टे लाल जी पारस मली जी हींगड आप ही के सुपुत्र हैं।

२१९ **श्री शांति लाल जी हींगड़ B A. (आकोला)** – आपको थोकड़ो का अच्छा ज्ञान है। पर्युषण पर्व मे शिवपुर पधारकर सेवा दी है।

२२० **श्री छगन लाल जी तातेड़ (आकोला)** — आयु ६५ वर्ष। आप सरल स्वभावी, सेवाभावी व मृदुभाषी हैं। आपकी धार्मिक रूचि सराहनीय है। चाखा पधारकर पर्वाराधन कराया है।

२२१ **श्री बाबू लाल जी हींगड़ (आकोला)** — आयु २३ वर्ष। आप अच्छे उत्साही नवयुवक स्वाध्यायी व धार्मिक रूचि वाले हैं। आपने बाकोद पधारकर धर्माराधन कराया है।

२२२. **श्री कुदन मल जी दाणी B Com. (डूगला** — आयु २२ वर्ष। आप अच्छे सगीतज्ञ व शास्त्रीय अध्ययन मे रूचि रखने वाले हैं। धार्मिक शिविरों मे अध्यापन कराया है। पर्युषण पर्व में पारसोली, पीपलिया बुजुर्ग व चारेणा में सेवायें दी हैं।

क्षेत्रीय कार्यालय सवाई माधोपुर

□ श्री रूपचन्द जैन, स योजक

एक-कुशल कृषक भूमि को देखते ही पहिचान लेता है कि इसमे कितनी उर्वरा शक्ति है और उसी के अनुसार वह उसमें बीजवपन और सिचन करता है। परम श्रद्धेय प्रात स्मरणीय, इतिहास मार्तण्ड, सामायिक एव स्वाध्याय के प्रणेता महामहिम आचार्य प्रवर श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म०सा० के चरण कमलो से सवाई माधोपुर क्षेत्र पावन हुआ तो उन्हें जानने में देर नही लगी कि यहाँ के श्रावको मे धार्मिक चेतना विद्यमान है। आवश्यकता है उस चेतना को जागृत करने और मार्ग दर्शन करने की। 'पढम नाण तओ दया' की उक्ति के अनुसार धार्मिक जीवन निर्माण के लिये ज्ञान का होना आवश्यक है और वह स्वाध्याय के द्वारा विकसित हो सकता है अत आचार्य प्रवर पोष शुक्ला १४ स० २०२४ (स्वय की जयन्ती) को जव श्यामपुरा (धर्मपुरी) विराज रहे थे तो वृहद् जनसमूह के बीच आपके सदुपदेश से स्वाध्याय सघ जोधपुर की सवाई माधोपुर शाखा की स्थापना हुई। तव ही से जन मानस मे स्वाध्याय और सामायिक की रुचि जागृत करने का कार्य यह शाखा निरन्तर कर रही है। शाखा की प्रगति का विवरण निम्न प्रकार रहा है—

सम्यग् ज्ञान का प्रचार-प्रसार :

सम्यग् ज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए सघ की ओर से कार्यकर्ता समय-समय पर क्षेत्रो का भ्रमण करते हैं। वहाँ वे नित्य अथवा साप्ताहिक सामूहिक सामायिक, स्वाध्याय, प्रार्थना एव अन्य आध्यात्मिक कार्यक्रमो को चलाने की प्रेरणा करते हैं। अब तक कार्यकर्ता भरतपुर, सवाई माधोपुर, अलवर, कोटा, बू दी एव टोंक जिलो के अनेक ग्रामो मे कार्यक्रम प्रारम्भ करा चुके हैं। एक समय वह था जब धर्म-स्थान का झाड़ू निकलना भी असम्भव था, वहाँ आज दैनिक धार्मिक कार्यक्रम चल रहे हैं। अनेक स्थानो पर ज्ञान गोष्ठियों का भी आयोजन हुआ है एवं नये स्थानको का निर्माण भी हो रहा है।

अब प्रत्येक गाँव में जहाँ समाज के १० घर हैं, वहाँ दैनिक सामूहिक स्वाध्याय, सामायिक, प्रार्थना, वाचनालय, ज्ञानगोष्ठी पाठशाला एव पत्राचार परीक्षा के प्रश्न-पत्र नियमित भेजने की व्यवस्था करने का लक्ष्य है। स्वाध्याय सघ की ओर से सभी केन्द्रो पर 'जिनवाणी' और श्रमणोपासक पत्रिकाएँ भेजी जावेंगी। अब की वार इन सभी कार्यों हेतु स्थानीय स्वाध्यायी को उत्तरदायी ठहरा कर क्षेत्रीय कार्यालय से मार्ग दर्शन भी किया जावेगा।

गत वर्ष सम्यग् ज्ञान का प्रचार-प्रसार विशेषकर पल्लीवाल क्षेत्र मे किया गया। आजकल पल्लीवाल क्षेत्र में, तपस्वी श्री श्रीचन्दजी म० सा० गगापुर सिटी का चातुर्मास पूर्ण कर, विचरण कर रहे हैं। वहाँ पर १४४ साथी स्वाध्यायी बन चुके हैं एव स्वाध्याय सघ जोधपुर की वहाँ एक अलग शाखा भी स्थापित की जा चुकी है, जिसका सयोजन श्री रामदयालजी सेवानिवृत्त तहसीलदार कर रहे हैं। इस क्षेत्र के लिए श्री मगतूरामजी भरतपुर,

श्री गुलाबचन्दजी गंगापुरसिटी, श्री रतनलालजी डेहरामोद, श्री गिर्राजप्रसादजी बरगवा, श्री केवलमलजी गंगापुर सिटी की एक संचालन समिति भी बना दी है। अब तक पल्लीवाल क्षेत्र का कार्य भी इसी शाखा के अन्तर्गत ही चलता था।

स्वाध्यायी प्रशिक्षण :

संघ का लक्ष्य वैयक्तिक प्रगति ही नहीं, किन्तु समूह की प्रगति भी है और इसीलिये जो व्यक्ति स्वाध्याय और सामायिक साधना मे रुचि रखते हैं, उनसे यह अपेक्षा भी की जाती है कि वे पास-पड़ोस वालो को तथा अपने सम्पर्क मे आने वालों को भी स्वाध्याय और सामायिक साधना के लिये प्रेरित करें। इसीलिये उन स्वाध्याय प्रेमियो को प्रशिक्षित करने के लिये समय-समय पर प्रशिक्षण शिविरो का आयोजन किया जाता है जिसमे विद्वान शिक्षकों द्वारा ज्ञानवृद्धि व साधना-विधि का प्रशिक्षण दिया जाता है। अब तक इस प्रकार के २२ शिविरो का आयोजन हो चुका है। इस क्षेत्र मे भी सवाई माधोपुर, आलनपुर, मानटाउन, अलीगढ, देई, श्रीमहावीरजी और कोटा में इनका आयोजन हो चुका है जिनमे लगभग ६० प्रतिशत स्वाध्यायी इस शाखा के उपस्थित रहे हैं। इन प्रशिक्षित स्वाध्यायियो मे से ही पर्युषण पर्वाधिराज पर सेवा देने वाले स्वाध्यायियो का चयन किया जाता है।

स्वाध्यायियो को इन शिविरो में सामायिक, प्रतिक्रमण, अन्तगड़, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, तत्वार्थ सूत्र, कर्म प्रकृति, पच्चीस बोल, समिति गुप्ति, नवतत्व, सम्यक्त्व के बोल, कर्मग्रथ, प्राकृत, व्याकरण, संगीत, भाषण, कहानी एव प्रत्याख्यानो का ज्ञान कराया जा चुका है।

स्थानीय प्रशिक्षण शिविर :

घर बैठे बालकों में धार्मिक सस्कार निर्माण हेतु स्थान-स्थान पर शिविरो का आयोजन किया जाता है जिनमे प्रशिक्षित स्वाध्यायियों मे से चयन कर शिक्षकों को भेजा जाता है और इन स्थानों पर लगभग १० रोज के लिये रुककर बालको को धार्मिक शिक्षण देते है। अब तक इस क्षेत्र मे ऐसे २६ शिविरों का आयोजन किया जा चुका है जिनमें लगभग ६०० बालकों ने भाग लिया और सामायिक, प्रतिक्रमण व पच्चीस बोल आदि का ज्ञान दिया गया।

धार्मिक शिक्षण :

इस क्षेत्र मे धार्मिक पाठशालाएँ निम्न स्थानो पर संचालित करने का निश्चय किया है। कुछ स्थानो पर तो पहिले से भी चल रही हैं। पल्लीवाल क्षेत्र में इनके अतिरिक्त और चलाई जावेंगी—

(१) आदर्शनगर (२) आलनपुर (३) कुण्डेरा (४) कुस्तला (५) घकेरी (६) चौथ का बरवाडा (७) चौरू (८) जस्तोदा (९) डूनी (१०) पचाला (११) बावई (१२) मानटाउन (१३) श्यामपुरा (१४) सवाई माधोपुर एव (१५) सुमेरगज मण्डी (१६) अलीगढ मे वीर जैन विद्यालय चल रहा है।

जिन-जिन स्थानो पर पाठशालाएँ चलाई जावेंगी उनको ५० रुपये मासिक तक शिक्षक का भत्ता, दरियाँ ५, चाक डिब्बे १२, रोलअप बोर्ड १, स्टॉक रजिस्टर १, उपस्थिति रजिस्टर १, एव धार्मिक पुस्तकें स्वाध्याय संघ की ओर से दी जावेंगी। उपर्युक्त सभी विद्यालयो को साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर से परीक्षा देना अनिवार्य होगा।

पत्राचार परीक्षा कार्यक्रम :

सघ की ओर से सन् १९७३-७४ मे एक वर्ष तक यह कार्यक्रम चलाया गया। अनेक स्वाध्यायियो

ने इसमे विशेष रुचि ली। अब गत् जुलाई से पुनः इसे प्रारम्भ कर दिया गया है। दीपावली तक ६ प्रश्न पत्र निकल चुके हैं जिनके निम्न प्रकार उत्तर भी प्राप्त हो गए हैं—

प्रथम ६८, द्वितीय ८६, तृतीय ४५, चतुर्थ ५, पंचम २, षष्टम २, सप्तम २, अष्ठम २, नवम् १।

आगे के प्रश्नपत्र भी शीघ्र ही बनवाकर सभी स्वाध्यायियो को भेजे जावेंगे। इस कार्य हेतु अब तक हमे श्री रतनलालजी सवाई माधोपुर, श्री रघुनाथदासजी सवाई माधोपुर, श्री मिलापचन्दजी डागा बूंदी, श्री प्रेमचन्दजी कोठारी बूंदी, श्री मोतीलालजी सुराना इन्दौर, श्रीमती सुशीला बहिन बोहरा जोधपुर, श्री केवलमलजी लोढा जयपुर, श्री भैरूलालजी कुम्तला, श्री चौथमलजी मानटाउन, श्री राजूलालजी आदर्शनगर, श्री प्रेमबाबूजी मानटाउन, श्री लल्लूलालजी आलनपुर का सराहनीय सहयोग मिल रहा है।

पर्युषण पर्व सेवा :

स्वाध्याय सघ की ओर से यह सेवा आध्यात्मिक और निःशुल्क सेवा है, स्वाध्यायी बन्धु अपने समय का दान देकर वर्षाकाल के अनेक कष्टों को झेलते हुए अपने निश्चित स्थान पर सेवा देने हेतु जाते हैं। अब तक इस शाखा के स्वाध्यायी ११८ स्थानो पर सेवायें दे चुके हैं। जिनमें इस क्षेत्र के स्थानो के अतिरिक्त जोधपुर क्षेत्र के निम्न स्थान भी हैं—

१. उत्तर प्रदेश काधला

२ तमिलनाडु उटकमण्ड

३ मध्य प्रदेश आकोदिया मण्डी, नृसिंगगढ़, पाडल्या, बेतूल, महावीरनगर, विरमावल, शिवनी, सुजालपुर, सारंगपुर, सिहोर, हाटपीपल्या

४ महाराष्ट्र गोदिया, जलगाव, जामनेर, नागपुर, परली, पाचोरा, फतेहपुर, फागणा, बाघली, बोरकुण्ड, भुसावल, वणी वाकोद, सिन्दखेडा

५ राजस्थान आकोला, आरणी, इण्टाली, खेतड़ी-नगर, गुडवाडा, मानसोल गुडली, घासा, दासप्पा, धनारी कला, पोटला, पाडोली, बागावास, बोहेडा, भदेसर, भीमगढ, भूपाल-सागर, मावली ज०, माखन, मोही, मगलवाड, राशमी, लागच, सरदार शहर, सालावास और सिन्धु

पर्युषण पर्व में सेवा हेतु गावो से आने वाले स्वाध्यायियो की सुविधा हेतु इस शाखा ने ६० सेट्स इस प्रकार तैयार किये हैं, जिनमें निम्न सामग्री है—

सूत्र : सिरि अन्तगढ सूत्र (जयपुर), अन्तगढ-दशा सूत्र (सैलाना) कल्पसूत्र (काकरोली) सामाजिक सूत्र सार्थ, प्रतिक्रमण सूत्र सार्थ।

चारित्र : दामनखा, पच कथानक, मल्लिनाथ, कायाकल्प के तीन राही, चम्पक, धनदत्त।

स्तोक : जैन सिद्धान्त थोक माला, स्तोत्र सग्रह।

प्रवचन : जैनत्व की झाकी, सैद्धान्तिक प्रश्नोत्तरी, गजेन्द्र प्रवचन माला, पर्युषण पर्वाराधन, प्रवचन पचामृत, आत्म शुद्धि का मूल तत्वत्रयी, सुख के स्त्रोत, दुःख की कटीली झाडिया, इनसे सीखे, अन्तकृत विवेचन, आलोचना पचक।

अन्य : सन्दूक, ताला, पूजणी, आसन, मुंहपत्तियां और वैज।

फार्मस : पर्युषण पर्व की रिपोर्ट, यात्रा व्यय बिल, सर्वेक्षण, प्रचारक का प्रतिवेदन, सदस्यता, नियुक्ति सूची, रूट लिस्ट ।

आगामी वर्षों से हमे चोलपट्टे दरी, दुपट्टा, चादर, लोटा, छाता केटली की व्यवस्था और करनी है। ज्ञानवृद्धि हेतु पर्युषण सेवा देने वाले स्वाध्यायियों को १०-०० रुपये प्रतिवर्ष का साहित्य उनकी आवश्यकतानुसार एव एक वर्ष बाहर अथवा तीन वर्ष स्थानीय सेवा देने पर एक-एक सन्दूक से सम्मानित भी किया जाता है जिसम कि पर्युषण सम्बन्धी सामग्री उनके पास भी स्थायी रूप से रह सके। निम्न चार्ट से यह ज्ञान हो जावेगा कि इस शाखा का जोधपुर कार्यालय को कितना सहयोग मिल रहा है।

विक्री केन्द्र :

कार्यालय मे धार्मिक व्यक्तियो के सुविधार्थ विक्री केन्द्र भी चालू है जिसमे धार्मिक साहित्य एव उपकरण आसानी से उपलब्ध कराये जाते हैं तथा छपे हुए मूल्य पर वेचे जाते हैं।

स्वाध्याय भवन निर्माण

स्टेशन वजरिया सवाई माधोपुर मे स्वाध्याय भवन निर्माण हेतु ६०० वर्ग गज का भूखण्ड भी क्रय कर लिया है। अब इस भूखण्ड पर भवन निर्माण करना शेष है। यदि यह भवन बन जाता है तो कार्यालय एव सामूहिक स्वाध्याय का दैनिक कार्यक्रम चलाने हेतु स्थान एव यह शाखा इसके किराये से स्वावलम्बी भी बन सकती है। पहरसर मे स्वाध्याय भवन निर्माण हेतु २०००-०० रुपये का अनुदान भी दिया गया। अब कुछेक स्थानो की ओर भी आवश्यकताएँ हैं।

संघ की सम्पत्ति :

इस शाखा के पास मुख्य सम्पत्ति तो लगभग २५० स्वाध्यायी हैं जिनमे अनेक एम ए. बी. एड, बी ए बी. एड, बी कॉम, इण्टर, मैट्रिक, तत्वज्ञ शास्त्र वाचक, सरकारी कर्मचारी, अध्यापक, व्यापारी, विद्यार्थी, सामाजिक कार्यकर्त्ता, गायक, कवि, भाषणकर्त्ता एव थोकडों के जानकार हैं जो कि विभिन्न स्थानो पर रहते हैं और वही अपना दैनिक कार्यक्रम चलाते हैं। भौतिक सम्पत्ति इस दीपावली पर लगभग २८,०००-०० रुपये के शेष रही जिसमें भूखण्ड भवन निर्माण सामग्री, साहित्य, फर्नीचर, एव नकद कैश आदि अन्य सामग्री है।

संघ का संचालन :

सघ का सचालन स्थापना समय से श्री चौथमल जी अध्यापक ने बडे उत्साह एव दक्षता से किया वाद में २४ जून १९७३ को यह कार्य मेरे सुपुर्द किया। आजकल सघ का सचालन निम्न समिति के अन्तर्गत चल रहा है—

१. श्री सुजानमल जी मेहता चौथ का बरवाड़ा — निदेशक
२. श्री रघुनाथ दास जी जैन प्रधानाध्यापक वहरावण्डा — लेखा निरीक्षक
३ श्री रामदयाल जी जैन सर्राफ, सवाई माधोपुर — कोषाध्यक्ष
४ श्री चौथमल जी जैन स्टेशन वजरिया, स मा. — सयोजक साधना विभाग
५. श्री रूपचद जैन स्टेशन वजरिया, स० मा० — सयोजक

इस क्षेत्र मे प्रचार-प्रसार का कार्य श्री कल्याण मल जी जैन चोरू वाले ने दक्षता से किया है। श्री केवलमल जी लोढा जयपुर, श्री रामदयाल जी

पर्यूषण-सेवा स्वाध्याय विवरण

वर्ष	इस क्षेत्र के स्वाध्यायियो द्वारा शास्त्र वाचन सवाई माधोपुर मे		जोधपुर क्षेत्र मे		योग		जोधपुर क्षेत्र के स्वाध्यायी द्वारा इस क्षेत्र मे वाचन		कुल योग	
	स्थान	स्वाध्यायी	स्थान	स्वाध्यायी	स्थान	स्वाध्यायी	स्थान	स्वाध्यायी	स्थान	स्वाध्यायी
१९६८	१	१	—	—	१	१	१	२	२	३
१९६९	१	२	२	४	३	६	१	२	४	८
१९७०	१०	१६	१	२	११	१८	१	१	११	१८
१९७१	१७	२७	२	२	१९	२९	१	२	२०	३१
१९७२	२३	३५	२	३	२५	३८	—	—	२५	३८
१९७३	१५	२५	२	३	१७	२८	१	१	१८	२९
१९७४	१५	२४	—	—	१५	२४	१	२	१६	२६
१९७४	१	२	—	—	१	२	५	९	६	११
१९७५	२९	५३	६	१०	३५	६३	३	६	३८	६९
१९७६	४२	१०३	१६	४२	५८	१४५	२	४	६०	१४९
१९७७	४०	८६	१९	५०	५९	१३६	२	३	६१	१३९
१९७७	—	—	७	१६	७	१६	—	—	७	१६
१९७८	५६	१२३	१७	३५	७३	१५८	२	४	७५	१६२

तहसीलदार फाजिलाबाद, श्री केवलमल जी गगापुर, श्री मागीलाल जी आदि अनेक कार्यकर्त्ता भी प्रचार-प्रसार का कार्य समय समय पर करते रहते हैं। कार्यालय का कार्य श्री शान्ता प्रसाद जी अध्यापक कर रहे हैं। मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र के प्रचार का कार्य अब श्री चौथमल जी अध्यापक करेंगे।

आभार प्रदर्शन :

अन्त मे इस शाखा के सचालन मे जिन-जिन महानुभावो का सहयोग मिल रहा है, उन सभी के प्रति हम अपना आभार प्रकट करते हैं। सर्वप्रथम हम आचार्य प्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म सा. के चरणो मे नतमस्तक होते हैं जिनके मार्ग दर्शन एव पावन प्रेरणा से यह सघ उत्तरोत्तर प्रगति पर है। उन सभी स्वाध्यायी वन्धुओ के भी अत्यन्त आभारी हैं जिनके सहयोग से यह सघ ज्ञान, दर्शन, चारित्र के क्रियान्वयन मे सहायक बनता है। उन समस्त सघो के भी आभारी हैं जो सघ को सेवा का अवसर देते है। सम्यग् ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर एव स्वाध्याय सघ जोधपुर के भी आभारी हैं जहाँ से समय-समय पर मार्गदर्शन एव आर्थिक सहयोग बराबर प्राप्त होता है। जो सघ अपने यहां स्वाध्यायी एव स्थानीय शिविर लगाने हेतु संघ को अवसर प्रदान करते हैं, उनके भी हम परम आभारी है। अन्त मे हम उन सभी ज्ञात-अज्ञात सज्जनो के आभारी हैं जो सघ के विकास में तन मन एव धन से सहयोग प्रदान कर रहे हैं। अब प्रतिमाह दो दिन के लिए इस क्षेत्र मे जयपुर से श्री चन्द्रसिंह जी बोथरा एव श्री सुरेन्द्रसिंह जी बोथरा पधारते हैं।

स्वाध्यायी बन्धुओ के जीवन एव उनके कार्यक्रमो से अन्य साथियो को प्रेरणा मिले, इसलिए मण्डल ने यह स्मारिका प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। श्री सुजानमल जी एव श्री कल्याणमल जी चोरू वालों ने इस क्षेत्र के स्वाध्यायियो का पूर्ण परिचय प्राप्त कर तैयार करने का पूरा-पूरा प्रयत्न किया है किन्तु फिर भी अनेक साथियो की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त नही हो सकी हो तो वह सब गलती मेरी है, अन्य किसी कार्यकर्ता की नही है, जिसके लिए मैं बारम्बार आप सभी से क्षमा चाहता हूं।

स्वाध्यायियों का परिचय

१. अलवर (राजस्थान)

जिला मुख्यालय रेल्वे स्टेशन एव एक लाख की जनसख्या वाला प्रमुख नगर है। जैन समाज के १०० घर तथा स्थानकवासी ४० घर हैं। यहाँ के प्रमुख कार्यकर्ता श्री नानकचद जी पालावत, श्री सूरजमल जी मेहता आदि महानुभाव हैं। नवयुवक स्वाध्यायी श्री कमल चन्दजी मेहता विशेष रुचि ले रहे हैं और दलाली करके पत्राचार के प्रश्न पत्रो के उत्तर बराबर भिजवाते रहते हैं।

२. अलीगढ़ (जिला टोंक)

यह कस्बा तहसील मुख्यालय है। यहा स्थानक एव जैन विद्यालय है। जैन समाज के ७० घर हैं एव स्थानकवासी ३० घर हैं। यहाँ स्वाध्याय शिविर भी हो चुका है। यहाँ पर सवाई माधोपुर व टोंक से बसें आती हैं। यहाँ के स्वाध्यायी बन्धुओ का परिचय निम्न प्रकार है —

१. श्री उच्छवराय जी :—आप एक अच्छे व्यवसायी एव प्रतिष्ठित नागरिक हैं। प्रतिवर्ष आप स्थानीय सेवा देते हैं।

२. श्री सौभागमल जी जैन :—आप कपडे के व्यापारी और स्वाध्यायी हैं। अन्तगढ, उत्तराध्ययन आदि आगमो के ज्ञाता हैं। आपने अनेक वार उखलाणा में पर्युषण पर्व में सेवा दी है।

३. श्री रामपाल जी :—आप बी० ए०, एस० टी० सी० अध्यापक हैं एव होनहार स्वाध्यायी हैं। आप अच्छे जानकर हैं। आपने अब तक स्थानीय सेवा दी है।

४. श्री बालचन्द जी :—आप बडे उत्साही व्यक्ति एव सेवभावी हैं। आपकी स्वाध्याय मे लगन है। यही स्वाध्यायियो की सेवा करते हैं।

५. श्री कानजी टेलर :—आप बडे उत्साही हैं। आपकी स्वाध्याय मे अच्छी रुचि है। आपने उखलाना, डेहरा, फाजिलाबाद आदि स्थानो मे पर्युषण मे सेवा दी है।

६. श्री गोपाल लाल जी :—आप अच्छे होनहार सामाजिक एव राजनैतिक कार्यकर्ता एव श्री वीर जैन विद्यालय के मत्री एव कुशल वैद्य हैं। आपने अब तक गंगापुर, फाजिलाबाद, दूणी और वेसुल मे सेवा दी है। आपकी व्याख्यान शैली जोशीली है।

७. श्री गजानन्द जी :—पुत्र श्री मथुरालाल जी। आयु २५ वर्ष। आप अच्छे गायक हैं। आप कजोली, खुजालपुर एवं महावीर नगर में पर्युषण पर्व में सेवा दे चुके हैं। आजकल आप श्यालगज इन्दौर में रहते हैं।

८ श्री जसकरण जी :—पुत्र श्री सूरजमल जी। आयु २१ वर्ष। आप एक उत्साही युवक, लगनशील व्यक्ति हैं। पर्युषण पर्व में आपने अब तक कजोली, बोहेडा, पाडल्या एव सजीत में सेवा दी है।

९ श्री गौतम चन्द जी :—पुत्र श्री शान्तिलाल जी। आयु २२ वर्ष। आप उत्साही युवक हैं। आपने गगापुर एवं भीमगढ़ में पर्युषण पर्व में सेवा दी है।

१० श्री घनश्याम जी :—पुत्र श्री भवर लाल जी। आयु २२ वर्ष। आप होनहार नवयुवक हैं। बी० ए०, बी० एड० हैं। आप अच्छे जानकार हैं। आपने पोटला में पर्युषण पर्व में सेवा दी है।

११. श्री गौतम कुमार जी :—पुत्र श्री मनोहरलाल जी। आयु १९ वर्ष। आप जैन सिद्धान्त संस्थान जयपुर में जैन सिद्धान्त शिक्षण शास्त्री की परीक्षा का अध्ययन कर रहे हैं। सस्कृत, प्राकृत, न्याय, दर्शन, भाषण व लेखन में अच्छी रुचि है। आप से समाज को बहुत आशा है। आपने फतेहपुर में पर्युषण पर्व में सेवा दी है।

१२ श्री उच्छवरामजी :—पुत्र श्री लक्ष्मीचन्द जी। आयु ४९ वर्ष। आप एस० टी० सी० अध्यापक है। आप सामायिक, प्रतिक्रमण और अन्तगढदशा के ज्ञाता हैं। आपने पर्युषण पर्व में पचाला, जैनपुरी, डेहरा आदि स्थानो पर सेवा दी है।

१३. श्री चिरंजीलाल जी :—आप एक अच्छे व्यवसायी हैं। आप वर्षों तक श्री वीर जैन विद्यालय अलीगढ में अध्यापन कर चुके हैं। पर्युषण पर्व में सेवा देने की भावना रखते हैं।

१४. श्री जम्बू कुमार जी :—पुत्र श्री मनोहर लाल जी। आयु २२ वर्ष। आप एस० टी० सी० अध्यापक हैं। आप आगे सेवा देने की भावना रखते हैं।

१५. श्री बाबूलाल जी :—पुत्र श्री लड्डूलालजी। आयु १७ वर्ष। आप व्यवसायी हैं। आपकी स्वाध्याय में अच्छी रुचि है। आगे सेवा देने की भावना रखते हैं।

१६. श्री कपूरचन्द जी :—पुत्र श्री भूरालाल जी। आयु २३ वर्ष। आपकी व्यवहारिक योग्यता प्रथम वर्ष कॉमर्स है, आप स्वाध्याय में अच्छी रुचि रखते हैं। आपने उखलाणा में पर्युषण पर्व मे सेवा दी है।

१७ श्री प्रजनलाल जी जैन :—पुत्र श्री कालुलाल जी। आयु १६ वर्ष। आप सामायिक प्रतिक्रमण के जानकार हैं। आगे सेवा देने की भावना रखते हैं।

१८. श्री घनश्याम जी जैन :—आप बी० ए० उत्तीर्ण नवयुवक स्वाध्यायी हैं। आप पर्युषण पर्व में सेवा दे चुके हैं।

१९. श्री धर्मचद जी :—आप श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण सस्थान जयपुर मे जैन सिद्धान्ताचार्य का अध्ययन कर रहे हैं। राजस्थान विश्वविद्यालय बी० ए० ऑनर्स प्रथम वर्ष मे ८१.५ प्रतिशत अक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया है। अच्छे जानकार एव सुशील नवयुवक हैं। आप प्राकृत, सस्कृत, न्याय, दर्शन, लेखन भाषण आदि मे अच्छी प्रगति कर रहे हैं। आप होनहार युवक हैं।

निम्न सज्जनो ने स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविरो मे भी भाग लिया है :—

२० श्री विमल चद जी २१. श्री नवलकिशोर जी
२२. श्री रामकल्याण जी २३ श्री रामविलास जी
२४. श्री चन्द्रप्रकाश जी २५ श्री उत्तम चंद जी
२६ श्री प्रवीनकुमार जी २७ श्री भेरुलाल जी
२८. श्री रमेश चद जी २९ श्री अमोलक चंद जी
३०. श्री कजोड़ मल जी।

३. आदर्शनगर (जिला सवाई माधोपुर)

यह स्थान सवाई माधोपुर से एक किलोमीटर है। यहाँ जैनियो के ६० घर हैं एव ३० घर स्थानकवासी समाज के हैं। श्री वजरगलालजी, श्री नेमीचदजी, श्री बावूलालजी आदि प्रमुख श्रावक हैं। स्वाध्यायियो का परिचय निम्न प्रकार है :—

१. श्री राजूलाल जी :—पुत्र श्री वख्तावरलाल जी। आयु ४२ वर्ष। आप बी० ए०, बी० एड० प्रधानाध्यापक हैं। पर्युषण पर्व में आपने श्यामपुरा वरगवा, सुमेरगजमण्डी, आदर्शनगर और दूणी मे सेवा दी है।

२ श्री पुरुषोत्तम कुमारजी :—पुत्र श्री नेमीचद जी। आयु २२ वर्ष। आप कार्यकर्ता हैं। आप पर्युषण पर्व मे स्थानीय सेवा देते हैं।

३ श्री मथुरालाल जी .—पुत्र श्री मोतीलाल जी। आयु ३६ वर्ष। आप अध्यापक एव स्वाध्यायी हैं। आपने देवली, बावई, उनियारा मे पर्युषण पर्व में सेवा दी है। पाठशाला का अध्यापन कार्य भी किया है।

४. श्री लालचंद जी जैन :—पुत्र श्री मोतीलाल जी श्रीश्रीमाल। आयु ४३ वर्ष। आप एम० कॉम०, बी० एड०, प्रभाकर, उप प्रधानाचार्य हैं। आप प्रगतिशील स्वाध्यायी हैं। किसी भी प्रवृति में तैयार रहते हैं। आप स्थानीय सेवा देते हैं।

५ श्री गणपतलाल जी :—पुत्र श्री वख्तावरलाल जी। आयु ३० वर्ष। आप बी० कॉम० हैं। राजकीय विद्युत विभाग मे सेवारत हैं। आप अच्छे स्वाध्यायी है। पर्युषण पर्व में स्थानीय सेवा देते हैं एव पाठशाला भी चलाते हैं।

६. श्री जीतमलजी :—पुत्र श्री धूलीलालजी एण्डवा वाले। आप कोटा शिविर मे भी पधारे।

७. श्री नन्दसिंहजी :—आप राजपूत वश मे उत्पन्न होने के साथ-साथ आचार्य श्री के प्रति आपको अगाढ श्रद्धा है। आप इन्दौर शिविर मे भी पधारे एव नियमित सामायिक-स्वाध्याय करते हैं।

४. आलनपुर (जिला सवाई माधोपुर)

यह सवाई माधोपुर व मानटाउन के बीच मे है। यहा स्थानकवासी समाज के ३० घर हैं। आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म सा सवाई माधोपुर के चातुर्मास के समय कुछ दिन यहा विराजे और गत वर्ष तपस्वी श्री श्रीचन्दजी म सा. का चातुर्मास भी हो चुका है। यहाँ के स्वाध्यायी श्रावको का परिचय निम्न प्रकार है—

१ श्री बाबूलालजी :—पुत्र श्री धूलीलालजी। आयु ४५ वर्ष। आप इण्टर पास स्टेनोग्राफर, सामाजिक कार्यकर्ता और पोरवाल सघ के मानद् मत्री है। आप नागौर, जयपुर, सवाई माधोपुर, आलनपुर, व्यावर आदि शिविरो मे प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं। आप पर्युषण पर्व मे आलनपुर, बोहिडा, बारा, बागली, गोदिया दूणी आदि स्थानो मे सेवा दे चुके हैं।

२ श्री लल्लूलालजी जैन :—पुत्र श्री रामनारायणजी जैन। आयु २९ वर्ष। आपकी व्यवहारिक योग्यता बी० कॉम० है और सिंचाई विभाग मे स्टेनोग्राफर हैं, अच्छे जानकार श्रावक है। आपने पर्युषण पर्व मे बारा, जरखोदा, पचाला, बैतुल, विदिशा, राशमी जामनेर, भरतपुर आदि स्थानों मे सेवा दी है।

३ श्री कजोडमलजी जैन :— पुत्र श्री अम्बालालजी। आयु ५० वर्ष। आप लगनशील श्रावक हैं। आप नियमित सामायिक एव स्वाध्याय करने वाले व्यक्ति हैं। अच्छे गायक भी हैं। आपने स्थानीय एव पाण्डोली मे सेवा दी है।

४ श्री जम्बुकुमारजी :—पुत्र श्री चौथमलजी। आयु २६ वर्ष। आप हायर सैकण्डरी पास कपडे के व्यवसायी अच्छे जानकार श्रावक हैं। स्थानीय श्रावक सघ के मत्री हैं। आप जयपुर, सवाई माधोपुर, आलनपुर आदि स्थानों मे प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं। आपने पर्युषण पर्व मे राशमी व गोदिया में सेवा दी है।

५. श्री रमेशचंदजी जैन :—पुत्र श्री प्रभुलालजी जैन। आयु १६ वर्ष। आपने खातोली व भुसावल जाकर पर्युषण पर्व मे सेवा दी है। उत्साही स्वाध्यायी हैं।

६. श्री धर्मप्रकाशजी :—पुत्र श्री मूलचन्दजी। आयु २२ वर्ष। आपकी स्वाध्याय मे अच्छी रुचि है। आपने पर्युषण पर्व मे खेतडीनगर में सेवा दी है।

७. श्री प्रभुलालजी सींगोर वाले :—आयु ४५ वर्ष। आप इण्टर पास हैं और राजकीय सेवा मे प्रधानाध्यापक हैं। आपने पर्युषण पर्व मे मई मे सेवा दी है। सवाई माधोपुर में पुस्तकालय का भी सचालन किया है।

८. श्री रामदयालजी :—पुत्र श्री रामकरणजी। आयु ३० वर्ष। आप धर्मरुचि प्रेमी स्वाध्यायी हैं। आपने खेतडीनगर मे पर्युषण पर्व में सेवा दी है।

९. श्री राजेन्द्रकुमारजी :—श्री मोतीलालजी जैन एण्डवा वालो के सुपुत्र हैं। आप दूणी पर्युषण मे सेवा देने हेतु पधारे।

१० श्री भंवरलालजी जैन :—आप वरिष्ठ स्वाध्यायी हैं। नियमित सामायिक करते हैं। मानटाउन मे आप कन्ट्रोल के डीलर हैं। स्थानीय सेवा देते हैं।

११. श्रीमती रूपीबाई जैन :— आप महावीर श्राविका समिति की अध्यक्ष हैं। इस वर्ष पर्युषण पर्व मे सभी के सहयोग से आपने ही कार्यक्रम चलाया है।

१२. श्रीमती विमलाबाई :—आपने भी इस वर्ष अन्य सहयोगी बहनो की सहायता से पर्युषण पर्व मे सेवा दी है।

१३ श्रीमती कंचनदेवी :—आपने भी इस वर्ष अन्य बहिनो के साथ पर्युषण में सेवा दी।

१४. श्री विनयचन्दजी :— पुत्र श्री घूनीलालजी। आयु २५ वर्ष। मैट्रिक पास आप रुचिशील एव श्रद्धावान हैं। पर्युषण पर्व में सेवा देने की भावना रखते हैं।

१५. रतनलालजी :—पुत्र श्री नाथूलालजी। आयु २२ वर्ष। आप थोकडो के जानकार स्वाध्यायी प्रेमी हैं।

१६. श्री धनराजजी :—पुत्र श्री कन्हैयालालजी चौधरी। आयु २१ वर्ष। आप रुचिशील स्वाध्यायी हैं। योग्यता बढाने एव सेवा देने की भावना रखते हैं।

१७. श्री धर्मेन्द्रकुमारजी जैन :—आपने मानटाउन शिविर में भाग लिया है एवं श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण सस्थान जयपुर में आजकल श्री जैन

सिद्धान्त शास्त्री का अध्ययन कर रहे हैं। आप फागणा में पर्युषण सेवा भी दे चुके हैं।

१८. श्री राधेश्यामजी जैन :—आपने सवाई माधोपुर शिविर में भाग लिया है एव एम० ए० बी० एड० अध्यापक एव लगनशील स्वाध्यायी हैं।

१९. श्री अशोककुमारजी :—आपने भी मानटाउन शिविर में भाग लिया है एव श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण सस्थान, जयपुर में श्री जैन सिद्धान्त शास्त्री का अध्ययन कर रहे हैं।

५. इन्द्रगढ़ (जिला कोटा)

यह एक नगर एव रेल्वे स्टेशन है। स्थानक भी है। यहाँ जैन समाज के २० घर हैं। यहाँ स्वाध्यायियो का परिचय निम्न प्रकार है —

१ श्री रामविलासजी जैन :—पुत्र श्री कल्याणमलजी। आयु ५५ वर्ष। आप श्रद्धावान श्रावक हैं। नगरपालिका के वाइस चैयरमैन हैं। नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय करते हैं। आप स्थानीय सेवा देते हैं।

२. श्री पारसचन्दजी :—पुत्र श्री केसरीमलजी। आयु २२ वर्ष। आप बी० ए० जैन सिद्धान्त शास्त्री है। आपने स्थानीय एव सिहोर में पर्युषण पर्व में सेवा दी है।

३ श्री जीतमलजी जैन :—आयु ४० वर्ष। आप मैट्रिक, एस० टी० सी०, लगनशील अध्यापक हैं। आप स्थानीय सेवा देते हैं।

४. श्री सुरेश कुमारजी जैन :—आप श्री घासीलालजी जैन के सुपुत्र एव इस वर्ष आपने स्थानीय पर्युषण पर्वाराधन कराया है। आप उत्साही एव नवयुवक कार्यकर्ता हैं।

६. उखलाणा (जिला टोंक)

यह ग्राम अलीगढ से एक मील दक्षिण की ओर है। इस ग्राम में स्थानकवासी समाज के ८० घर मीणो के एव ४ घर पोरवालों के हैं। स्थानक भी बना हुआ है। स्वाध्यायी बधुओ का परिचय निम्न प्रकार है :—

१. श्री बृज मोहनजी :—पुत्र श्री कालूलालजी पटेल। आयु २६ वर्ष। आप जाति में मीणा हैं पर कर्म से कृषक हैं तथा श्री वीर जैन विद्यालय से शिक्षण प्राप्त मुसस्कारित युवक हैं। नागौर, गुलाबपुरा, जयपुर प्रशिक्षण शिविरो मे शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं और आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म० सा० की सेवा मे रहते हैं। पर्युषण पर्व मे आपने सारगपुर, वरगवा, फाजिलाबाद और दासपा आदि मे सेवा दी है।

२. श्री गौतम चंदजी :—पुत्र श्री पूरणमलजी। आयु १८ वर्ष। आप स्वाध्याय प्रेमी हैं व पर्युषण मे जाने की भावना रखते हैं।

३. श्री भंवरलालजी मीणा :—सरपच, आयु ४० वर्ष। स्थानीय सेवा दी है।

७. उनियारा (जिला टोंक)

यहाँ स्थानक भी है। स्थानकवासी समाज के ८ घर हैं। टोक और सवाई माधोपुर के मध्य में है। यहाँ पर निम्न स्वाध्यायी हैं :—

१ श्री रतनलालजी जैन :—पुत्र श्री नाथूलालजी। आयु ३८ वर्ष। आप बी० ए०, एस० टी० सी० अध्यापक हैं। आपने श्रीमहावीरजी इन्दौर शिविर में भाग लिया है। आपने इस वर्ष पचाला में पर्युषण पर्व में सेवा दी है।

२. श्री समीरमलजी :—पुत्र श्री नारायनजी। आयु २९ वर्ष। आप बी० कॉम०, कपडे के व्यापारी हैं। आपने इस वर्ष पर्युषण पर्व में पाडोली में एव स्थानीय सेवा दी है।

३ श्री इन्द्रमोहन जी :—पुत्र श्री माधोलाल जी पावडेढा। आयु ३० वर्ष। आप मैट्रिक एस टी सी अध्यापक हैं। आप पर्युषण पर्व मे जाने के भाव रखते हैं।

४ श्री प्रेमप्रकाश जी :— पुत्र श्री लक्ष्मीनारायण जी। आयु ३० वर्ष। आप कपडे के व्यापारी हैं। आप अभी के नये स्वाध्यायी हैं। तैयारी कर रहे हैं।

५ श्री सुरेश कुमार जी :—पुत्र श्री लड्डूलाल जी। आयु १७ वर्ष। आप अभी नये स्वाध्यायी हैं। आप तैयारी करके पर्युषण पर्व में सेवा देने की भावना रखते हैं। आपने उनियारा मे सेवा दी है।

६ श्री नंदलाल जी :—पुत्र श्री गुलावचद जी। आयु २० वर्ष। आपने उखलाणा मे पर्युषण पर्व मे सेवा दी है। आप अलीगढ वीर जैन विद्यालय मे अध्यापक रह चुके हैं।

८. एण्डवा (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम सवाई माधोपुर से २० किलोमीटर की दूरी पर है। स्थानक बना हुआ है। समाज के १० घर हैं। स्वाध्यायियो का परिचय निम्न प्रकार है —

१ श्री सौभागमल जी जैन :—पुत्र श्री किस्तूर चद जी जैन। आयु ३० वर्ष। आप मैट्रिक पास हैं। आप पर्युषण पर्व के समय प्रतिवर्ष स्थानीय सेवा देते हैं। आप एक कुशल व्यापारी एव कृषक भी हैं।

२ श्री पन्नीलाल जी जैन :—पुत्र श्री नारायण लाल जी जैन। आयु ५५ वर्ष। आप स्वाध्यायी है। आप प्रतिवर्ष स्थानीय सेवा देते है।

३ श्री उच्छव चद जी :—आप आलनपुर शिविर में पधारे।

९. कजानीपुरा (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम श्री महावीरजी के पास है। यहाँ ४ घर हैं।

१ श्री विरदीचंद जी :—अध्यापक व प्रमुख कार्यकर्ता हैं।

२ श्री विनोदकुमार जी —पर्युषण मे विरमावल सेवा देने पधारे। उत्साही नवयुवक है।

३ श्री गोपाललाल जी :—स्वाध्याय शिविरो मे पधारे।

१०. करमोदा (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम सवाई माधोपुर से १० किलोमीटर दूर है। समाज के ४ घर हैं।

१ श्री नाथूलाल जैन —स्वाध्याय मे आपकी पूर्ण रुचि है। आपने इस वर्ष स्थानीय सेवा दी है। आप सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं एव सरपच भी रह चुके हैं।

२ श्री घासीलाल जी जैन —आप रुचिशील स्वाध्यायी श्रावक हैं। आपने इस वर्ष स्थानीय सेवा पर्युषण पर्व में दी है।

११. करौली (जिला सवाई माधोपुर)

यहा समाज के १५ घर हैं। गगापुर सिटी,

हिण्डौन सिटी से बस द्वारा पहुचा जा सकता है। पत्र व्यवहार का पता निम्न है —

१. श्री अमीचंदजी जैन अध्यापक, सेठ हाउस, करौली।

१२. कुन्जेला (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम गगापुर सिटी और जयपुर के बीच सडक पर बामनवास से ५ मील है।

१ श्री मनोहरलाल जी :—पुत्र श्री उम्मेदमल जी, अध्यापक। श्री महावीरजी शिविर मे भी पधारे हैं।

१३ कुण्डेरा (जिला सवाई माधोपुर)

यह मखोली स्टेशन से ४ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। स्थानक भी बना हुआ है। समाज के २० घर हैं। श्री रामप्रतापजी मूलचद जी तथा श्री रामकल्याणजी अध्यापक यहा के प्रमुख श्रावक हैं। स्वाध्यायियो का परिचय निम्न प्रकार है —

१ श्री रामस्वरूप जी —पुत्र श्री हजारीलाल जी। आयु ३३ वर्ष। आप इन्टर पास अध्यापक हैं। आपने पाथर्डी बोर्ड से विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप धार्मिक पाठशाला चलाते हैं। आप स्थानीय शिविरो मे भी अध्यापक का कार्य करते हैं तथा पर्युषण पर्व मे स्थानीय सेवा देते हैं।

२ श्री चिरंजीलाल जी —पुत्र श्री भवरलालजी जैन। स्थानीय सेवा देते हैं।

३ श्री हसराज जी जैन —पुत्र श्री मडूलाल जी जैन। आयु ३० वर्ष। आप एम ए, बी. एड अध्यापक हैं। प्रतिवर्ष स्थानीय सेवायें देते हैं।

४ श्री प्रेमराज जी जैन .—पुत्र श्री घनश्याम जी जैन। आयु २३ वर्ष। आप बी. एस-सी., बी एड अध्यापक हैं। आपने सवाई माधोपुर में शिविर मे भाग लिया है।

५ श्री हनुमान प्रसाद जी जैन :—पुत्र श्री कपूरचद जी जैन। आयु २५ वर्ष। आप रुचिशील स्वाध्यायी हैं एव पर्युषण पर्व मे प्रतिवर्ष स्थानीय सेवायें देते हैं।

१४. कुस्तला (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम टोक से सवाई माधोपुर आने वाली बस रूट पर सवाई माधोपुर से ८ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां स्थानकवासी समाज के १० घर हैं स्थानक भी है। स्वाध्यायी-परिचय निम्न प्रकार है —

१ श्री सूरजमल जी —पुत्र श्री तनसुखलाल जी। आयु ४० वर्ष। आप कई एक थोकडो के जानकार हैं। उदारमना श्रावक हैं। आपके पिताश्री ने एक बडा हॉल स्थानक मे बनाकर भेंट किया था। आप नवयुवक मण्डल के अध्यक्ष हैं। पर्युषण पर्व मे आप प्रतिवर्ष स्थानीय सेवायें देते हैं।

१ श्री रामचन्द्रजी :—पुत्र श्री विजयलालजी। आयु ५० वर्ष। आप अच्छे गायक हैं। आप पर्युषण पर्व मे स्थानीय सेवा देते हैं।

३ श्री भैरूलालजी —पुत्र श्री मांगीलालजी। आयु ३२ वर्ष। आप एम० ए० बी० एड० अध्यापक एव जैन सिद्धान्त प्रभाकर की परीक्षा पास हैं। आप पर्युषण पर्व मे कुश्तला पचाला, फाजिलाबाद, सिन्धखेडा मे सेवा दे चुके हैं। आपने अलीगढ, फाजिलाबाद आदि स्थानो मे स्थानीय शिविर मे

अध्यापन का कार्य भी किया है। पत्राचार मे भी आपका बराबर सहयोग मिल रहा है।

४ **श्री मूलचंदजी** :—पुत्र श्री रामचद्रजी। आयु २६ वर्ष। आप हायर सैकण्डरी पास हैं, जयपुर प्रशिक्षण शिविर मे शिक्षण प्राप्त कर चुके हैं तथा भरतपुर आदि स्थानीय शिविरो मे अध्यापन कार्य कर चुके हैं। आप पर्युषण पर्व मे फाजिलाबाद, गडवाडा, मानसोल एव सिन्धखेडा मे सेवा दे चुके है।

५ **श्री धर्मचंदजी** —पुत्र श्री सोभागमलजी जैन। आयु २५ वर्ष। आप जयपुर, सवाई माधोपुर आदि शिविरो मे शिक्षा प्राप्त कर चुके है। आप गायक भी हैं। आपने पर्युषण पर्व मे पहरसर, डेहरामोर, पडवाडा, मानसौल व वोरकुण्ड मे सेवा दी है।

६ **श्री पारसचंदजी** —पुत्र श्री वसन्तीलालजी। आयु २४ वर्ष। आपने जयपुर शिविर मे शिक्षण प्राप्त किया है। आपने पहरसर, डेहरामोर और वोरकुण्ड मे सेवा दी है।

७. **श्री धर्मचंदजी जैन** —पुत्र श्री हणुतीलालजी जैन। आयु २४ वर्ष। आप स्वाध्याय प्रेमी हैं। आपने पर्युषण काधला, वागली मे सेवा दी है। आपके पिताजी भी स्थानीय सेवा देते थे एव संथारा करके उन्होंने अपनी धार्मिक दृढता का परिचय दिया है।

८. **श्री बाबूलालजी** —पुत्र श्री देवनारायणजी। आयु २८ वर्ष। आप सिन्धखेडा मे पर्युषण पर्व मे सेवा दे चुके हैं। आपके पिताजी पोरवाल सघ के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

९. **श्री रतनलालजी** :—पुत्र श्री लड्डूलालजी जैन। आप कोटा एव सवाई माधोपुर शिविरो में पधारे एव स्वाध्याय मे गहरी रुचि रखते हैं।

१५. केथूदा (जिला बून्दी)

यह एक छोटा सा ग्राम है और इन्द्रगढ से समीधी जाने वाली बस रूट पर स्थित है। यहा स्थानक बना हुआ है। जैन घरो की सख्या पाच है। स्वाध्यायी-परिचय निम्न प्रकार है।

१. **श्री रामकल्याणजी** —पुत्र श्री किस्तूरचंदजी। आयु ५२ वर्ष। आप एक अच्छे व्यवसायी एव लगनशील व्यक्ति हैं। आपको स्वाध्याय के प्रति विशेष रुचि है। आपने स्थानीय, पाण्डोली और खोह में पर्युषण पर्व मे सेवा दी है।

२. **श्री मोहनलालजी जैन** :—आप बी० कॉम० उत्तीर्ण स्वाध्यायी हैं एव स्थानीय सेवा देते हैं।

१६. केसोराय पाटन (जिला बून्दी)

यह स्थान बून्दी रोड बडी लाइन रेल्वे स्टेशन के पास है। यहा चीनी मिल है।

१ **श्री महेन्द्रकुमारजी** :—पुत्र श्री राजमलजी जैन। आयु २७ वर्ष। उत्साही नवयुवक हैं। सवाई माधोपुर आलनपुर के शिविरो मे प्रशिक्षण प्राप्त। आप इस वर्ष वाकोद सेवा देने पधारे। पत्राचार परीक्षा से बराबर ज्ञान वृद्धि कर रहे हैं।

१७. कोटा (राज०)

यह दिल्ली बम्बई के मध्य मे, पश्चिम रेल्वे

का प्रमुख रेल्वे स्टेशन है। जैनियो के ५०० एव स्थानकवासी १०० घर हैं। यहा पर स्वाध्याय-शिविर भी लग चुका है।

१ श्री छीतर मल जी :—पुत्र श्री मोतीलाल जी पामेचा । आयु ६६ वर्ष । आप सरकारी पेन्शनर हैं। कोटा के प्रमुख स्वाध्यायी हैं। कई सूत्रो के जानकार हैं, खातोली, चोरू, पचाला गोदिया और हरसाना मे आप पर्युषण पर्व मे सेवा दे चुके हैं। आपका कण्ठ बहुत उत्तम व मधुर है।

१८. कन्जोली (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम हिण्डौन सीटी से दस किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहा दस स्थानकवासी समाज के घर हैं।

१ श्री टीकमचदजी जैन :—आयु ३४ वर्ष । आप बी०ए०,बी०एड० अध्यापक हैं। आपकी स्वाध्याय मे पूर्ण रुचि है। आपने सवाई माधोपुर शिविर मे प्रशिक्षण प्राप्त किया है एव उनियारा मे पर्युषण पर्व मे सेवा दी है। यहा से निम्न महानुभाव स्वाध्याय शिविरो में भी पधारे —

२. श्री पारसचंदजी
३. श्री जयकुमारजी
४ श्री भागचंदजी
५ श्री प्रकाशचंदजी
६ महावीरप्रसादजी
७ श्री सतीशचंदजी
८. श्री विजेन्द्रकुमारजी।

१९. खटपुरा (जिला-सवाई माधोपुर)

यह ग्राम सवाई माधोपुर से ५ किलोमीटर है। समाज के ५ घर हैं। स्वाध्यायी परिचय निम्न प्रकार है :—

१. श्री लड्डूलालजी जैन :—आयु ४५ वर्ष। आप एस० टी० सी० अध्यापक हैं और क्षेत्रीय पोरवाल सघ के उपमत्री भी रह चुके हैं। आप पर्युषण पर्व मे स्थानीय सेवा देते हैं।

२. श्री श्यामलालजी जैन —आप उत्साही युवक हैं। अभी स्थानीय सेवा दे रहे हैं। साहूनगर मे उपडाकपाल हैं।

३. श्री महावीरप्रसादजी —पुत्र श्री मूलचदजी। आप उत्साही स्वाध्यायी हैं और अभी स्थानीय सेवा दे रहे हैं।

४. श्री कमलकुमारजी —उत्साही नवयुवक हैं। आप भी अपने पिताश्री के साथ साथ प्रतिवर्ष पर्युषण पर्व मे स्थानीय सेवायें देते हैं।

५. श्री पारसचंदजी —पुत्र श्री मूलचदजी। आप कोटा शिविर मे पधारे।

६. श्री हरकचंदजी :—पुत्र श्री मूलचंदजी। आपने अलीगढ, सवाई माधोपुर एवं देई शिविर मे भाग लिया है।

७. श्री भागचंदजी :—पुत्र श्री चौथमलजी। आपने भी कोटा शिविर मे भाग लिया है।

२०. खातोली (जिला टोंक)

यह ग्राम उनियारा से ७ किलोमीटर दूरी पर है। समाज के १५ घर हैं। यहाँ के स्वाध्यायी बधुओ का परिचय निम्न प्रकार है :—

१. श्री गंभीरमलजी :—पुत्र श्री वसन्तीलालजी जैन। आयु २८ वर्ष। आप एम० ए०, बी० एड० हैं। आप स्वाध्याय-प्रेमी हैं। आपने इस वर्ष बोरकुण्ड में पर्युषण पर्व मे सेवा दी है।

२. श्री मदनलालजी :—पुत्र श्री धूलीलालजी। आयु ३२ वर्ष। आप उत्साही कार्यकर्ता एव सहकारी समिति मे व्यवस्थापक हैं। आपमे सेवा का प्रमुख गुण है। आप पर्युषण पर्व मे स्थानीय सेवा देते है।

३. श्री रमेशकुमारजी :—पुत्र श्री नाथुलालजी। आयु २० वर्ष। आप अलीगढ श्रीमहावीरजी इन्दौर शिविरो मे प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके है। आपने पर्युषण पर्व मे सुमेरगज मण्डी व आकोला मे सेवा दी है।

४. श्री घासीलालजी :—पुत्र श्री गोकुलप्रसाद जी। आयु ३२ वर्ष। आप जाति से ब्राह्मण है, और बी० ए०, बी० एड० अध्यापक हैं। अच्छे उत्साही कार्यकर्ता हैं और स्वाध्याय में पूर्ण रूपेण रुचि है। प्रतिवर्ष सम्वतसरी को आप अवकाश लेकर स्थानक मे सारा दिन धार्मिक कार्यों मे लगाते हैं।

५. श्री सुजनमलजी :—पुत्र श्री वसन्तीलालजी। आयु १६ वर्ष। आप आगे पर्युषण पर्व मे सेवा देने की भावना रखते हैं। इन्दौर शिविर मे भी पधारे।

६. श्री वसन्तीलालजी :—आप वरिष्ठ स्वाध्यायी हैं। आप पर्युषण पर्व में धर्मध्यान में रत रहते हैं। आपका पूरा परिवार ही धर्म प्रेमी है।

२१. खावदा (जिला सवाई माधोपुर)

यहाँ समाज के २ घर हैं। श्री रामदेवजी पटवारी यहाँ के प्रमुख कार्यकर्ता हैं। यह ग्राम महूला के पास में है।

२२. खिजूरी (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम सवाई माधोपुर से इन्द्रगढ़ जाने वाली बस रूट पर स्थित है। यहाँ समाज के ७ घर हैं।

१. श्री चिरंजीलालजी जैन :—आप स्वाध्याय प्रेमी है। आपने खिजूरी ग्राम में सेवा दी है।

२. श्री दौलत रामजी :—आप नये स्वाध्यायी हैं और पर्युषण मे स्थानीय सेवा देते हैं।

२३. खेड़ला (जिला सवाई माधोपुर)

यहाँ समाज के २ घर हैं। श्री प्रकाशचदजी अध्यापक यहाँ के सक्रिय कार्यकर्ता हैं।

२४. खेड़ली (जिला अलवर) :—

अलवर जिले मे प्रमुख मण्डी एव रेल्वे स्टेशन है। यहाँ पर पल्लीवाल के ३० घर हैं। यहाँ से श्री भारतभूपणजी पुत्र श्री व्यवहारभूपणजी एव श्री मुरारीलालजी पुत्र श्री मुकन्दलालजी श्रीमहावीरजी शिविर में तथा श्री सुनील कुमारजी इन्दौर शिविर में भी पधारे हैं। यहाँ का पत्र व्यवहार का पता है —

श्री रामानन्दजी पटवारी, खेडली गंज, जिला-अलवर।

२५. खेड़शीष (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम हिण्डोन सिटी के पास है। पल्लीवाल समाज के ४ घर हैं। यहाँ पर श्री प्रभुलालजी प्रेमी श्रावक हैं। यहाँ के निम्न महानुभाव शिविरो में भी पधारे है :—

१. श्री दिनेशकुमारजी २. श्री लक्ष्मणकुमारजी

३. श्री महावीरप्रसादजी।

२६. खेड़ी हेवत (जिला सवाई माधोपुर)

यहाँ समाज के ५ घर है। यहाँ का डाकघर शेरपुर है यह ग्राम हिण्डोन के पास मे है। श्री हेमचंदजी जैन यहाँ के प्रमुख कार्यकर्ता है।

२७. खोह (अलवर)

यहां समाज के १५ घर हैं। स्थानक बना हुआ है। यह ग्राम खेडली गज के पास में है। स्वाध्यायियों का परिचय निम्न प्रकार है :—

१. श्री रामजीलालजी :—पुत्र श्री रामकवांरजी। आयु ५७ वर्ष। आप वयोवृद्ध श्रावक हैं, आपकी धर्मरुचि सराहनीय है। आप श्री महावीरजी शिविर मे प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं। आपने अब तक स्थानीय सेवा दी है।

२. श्री मुल्तानमलजी :—आपने पर्युषण पर्व मे स्थानीय सेवा दी है। लगनशील स्वाध्यायी हैं।

३. श्री सुमति कुमारजी :—अध्यापक - आप भी रुचिशील स्वाध्यायी हैं।

४. श्री अभय कुमारजी :—पुत्र श्री महावीर प्रसादजी। आपने श्रीमहावीरजी शिविर मे भाग लिया।

२८. खण्डीप (जिला सवाई माधोपुर)

श्रीमहावीरजी के पास का स्टेशन है। यहा ४ घर हैं। श्री प्रभुदयाल जी यहा के प्रमुख श्रावक हैं।

२९. गहनोली (जिला सवाई माधोपुर)

यहा समाज के ७ घर हैं। श्री फूलचन्द जी पटवारी यहा के सक्रिय कार्यकर्त्ता हैं। यहां का डाकघर साथा है।

३०. गाडोली (टोंक)

यह ग्राम उनियारा से ४ मील पूर्व की ओर स्थित है। समाज के ७ घर हैं। स्थानक निर्माणाधीन है। स्वाध्यायी-परिचय निम्न प्रकार है—

१. श्री सोभागमलजी पुत्र श्री सूरजमलजी। आयु २२ वर्ष। आप व्यापारी हैं आपको अच्छी लगन है आप स्थानीय शिविर में अध्यापन का कार्य भी कर चुके हैं। आप पर्युषण पर्व मे गाडोली व दूणी में सेवा दे चुके हैं।

२ श्री लक्ष्मीनारायणजी :—पुत्र श्री गोकलचद जी। आयु ५० वर्ष। आप एक अच्छे काश्तकार एव व्यवसायी हैं। श्रद्धालु श्रावक हैं। आप पर्युषण मे स्थानीय सेवा देत हैं।

३. श्री रामस्वरूपजी :—पुत्र श्री लक्ष्मीनारायण जी। आयु २० वर्ष। स्वाध्यायी की रुचि अच्छी है आपने अब तक गाडोली मे ही सेवा दी है।

४. श्री महावीरप्रसादजी :—पुत्र श्री श्रीनारायणजी। आयु २८ वर्ष। आप सहकारी समिति के व्यवस्थापक हैं। स्वाध्यायशील नवयुवक हैं। पर्युषण में सेवा देने की बराबर भावना रखते हैं।

३१. गंगापुर सिटी (जिला सवाई माधोपुर)

यह शहर बम्बई-दिल्ली ब्रॉड गेज पर स्थित है। यहा पर स्थानकवासी समाज के ५५ घर हैं, सभी पल्लीवाल हैं, प्रसिद्ध सेठ श्री रिद्धिचन्द जगन्नाथ की यह जन्मस्थली है। स्थानक प्रमुख रूप से इन्ही की देन है। यहा तपस्वी श्री श्रीचन्दजी म० सा० का चातुर्मास हुआ है। श्री गुलाबचन्दजी जैन भी यहा के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता हैं। आपने स्थानक भवन बनाकर समाज को भेट किया है। इनकी धर्मपत्नी भी बहुत रुचि रखती हैं।

१. श्री धर्मचन्दजी :—आयु ४५ वर्ष । आप बी. ए, बी एड प्रधानाध्यापक हैं। आपकी सामायिक एव स्वाध्याय मे पूर्ण रुचि है। आपने लागच, मेवाड मे सेवा दी है। इन्दौर शिविर मे भी पधारे हैं।

२ श्री केवलचन्दजी :—पुत्र श्री नवलकिशोरजी। आयु २३ वर्ष। आप हायर सैकण्डरी पास हैं। आपने आलनपुर, सवाई माधोपुर प्रशिक्षण शिविर में शिक्षा प्राप्त की है और अपने व्यय से भोजनालय चलाते हैं। आपने वरगवा में पर्युषण पर्व मे सेवा दी है। आपका पूरा परिवार तन-मन-धन से समाज की सेवा मे रत है। श्री श्रीचन्दजी म० सा० के चातुर्मास मे आपके परिवार का सर्वाधिक सहयोग रहा।

३ श्री पारसचन्दजी —पुत्र श्री निरजनलालजी पटवारी। आप स्वाध्याय प्रेमी एव कार्यकर्त्ता हैं। आपने भोजपुर मे पर्युषण पर्व में सेवा दी है।

४. श्री शीतलकुमारजी .—पुत्र श्री मदनलालजी। आयु १८ वर्ष। आपकी सामायिक एव स्वाध्याय मे पूर्ण रुचि है। इस वर्ष आपने हरसाना मे पर्युषण सेवा दी है।

५. श्री देवेन्द्रकुमारजी :—पुत्र श्री शिवलालजी तहसीलदार। आयु १८ वर्ष। आप सामायिक एवं स्वाध्याय मे पूर्ण रुचि रखते हैं। आपने इस वर्ष वजीरपुर मे पर्युषण पर्व में सेवा दी है।

निम्न महानुभाव स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविरो में भी पधारे :—

६. श्री किन्दूरीलालजी ७ श्री राजेन्द्रकुमारजी
८. श्री राजेन्द्रकुमारजी ९ श्री सुनीलकुमारजी
१०. श्री बृजेन्द्रकुमारजी ११. श्री विमलकुमारजी
१२. श्री सजयकुमारजी १३ श्री राजेशकुमारजी
१४ श्री आनन्दीलालजी १५. श्री सुरेशचन्दजी
१६ श्री महावीरप्रसादजी १७ श्री पदमचन्दजी
१८ श्री भौरीलालजी १९ श्री शिखरचन्दजी
२०. श्री सुमेरचन्दजी २१ श्री पूरणचन्दजी
२२ श्री सुरेशचन्दजी २३ श्री उम्मेदीलालजी।

३२. चकेरो (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम कोटा-दिल्ली ब्रॉड गेज लाइन मखोली से लगभग एक किलोमीटर दूरी पर स्थित है। स्थानक बना हुआ है। समाज के १० घर हैं। स्वाध्यायी-परिचय निम्न प्रकार है :—

१ श्री जगदीशप्रसादजी जैन —पुत्र श्री गोपीलालजी। आयु ३७ वर्ष। आप एम ए, बी एड अध्यापक हैं। नागौर, जयपुर प्रशिक्षण शिविरो में भाग ले चुके हैं। आपने प्रतिवर्ष पर्युषण पर्व में स्थानीय सेवा दी है।

२. श्री गिरधारीलाल जी जैन :—पुत्र श्री गोविदरामजी जैन। आयु ४४ वर्ष। आप समाज सेवी व्यक्ति हैं। अच्छे गाने वाले भी हैं। आपने वरगवा मे और समीधी मे पर्युषण पर्व मे सेवा दी है। आप समय समय पर स्वाध्याय सघ का कार्य भी करते हैं। निम्न स्वाध्यायी भी स्थानीय सेवा देते हैं —

३ श्री चौथमलजी ४ श्री फूलचंदजी
५ श्री रमेशचंदजी ६ श्री रविचन्द्रजी
७ श्री श्यामसुन्दरजी ९ श्री हनुमानप्रसादजी
८. श्री जीतमल जी

३३. चौथ का बरवाड़ा (जिला सवाई माधोपुर)

यह कस्बा जयपुर से सवाई माधोपुर जाने वाली

रेल्वे लाइन पर सवाई माधोपुर से २२ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। जैन समाज के ७० घर हैं। स्थानकवासी समाज के ३५ घर हैं। दो स्थानक हैं। पाठशाला, स्वाध्यायी आदि प्रवृतिया चलती हैं। श्री महावीर श्राविका समिति बनी हुई है। यहा के स्वाध्यायियो ने अपना विशेष ज्ञान महासतियाजी श्री मैनासुन्दरीजी के चातुर्मास से बढ़ाया। स्वाध्याय-परिचय निम्न प्रकार है —

१. श्री सुजानमलजी मेहता :—पुत्र श्री फूलचंदजी मेहता। आयु ६२ वर्ष। आप क्षेत्रीय स्वाध्याय सघ के निदेशक हैं। भगवान महावीर स्वामी के २५०० वी निर्वाण शताब्दी के धर्म प्रचार यात्रा सघ के अन्तर्गत आपने अपने सहयोगियो सहित अनेक स्थानो में धर्म प्रचार किया है। पर्युषण पर्व मे आपने चौथ का बरवाड़ा, पाचोरा, बारा, मण्डावर, आकोला एवं भोजपुर मे सेवा दी है। आप सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक कुशल नेता हैं। पचायत के सरपच व काग्रेस कमेटी के मत्री रह चुके हैं। वर्तमान में आप सामायिक स्वाध्याय के प्रचार प्रसार मे सलग्न हैं। आप पूर्ण रूपेण चौथे व्रत के धारी एव रात्रि भोजन के त्यागी और आशिक रूप से अणुव्रत का पालन करते हैं।

२ श्री गोविन्द प्रसाद जी जैन :—पुत्र श्री राम नारायण जी जैन। आयु ६१ वर्ष। आप कुशल मुनीम, कवि और अध्ययनशील स्वाध्यायी हैं। आपने अलीगढ देई और ब्यावर स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविरों मे अध्ययन किया है। आप १९६२ से ही चौथ का बरवाडा मे एव महुआ मण्डावर रोड में सेवा दी है। आपका पूरा परिवार ही सेवा देता है। आपके घर से कठिन तपस्या करने वाली महिला हैं।

३. श्री बुद्धिप्रकाशजी जैन :—पुत्र श्री देवलाल जी। आयु ६० वर्ष। आप एक कुशल व्यापारी होने के साथ साथ दानी एव स्वाध्यायी भी हैं। स्थानीय श्रावक सघ के अध्यक्ष हैं। आपकी पत्नी अनेक फुटकर तपस्याएँ करने वाली महिला थी। आपने १९७१ मे पर्युषण पर्व के समय स्थानीय लोगो को धर्म आराधन करवाया था।

४. श्री महावीर प्रसादजी जैन :—पुत्र श्री सुजानमलजी जैन ठेकेदार। आयु २८ वर्ष। आप टी० डी० सी० परीक्षा उत्तीर्ण कर सहकारी बैंक सवाई माधोपुर मे सेवारत हैं। आपने प्रशिक्षण शिविर सवाई माधोपुर मे १९७२ व १९७४ मे शिक्षण प्राप्त किया था और स० १९७५ मे आपने स्वाध्यायियो के रूप मे उनियारा मे सेवा दी है।

५. श्री महावीर प्रसादजी जैन :—पुत्र श्री नाथूलालजी जैन। आयु २४ वर्ष। आप प्रगतिशील स्वाध्याय के साथ साथ अच्छे गायक भी हैं। आपके परिवार मे से एक सत मुनि श्री नेमीचन्दजी म० सा० एव महासतियाजी श्री जयमालाजी पजाब सम्प्रदाय मे दीक्षित हुए हैं। आपने आलनपुर स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर में शिक्षा प्राप्त की तथा आपने पर्युषण पर्व मे काथला एवं महुआ मण्डावर रोड में सेवा दी है।

६. श्री शान्तिलालजी जैन :—पुत्र श्री सुजानमल जी ठेकेदार। आयु १७ वर्ष। आप कोटा, अलीगढ स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविर में शिक्षण प्राप्त स्वाध्यायी हैं तथा पर्युषण पर्व के समय भीमगढ़ और मोरवन में सेवा दी है।

७. श्री रतनलालजी जैन :—पुत्र श्री फूलचन्दजी

जैन। आयु २२ वर्ष। आपने सवाई माधोपुर एव व्यावर प्रशिक्षण शिविर मे शिक्षण प्राप्त कर मावली एव बोरकुण्ड मे पर्युषण पर्व मे सेवा दी है।

८ श्री इन्द्रमलजी जैन :—पुत्र श्री उम्मेदमलजी जैन। आयु २२ वर्ष। आपने सवाई माधोपुर एव व्यावर मे प्रशिक्षण प्राप्त करके पर्युषण पर्व में पडवाड़ा, मानसोल एव आकोला मे सेवा दी है।

९. श्री रमेशचन्दजी जैन :—पुत्र श्री फूलचन्दजी जैन। आयु १७ वर्ष। आप कॉलेज के विद्यार्थी हैं। आपने अलीगढ स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर में शिक्षण प्राप्त करके पर्युषण पर्व मे भीमगढ़ एव गुडली पधार कर सेवा दी है।

१०. श्री नवलकिशोरजी जैन :— पुत्र श्री गोविन्दरामजी जैन। आयु २६ वर्ष। आप नगरपालिका सवाई माधोपुर में सेवारत हैं। आपने सवाई माधोपुर एव व्यावर शिविरो में प्रशिक्षण प्राप्त किया है। आप पर्युषण पर्व अराधन हेतु लाग्न और बागली पधारे।

११. श्री रामप्रसादजी जैन :—पुत्र श्री रतनलालजी जैन समीदी वाले। आयु २२ वर्ष। आप बी० ए० पास प्रतिक्रमण पच्चीस बोल के जानकार उत्साही नवयुवक स्वाध्यायी हैं। आपने पर्युषण पर्व में पाण्डोली एव शिवनी में सेवा दी है।

१२ श्री बाबूलालजी जैन :—पुत्र श्री फूलचन्दजी जैन। आयु २५ वर्ष। आपने महासतियाजी श्री मैनासुन्दरीजी म० सा० के चातुर्मास में ज्ञान वृद्धि करके पर्युषण पर्व में मोरवन में सेवा दी है।

१३. श्री सुरेन्द्रकुमारजी :—पुत्र श्री उम्मेदमलजी। आयु २० वर्ष। आप युवक स्वाध्यायी हैं। आप पर्युषण पर्व में सेवा देने हेतु भदेसर पधारे।

१४. श्री पूरणमलजी :—पुत्र श्री हजारीलालजी जैन। आयु १८ वर्ष। आप कॉलेज के विद्यार्थी हैं। ज्ञानवृद्धि करके पर्युषण पर्व में सेवा देने हेतु मोरवन में पधारे थे।

१५. श्री नवरतनजी :—पुत्र श्री गोविन्दरामजी। आयु १५ वर्ष। आप मधुर गायक एव लगनशील स्वाध्यायी हैं आप इस वर्ष सुश्रावक श्री रामदयालजी सर्राफ के साथ बूंदी पधारे।

१६. श्री मोहनलालजी जैन :—पुत्र श्री छीतरलालजी जैन। आयु २२ वर्ष। आपकी स्वाध्याय मे विशेष रुचि है।

१७. श्री दौलतचन्दजी :—पुत्र श्री सुजानमलजी मेहता। आप बी० कॉम० उत्तीर्ण और स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर की शाखाओ मे अधिकारी पद पर सुशोभित हैं। सवाई माधोपुर प्रशिक्षण शिविर में शिक्षण प्राप्त कर चुके हैं।

१८. श्री घेवरचन्दजी लोढा :—सहायक स्टेशन मास्टर। आपने सवाई माधोपुर प्रशिक्षण शिविर मे शिक्षण प्राप्त किया था। आप उत्साही स्वाध्यायी एव सेवाभावी, मधुर स्वभावी हैं।

१९. श्री भैरूलालजी :—पुत्र श्री किस्तूरचन्दजी। आयु ३० वर्ष। आपने सवाई माधोपुर एवं व्यावर प्रशिक्षण शिविर मे शिक्षण प्राप्त किया है। आप स्थानीय सेवा देते हैं।

२०. श्री चन्द्र प्रकाशजी जैन :—पुत्र श्री मोतीलालजी जैन। आयु १६ वर्ष। आप स्वाध्याय प्रेमी हैं। पर्युषण में सेवा देने की भावना रखते हैं।

२१ श्री पारसमलजी :—पुत्र श्री किस्तूरचदजी। आयु २५ वर्ष। आप एम० कॉम० हैं। आपने अलीगढ़ प्रशिक्षण शिविर मे ज्ञानवृद्धि की है।

२२ श्री धनराजजी जैन :—पुत्र श्री उम्मेदमलजी जैन। आयु १६ वर्ष। आप उत्साही स्वाध्यायी हैं।

२३ श्री मदनलालजी :—पुत्र श्री वृद्धिचदजी। आयु ३५ वर्ष। आप की स्वाध्याय मे अच्छी रुचि है।

२४ श्री धर्मचंदजी।

२५. श्री हनुमान प्रसादजी।

३४. चोरू (जिला टोंक)

सवाई माधोपुर स्टेशन की दूरी यहां से २२ किलोमीटर है। ग्राम मे स्थानकवासी समाज के २० घर हैं और मध्य मे उपयुक्त स्थानकजी बनी हुई है। स्वाध्यायी परिचय निम्न प्रकार है—

१ श्री रामधनजी :—पुत्र श्री फूलचदजी। आयु २६ वर्ष। आपने वी० ए० वी०एड० तत्वार्थ सूत्र एव पहले कर्मग्रथ अतगढ़दशा एव उत्तराध्ययन का अध्ययन किया है। सवाई माधोपुर और अलीगढ में शिविर मे भाग ले चुके हैं तथा पर्युषण पर्व में पहरसरा, राव, गुडली एव शिवनी मे सेवा दे चुके हैं। अच्छे वक्ता हैं।

२ श्री कल्याणमलजी :—पुत्र श्री भूरालालजी। आयु ५५ वर्ष। साहित्य विशारद हैं। जैन तत्वज्ञान मे आपकी अच्छी गति है, सामायिक, स्वाध्याय मे आप अपना सारा समय दे रहे हैं। सवाई माधोपुर, ब्यावर, इन्दौर प्रशिक्षण शिविर में आपने अध्यापन कार्य भी किया है। आप आलनपुर, वारा, देई, नागपुर, वेतून, उटकमण्ड, भीमगढ, भोजपुर, भोपाल-सागर और महूआ मण्डावर रोड आदि स्थानो पर पर्युषण पर्व मे सेवा दे चुके हैं। राजनैतिक सामाजिक व धार्मिक क्षेत्रो मे आप कुशल कार्यकर्ता हैं। अलीगढ पचायत समिति (टोंक) मे आप शिक्षा स्थाई समिति के अध्यक्ष रह चुके हैं ब्लाक कांग्रेस तहसील उनियारा के मत्री हैं, श्री वीर जैन विद्यालय अलीगढ़ के निरीक्षक हैं। प्रचारक के रूप मे आपने स्वाध्याय सघ की सवा चार वर्ष सेवा की है।

३. श्री अनोखमलजी :—पुत्र श्री भूरालालजी पटवारी। आयु ५२ वर्ष। इस समय पोस्टमास्टर, कपडे के व्यवसायी तथा स्वाध्यायी हैं। कई स्योको जैन तत्व प्रकाश व उत्तराध्ययन आदि का अध्ययन किया है। आप पर्युषण पर्व मे स्थानीय सेवा बराबर दे रहे हैं।

४. श्री धन्नालालजी :—पुत्र श्री हजारीलालजी पटवारी। आयु ५२ वर्ष। आप अच्छे स्वाध्यायी श्रावक हैं। बर्तनों का व्यवसाय है। आप सुमधुर गायक भी हैं, अनेक चौपाइया आपको याद हैं, मोहम्मदपुरा मे बराबर तीन साल से पर्युषण पर्व में सेवा दे रहे हैं।

५. श्री लड्डुलालजी :—पुत्र श्री भूरालालजी पटवारी। आयु ४० वर्ष। आपको गतागत आदि कई स्तोको का ज्ञान है, आगम साहित्य

मे अतगढदशा और उत्तराध्ययन विपाक तथा जैन तत्व प्रकाश आदि कई ग्रथ देखे हैं। आपने पिछले तीन वर्ष से मोहम्मदपुरा एवं मोखन मे सेवा दी है।

६ श्री मङ्कूलालजी :—पुत्र श्री मोतीलालजी। आयु ३५ वर्ष। आप कई स्तोको मे अच्छी गति रखते है। इस वर्ष आपने मोखन मे सेवा दी है।

७ श्री पुरुषोत्तम कुमारजी :—पुत्र श्री कल्याणमलजी जैन। आयु २० वर्ष। आप सवाई माधोपुर शिविर मे भाग ले चुके हैं। सम्यग् ज्ञान प्रचारक मण्डल मे भी आप सेवा दे चुके हैं।

८. श्री महावीर प्रसादजी :—पुत्र श्री सोभाग मलजी। आयु २५ वर्ष। आप एस टी. सी. पास अध्यापक हैं। आप प्रतिदिन सामायिक करते हैं। आगामी चातुर्मास मे सेवा देने के भाव रखते हैं। अलीगढ शिविर में भाग ले चुके हैं।

९ श्री धर्मचंदजी :—पुत्र श्री बजरगलालजी। आयु २२ वर्ष। आप की स्वाध्याय मे विशेष रुचि है। अन्तगढदशा का अध्ययन किया है। आप अच्छे गायक भी हैं। पहरसर शिवनी एव गुडली मे पर्युषण पर्व में सेवा दे चुके हैं।

१० श्री जिनेन्द्र कुमारजी :—पुत्र श्री कल्याण मलजी। आयु १९ वर्ष। आप स्वाध्याय प्रेमी हैं। पहरसर सजीत एव पाडलिया में पर्युषण पर्व मे सेवा दे चुके हैं।

११ श्री प्रभुलालजी :—पुत्र श्री नृसिंहलालजी। आयु २६ वर्ष। आप एस. टी सी. अध्यापक है आप चौरू में बालको को धार्मिक शिक्षा पाठशाला चलाकर देते है।

निम्न महानुभाव स्वाध्याय शिविरो में भी पधारे—

१२ श्री बाबूलालजी   १३ श्री रमेशचदजी
१४ श्री महेन्द्रकुमारजी १५ श्री राजेन्द्र कुमारजी
१६. श्री राधेश्यामजी।

३५. छारोदा (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम रणथम्भोर स्टेशन से एक मील दूरी पर स्थित है। चार घर स्थाई रूप से रहते हैं। श्री त्रिलोकचदजी रुचिशील स्वाध्यायी है जो कोटा, श्री महावीरजी, एव सवाई माधोपुर शिविरो मे भाग ले चुके हैं। एम. कॉम. कर रहे है।

३६. जटवाड़ा (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम भी मण्डावर के नजदीक है। वहाँ पर लगभग ७ घर हैं। श्री लक्ष्मीनारायणजी इन्दौर शिविर मे भी पधारे हैं। पत्र व्यवहार का पता—
श्री केवलचदजी जैन, कपड़े के व्यापारी,
वाया महुआ मण्डावर (जिला सवाई माधोपुर)

३७. जरखोदा (जिला बूंदी)

यह ग्राम देई से इन्द्रगढ जाने वाली बस रूट पर स्थित है। स्थानक भी है। समाज के घरो की सख्या २० है। धार्मिक पाठशाला चालू है। स्वाध्यायी-परिचय निम्न प्रकार है —

१ श्री हरकचदजी जैन :—पुत्र श्री फूलचदजी जैन। आयु ४५ वर्ष। आप इस क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। अब तक ग्राम पचायत के सरपच पद का कार्य करते रहे हैं। प्रतिदिन

स्थानक मे सामायिक एव स्वाध्याय करते है। आप पर्युषण पर्व मे स्थानीय सेवा देते है। आप बोहराजी के नाम से प्रसिद्ध हैं।

२. श्री सुवालालजी :—पुत्र श्री सुन्दरलालजी। आयु ३० वर्ष। आप रुचि वाले व्यक्ति हैं। आपने केथूदा मे पर्युषण पर्व मे सेवा दी है।

३ श्री सागरमलजी :—पुत्र श्री फून्दीलालजी। आयु ३७ वर्ष। आप सामायिक, स्वाध्याय करते है। आपने पर्युषण पर्व मे सेवा दी है।

४. श्री अमोलकचंदजी :—पुत्र श्री हमीरमलजी जैन। आयु ४२ वर्ष। आपने कोविद परीक्षा उत्तीर्ण की है। आपने पर्युषण पर्व मे अरखोदा गोठिया समिधी व वावई मे सेवा दी है। ग्राम पचायत मे आप सचिव हैं।

५. श्री उम्मेदमलजी :—पुत्र श्री हरकचंदजी। आयु २६ वर्ष। आप मेट्रिक पास है, व्यवसायी कुशल व्यक्ति हैं। आप जरखोदा पाठशाला मे अध्यापन का कार्य कर रहे हैं। आप नियमित रूप से सामायिक एव स्वाध्याय करने वाले व्यक्ति है। आप कई स्तोको के जानकार हैं तथा मधुर गायक भी है। आपने जरखोदा, खातौली, सुमेरगजमण्डी, सिहोर एव आरणी में सेवा दी है।

(६) श्री गौतमचन्दजी (७) श्री धर्मचन्दजी (८) श्री पारसमलजी (९) श्री सुधारेकुमारजी (१०) श्री सुरेशकुमारजी द्वितीय (११) श्री शिवकुमारजी (१२) श्री हनुमानप्रसादजी।

३८. जैनपुरी (जिला टोंक)

यह ग्राम सवाई माधोपुर और अलीगढ के बीच में स्थित है। यहाँ पर कुल २५ घर मीणा समाज के हैं और पूरे के पूरे स्थानकवासी है। निम्न व्यक्तियो ने पर्युषण पर्व मे सेवा दी है :—

१ श्री धूलीलालजी मीणा :—आप बहुत होशियार श्रावक हैं। ६० वर्ष की आयु है। धर्मध्यान मे पक्के हैं।

२. श्री कल्याणजी मीणा :—आप युवक श्रावक हैं। लगनशील हैं, आप ही ने यहाँ पर पर्युषण पर्व में धर्मध्यान रखवाया था।

३. श्री सूरजमलजी मीणा :—आपने भी पर्युषण पर्व में सेवा दी है।

४ श्री जमनालालजी :—पुत्र श्री कल्याणजी मीणा। शिविर में भी पधारे हैं।

३९. झारेड़ा (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम श्रीमहावीरजी के पास है। यहाँ १० घर हैं। पुराने सन्तो के सूत्र के बस्ते भी उपलब्ध हैं। (१) श्री हजारीलालजी पटवारी वयोवृद्ध श्रावक हैं। (२) श्री धर्मचन्दजी जैन (३) श्री माणकचन्दजी अध्यापक। शिविर मे भी पधारे हैं।

४०. टोंक (राजस्थान)

यह एक अच्छा नगर एव जिला मुख्यालय है। विदुषी महासतियांजी श्री मैनासुन्दरीजी का यहाँ चातुर्मास भी हुआ है। यहाँ के स्वाध्यायी बन्धुओ का परिचय निम्न प्रकार है :—

१ श्री जसकरणजी डागा :—पुत्र श्री रतनलालजी डागा। आयु ४२ वर्ष। आप इस समय सस्कृत शिक्षा मे लेखाधिकारी के पद पर कार्य कर रहे हैं। आप अच्छे तत्वज्ञ, चर्चावादी, लेखक, कवि और गायक भी हैं। आपमें विशेषता यह है कि राज्य सेवा मे रहते हुए भी प्रत्येक दिन

स्थानक मे जाकर सामायिक एव स्वाध्याय करते और कराते है। सूत्र का स्वाध्याय मधुर कण्ठ से करते हैं। इसके अतिरिक्त भी आप अपने लेख 'जिनवाणी' एव 'सम्यग्दर्शन' आदि पत्रिकाओं को देते है। वैसे आपने एक पुस्तिका मानव समाज का स्वाभाविक आहार 'वनस्पति' लिखी है। चारित्र मे भी आप पीछे नहीं हैं। आंशिक रूप से बारह व्रतधारी श्रावक हैं। आपने पिछले कई वर्ष पर्युषण पर्व मे स्थानीय टोक, सुजालपुर और भूपाल सागर मे सेवा दी है। महासतियाजी श्री मैनासुन्दरीजी के चातुर्मास मे आपने सराहनीय सेवा दी है।

२ श्री देवीलालजी :—पुत्र श्री फूलचन्दजी पोरवाल। आयु ६९ वर्ष। आप जैन सिद्धान्त प्रवेशिका उत्तीर्ण और जीवदया मण्डल के अध्यक्ष हैं। बारह व्रतधारी श्रावक हैं। प्रतिदिन इस आयु मे भी स्थानक मे सामायिक एव स्वाध्याय करते हैं। गत १५ वर्षों से स्थानीय सेवा देते हैं।

३. श्री हरकचन्दजी :—पुत्र श्री माणकचंदजी बम्ब। आयु ६८ वर्ष। आप बजाज खाने मे प्रतिष्ठित कपडे के व्यापारी एव दानीमानी व्यक्ति हैं। आपको आचार्य श्री श्रीलालजी म० सा० के परिवार मे होने का गौरव प्राप्त है। आप स्वाध्याय मण्डल के सदस्य हैं। प्रतिदिन स्थानकजी मे सामायिक व स्वाध्याय करते हैं एव अच्छे गायक हैं।

४ श्री गंभीरमलजी :—पुत्र श्री धन्नालालजी बम्ब। आयु ५६ वर्ष। आप कपड़े के उत्तम व्यवसायी हैं। आपको सामायिक एव स्वाध्याय की अच्छी लगन है। स्थानीय स्वाध्याय मण्डल के सदस्य हैं। आप सरल स्वभावी, सेवाभावी व साधना प्रिय हैं।

५. श्री धनराजजी :—पुत्र श्री समीरमलजी बम्ब। आयु २२ वर्ष। आप व्यावहारिक शिक्षा मे सेकण्डरी उत्तीर्ण कपड़े के व्यवसायी हैं। आपको नवयुवक अवस्था में धनीमानी व्यक्ति होते हुए भी स्वाध्याय एवं सामायिक की अच्छी लगन है। प्रति दिन स्वाध्याय मे श्री जेसकरणजी डागा के साथ भाग लेते हैं। आपने टोंक मे पर्युषण पर्व में सेवा दी है।

४१. डांगरवाड़ा (जिला सवाई माधोपुर)

यहाँ समाज के १० घर है एव स्थानक भवन है। सवाई माधोपुर से बस जाती है।

१ श्री छड्डूलालजी जैन :—पुत्र श्री मिश्रीलालजी जैन। आयु ४५ वर्ष। आप एक व्यवसायी हैं। सामायिक, स्वाध्याय में अच्छी रुचि रखते हैं। आप पर्युषण पर्व में स्थानीय सेवा देते हैं।

२. श्री महावीरप्रसादजी जैन :—पुत्र श्री रामनारायणजी जैन। आयु २४ वर्ष। आप बी. कॉम हैं। आपकी स्वाध्याय की विशेष रुचि है। आप स्थानीय सेवा देते हैं। प्रकृति से स्वभाव सरल है।

३ श्री बाबूलालजी जैन :—पुत्र श्री सुन्दरलालजी जैन। आयु २५ वर्ष। आप स्वाध्याय प्रेमी हैं व प्रतिवर्ष पर्युषण पर्व मे स्थानीय सेवा देते हैं।

४२. डेहरा (जिला सवाई माधोपुर)

यह हिण्डोन सिटी से पांच किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहाँ ४ घर हैं। स्वाध्यायी परिचय निम्न प्रकार है :—

१ श्री स्वरूपचन्दजी :—पुत्र श्री लालजी। आयु ६० वर्ष। आप अवकाश प्राप्त पटवारी और

कुशल कार्यकर्त्ता हैं। धार्मिक कार्यों मे पूर्ण रुचि रखते हैं एव दानादि सेवा कार्य मे सदैव तैयार रहते हैं। आप स्थानीय सेवा देते है।

२ श्री रामेश्वरप्रसादजी :—पुत्र श्री निरजनलालजी। आयु ४० वर्ष। आप अध्यापक हैं। आपने श्रीमहावीरजी आदि प्रशिक्षण शिविर मे शिक्षण प्राप्त किया है एव स्थानीय सेवायें देते है।

३ श्री जिनेशकुमारजी :—पुत्र श्री स्वरूपचदजी पटवारी। आयु १९ वर्ष। आपने इस वर्ष खोह मे सेवा दी है। धार्मिक क्षेत्र मे आपकी रुचि सराहनीय है।

४ श्री सुरेशचदजी :—आपने इस वर्ष पर्युषण पर्व मे स्थानीय सेवा दी है। एम० कॉम० तक शिक्षा प्राप्त करके आपने श्रीमहावीरजी एव इन्दौर शिविर मे प्रशिक्षण भी प्राप्त किया है।

निम्न महानुभाव स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविरो मे भी पधारे।

५ श्री देवेन्द्र कुमारजी ६ श्री भागचदजी
७ श्री जगदीशप्रसादजी ७ श्री ऋद्धिचदजी।

४३. डेहरामोर (जिला भरतपुर)

यह ग्राम भरतपुर से नदवई को जाने वाली बस रूट के मोड के नजदीक बसा हुआ है। यहा ४ घर हैं। स्वाध्याय श्रावको का परिचय निम्न प्रकार है—

१. श्री रतनलालजी :—आप वयोवृद्ध श्रावक हैं, आपको सूत्रो का अच्छा ज्ञान है, आपके पास स्वय का पुस्तकालय है। आपके परिवार मे धर्म की लगन सराहनीय है। आप अलीगढ़, श्रीमहावीरजी, इन्दौर शिविरो मे पधारे। स्वाध्याय सघ के पूर्ण समर्थक हैं। ऐसे आपके दो पुत्र भी इस ओर लगनशील हैं। आपको स्वाध्याय सघ की ओर से सम्मानित भी किया जा चुका है। आप पल्लीवाल क्षेत्र की स्वाध्याय सचालन समिति के सदस्य भी हैं।

निम्न महानुभाव भी स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविरों मे पधारे।

२ श्री हीरालालजी ३ ज्ञानचंदजी
४ श्री उम्मेदीलालजी ५. धर्मचदजी

४४. तालचिड़ी (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम भी महुआ मण्डावर के पास है यहा ८ घर पल्लीवाल समाज के निवास करते हैं। अधिक व्यक्ति सर्विस में हैं (१) श्री सोहनलालजी एव श्री धर्मचदजी जैन प्रेमी श्रावक हैं।

४५. दूणी (जिला टोंक)

यहा स्थानकवासी समाज के १७ घर हैं। स्थानकजी के २ मकान है। ५, ६ प्रतिक्रमण प्रतिदिन प्रात होते है। श्री गूजरमलजी चिपड, श्री राजमलजी गोखरू एव श्री हरचदजी गोखरू प्रमुख श्रावक हैं। प्रतिवर्ष स्वाध्यायी सघ की ओर से स्थानीय शिविर के लिए अध्यापको की एवं पर्युषण हेतु स्वाध्यायियो की व्यवस्था की जाती है। टोंक से यहा पहुचने के लिए बस व्यवस्था है। श्री रतनलालजी, श्री प्रकाशचदजी गोखरू एव श्री प्रेमचदजी गोखरू भी स्वाध्याय मे काफी रुचि रखते हैं। जब स्वाध्यायी नही पहुचते हैं तो आप लोग वहा बराबर कार्यक्रम भी चलाते हैं।

४६. देई (जिला बून्दी)

यह कस्बा बूदी और नैनवा के बीच मे है। दैनिक बस सेवा उपलब्ध है। स्थानकवासी समाज

के २८ घर हैं। यहा पर सन् १९७६ मे स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर हो चुका है। यहा के स्वाध्यायी बन्धुओ का परिचय निम्न प्रकार है—

१ श्री तेजमलजी :—पुत्र श्री लक्ष्मीचंदजी। आयु ६१ वर्ष। आपका देई के व्यवसायी व्यक्तियो मे उच्च स्थान है। आप समाज व अन्य सार्वजनिक सस्थाओ मे दिल खोलकर पैसा देते हैं। आपकी भावना अत्यन्त उच्च है। स्वाध्याय व सामायिक प्रचार प्रसार मे आप वडी प्रसन्नता दिखाते है जब भी आवश्यकता हो काम छोडकर तैयार हो जाते हैं। आप स्थानीय श्रावक संघ के अध्यक्ष हैं और पर्युषण पर्व मे स्थानीय सेवा देते है। सजोडे शीलव्रत का पालन करते हैं।

२. श्री निहालचंदजी :—पुत्र श्री रामनिवासजी। आयु ५२ वर्ष। आप जैन कोविद परीक्षा उत्तीर्ण हैं, स्थानीय प्रतिष्ठित व्यापारी है। मधुर गायक है। सवाई माधोपुर, ब्यावर प्रशिक्षण शिविर मे प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं। पर्युषण पर्व मे आपने देई, आदर्शनगर, मोही वोहिडा से सेवा दी है। आपके आजीवन रात्रि जलत्याग है इस उम्र मे भी माता पिता का पगवन्दन करते है।

३. श्री कपूरचंदजी :—पुत्र श्री आनन्दीलालजी। आयु ४३ वर्ष। स्वाध्याय प्रेमी हैं। आप प्रतिदिन, सामायिक व स्वाध्याय नियमित रूप से करते हैं। आप पर्युषण पर्व मे स्थानीय सेवा देते हैं।

४ श्री सोमप्रकाशजी :—पुत्र श्री प्रतापमलजी। आयु २६ वर्ष। आप कपडे के व्यवसायी हैं, युवक हैं, सामायिक एव स्वाध्याय मे आपकी रुचि दिन प्रतिदिन वढती जा रही है। कुछ समय पश्चात सेवा देने योग्य वन जावेंगे, ऐसी आशा है।

५ श्री महेन्द्रकुमारजी :—पुत्र श्री मानमलजी सरपच। आयु २० वर्ष। आप बी० ए० पास हैं, आप अच्छे व्यवसायी हैं स्वाध्याय व सेवा-कार्य मे अच्छी रुचि है। आपसे समाज सेवा की वहुत आशा है।

निम्न महानुभावो ने शिविरो मे भी भाग लिया—

६. श्री माणकचदजी	७ श्री उच्छवलालजी
८ श्री वावूलालजी	९ श्री निहालचंदजी
१०. श्री सुरेशकुमारजी	११ श्री राजेन्द्रकुमारजी
१२ श्री भागचदजी	१३ श्री त्रिलोकचदजी।

४७. देवली (जिला टोंक)

यह ग्राम अलीगढ से ५ मील है। यहा पर स्थानकवासी समाज के ८ घर है। स्थानक भी वना हुआ है।

१. श्री शान्तिलालजी :—पुत्र श्री लक्ष्मी-नारायणजी। आयु ३३ वर्ष। आप कई थोकडो के जानकार हैं। आपने आगमो का भी अध्ययन किया है। 'भगवती सूत्र' का अध्ययन चल रहा है। स्वयं का अच्छा पुस्तकालय है। आप स्थानीय ग्राम मे प्रति-वर्ष पर्युषण मे सेवा देते हैं।

२. श्री मथुरालालजी :—आयु ५५ वर्ष। आप अच्छे लगनशील श्रावक हैं। आप प्रतिवर्ष स्थानीय सेवा देते हैं।

निम्न महानुभाव स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविरो मे पधारे :—

३. श्री मोहनलालजी ४. श्री गोतमचंदजी।

४८. नदबई जिला भरतपुर

यह भरतपुर से नजदीक है एव मण्डी है। यहाँ पर ८ घर हैं। श्री रामजीलालजी प्रमुख श्रावक हैं एव आप इन्दौर शिविर मे भी पधारे हैं।

४९. नयागांव (जिला सवाई माधोपुर)

यह हिण्डोन और महुआ के बीच मे है। यहाँ ८ घर हैं। पत्र व्यवहार का पता है :—

श्री हुकमचन्दजी अध्यापक,
पो० महु, वाया हिण्डोन सिटी,
जिला सवाई माधोपुर

५०. नेनवां (जिला बूँदी)

यहाँ स्थानकवासी समाज के ४ घर हैं। पहले सरावगी लोग भी स्थानकवासी थे। यहा एक ओसवाल का घर है। स्थानक नहीं है। पहले जो था उस पर व्यक्तिगत कब्जा है। यहा पर निम्न स्वाध्यायी बन्धु हैं :—

१. श्री लड्डूलालजी :—पुत्र श्री छीतरलालजी। आयु ४० वर्ष। आप अध्यापक हैं। आपने अलीगढ शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त किया है तब से अब तक स्थानीय सेवा देते हैं।

२. श्री मोहनलालजी :—पुत्र श्री गोपीलालजी। आयु १८ वर्ष। आपने अलीगढ व देई शिविर मे प्रशिक्षण प्राप्त किया है अच्छी रुचि है आपने स्थानीय सेवा दी है।

३ श्री पारसकुमारजी :—पुत्र श्री भवरलालजी। आयु १९ वर्ष। आप उत्साही व्यक्ति हैं। कपडे के व्यापारी हैं। आपकी सामायिक व स्वाध्याय मे अच्छी रुचि है। आप नैनवाँ मे ही पर्युपण पर्व मे सेवा देते हैं। आप इस वर्ष सजीत मे सेवा देने पधारे और इन्दौर एवं देई शिविरो मे भी प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

४. श्री उम्मेदमलजी जैन :—आप आजकल जयपुर रहते हैं एव सन् १९७४ मे आपने अलीगढ मे पर्युपण में सेवायें भी दी हैं। आप उत्साही एवं नवयुवक स्वाध्यायी हैं।

निम्न महानुभाव स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविरो में भी पधारे —

५. श्री पुखराजजी ६. श्री नन्दलालजी।

५१. नंगला (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम श्री महावीरजी के पास है। ३ घर स्थायी रूप से रहते हैं। श्री उम्मेदीलालजी पटवारी यहाँ के प्रमुख कार्यकर्ता हैं।

५२. पचाला (जिला टोंक)

यह ग्राम सवाई माधोपुर से टोक जाने वाली वस रूट पर है। स्थानक एवं स्थानकवासी समाज के १४ घर हैं।

१ श्री नाथूलालजी :—पुत्र श्री फून्दालालजी। आयु ५० वर्ष। आप पक्के श्रावक एव सामायिक प्रेमी हैं। स्वाध्याय की रुचि है। आप प्रतिवर्ष अपने ग्राम मे ही सेवा का कार्य करते हैं।

२. श्री कपूरचन्दजी :—पुत्र श्री सुन्दरलालजी। आप मैट्रिक एस० टी० सी० अध्यापक हैं। आप पिछले कई वर्षों से स्थानीय सेवा दे रहे हैं। आपकी आयु ३५ वर्ष है।

३. श्री घनश्यामजी :—पुत्र श्री फूलचन्दजी। आयु २२ वर्ष। आप अच्छे स्वाध्यायी बनने का प्रयत्न कर रहे है।

निम्न महानुभावो ने शिविरो मे भी भाग लिया :—

४. श्री मोहनलालजी ५. श्री ज्ञानचन्दजी
६. श्री धर्मचन्दजी ७. श्री गौतमचन्दजी
८. श्री गोपाललालजी ।

५३. पहरसर (जिला भरतपुर)

यह ग्राम भरतपुर से नदवई जाने वाले बस मार्ग पर है। यहाँ समाज के ४ घर हैं। यहाँ पर स्थानक बना हुआ है। इसमे मण्डल की ओर से सहायता दी गई है। यहाँ पर स्वाध्यायी श्रावकों का परिचय निम्न प्रकार है :—

१. श्री मोतीलालजी :—आयु ४० वर्ष। आप सरकारी सेवा में सहकारी समिति मे निरीक्षक हैं। आपकी स्वाध्याय मे पूर्ण रुचि है। आप सामाजिक व धार्मिक कार्यकर्ता भी हैं।

२. श्री जवाहरमलजी :—पुत्र श्री बाबूलालजी। आयु २५ वर्ष। आप उत्साही युवक हैं। आप अलीगढ, श्री महावीरजी के स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविर मे भाग ले चुके हैं, आपने पर्युषण पर्व मे पहरसर में ही सेवा दी है।

निम्न महानुभावो ने इन्दौर शिविर मे भी भाग लिया।—

३ श्री भागचंदजी ४. श्री राजकुमारजी
५. श्री प्रकाशचंदजी ६. श्री नवीनचंदजी

५४. पाटोली (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम टोंक से सवाई माधोपुर जाने वाली रूट पर आमली मोड़ से करीब एक मील दूरी पर है। समाज के ८ घर हैं। स्थानक है। स्वाध्यायियो का परिचय निम्न है :—

१. श्री शंकरलालजी :—पुत्र श्री रामचन्द्रजी। आयु ४७ वर्ष। आपका कृषि एव दुकानदारी व्यवसाय है। आप प्रतिवर्ष पर्युषण पर्व मे स्थानीय सेवा देते हैं।

२. श्री सौभागमलजी :—पुत्र श्री दुलीचन्दजी। आयु ४० वर्ष। आप अध्यापक हैं। आप पाटोली मे ही प्रतिवर्ष पर्युषण पर्व मे सेवा देते हैं।

निम्न सज्जनो ने स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविरो मे भी भाग लिया है :—

३. श्री शान्तिचन्द्रजी ४. श्री राजेन्द्रप्रसादजी।

५५. पावांडेढ़ा (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम चौथ का बरवाडा से पश्चिम की ओर स्थित है। स्थानक बना हुआ है। यहाँ समाज के ४ घर हैं। स्वाध्यायी-परिचय निम्न प्रकार है :—

श्री गुलाबचंदजी :—पुत्र श्री केसरलालजी। आयु ६० वर्ष। आप प्रभावशाली व्यक्ति हैं। कृषि और व्यापार आपका मुख्य व्यवसाय है। आप पहले भी पंचायत के सरपच, तहसील पचायत के पच रह चुके हैं, और इस समय भी सरपच है। पर्युषण मे स्थानीय सेवा देते हैं।

१. श्री घासीलालजी जैन :—पुत्र श्री माधोलाल जी। आयु ४० वर्ष। आप एक व्यवसायी व्यक्ति हैं लगनशील स्वाध्यायी हैं। सामायिक प्रतिदिन करते हैं। पर्युषण पर्व में आप प्रतिवर्ष स्थानीय सेवा देते हैं।

२. श्री नाथूलालजी जैन :—पुत्र श्री गुलाबचदजी जैन। आयु २२ वर्ष। आप हायर सैकण्डरी

पास हैं, अपना व्यवसाय करते हैं। आपने इन्दौर, सवाई माधोपुर आदि शिविरो मे भाग लिया है। आपने स्थानीय एवं डेहरा-मोड में पर्युषण सेवा दी है।

५६. पीपलवाड़ा (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम सवाई माधोपुर से इन्द्रगढ जाने वाली बस रूट पर है। जैन समाज के ५ घर हैं एव स्थानवासी समाज के ३ घर हैं। स्थानक बना हुआ है।

१ श्री रामपालजी :—आयु ६० वर्ष। आप अच्छे विचारों के कट्टर श्रावक हैं। आपने इस वर्ष अपने सहयोगियो के साथ पर्युषण पर्व का कार्यक्रम चलाया है।

२. श्री छीतरमलजी :—आप एक युवक उत्साही स्वाध्यायी हैं। आपने स्वाध्यायी के रूप में पर्युषण पर्व का कार्य चलाया है।

५७. फलोदी क्वारीज (जिला सवाई माधोपुर) :—

यह ग्राम खाजना स्टेशन से पूर्व की ओर स्थित है। स्थानकवासी समाज के १२ घर हैं स्वाध्यायी परिचय निम्न प्रकार है —

१. श्री दिनेशकुमारजी जैन :—पुत्र श्री फूलचद जी जैन। आयु ३० वर्ष। आप एस० टी० सी० अध्यापक हैं स्वाध्याय मे रुचि रखते हैं। आप अपने गाव में ही पर्युषण पर्व मे सेवा देते हैं। स्वाध्याय शिविरो मे भी आपने प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

२. श्री धन्नालालजी जैन :—पुत्र श्री सुन्दरलाल जी जैन। आयु २५ वर्ष। आपकी स्वाध्याय के प्रति विशेष रुचि है आप स्थानीय सेवा देते हैं।

३. श्री रिखबचंदजी जैन .—पुत्र श्री गोर्धनलाल जी जन। आप एस० टी० सी० पास अध्यापक हैं। आप स्थानीय सेवा देते हैं।

४. श्री मोहनलालजी जैन :—पुत्र श्री गुलाबचद जी जैन। आप एस०टी०सी० अध्यापक हैं। आप पर्युषण पर्व मे स्थानीय सेवा देते हैं।

५८. फाजिलाबाद (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम कस्बा हिण्डोन से लगभग १२ किलोमीटर पश्चिम मे है, डाकघर मण्डावरा है। स्थानकवासी समाज के सभी ११ ही घर अनुरागी हैं। यहा के स्वाध्याय श्रावको का परिचय निम्न प्रकार है —

१ श्री रामदयालजी —पुत्र श्री मिश्रीलालजी साहब। आयु ५६ वर्ष। आप अवकाश प्राप्त तहसीलदार हैं, सामाजिक एव धार्मिक कार्यकर्ता एव व्रतधारी श्रावक हैं आपने अपने जीवन मे कभी रिश्वत न लेकर अपनी प्रमाणिकता पूर्ण रूपेण है। पल्लीवाल क्षेत्र के अब आप सयोजक हैं। आपने गत वर्षों मे पोटला, भदेसर, मोही, मेवाड मे पर्युषण पर्व मे सेवा दी है।

२ श्री मगनलालजी :—पुत्र श्री सोहनलालजी। आयु ३७ वर्ष। आप बी०ए० पास राजकीय सेवा मे अध्यापक है आपकी सामायिक एव स्वाध्याय में पूर्ण रुचि है। आप पर्युषण पर्व मे प्रतिवर्ष स्थानीय सेवा देते हैं।

३. श्री महावीरप्रसादजी —पुत्र श्री गेंदालाल

जी । आयु २८ वर्ष । आप सामाजिक राजनैतिक एव धार्मिक कार्यकर्ता एव प्रामाणिक व्यवसायी है । प्रतिक्रमण २५ बोल के जानकार उत्साही स्वाध्यायी हैं । आप प्रतिवर्ष पर्युपण पर्व मे स्थानीय सेवा देते है । आपने आचार्य श्री से बाल ब्रह्मचारी रहने का व्रत लिया है ।

४ श्री भागचदजी :—पुत्र श्री रामदयालजी । आयु २१ वर्ष । आप रुचिशील स्वाध्यायी हैं आपने इस वर्ष वजीरपुर मे सेवा दी है ।

५ श्री विमलकुमारजी :—पुत्र श्री प्रभुलालजी पटवारी । आयु १६ वर्ष । आप रुचिशील स्वाध्यायी हैं । आपने इस वर्ष स्थानीय सेवा दी है ।

निम्न सज्जनो ने शिविरो मे भी भाग लिया —

६ श्री दिनेशचदजी ७ श्री कैलाशचदजी
८ श्री अशोककुमारजी ९ श्री महेन्द्रकुमारजी
१०. श्री प्रदीपकुमारजी ११ श्री रामस्वरूपजी
१२. श्री त्रिलोकचदजी १३ श्री लखमीचदजी
१४ श्री प्रभुदयालजी पटवारी

५९. बगावदा (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम पचाला बस स्टेशन से ४ मील दूरी पर दक्षिण की ओर स्थित है । समाज के ७ घर एव स्थानक भी हैं । श्री गहरालालजी यहा के प्रमुख श्रावक हैं ।

१ श्री लड्डूलालजी :—पुत्र श्री बसन्तीलालजी । आयु २५ वर्ष । आप नवयुवक, रुचि रखने वाले स्वाध्यायी हैं । आपने इस वर्ष स्थानीय सेवा दी है ।

६०. बगड्यारी (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम चौथ का बरवाड़ा से ७ किलोमीटर है । स्थानकवासी समाज के ६ घर हैं । स्थानकजी बनी हुई है । स्वाध्याय परिचय निम्न प्रकार है .—

१. श्री चौथमलजी जैन :—पुत्र श्री फूलचन्दजी जैन । आयु ३० वर्ष । आप बी० ए० पास अध्यापक हैं । आपने प्रतिवर्ष पर्युपण पर्व मे स्थानीय सेवा देते रहे हैं । बाहर जाने की भावना रखते हैं ।

२ श्री रामनारायणजी :—पुत्र श्री मांगीलालजी । आयु ३५ वर्ष । आप एक अच्छे व्यवसायी हैं । आपने इस वर्ष स्थानीय सेवा दी है ।

३. श्रीमती कमलाजी जैन :—आप सगीत मे विशेषता प्राप्त किए हुवे हैं । आपने पर्युपण पर्व मे महुआ मण्डावर मे सेवा दी है ।

६१. बरगंवा (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम श्रीमहावीरजी प्रसिद्ध तीर्थ स्थान से ४ मील दूरी पर स्थित है । समाज के १४ घर हैं, गिरिराज प्रसादजी पटवारी मुख्य श्रावक हैं । यहा के श्रावको की रुचि से ही श्री महावीरजी में स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविर लग सका था । स्वाध्याय परिचय निम्न प्रकार है —

१. श्री शिवचरणजी :—पुत्र श्री छीगांलालजी । आयु २७ वर्ष । आप सरकारी सेवा मे पटवारी हैं । आप सवाई माधोपुर, अलीगढ, ब्यावर प्रशिक्षण शिविर मे शिक्षण प्राप्त कर चुके हैं । पर्युपण पर्व मे आपने अपने ग्राम मे एव वजीरपुर मे सेवायें दी हैं ।

२ श्री देवेन्द्रकुमारजी :—कॉलेज के विद्यार्थी और स्वाध्यायी हैं । आपने स्थानीय सेवा दी है ।

३ श्री सुरेशचन्दजी :—आपने इस वर्ष स्थानीय सेवा दी है ।

४ श्री प्रकाशचन्दजी :—५ श्री मिठ्ठनलालजी पटवारी ६ श्री घीसुलालजी आदि सभी श्रावक स्वाध्याय सघ के पूर्ण प्रेमी एव सहयोगी हैं। इस ग्राम के सभी श्रावक श्राविकाओ पर स्वाध्याय सघ को गर्व है।

निम्न महानुभाव स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविरो में भी पधारे :—

७ श्री सतीशचन्दजी ८. श्री गोपाललालजी
९ श्री जिनेशचन्दजी १०. श्री महेन्द्रकुमारजी
११. श्री महावीरप्रसादजी १२ श्री देवेन्द्रकुमारजी
१३ श्री सुमेरचन्दजी १४ श्री बाबूलालजी
१५. श्री वीरेन्द्रकुमारजी

१६. श्री गिरिराज प्रसादजी पटवारी इन्दौर शिविर मे पधारे एव आपको सचालन समिति का सदस्य भी मनोनीत किया है।

६२. बावई (जिला कोटा)

यह ग्राम सवाई माधोपुर से इन्द्रगढ जाने वाली बस रूट पर स्थित है। जैन घरो की सख्या ११ है। स्थानकजी बनी हुई है। स्वाध्यायियो का परिचय निम्न प्रकार है :—

१ श्री बाबूलालजी :—पुत्र श्री किस्तूरचदजी। आयु ३३ वर्ष। आप एस०टी०सी अध्यापक हैं आपने धार्मिक पाठशाला भी चलाई है। लगनशील स्वाध्यायी हैं। आप प्रतिवर्ष स्थानीय सेवा देते हैं।

२ श्री रामप्रसादजी :- आयु ४१ वर्ष। आप लगनशील स्वाध्यायी व्यक्ति हैं। आप प्रतिवर्ष स्थानीय सेवा पर्युषण पर्व मे देते हैं।

३ श्री पारसचंदजी :— आप देई शिविर मे भी पधारे।

६३. बारां (जिला कोटा)

यहाँ पर दो स्थानकवासी समाज के मकान हैं। २० घर गुजराती समाज एव ८ घर देशी ओसवाल एव ८ घर पोरवाल समाज के अनुयायी हैं। स्वाध्याय सघ के प्रति पूर्ण आस्था है। महिलाऐं भी अच्छी जानकार हैं। यहा के समाज के अध्यक्ष श्री सौभागमलजी साहब मारू है। श्री शान्ति भाई एवं श्री शिवलालजी भाई व श्री मोतीलालजी दलाल प्रसिद्ध श्रावक हैं। यहा पर रेल्वे लाइन व बसो की पूर्ण सुविधा है। प्रतिवर्ष पर्युषण मे स्वाध्यायी जाते हैं। पत्राचार परीक्षा मे भी यहा से बराबर उत्तर प्राप्त हो रहे है।

६४. बीलोता (जिला टोंक)

यह ग्राम अलीगढ एव उनियारा के बीच मे स्थित है जैन घरो की सख्या १० है। स्वाध्यायियो का परिचय निम्न प्रकार है :—

१. श्री सोभागमलजी :— पुत्र श्री भवरलालजी। आयु ३८ वर्ष। आपकी व्यावहारिक शिक्षा एम०ए० बी०एड०। बडे लगनशील अध्यापक हैं एव आप होनहार स्वाध्यायी है। आपने अलीगढ, दूणी व बैतूल मे पर्युषण पर्व मे सेवा दी है। स्थानीय शिविरो मे अध्यापन का कार्य भी किया है।

२ श्री बाबूलालजी :— पुत्र श्री गोपीलाल जी जैन। आयु ३३ वर्ष। आप बी०ए०बी०एड० है अध्यापक हैं अच्छे लगनशील व सदा प्रसन्न रहने वाले स्वाध्यायी हैं आप देवली मे सेवा देते आ रहे हैं।

३ श्री अमोलकचंदजी जैन :— पुत्र श्री कजोडी लालजी। आयु ३३ वर्ष। आप श्री वीर जैन विद्यालय अलीगढ मे अध्यापन का कार्य कर चुके है। अब व्यवस्थापक के पद पर सहकारी

समिति मे कार्य कर रहे हैं आप अच्छे स्वाध्यायी हैं आपने वीलोता गगापुर पर्युषण पर्व मे सेवा दी है ।

४. श्री हरकचंदजी :—पुत्र श्री भवरलालजी । आयु ३५ वर्ष । आप बी०कॉम० हैं । स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर मे सेवा दे रहे हैं । आप अच्छे स्वाध्यायी हैं किताब पढ़ने का खासा शौक है आपने अब तक वीलोता मे सेवा दी है ।

५ श्री लड्डूलालजी :—आयु २६ वर्ष । आप एम०टी०सी० अध्यापक हैं आप वीलोता मे पर्युषण पर्व मे सेवा देते हैं ।

६ श्री धनराजजी :—आयु २४ वर्ष । आप उत्साही युवक हैं आप व्यवसायी है आपने वीलोता मे सेवा दी है ।

७ श्री कपूरचदजी :—पुत्र श्री भवरलालजी—आप भी स्वाध्यायी हैं । आप बाहर जाने की भावना रखते हैं एव उखलाणा मे आप सेवा भी दे चुके है ।

८ श्री दिनेशकुमारजी ६. श्री गोपालजी

१० श्री सुनितकुमारजी ११ श्री अशोककुमारजी अलीगढ स्वाध्याय शिविर मे भी पधारे ।

६५. वीलोपा (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम सवाई माधोपुर मे ७ मील एव देवपुरा (मीटर लाइन) स्टेशन के पास है । यहां के अधिकतर घर अब मानटाउन एव चोथ का बरवाडा मे रहने लग गए हैं ।

१. श्री कपूरचदजी जैन :—पुत्र श्री रामप्रतापजी जैन । आयु ३० वर्ष । आप इस वर्ष पर्युषण पर्व मे विरमावल - मध्यप्रदेश में सेवा देने पधारे । स्वाध्याय के प्रति विशेष रुचि है । विनम्र स्वभाव एव सौम्यता की मूर्ति हैं ।

२. श्री हुकमचंदजी :—कोटा शिविर में पधारे ।

६६. बूंदी (राजस्थान)

यह शहर जिला मुख्यालय एव वर्षों का केन्द्र स्थान है यहा स्थानकवासी समाज के २५ घर हैं । यहां के स्वाध्यायी श्रावको का परिचय निम्न प्रकार है —

१. श्री प्रेमचंदजी कोठारी :—पुत्र श्री चानमल जी साहब । आयु ४५ वर्ष । आप प्रतिष्ठित कपड़े के व्यापारी हैं । आपने पाथर्डी बोर्ड की जैन सिद्धान्त विशारद की परीक्षा प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण की है । आपकी थोकडो मे काफी रुचि है लगभग १४० थोकडो के जानकार हैं । जैन तत्वज्ञान के तलस्पर्शी विद्वान हैं पर्युषण पर्व मे आप प्रतिवर्ष स्थानीय सेवा देते हैं एव सुधर्म मण्डल की ओर से करनाल एव पालघर भी पधारे । आप धार्मिक क्षेत्र में निर्भीक कार्यकर्ता हैं । समाज के अगवाह हैं व्रत नियम मे भी कठोरता धारण किए हुए हैं आपने ३० वर्ष की अल्प आयु मे ही ब्रह्मचर्य का व्रत धारण कर लिया है ।

२ श्री मिलापचंदजी :—पुत्र श्री रतनलालजी डागा । आयु ५२ वर्ष । आप कपडे के प्रतिष्ठित व्यवसायी हैं आप जैन तत्व के अच्छे जानकार हैं कवि एव गायक हैं आपने जैन विवाह विधि एव मल्लिनाथ चरित्र की रचना की है । बाल निकेतन बूंदी के कोषाध्यक्ष हैं निर्भीक एव साहसिक कार्यकर्ता हैं । आप पर्युषण पर्व मे वर्षों से स्थानीय एव इस वर्ष भूपालसागर मे सेवा दी है ।

३ श्री मोहनलालजी :—पुत्र श्री मालचन्द्रजी साहब भगतडिया । आयु ४५ वर्ष । आप मैट्रिक पास कपड़े के व्यवसायी हैं पर्युषण पर्व मे स्थानीय सेवा देते हैं ।

६७. बेहूलेड़ (जिला सवाई माधोपुर)

यहाँ सवाई माधोपुर गगापुर सिटी एव मलारना स्टेशन से बस द्वारा पहुचा जा सकता है। समाज के १० घर हैं यहा निम्न स्वाध्यायी हैं :—

१. श्री चिरंजीलालजी जैन :—आप स्वाध्याय प्रेमी हैं आपने इस वर्ष पर्युषण पर्व के समय बेहूतेड मे सेवा दी है।

२. श्री केवलचंदजी जैन :—आप एक अच्छे स्वाध्यायी हैं। आपने इस वर्ष पर्युषण पर्व के समय स्थानीय सेवा दी है।

३. श्री विनयचंदजी जैन :—आप अच्छे स्वाध्यायी हैं। आपने इस वर्ष बेहूतेड में सेवा दी है।

६८. बैर (जिला भरतपुर)

यह एक पुराना कस्बा है। भवरलालजी प्रेमी श्रावक हैं। यहाँ समाज के ७ घर हैं।

६९. भरतपुर (राजस्थान)

यहाँ पर बाशनगेट मे महावीर भवन के नाम से बडा सुन्दर और पर्याप्त स्थानकजी बनी हुई है। उसी में समाज की ओर से धार्मिक पाठशाला, आयुर्वेदिक औषधालय और छात्रावास की व्यवस्था है। समाज के ६० घर है। स्वाध्यायियो का परिचय निम्न प्रकार है :—

१. श्री हजारीलालजी :—आयु ६५ वर्ष। आप जिला जजी भरतपुर मे पेशकार रह चुके हैं आपकी धर्मकार्य मे पूर्ण रुचि है। आप आँखें बनवाने के पश्चात भी स्थानकजी मे प्रार्थना आदि मे भाग लेते हैं, आप स्वाध्याय सघ के पूर्ण सहयोगी हैं। आप अलीगढ शिविर में पधारे हैं।

२. श्री मंगतूरामजी जैन :—आयु ५० वर्ष। आप अध्यापक हैं, आपकी सामयिक एव स्वाध्याय में पूर्ण रुचि है आप अलीगढ़ व देई आदि शिविर मे प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं। इस वर्ष आपने भरतपुर मे ही सेवा भी दी है। आप पल्लीवाल क्षेत्रीय संचालन समिति के सदस्य भी हैं।

३. श्री चन्दुलालजी :—आयु ६० वर्ष। आप यहाँ के सामाजिक कार्यकर्ता हैं एव सघ के अध्यक्ष भी हैं और धर्म प्रेमी हैं। आप स्वाध्याय सघ के समर्थक श्रावक हैं।

४. श्री बाबूलालजी :—आयु ५० वर्ष। आप एक अच्छे व्यवसायी हैं, मण्डावर के रहने वाले हैं आप धर्म प्रेमी एव स्वाध्याय मे रुचि रखते हैं। आप नियमित रूप से प्रार्थना मे स्थानकजी मे आकर भाग लेते हैं। आपका पूरा परिवार ही धर्म से ओतप्रोत हैं एवं अगाढ श्रद्धा है।

निम्न महानुभाव स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविरो मे भी पधारे —

५. श्री जगदीश प्रसादजी ६. श्री त्रिलोकचंदजी
७. श्री विजय कुमारजी ८. श्री अनिल कुमारजी
९. श्री अजय कुमारजी १० श्री हरिदत्तजी शर्मा
११ श्री देवेन्द्र कुमारजी १२. श्री निर्मल चन्दजी आदि इन्दौर में पधारे।

७०. भेड़ोला (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम चौथ का बरवाडा से पूर्व दक्षिण की ओर स्थित है छोटा ग्राम है। स्थानकजी है समाज के ४ घर हैं। स्वाध्याय परिचय निम्न प्रकार है :-

१. श्री बाबूलालजी जैन :—पुत्र श्री कस्तूरचदजी जैन। आयु ३५ वर्ष। आप बी० ए० बी०

एड० हैं, स्वाध्याय मे रुचि रखते हैं। आप प्रति वर्ष पर्युषण पर्व मे स्थानीय सेवा देते हैं।

२. श्री शान्तिप्रकाशजी जैन :—पुत्र श्री कन्हैयालालजी। आयु ३० वर्ष। आप बी० ए० बी० एड० अध्यापक हैं आपने गत वर्ष स्थानीय सेवा पर्युषण पर्व मे ही दी है। आप एक उत्साही व्यक्ति हैं।

७१. मई (जिला भरतपुर)

यह ग्राम भरतपुर जिले मे पीगोरा रेल्वे स्टेशन से ५ मील दूरी पर स्थित है। यहाँ पर समाज के १० घर हैं।

७२. महुआ (जिला सवाई माधोपुर)

यह कस्बा जयपुर से भरतपुर जाने वाली बस रूट पर स्थित है एवं धर्मशाला स्थानकजी के रूप मे है। श्री बाबूलालजी, श्री महावीर प्रसादजी प्रमुख श्रावक है।

७३. महुआ मण्डावर रोड (जिला सवाई माधोपुर)

वहाँ पल्लीवाल समाज के ५५ घर हैं रेल्वे स्टेशन है। गाव मे मन्दिर के साथ स्थानकजी है। श्री छीतरमलजी साहब सरपंच, श्री रामलालजी साहब व श्री ताराचदजी व श्री हरिप्रसादजी व श्री नत्थीलालजी आदि श्रावक रुचिशील व्यक्ति हैं। निम्न महानुभाव स्वाध्याय शिविरो में भी पधारे हैं —

१. श्री मोहनलालजी　२. श्री त्रिलोक चन्दजी
३. श्री पदमचंदजी　४. श्री सत्येन्द्र कुमारजी
५. श्री सुधीर कुमारजी　६. श्री मुकेश कुमारजी
७. श्री तिलोक चंदजी　८. श्री राजकुमारजी

७४. मानटाउन बजरिया (जिला सवाई माधोपुर)

यह नगर रेल्वे स्टेशन सवाई माधोपुर ज० पर स्थित है। यहाँ पर स्थानकवासी जैन श्रावको के लगभग २६ घर स्थायी रूप से निवास करते है और ८० घर के करीब अस्थाई रूप से निवास करते हैं। यहाँ विद्यालय भी चलता है।

१ श्री चौथमलजी जैन :—पुत्र श्री लक्ष्मीचदजी जैन। आयु ४४ वर्ष। आप जैन सिद्धान्त शास्त्री है। आप श्री वीर जैन विद्यालय अलीगढ के १० वर्ष तक सचिव रह चुके हैं आप स्वाध्याय सघ के सर्वप्रथम सयोजक हैं। आपने अपने कार्यकाल मे सघ के लिए अथक परिश्रम किया है आपने गुलाबपुरा, खीचन, जोधपुर, नागौर आदि मे शिविर के समय शिक्षण प्राप्त किया है और जयपुर, कोटा स० मा०, श्री महावीरजी आदि स्थानो मे शिविर के समय शिक्षक का कार्य भी कुशलतापूर्वक किया है। आपने सारगपुर, बारा, मगलवाड, मई व भुसावल आदि स्थानो पर जाकर सेवा दी है। आप साधना विभाग के क्षेत्रीय सयोजक हैं। आपके नेतृत्व मे महावीर धर्म प्रचारक संघ ने पल्लीवाल क्षेत्र मे यात्रा की है। आपको स्वाध्याय सघ द्वारा अभिनन्दन पत्र भेंट किया जा चुका है। आपको बालचर विभाग मे विशेष रुचि होने से जिलाधीश सवाई माधोपुर द्वारा प्रशसा पत्र भी प्राप्त हो चुका है। आप व्रतिश्रावक हैं। नियमित सामायिक एव स्वाध्याय करते है आप पिछले ७ वर्ष से शीलव्रत का पालन करते हैं।

२ श्री रूपचदजी जैन :- पुत्र श्री हसराजजी जैन। आयु ३८ वर्ष। आपकी व्यवहारिक योग्यता एम ए. बी एड है। आपकी

स्वयं की आगम व आध्यात्मिक पुस्तकालय है। आपने श्यामपुरा, सवाई माधोपुर, इन्दौर, श्री महावीरजी आदि प्रशिक्षण शिविरो मे अध्यापन का कार्य किया है। आपने पर्युषण पर्व मे नागपुर, बारा, सरदार शहर, घनारिकला, आलनपुर, श्यामपुरा, खातोली, गगापुर, काधला और भरतपुर आदि स्थानो मे सेवा दी है। स्वाध्यायी सघ एवं भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव समिति, भारत जैन महामण्डल आदि सस्था के संयोजक के रूप मे आप कई कार्य रहे हैं। श्यामपुरा संघ के मत्री, पोरवाल सघ के कार्यकारिणी के सदस्य, सामूहिक विवाह सम्मेलन के सहमत्री के रूप मे कार्य किया है। आपको समाज सेवा के उपलक्ष्य मे राजस्थान प्रान्तीय समिति की ओर से समाज सेवी का पदक प्रदान किया जा चुका है।

३. श्री कपूरचंदजी जैन :—पुत्र श्री रामनिवासजी जैन। आयु ४७ वर्ष। नायब तहसीलदार। आप बी ए साहित्य रत्न साहित्य भूषण हैं। सामाजिक एव राजनैतिक कार्यकर्त्ता हैं। आप समाज मे एकता लाने मे सदैव प्रयत्नशील रहे हैं इस हेतु आप सेठ श्री आनन्दराजजी सुराणा एवं धीरज भाई जी के साथ कार्य कर चुके हैं। आप धार्मिक कार्य में रुचि लिये रहते हैं। भाषण कला एव प्रखर बुद्धि व व्यवहार कुशल हैं आप कई सघो के मत्री रह चुके हैं। इस समय पोरवाल सघ के उपमत्री एव स्वाध्याय सघ के प्रचार प्रसार का कार्य कर रहे हैं। आप गजेन्द्र पाठशाला के अध्यक्ष हैं।

४. श्री रामप्रसादजी जैन —पुत्र श्री नानकरामजी जैन। आयु ४८ वर्ष। आप सरल स्वभावी नियमित रूप से सामायिक एव स्वाध्याय करने वाले एव सघ की सेवा मे रत रहने वाले हैं। आपने वणी महाराष्ट्र मे पर्युषण पर्व मे सेवा दी है। स्वाध्याय सघ कार्यालय मे भी आपने कार्य किया है।

५ पदमचंदजी जैन :—पुत्र श्री चोथमलजी जैन। आयु १९ वर्ष। आप एक होनहार युवक हैं। आपका व्यवहारिक शिक्षण के साथ-साथ जैन धर्म के तत्वज्ञान का भी अच्छा अध्ययन चल रहा है आपने जयपुर, कोटा व सवाई माधोपुर के शिविरो मे प्रशिक्षण प्राप्त किया है और पहरसर आदि जगह पर अध्यापन का कार्य किया है। आपने भदेसर, विदिशा एव भरतपुर मे पर्युषण पर्व मे सेवा दी है।

६. श्री गणपतलालजी :—पुत्र श्री नेमीचदजी। आयु २९ वर्ष। आप बी० ए० पास राजकीय सेवा मे हैं आपको सामायिक एव स्वाध्याय मे अच्छी रुचि है आपने बोहिडा एव आकोदिया मण्डी मे पर्युषण पर्व मे सेवा दी है।

७ श्री ऋद्धिचंदजी :—पुत्र श्री रामनिवासजी जैन। आयु ४० वर्ष। आप एम० ए० बी० एड० साहित्य विशारद जैन प्रवेशिका एव विशारद अध्यापक हैं आपने पर्युषण पर्व मे वाणी एव भुसावल मे सेवा दी है। आप गजेन्द्र पाठशाला में भी योगदान देते है।

८ श्री छीतरमलजी जैन :—आप मानटाउन श्रावक सघ के अध्यक्ष हैं। महावीर मिष्ठान भण्डार के मालिक है आप स्वाध्याय सघ को आर्थिक सहयोग देने मे सदैव तैयार रहते हैं आपका गजेन्द्र पाठशाला मे पूर्ण योगदान है।

९ श्री रतनलाल जैन :—पुत्र श्री भवरलाल जैन एण्डवा वाले। आयु २५ वर्ष। आप एक लगनशील स्वाध्यायी हैं, आपने दो वर्ष तक

स्वाध्याय सघ में लेखक के रूप मे कार्य किया है। आपके पिताजी ने एण्डवा मे श्री हसराजजी परमानन्दजी द्वारा प्रदत्त जमीन पर स्थानक भवन बनाकर समाज को भेंट किया है।

१०. श्री रूप नारायणजी जैन :—पुत्र श्री भवरलालजी जैन। आयु ३२ वर्ष। आपने इस वर्ष स्थानीय सेवा दी है। रुचिशील स्वाध्यायी हैं।

११ श्री गोपीलालजी जैन :—आयु ५३ वर्ष। आप मैट्रिक वेसिक एस० टी० सी० सेवा निवृत अध्यापक हैं। स्वाध्याय एव सत सेवा मे आपकी गहरी रुचि है। आपने एण्डवा, खोह, मोही, वरगवा, आकोदिया मण्डी मे पर्युषण पर्व में सेवाएँ दी हैं। स्थानीय शिविरो में अध्यापन का कार्य करते हैं। आप स्वाध्याय सघ के प्रत्येक शिविर मे प्रशिक्षण प्राप्त करने को वडे ही उत्सुक रहते हैं।

१२. श्री प्रेमवावूजी जैन :—पुत्र श्री गोपीलाल जैन। आयु २६ वर्ष। आप वी० एस० टी० सी० अध्यापक हैं उत्साही लगनशील एव प्रामाणिक स्वाध्यायी हैं। आपने सिहोर, महुआ, सुमेरगजमण्डी मे पर्युषण पर्व मे सेवायें दी हैं। आप अपना समय का वरावर सदुपयोग करते रहते हैं। पत्राचार परीक्षा में भी आपका वरावर सहयोग मिल रहा है।

१३ श्री सुरेश वावूजी जैन —पुत्र श्री गोपीलाल जी। आयु २२ वर्ष। आप लगनशील एव उत्साही स्वाध्यायी हैं। आपका पूरा परिवार ही स्वाध्याय सघ की सेवा मे अहर्निश सेवा करता है।

१४. श्री पदमवावूजी जैन :—पुत्र श्री गोपीलाल जी। जैन आयु १८ वर्ष। आप भी अपने दोनों भ्राताओ की तरह ही उत्साही हैं। इस वर्ष आप इन्दौर शिविर मे भी पधारे।

१५ श्री राजेन्द्र प्रसादजी जैन —पुत्र श्री मूलचदजी जैन। आयु २० वर्ष। आप व्यापारी, स्वाध्यायी हैं। प्रति वर्ष आप पर्युषण पर्व मे सेवा देने को तैयार रहते है। भीमगढ और हरसाना मे आप सेवायें दे चुके हैं।

१६ श्री वावूलालजी जैन —पुत्र श्री नेमीचदजी जैन। आप रेडियो, टेलिविजन, टेलीप्रिन्टर आदि की जानकारी के साथ-साथ स्वाध्याय के प्रति भी अच्छी रुचि है। आपने नृसिगगढ मे पर्युषण पर्व मे सेवा दी है। उत्साही एव लगनशील स्वाध्यायी हैं। आपकी धर्मपत्नि श्रीमति निर्मला कुमारी भी प्रतिक्रमण जानती हैं। आपका पूरा परिवार ही धर्म प्रवण व भावनाशील है।

१७ श्री शान्ता प्रसादजी जैन :—पुत्र श्री वजरगलालजी जैन। आप निष्ठावान, दृढ सकल्पी उत्साही स्वाध्यायी हैं। अब तक आप चौरू, सवाई माधोपुर, खातोली, उखलाणा, देई, हाटपीपल्या और खेतडीनगर मे सेवाये दे चुके हैं। स्थानीय शिविरो में अध्यापन कार्य भी करते हैं। कार्यालय कार्य आप ही सभालते हैं।

१८ श्री वावूलालजी जैन :—पुत्र श्री देवकिशनजी जैन। आपने श्री शीतलमुनिजी म० सा० की प्रेरणा से नियमित सामायिक करना प्रारम्भ कर दिया है। आप स्टेट वैंक ऑफ वीकानेर एण्ड जयपुर में अधिकारी हैं। आगे सेवा देने की आप वरावर भावना रखते हैं।

१९. श्री राजेन्द्र प्रसादजी :—पुत्र श्री रामगोपालजी एण्डवा वाले। आप कोटा शिविर मे भी पधारे।

२०. श्री घनश्यामजी —पुत्र श्री छीतालालजी। आपने श्री महावीर जी शिविर में भाग लिया आप टेलिफोन ऑपरेटर एवं उत्साही कार्यकर्ता हैं जब तक कार्यालय बजरिया मे रहा तब तक आप पत्राचार परीक्षा कार्यक्रम को भी संभालते रहते थे।

२१. श्री हमीरमलजी वीलोपा वाले

२२. श्री चन्द्रसागरजी

२३. श्री राजेन्द्र कुमारजी चिकित्सक

२४. श्री अनिल कुमारजी

२५ श्री विजय कुमारजी

२६. श्री दिलीप कुमारजी।

इनके अतिरिक्त अनेक स्वाध्यायी ऐसे हैं जो यहां व्यापार एव ड्यूटी पर प्रतिदिन आते हैं और सायकाल अपने निवास स्थानो पर चले जाते हैं। जिनमें सवाई माधोपर, आदर्शनगर, आलनपुर, कुस्तला, उदुपुरा ग्राम मुख्य हैं।

७५. मुई (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम सवाई माधोपुर से ८ मील एव कुस्तला स्टेशन से ३ मील दूरी पर है। यहा पर समाज के आठ घर हैं। प्रमुख कार्यकर्ता श्री मनोरथलाल जी, श्री वच्छराजजी, श्री धूलीलालजी, श्री घीसालाल जी आदि हैं।

१. श्री जीतमलजी जैन —आयु ४० वर्ष। आप उत्साही नवयुवक हैं सामायिक प्रतिदिन करते हैं। कन्ट्रोल के डीलर हैं। पर्युषण पर्व मे स्थानीय सेवा देते हैं।

२ श्री वच्छराज जी :—आप भी पर्युषण पर्व मे स्थानीय सेवा देने की भावना बराबर रखते हैं।

७६. भूडियासाद (जिला भरतपुर)

जिला भरतपुर मे पल्लीवाल समाज का ५ घर वाला ग्राम है यहा से श्री महेशचदजी पुत्र श्री अमरचदजी एव श्री रूपचदजी अध्यापक पुत्र श्री अमरचदजी स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविरो मे भी पधारे।

७७. भोजपुर (जिला सवाई माधोपुर)

मण्डोवर से अलवर जाने वाली बस रूट पर स्थित है। समाज के १५ घर हैं। यहां के स्वाध्यायियों का परिचय निम्न प्रकार है :—

१. श्री हरिश्चंद जी :—आयु ४० वर्ष। आप यहां के प्रसिद्ध व्यवसायी हैं आपकी धार्मिक रुचि अच्छी है।

२ श्री भंवरलालजी पटवारी :—आयु ५० वर्ष। आप वयोवृद्ध हैं पर आपकी सामायिक एवं स्वाध्याय मे पूर्ण रुचि है। निम्न महानुभाव भी शिविरो में पधारे हैं :—

३ श्री छगनलालजी ४ श्री राजेन्द्रप्रसादजी
५. श्री धर्मचदजी ६ श्री नरेन्द्रकुमारजी
७ श्री भोरेलालजी ८. श्री प्यारेलालजी
९. श्री सुखलालजी।

७८. मोहम्मदपुरा (जिला टोंक)

यहा जैन घरो की सख्या ६ है आमली स्टेशन के पास है। यहां के स्वाध्यायी बधुओं का परिचय निम्न प्रकार है :—

१. श्री बुद्धिप्रकाशजी :—पुत्र श्री रामप्रहलादजी। आयु १८ वर्ष। आप सेवाभावी हैं, स्वाध्याय की अच्छी लगन है। आगे आप सेवा देने की भावना रखते हैं।

२. श्री हरकचंदजी जैन :—पुत्र श्री रामप्रसादजी।

आयु २८ वर्ष। आप लगनशील स्वाध्यायी हैं। घर मे विशेष कार्य होने पर भी आप स्थानीय सेवा देते हैं कुशल व्यापारी हैं। आपके पिताश्री वर्षों तक सरपच रहे है और स्वाध्याय सघ के समर्थक हैं। इस वर्ष भी आपने स्थानीय सेवा दी है।

३. श्री रामप्रसादजी :—पुत्र श्री मोतीलालजी। आयु ५५ वर्ष। आप यद्यपि स्वाध्याय अधिक नही कर सकते फिर भी आप कार्यकर्ता के रूप मे सदैव तैयार रहते हैं। आपने इस वर्ष स्थानीय सेवा दी है।

४ श्री बाबूलालजी :—आप मैट्रिक पास युवक हैं आपकी स्वाध्याय मे रुचि बढी है। इस वर्ष आपने स्थानीय सेवा दी हैं।

५ श्री लड्डूलालजी —पुत्र श्री रामदयालजी। आयु ४५ वर्ष। आप इस समय सरपच एव सहकारी समिति के भी अध्यक्ष एव पोरवाल सघ क्षेत्र सवाई माधोपुर के सदस्य भी हैं। राजनैतिक, सामाजिक कार्यकर्त्ता के साथ-साथ धार्मिक क्षेत्र मे भी कार्य करने को तत्पर हैं। स्वाध्याय सघ के प्रति गहरी निष्ठा रखते हैं।

६ श्री रमेशचन्दजी —पुत्र श्री रामप्रसादजी। आप श्रीमहावीरजी शिविर मे पधारे।

७९. रतनजिला [जिला सवाई माधोपुर]

यह ग्राम गगापुर से हिण्डोन जाने वाली बस रूट पर है। यहा पर १० घर हैं। श्री मिश्रीलाल जी पटवारी प्रेमी श्रावक हैं। इस ग्राम को कटकड भी कहते हैं। यहां के निम्न महानुभाव शिविरो मे मे भी पधारे —

(१) श्री गिर्राजप्रसादजी अध्यापक (२) श्री सुरेशचन्दजी (३) श्री विमलचन्दजी (४) श्री अशोककुमारजी (५) श्री महेशकुमारजी (६) श्री महावीरप्रसादजी (७) श्री दिनेशकुमारजी।

८०. रवांजना [जिला सवाई माधोपुर]

यह ग्राम सवाई माधोपुर से कोटा जाने वाली रेल्वे लाइन पर दूसरा स्टेशन है। स्थानक का निर्माण कार्य चालू है। समाज के ८ घर हैं। सवाई माधोपुर से बस सेवा भी उपलब्ध है।

१. श्री रामप्रसादजी जैन —आप रुचिशील स्वाध्यायी है। आपने इस वर्ष स्थानीय सेवा पर्युषण पर्व के समय दी है।

२. श्री बाबूलालजी जैन :—आप श्रद्धावान श्रावक हैं। आपने इस वर्ष पर्युषण पर्व के समय रवांजना ही में सेवा दी है।

३. श्री शिवप्रसादजी —आपको आगे बढने की लगन है। आपने इस वर्ष रवाजना मे पर्युषण पर्व मे सेवा दी है।

४. श्री मूलचन्दजी :—आप उत्साही नवयुवक हैं। आपने बगावदा मे पर्युषण पर्व मे सेवा दी है।

८१. रसीदपुर [जिला सवाई माधोपुर]

यह ग्राम हिण्डोन से मण्डावर जाने वाली बस रूट पर स्थित है। समाज के ८ घर हैं। स्वाध्यायी परिचय निम्न प्रकार है —

१ श्री फूलचन्दजी जैन :—आप एक व्यवसायी व्यक्ति है फिर भी धर्म के कार्य में पूर्ण रुचि रखते है। आपने गत वर्ष स्थानीय सेवा दी है।

२ श्री मूलचन्दजी जैन —आप कपडे के व्यवसायी हैं। आपने गत वर्ष पर्युषण पर्व में सेवा देकर अपनी धार्मिक जानकारी का परिचय दिया है।

निम्न महानुभाव इन्दौर स्वाध्याय प्रशिक्षण मे शिविर भी पधारे .—

(३) श्री शीतलकुमारजी (४) श्री श्रीपालजी (५) श्री जगनलालजी (६) श्री गुलाबचन्दजी (७) श्री प्रेमचन्दजी (८) श्री अशोककुमार जी।

८२. रानीपुरा [जिला बूँदी]

देई के पास है। दो घर बगेरवाल, ५ घर सरावगी एवं २ घर पोरवाल समाज के हैं। यह सभी स्थानकवासी समाज के अनुयायी हैं। श्री तेजमलजी, श्री निहालचन्दजी, श्री कपूरचन्दजी आदि देई के महानुभाव इसे संभालते हैं।

८३. रांवल [जिला सवाई माधोपुर]

यह ग्राम रणथम्भोर स्टेशन के पास में है। समाज के ४ घर हैं।

१. श्री चिरंजीलालजी —अध्यापक, प्रेमी स्वाध्यायी हैं। राजकीय सेवा में कार्यरत हैं।

२ श्रीमती प्रेमबाई जैन —आप एक समझदार युवती हैं। स्वाध्याय में अच्छी रुचि है। प्रतिक्रमण आदि का अच्छा ज्ञान है आपने इस वर्ष पर्युषण पर्व में सेवा दी है।

८४. रोशनपुरा [जिला टोंक]

सवाई माधोपुर और टोक जिले की सीमा पर छोटा सा ग्राम है। पोरवाल समाज के ४ घर हैं। श्री चेतनलालजी यहा पर स्वाध्यायी हैं। जो शिविर में भी पधारे हैं।

८५. लहचोड़ा [जिला सवाई माधोपुर]

पल्लीवाल क्षेत्र में २ घर वाला एक छोटा सा क्षेत्र है। यहा से श्री सतीशचन्दजी पुत्र श्री वृजमोहनजी श्रीमहावीरजी शिविर में पधारे। हिण्डोन सिटी होकर इस गाम में पहुँचा जा सकता है।

८६. लहसोड़ा [जिला सवाई माधोपुर]

यह ग्राम सवाई माधोपुर से २५ किलोमीटर है, बस जाती है। समाज के ७ घर है। स्थानकजी बनी हुई है।

१ श्री गोपीलालजी जैन —आप एक अच्छे व्यवसायी हैं, लघु उद्योग लगा रखा है। धर्म के प्रति अच्छा प्रेम है। आप स्थानीय सेवा देते हैं। समाज सेवी व्यक्ति हैं।

२. श्री रमेशचन्दजी जैन .—आप एक अच्छे कार्यकर्त्ता हैं। सेवा करने में अच्छी रुचि रखते हैं। आप पर्युषण पर्व के समय पर स्थानीय सेवा देते हैं।

३ श्री निरंजनलालजी —आप अध्यापक हैं। आजकल चौथ का बरवाडा एव कोटा में रहते हैं। आप सवाई माधोपुर एव कोटा शिविर में भी पधारे।

८७. वजीरपुर [जिला सवाई माधोपुर]

गगापुर सिटी मे हिण्डोन जाने वाले बस मार्ग पर अच्छा कस्बा है। पल्लीवाल समाज के १५ घर हैं। श्री पूर्णचन्द्रजी जैन भूतपूर्व सरपच आदि यहाँ के मुख्य कार्यकर्त्ता हैं।

८८. श्यामपुरा (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम दिल्ली बम्बई रेलवे लाइन सवाई माधोपुर के निकटस्थ मखोली स्टेशन से ३ मील दूरी पर पहाडी तलहटी मे बसा हुआ है। समाज के ४० घर हैं। स्थानकजी व महावीर भवन (नोहरा) भी बना हुआ है। यह ग्राम धर्मपुरी के नाम से प्रसिद्ध है। यहा पर श्रावक सघ, श्री महा-

वीर स्वाध्याय मण्डल और श्री महावीर श्राविका समिति आदि हैं। स्वाध्यायी, श्रावकों का परिचय निम्न प्रकार है —

१. श्री भंवरलालजी जैन :—पुत्र स्व० मनोरथ लालजी जैन । आयु ४५ वर्ष। आप अच्छे जानकार धर्मनिष्ठ श्रावक होने के साथ साथ एक कवि और मधुर गायक भी हैं। आपने पर्युषण पर्व मे श्यामपुरा, चौरू वरगवां और सिहोर आदि स्थानो मे सेवा दी है। आप स्थानीय श्रावक सघ के मत्री और पोरवाल संघ के सदस्य भी हैं आपकी पत्नि श्री महावीर श्राविका समिति की कोषाध्यक्ष हैं।

२. श्री धनसुरेशजी जैन :—पुत्र स्व० कल्याणमलजी जैन । आयु २२ वर्ष। आपने मुनि श्री रामकुंवार स्थानकवासी जैन धार्मिक पाठशाला मे अध्यापन का कार्य किया था। आपको श्री महावीर स्वाध्याय मण्डल व श्री द० स्था० जैन श्रावक सघ ने १०१—०० रुपये की राशि व अभिनन्दन पत्र भेंट किया था। राशि आपने वापिस श्री महावीर स्वाध्याय मण्डल को भेंट कर दी थी। आपने फाजिलाबाद के स्थानीय शिविर मे अध्यापन का कार्य भी किया है। पचाला में पर्युषण में सेवा दी है। धर्म कार्यों मे आपकी गहन रुचि है।

३. श्री छल्लूलालजी जैन :—पुत्र स्व० श्री बिरदीचदजी जैन । आयु ५० वर्ष। आप एक अच्छे जानकर श्रावक होने के साथ-साथ सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं। आप अधिकतर स्थानीय सेवा देते हैं। आप आकोदियामण्डी मे पर्युषण पर्व में सेवा देने पधारे। आप श्री महावीर स्वाध्याय मण्डल के निदेशक भी हैं। आदर्श सामूहिक विवाह के सयोजक भी रहे हैं।

४. श्री माणकचदजी जैन :—पुत्र स्व० श्री गोरधनलालजी जैन पटवारी । आयु ३७ वर्ष। आप बी०ए० एस०टी०सी० उत्तीर्ण हैं और राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मे अध्यापक हैं। आप पर्युषण पर्व में स्थानीय सेवा देते हैं। आप उत्साही एवं लगनशील कार्यकर्ता हैं।

५. श्री नरेन्द्रमोहनजी जैन :—पुत्र श्री राजूलाल जी जैन। आयु २३ वर्ष। आप बी० एस०-सी० बी एड हैं। आप कर्मग्रंथ भाग २ का अध्ययन पूर्ण करके कर्मग्रंथ भाग ३ एव तत्वार्थ सूत्र का अध्ययन कर रहे हैं। आप अच्छे स्वाध्यायी, गायक व उत्साही युवक हैं। सामाजिक तथा धार्मिक कार्यकर्ता भी हैं। पर्युषण पर्व मे आप बरा बागावास व अकोला आकोदियामण्डी भोजपुर तथा जलगांव मे सेवा दे चुके हैं। आपको गत पर्युषण मे जलगाव में अभिनन्दन पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया था।

६. श्री ओमप्रकाशजी जैन :—पुत्र श्री मद्दूलाल जी जैन। आयु २० वर्ष। आप उत्साही स्वाध्यायी हैं, पर्युषण पर्व मे आप पचाला लागव, बारा, भूपालसागर मे आप सेवा दे चुके हैं। कन्जोली पहरसर चौरू मे आप स्थानीय शिविर मे अध्यापन का कार्य भी कर चुके हैं। आप श्री महावीर स्वाध्याय मण्डल के एक वर्ष तक सयोजक रहे।

७. श्री प्रकाशचंदजी जैन :—पुत्र श्री फूलचदजी जैन। आयु २२ वर्ष। आप एम०कॉम० कर रहे हैं। तत्वार्थ सूत्र और कर्मग्रथ भाग ३ का अध्ययन कर चुके है उत्साही स्वाध्यायी और गायक भी हैं। पर्युषण पर्व में बारा, आकोला, बोहिडा, वणी, भोजपुर एव जामनेर मे आप सेवा दे चुके हैं। स्थानीय शिविरो मे आप अध्यापन का कार्य कर चुके हैं।

आप ही नही आपका पूरा परिवार धार्मिक भावना से ओतप्रोत है। आपकी धर्मपत्नि श्रीमती कान्ता जैन श्री महावीर जैन श्राविका समिति की मत्री हैं।

८. श्री धर्मचंदजी जैन :—पुत्र श्री लड्डूलालजी जैन। आयु २२ वर्ष। आप पर्युषण पर्व मे इण्टाली मोही, खोह, परली आदि स्थानो मे सेवा दे चुके हैं। आप श्री महावीर जैन स्वाध्याय मण्डल के सयोजक हैं। आपकी धर्मपत्नि श्रीमती दिलखुश जैन श्री महावीर श्राविका समिति की सहमत्री हैं।

९ श्री जिनेन्द्रकुमारजी :—पुत्र श्री परमानन्दजी जैन। आयु २३ वर्ष। आप पर्युषण पर्व मे चोरू महावीर नगर व इण्टाली मे सेवा दे चुके हैं। आजकल आप इन्दौर रहते हैं। आपका किराने का व्यवसाय है। आप उत्साही व भावनाशील नवयुवक कार्यकर्ता हैं। आचार्य प्रवर के इन्दौर व सवाई माधोपुर चातुर्मास मे आपने अच्छी सेवा की है।

१०. श्री रमेशचंदजी जैनः—पुत्र श्री चौथमलजी जैन। आयु २० वर्ष। आप अच्छे वक्ता एव गायक हैं। आपकी स्वाध्याय प्रवृति में विशेष रुचि है प्रतिक्रमण पच्चीस बोल के जानकार हैं आपने आकोदियामण्डी में पर्युषण पर्व में सेवा दी है।

११. श्री धर्मचंदजी जैन :—पुत्र श्री फूलचंदजी जैन। आयु १८ वर्ष। आप मधुर गायक हैं। धार्मिक एव सामाजिक कार्यों मे आपकी विशेष रुचि है। आप पर्युषण पर्व मे परली सेवा दे चुके हैं। आपने धार्मिक शिक्षा श्यामपुरा धार्मिक पाठशाला में प्राप्त की है।

१२ श्री फूलचंदजी जैन :—पुत्र श्री कजोडीमलजी जैन। आयु ६५ वर्ष। आप प्रकृति के सरल अच्छे गायक वयोवृद्ध, स्वाध्यायी एव स्थानीय श्रावक सघ के अध्यक्ष है। आप पर्युषण पर्व मे स्थानीय सेवा देते हैं।

१३. श्री कपूरचंदजी जैन :—पुत्र श्री हरकचंदजी जैन। आयु १६ वर्ष। आप लग्नशील स्वाध्यायी हैं। आप स्थानीय सेवा पर्युषण पर्व मे देते रहे हैं। आपकी धर्मकार्यों मे गहन रुचि है।

१४. श्री पारसचंदजी जैन :—पुत्र श्री गुलाबचदजी जैन। आयु २३ वर्ष। आप एम० कॉम० कर रहे हैं। आप प्रतिभा सम्पन्न नवयुवक स्वाध्यायी एव हसमुख व्यक्ति हैं। आप सास्कृतिक कार्यक्रमो के आयोजन व संयोजन कार्य मे दक्ष हैं। आपने धासा महुआ मण्डावर मण्डी मे पर्युषण पर्व मे सेवा दी है एवं आप गगापुर और दूणी मे स्थानीय शिविरो में अध्यापन का कार्य कर चुके हैं। आप राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम, जयपुर में कनिष्ठ लेखापाल हैं।

१५. श्री अजीतकुमारजी जैन —पुत्र श्री परमानन्दजी जैन। आयु १६ वर्ष। आप स्वाध्याय प्रेमी हैं आपने भूपालसागर मे पर्युषण पर्व में सेवा दी है। अच्छे गायक भी हैं।

१६. श्री श्यामलालजी :—पुत्र श्री लल्लूलालजी। आयु २३ वर्ष। आप सन् १९७३ मे जामनेर मे सेवा देने हेतु पधारे एवं फाजिलाबाद शिविर में अध्यापक कार्य किया है आप उत्साही नवयुवक स्वाध्यायी हैं।

आगामी वर्षों में सेवा देने योग्य स्वाध्यायी :—

१७. श्री सुरेशचंदजी जैन :—पुत्र श्री राजूलालजी जैन। आयु २० वर्ष। आपकी स्वाध्याय में अच्छी रुचि है।

१८. श्री कमलचंदजी जैन :—पुत्र श्री सुन्दर लालजी जैन। आयु १६ वर्ष। आप बी० काम० कर रहे हैं पत्राचार परीक्षा कार्यक्रम मे निशुल्क सेवायें दे रहे हैं।

१९. श्री महवीर प्रसादजी जैन :—पुत्र श्री फूलचदजी जैन। आयु २५ वर्ष। आप की स्वाध्याय प्रवृति मे अच्छी रुचि है। राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम कोटा मे कनिष्ठ लेखापाल के पद पर सेवारत हैं। आपने आगामी पर्युपण मे सेवा देने जाने हेतु श्री श्रीचन्दजी म० की प्रेरणा से संकल्प लिया है।

२०. श्री ज्ञानचंदजी जैन :—पुत्र श्री हरकचदजी जैन। आयु १६ वर्ष। आप मधुर गायक हैं व स्वाध्याय प्रेमी हैं।

२१. श्री फूलदचंजी जैन :—पुत्र श्री सूरजमलजी जैन। आयु २५ वर्ष। आपने सवाई माधोपुर मे शिविर मे भाग लिया।

२२. श्री रिखवचंदजी जैन :—पुत्र श्री झण्डू लालजी। आयु २५ वर्ष। आप श्रावक सघ के भूतपूर्व मत्री हैं। स्वाध्याय प्रवृति मे रुचि लेते हैं।

२३. श्री कैलाशचंदजी जैन :—पुत्र श्री राजूलालजी। आयु ३० वर्ष। आप अध्यापक हैं नियमित सामायिक करते है। धर्म कार्यों मे गहन रुचि रखते हैं।

२४. श्री जिनेश्वर बाबू जैन :—पुत्र श्री परमानन्दजी जैन। आयु १८ वर्ष। श्रीमहावीरजी शिविर मे भाग लिया। गायक एवं रुचिशील स्वाध्यायी हैं।

२५ श्रीमती चमेली जैन :—धर्मपत्नी श्री नरेन्द्र जैन। नियमित स्वाध्याय एव सामायिक करती हैं।

२६. श्रीमती कान्ता जैन :—धर्मपत्नी श्री प्रकाश जैन। श्री महावीर श्राविका समिति की मत्री हैं।

२७. श्रीमती गोरधनी जैन :—धर्मपत्नी श्री परमानन्दजी जैन। श्री महावीर श्राविका समिति की अध्यक्षा हैं। आपने वर्षो तप किया है। आपको महावीर स्वाध्याय मण्डल ने सम्मान पत्र भी भेंट किया है।

२८ श्रीमती गुलाबदेवी जैन :—धर्मपत्नी श्री झण्डूलालजी जैन। एकान्तर एव वर्षो तप किया है। आपको श्री महावीर स्वाध्याय मण्डल ने सम्मान पत्र भेंट किया है। श्री महावीर श्राविका समिति की उपाध्यक्षा हैं।

२९. श्रीमती गुलाबदेवी जैन :—धर्मपत्नी श्री फूलचदजी जैन। आपने वर्षों तप किया है। आपको श्री महावीर स्वाध्याय मण्डल ने सम्मानित किया है।

३०. श्री धनराजजी जैन :—बजरिया आफिस में आप पत्राचार परीक्षा का कार्य बराबर करते रहते हैं उत्साही नवयुवक कार्यकर्ता है। आपके पिता श्री सूरजमलजी वर्तमान मे सरपंच हैं पहिले भी दो बार आप सरपच रह चुके हैं। आपके पिताजी नियमित सामायिक किए विना पानी भी नही लेते हैं।

३१. श्री महावीर प्रसादजी जैन :—पुत्र श्री राजूलालजी। मधुर गायक हैं। श्रीमहावीरजी शिविर में आपने कठकला से सबको मत्रमुग्ध कर दिया।

३२. श्री अनोखचंदजी जैन :—आप भी प्रतिक्रमण के जानकार हैं एव सेवा देने की भावना रखते हैं।

८९. शेखपुरा (जिला सवाई माधोपुर)

श्रीमहावीरजी के पास हैं। समाज के ८ घर हैं। श्री गिर्राज प्रसादजी सरपच यहाँ के प्रमुख कार्यकर्ता हैं।

१. श्री विमलकुमारजी :—पुत्र श्री गिरिराजजी। आयु १८ वर्ष। आप देई के शिविर मे भाग ले चुके हैं। पर्युषण पर्व मे सेवा देने की भावना रखते हैं।

निम्न महानुभाव स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविरो में भी पधारे —

२. श्री भागचदजी ३ श्री प्रवीण कुमारजी
४. श्री मुकेशचदजी

९०. शेरपुर (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम हिण्डोन सिटी के पास है जैन मन्दिर बना हुआ है। श्री रोशनलालजी श्री किन्दूरीलालजी एव श्री कजोडीलालजी मास्टर यहाँ के प्रमुख श्रावक हैं। श्री देवेन्द्र कुमारजी इन्दौर शिविर में भी पधारे हैं। यहा पर स्वाध्याय संघ की ओर से स्थानीय शिविर भी लग चुका है।

९१. समीदी (जिला बूंदी)

यहा स्थानक जी एवं स्थानकवासी समाज के ८ घर है। इन्द्रगढ से नेनवा जाने वाली बस रूट यही से जाती है एव चौथ का बरवाडा से देई जाने वाली बस भी यही से जाती है।

१. श्री बसीलालजी:—पुत्र श्री रामजसजी जैन। आयु ३७ वर्ष। आप अच्छे जानकार हैं। पर्युषण पर्व मे आप आपने ग्राम मे ही सेवा देते हैं। लगनशील कार्यकर्ता हैं। रात्रि चौविहार के त्यागी हैं।

२. श्री अमोलकचंदजी :—पुत्र श्री कजोडीलालजी। आयु ३३ वर्ष। आप एम० ए० बी० एड० अध्यापक है। अलीगढ देई प्रशिक्षण शिविर मे भाग ले चुके हैं। पर्युषण पर्व मे आप अब तक स्थानीय सेवा दे रहे हैं। बाहर कही भी सेवा देने की भावना रखते हैं।

३. श्री शोभागमलजी :—पुत्र श्री लक्ष्मीचदजी। आयु ३० वर्ष। आप अच्छे स्वाध्यायी बनने की भावना रखते हैं। आपने सवाई माधोपुर प्रशिक्षण शिविर मे शिक्षण प्राप्त किया है आप अब तक सथनीय सेवा दे रहें हैं।

९२. सवाई माधोपुर (राज.)

यहाँ जैन समाज के २५० घर है एव स्थानकवासी समाज के १५० घर हैं। महावीर भवन और आनन्द भवन प्रमुख स्थानक है। स्वाध्याय सघ का कार्यालय यहीं है। रेलवे का जकशन है। १९७४ में आचार्य श्री का चतुर्मास हुआ है। यहाँ के स्वाध्यायियों का परिचय निम्न प्रकार है।

१ श्री मांगी लालजी पौद्दार :—आप श्री बिहारी लालजी सद्दा के सुपुत्र हैं। आयु ६३ वर्ष है पर आज भी किसी युवक से कम स्फूर्ति नही है। आप सर्व प्रथम स्वाध्यायी हैं एवम् सेवाभावी व्यक्ति हैं। आप सरकारी सेवा निवृत पैन्शनर हैं। आपने सारगपुर, बावई खातोली, महुआ जरखोदा आदि स्थानो मे पर्युषण पर्व मे सेवा दी है। आप जहाँ भी जाते हैं अपनी ओर से नि शुल्क साहित्य वितरण करते हैं। आपको स्वाध्याय सघ द्वारा अभिनन्दन पत्र भेंट किया जा चुका है।

२. श्री रतन लालजी जैन बी० ए० बी० एड० :—सेवा निवृत प्राधानाध्यापक। आप उच्चस्तरीय सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं पोरवाल सघ क्षेत्र सवाई माधोपुर के सामूहिक विवाह सम्मेलन

के आप कोषाध्यक्ष और संघ के सदस्य हैं। स्थानीय सघ के मत्री भी रह चुके हैं। आप मावली जकशन में पर्युषण सेवा दे चुके हैं। आप धार्मिक क्षेत्र में भी अपना उच्च स्थान रखते हैं। कर्मग्रन्थ तत्त्वार्थ सूत्र आदि का तलस्पर्शी ज्ञान है। श्री वर्द्धमान जैन पुस्तकालय सवाई माधोपुर का श्रेय भी आपको ही है। स्वाध्याय एव स्थानीय शिविरों में अध्यापन का कार्य भी किया है।

३. श्री रघुनाथदासजी जैन :—आयु ४५ वर्ष। आप श्री रामजसजी जैन के सुपुत्र हैं, आपकी व्यवहारिक योग्यता एम० ए० बी० एड० है और राजकीय माध्यमिक विद्यालय बहरावडा खुर्द के प्राधानाध्यापक हैं इसके साथ-साथ आप की धार्मिक योग्यता कर्मग्रंथ, तत्त्वार्थ सूत्र आदि के ज्ञाता हैं। आप स्थानीय सघ के मंत्री भी रह चुके हैं। आपके नेतृत्व मे वर्षो तक बिना खर्च वर्द्धमान वाचनालय सवाई माधोपुर मे चलता रहा इस समय आप स्वाध्याय सघ क्षेत्र सवाई माधोपुर की कार्यकारिणी के लेखा निरीक्षक है. आप पर्युषण पर्व मे स्थानीय सेवा दे रहे हैं।

४. श्री रामदयालजी जैन : – पुत्र श्री भूरामलजी। आयु ४० वर्ष। आपकी व्यवहारिक योग्यता इण्टरमीजिएट है एव चादी सोने के प्रसिद्ध व्यापारी एव सर्राफा सघ के मत्री हैं साथ ही आपकी धार्मिक जानकारी बडी गूढ है। नियमित सामायिक स्वाध्याय, शीलव्रत का पालन करते हैं। कच्चे पानी, रात्रि भोजन, पान का त्याग रात्रि में चारो आहार के त्यागी हैं। आप पर्युषण पर्व मे शिवनी, भुसावल, पाचोरा, जामनेर, दूणी, नृसिंहगढ, बारॉं, बूंदी आदि मे सेवा देते आ रहे हैं। आप पाली आदि शिविरों मे शिक्षण प्राप्त कर चुके है।

आपका पूरा परिवार ही स्वाध्याय संघ को सेवा देता आ रहा है आपने कार्यालय हेतु निशुल्क दो कमरे खोल रखे हैं एव आप पर्युषण पर्व में जाने का खर्चा भी नहीं लेते हैं। आप इस समय क्षेत्रीय स्वाध्याय संघ के कोषाध्यक्ष के पद पर कार्य कर रहे हैं। महावीर भवन मे आपने एक हॉल भी बनवाकर भेंट किया है।

५. श्री सम्पतलालजी जैन :—द्वारा श्री नाथूलाल जी मोहनलालजी जैन सर्राफ। आयु ३६ वर्ष। आप स्वाध्याय प्रेमी श्रावक हैं। स्थानीय सेवा देते हैं। अच्छे जानकार हैं।

६. श्री माकणचंदजी :— पुत्र श्री प्रेमचदजी ठेकेदार। आयु ४० वर्ष। आपकी व्यवहारिक योग्यता एम० ए० बी० एड० हैं और उच्च प्राथमिक विद्यालय कटला मे अध्यापक के पद पर कार्य कर रहे हैं। आप स्वाध्याय व तत्त्वचर्चा के रसिक हैं। सेवा करने का आप अपना कर्तव्य समझते हैं आपने सारगपुर, शिवनी, भुसावल में सेवायें दी हैं। भरतपुर श्यामपुरा, सवाई माधोपुर के शिविरो मे अध्यापन का कार्य किया है। आप चौविहार का पालन करते हैं।

७. श्री गोपीकृष्णजी हाडा :—पुत्र श्री सुन्दरलालजी हाडा। आयु ५६ वर्ष। आप स्वाध्याय सघ के पुराने कार्यकर्ता हैं। पर्युषण पर्व मे बारा, शिवनी, हरसाना मे सेवा दे चुके हैं। आप स्थानीय श्री सघ सवाई माधोपुर के मत्री रह चुके हैं एव कुशल अनुभवी और प्रभावशील कार्यकर्ता हैं।

८. श्री राजेन्द्र प्रसादजी जैन :—पुत्र श्री नाथूलालजी जैन। आयु २२ वर्ष। आपकी व्यवहारिक योग्यता बी० कॉम० है। प्रति-

क्रमण आदि के जानकार हैं एव उत्साही स्वाध्यायी हैं। आप पर्युषण पर्व मे बोहेडा, पचाला, वेतूल तथा उटकमण्डल, बागली मे सेवा दे चुके हैं। इस समय आप राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल में सेवारत हैं। आपकी माताजी श्रीमती मोतियाँ जैन ने वर्षों तप भी किया है। कन्जोली शिविर में आपने अध्यायन भी किया है।

९. श्री मदनलालजी :—पुत्र श्री जीतमलजी जैन सवाई माधोपुर, आयु १६ वर्ष। आप कपडे के व्यवसाय मे कार्यरत हैं। लगनशील स्वाध्यायी हैं। मधुर एव उच्च स्वर के कण्ठ से घुघरू बजाने की कला निपुण हैं आपने ब्यावर, सवाई माधोपुर, अलीगढ शिविर मे प्रशिक्षण प्राप्त किया है तथा नागपुर, शिविनी पाण्डोली, मगलवाड आदि क्षेत्रो मे पर्युषण पर्व मे सेवा दे चुके हैं।

१०. श्री धर्मचंदजी जैन :—पुत्र श्री सुरजमलजी जैन करेला वाले। आयु २१ वर्ष। आपने सवाई माधोपुर, अलीगढ़, ब्यावर के शिविरो में प्रशिक्षण प्राप्त किया है पर्युषण पर्व में दूणी, गगापुर सिटी, वोहिडा, विरमावल मे आपने सेवा दी है। स्थानीय नवयुवक मण्डल के कोषाध्यक्ष हैं।

११. श्री सौभागमलजी जैन एडवोकेट:—सुपुत्र श्री नेमीचदजी जैन। आयु ३६ वर्ष। आप वी० कॉम० एल०एल० बी० हैं। साधना शिविर मे भी आप भाग ले चुके हैं। पर्युषण पर्व मे आप स्थानीय सेवा देते हैं। आप पोरवाल समाज में प्रथम एडवोकेट है। सरल स्वभावी, समाजसेवी व साधना प्रिय हैं।

१२. श्री हनुमानप्रसादजी जैन :—पुत्र श्री मोतीलालजी जैन (बोहरा)। आयु २८ वर्ष। आप एक होनहार युवक हैं। अखिल भारतीय पोरवाल युवक परिषद के मत्री हैं। आप अच्छे गायक एव कवि भी हैं। आपने पर्युषण पर्व में हाटपिपलिया और जामनेर में सेवायें दी हैं।

१३. श्री महावीर प्रसादजी जैन:—पुत्र श्री शान्तिलालजी जैन हाडोतिया। आयु १८ वर्ष। आप लगनशील युवक हैं आपने मोही मे पर्युषण पर्व मे सेवा दी है।

१४. श्री दौलतचंदजी जैन :—पुत्र श्री मेघराजजी जैन। आयु २८ वर्ष। आप कपडे के व्यापारी हैं। आप रुचिशील स्वाध्यायी हैं, आपने पर्युषण पर्व में मावली ज०, बोहेडा एव बागली मे सेवा दी है।

१५ श्री प्रेमचंदजी :—पुत्र श्री लक्ष्मीचदजी जैन। आयु २० वर्ष। आप स्वाध्यायप्रेमी हैं आपने पोटला, आरणी और बोरकुण्ड मे सेवा दी है।

१६. श्री चन्द्रप्रकाश जैन :—पुत्र श्री फूलचदजी जैन। आयु १८ वर्ष। आप उत्साही स्वाध्यायी हैं आपने पर्युषण पर्व मे लागच और बाकोद मे सेवा दी है।

१७. श्री सुरेन्द्रकुमारजी जैन —पुत्र श्री नाथूलालजी जैन। आयु १८ वर्ष। आपकी सामायिक स्वाध्याय में रुचि है। आपने पर्युषण पर्व में लागच में सेवा दी है। आप सुरेन्द्र बुक डिपो के पार्टनर हैं।

१८. श्री उम्मेलकुमारजी जैन :—पुत्र श्री रामदयालजी जैन। आयु १८ वर्ष। आप सामायिक स्वाध्याय में रुचि रखते हैं। आपने पोटला में सेवा दी है।

१९ श्री ओमप्रकाशजी जैन :—पुत्र श्री केसर-

लालजी जैन। आयु १९ वर्ष। आपकी शैक्षणिक योग्यता बी कॉम द्वितीय वर्ष है। स्वाध्याय में रुचि रखते है। आपने नृसिंहगढ और फतेहनगर में पर्युषण पर्व में सेवा दी है।

२०. श्री फूलचन्दजी जैन पचाला वाले :—आप सम्यग् ज्ञान प्रचारक मण्डल की कार्यकारिणी समिति के सदस्य है। श्री सघ के भू पू. मत्री एवं जिला स्तर जनता पार्टी के कार्यकर्त्ता है। उत्साही, तरुण स्वाध्यायी हैं। स्वाध्याय प्रवृत्ति के प्रचार प्रसार में आप अपना समय देने को तत्पर रहते हैं। महावीर भवन के निर्माण में आपका काफी योगदान रहा हैं। केन्द्रीय स्वाध्याय समिति के सदस्य हैं।

२१. श्रीमती विरदीबाई जैन —आयु ५० वर्ष। आप स्वर्गीय श्री कल्लूलालजी खरखडी वालो की धर्मपत्नी हैं। धर्म के प्रति अथक रुचि एवं विश्वास हैं। आपने जहरीले जन्तु द्वारा डसे जाने पर भी धर्मश्रद्धा से उसे दूर कर दिया। आप सवाई माधोपुर महावीर श्राविका समिति की प्रमुख है। आप केवल सेवा ही नहीं करती वलिक आर्थिक सहयोग भी करती हैं। महावीर भवन सवाई माधोपुर मे आपने एक कमरे का निर्माण भी करवाया है। आप एकान्तर वर्षीतप भी कई बार कर चुकी हैं। आप श्रीमहावीरजी में शिक्षण शिविर के समय शिक्षण प्राप्त करके इस वर्ष पर्युषण पर्व मे बूदी सेवा देने पधारी। आपके चारो स्कन्ध के प्रत्याख्यान हैं एवं अन्य त्याग प्रत्याख्यान भी चलते रहते हैं।

२२. प० श्री महावीरप्रसादजी जैन :—आपने आचार्य प्रवर के पास मन्दसौर में नियम दीक्षा अंगीकार करके इस क्षेत्र के चार चाद लगा दिये हैं। आप करेला वाले श्री रामनिवासजी जैन के सुपुत्र हैं एवं पर्युषण पर्व मे बारा सेवा देने हेतु पधारे।

२३ श्री महावीरप्रसादजी जैन सर्राफ —आपका पूरा परिवार ही धर्म से ओतप्रोत है। आपके परिवार को ही हम सवाई माधोपुर के लिए एक आदर्श परिवार कह सकते हैं। तन-मन एवं धन से स्वाध्याय सघ की सेवा करना आपका प्रमुख कार्य है। अलोह धातु के विक्रेता, छाताओ का निर्माण करना आपका मुख्य व्यवसाय है। आप एम कॉम. हैं। स्थानीय सेवा देते रहते हैं। घुघरू बजाने की आपमे विशेष कला भी है। नवयुवक मण्डल के आप अध्यक्ष भी हैं।

२४. श्री त्रिलोकचन्दजी जैन :—पुत्र श्री नाथूलालजी जैन। आयु ३० वर्ष। आपका पूरा परिवार ही धार्मिक रुचि रखता है। आप तीनो भाई ही स्वाध्यायी हैं। आपके दो भाई तो पर्युषण पर्व मे सेवा देते हैं और आप कार्यालय के कार्य को सभालते रहते हैं। कुशल सेवामूर्ति श्री शीतलमुनिजी की प्रेरणा से आपने सामायिक व्रत धारण किया है।

२५. श्री सुबाहु कुमार जैन :—पुत्र श्री बजरगलालजी सर्राफ। आयु २० वर्ष।

२६. श्री नाथूलालजी जैन :—पुत्र श्री रामजसजी जैन खरखडी वाले। आयु ३५ वर्ष। आप पर्युषण पर्व मे सेवा देने के इच्छुक हैं।

२७. श्रीमती सुशीला देवी :—आयु २० वर्ष। आप सुश्रावक श्री शान्तिलालजी की पत्नि हैं और श्री महावीरजी मे शिक्षण शिविर के समय प्रशिक्षण प्राप्त कर चुकी है। आपकी व्याख्यान शैली भी उत्तम है।

— निम्न स्वाध्यायियों ने प्रशिक्षण शिविरो में भी भाग लिया है—

२८. श्री राजेन्द्रकुमारजी
२९ श्री नाथूलालजी
३०. श्री हेमन्तकुमारजी
३१ श्री चन्द्रप्रकाशजी
३२ श्री ओमप्रकाशजी
३३ श्री पुरुषोत्तमजी
३४ श्री लालचदजी
३५. श्री दिनेशकुमारजी
३६ श्री डिग्गीप्रसादजी
३७. श्री दानमलजी
३८ श्री हुकमचदजी
३९ श्री पारसचंदजी
४०. श्री अरुणकुमारजी
४१. श्रीमती घापूबाईजी
४२ श्रीमती मधुबाला
४३. कुमारी देवी बाई

९३. साथां (जिला सवाई माधोपुर)

यहा समाज १५ घर हैं। श्री श्रीचदजी जैन यहा के प्रमुख कार्यकर्ता हैं।

९४. सुमेरगंजमण्डी (जिला कोटा)

यह सवाई माधोपुर से कोटा के बीच इन्द्रगढ स्टेशन पर उपयोगी मण्डी है। समाज के ८ घर हैं। स्थानक जी है। श्री लक्ष्मीनारायणजी मानपुर वाले प्रमुख श्रावक हैं। निम्न महानुभाव स्वाध्याय शिविरो मे भी पधारे हैं :—

१ श्री सुरेशचदजी
२. श्री चौथमलजी
३. श्री कमलेशकुमारजी।

९५. सुरवाल (जिला सवाई माधोपुर)

यह ग्राम सवाई माधोपुर से जयपुर जाने वाली बस रूट पर स्थित है करीब १५ किलोमीटर की दूरी पर है। यहा जैनियो के २० घर है। स्थानकवासी समाज के भी चार घर हैं। परिचय निम्न प्रकार है :—

१. श्री रामनिवास जी :—पुत्र श्री गहीलालजी जैन। आयु ८२ वर्ष। आप इस क्षेत्र के प्रमुख श्रावक हैं। अनेक महान सतो की सेवा की है। इस आयु मे भी आप नियमित सामायिक स्वाध्याय किए विना मुंह मे पानी नही लेते हैं।

२. श्री रामकरणजी जैन :—आप एक श्रद्धाशील श्रावक हैं आपकी स्वाध्याय मे अच्छी रुचि है। इस वर्ष आपने स्थानीय सेवा पर्युषण पर्व मे दी है।

९६. हरसाना (जिला अलवर) :—

यह मण्डावर से अलवर जाने वाली वस रूट पर स्थित है। पल्लीवाल समाज के यहा पर काफी घर हैं। स्थानकजी वनी हुई है। श्री वाल मुकन्द जी शाह एव श्री दयाचदजी यहा के प्रमुख श्रावक हैं उनका परिचय निम्न प्रकार है :—

१. श्री दयाचंदजी :—आयु ४० वर्ष। आप हरसाना में सैकण्डरी विद्यालय में अध्यापक हैं, लगनशील व्यक्ति है स्वाध्याय में पूर्ण रुचि है। आपने श्रीमहावीरजी एव देई में प्रशिक्षण प्राप्त किया है। आपने गत वर्ष एवं इस वर्ष भी स्थानीय सेवा दी है। आप इस वर्ष वजीरपुर में सेवा देने हेतु पधारे। सेवाभावी व साधनाप्रिय हैं।

६७. हिण्डोन सिटी (जिला सवाई माधोपुर)

यह रेल्वे स्टेशन है यहाँ ५० घर पल्लीवाल जैन समाज के हैं। मण्डी में स्थानकवासी समाज की ओर झुकाव है। श्री भीखबचंदजी व श्री किस्तूर चदजी प्रेमी श्रावक हैं। निम्न सज्जन स्वाध्याय शिविरो में भी पधारे। पत्र व्यवहार का पता :—

श्री श्रीलालजी भीकमचदजी जैन, ग्रेन मर्चेंट, नई मण्डी, हिण्डोन सिटी, सवाई माधोपुर

१. श्री जगदीशप्रसादजी
२. श्री जगदीशप्रसादजी
३. जी पारसचंदजी



चिड़ियो की तरह हवा मे उड़ना और मछलियो की तरह पानी मे तैरना सीखने के बाद अब हमे इन्सानो की तरह पृथ्वी पर चलना सीखना है।

—डॉ॰ राधाकृष्णनन्

स्वाध्याय संघ, महाराष्ट्र शाखा

महाराष्ट्र शाखा के उद्घाटन निमित्त मिटिंग दि० ८-७-७९ का नवजावन मगल कायालय जलगाव मे श्री नथमलजी लूकड के सयोजकत्व में सम्पन्न हुई। जिसमे जलगाव, धुलिया, चालीसगाव, लासलगाव, भुसावल, वैजापुर, शाहदा, जामनेर आदि स्थानो के करीब ७३ प्रतिनिधि उपस्थित थे।

सबसे पहले श्री लूकड जी ने स्वाध्याय की प्रवृत्ति की आवश्यकता पर दो शब्द कहे। उसके पश्चात प्रोफेसर सुरेश कुमार गादिया, चालीस गांव वालो ने आपने भाषण मे महाराष्ट्र मे स्वाध्याय संघ की शाखा खोलने का प्रस्ताव रखा। प्रो कवरलाल जी, चालीस गांव वालो ने भी स्वाध्याय की आवश्यकता पर जोर दिया और महाराष्ट्र मे स्वाध्याय संघ की शाखा खोलने का समर्थन किया।

इसके पश्चात श्री लालचद जैन, प्रचारक स्वाध्याय सघ ने सघ का सक्षिप्त परिचय दिया। श्री राजमलजी चोरडिया ने स्वाध्याय की प्रवृत्ति को अपने जीवन मे उतारने और स्वय अपने समय का भोग देकर पर्युषण मे जाकर धर्म प्रचार करने के लिये आव्हान किया। श्री दीपचन्दजी सचेती ने स्वाध्यायियो के शिक्षण के लिये निश्चित कार्यक्रम और शिविर का समय और दिन तय करने का सुझाव दिया।

इसके पश्चात सर्व सम्मिति से सस्था का नाम श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय प्रचार सघ सम्यग ज्ञान प्रचारक-मण्डल जयपुर के तत्वाधान मे रखा गया और प्रधान कार्यालय जलगाव मे रखने का निश्चित हुआ।

श्री सुरेशचन्दजी जैन ने समिति के अध्यक्ष पद के लिये श्री नाथमलजी लूकड का नाम प्रस्तावित किया जिसका अनुमोदन श्री उमरावमलजी सुराना ने किया जो निर्विरोध स्वीकृत हुआ। उसके पश्चात श्री कातिलालजी चौधरी धुलिया वालो ने महामत्री पद के लिये श्री सुरेशचन्दजी जैन का नाम प्रस्तावित किया जिसका अनुमोदन श्री रतनलालजी बाफना ने किया। यद्यपि श्री सुरेशचन्दजी ने समया भाव के कारण अपनी असमर्थता प्रकट की पर सबके आग्रह से अन्त मे उन्होंने यह पद स्वीकार कर लिया। सहमंत्री के लिये श्री रतनलालजी बाफणा और श्री कातिलालजी चौधरी का नाम सर्वसमिति से स्वीकृत हुआ। क्षेत्रीय उपाध्यक्षो का चुनाव अगली मीटिंग मे करने का तय हुआ।

इसके पश्चात सर्व सम्मिति से निम्न प्रतिनिधि कार्यकारिणी के सदस्य चुने गये।

(१) श्री शातिलालजी रायसोन, जलगांव
(२) श्री बशीलालजी बोथरा, ,,
(३) श्री दलीचन्दजी चोरडिया, ,,
(४) श्री चैन रूपचन्दजी भडारी, ,,

(५) श्री घेवरचन्दजी शादिया, चालीसगांव
(६) श्री उत्तमचन्दजी छाजेड, चालीसगाव
(७) श्री कातिलालजी चौधरी, धुलीया
(८) श्री लालजन्दजी भटेवरा, ,,
(९) श्री मांगीलालजी ब्रम्हेचा, लासलगांव
(१०) श्री शोभाचन्दजी बकराजजी संचेती, वैजापुर
(११) श्री मानमलजी सचेती, शाहादा
(१२) श्री स्वरूपचन्दजी लोढा, लासूर
(१३) श्री किशोरकुमारजी छाजेड, लासूर
(१४) श्री प्रोफेसर उत्तमचन्दजी भागचन्दीजी कोठारी, भुसावल
(१५) सुशील कुमार जी नाहटा, भुसावल
(१६) श्री धर्मचन्दजी बम्ब, ,,
(१७) श्री प्रेमराजजी पृथ्वीराजजी कोटेचा, भुसावल
(१८ श्री पुनराजजी ओसवाल, जालना
(१९) श्री राजेन्द्र कुमार जी मुणोत, औरगाबाद
(२०) श्री राजमलजी चोरडिया, अमरावती
(२१) श्री पारसमलजी काकरिया, मालेगांव
(२२) श्री मोहनलालजी कटारिया, नागपुर

इसके पश्चात सबकी राय से इस चातुर्मास मे सर्व सम्मिति से प्रति माह एक शिविर जलगांव मे लगाने का निश्चय हुआ, तदनुसार प्रथम शिविर का समय दि० २२ से २४ जुलाई का निश्चित किया गया तथा उसके लिये कार्यकारिणी के सभी सदस्यो का एव सामान्य तथा नैष्ठिक सदस्यो को निमत्रण भेजने का निश्चय हुआ।

अन्त मे आचार्य प्रवर का आशीर्वाद रूप प्रवचन हुआ जिसमे आचार्य प्रवर ने स्वाध्याय की आवश्यकता को ध्यान मे लेने और जो क्षेत्र मीटिंग मे उपस्थिति नही हुए हैं उनको भी साथ मे भेजने का सुझाव दिया। आचार्य प्रवर ने कहा कि जैसे देश की आपत्ति के समय रक्षा के लिये बिना किसी विशेष शिक्षण के भी गृहरक्षक दल सदा तत्पर रहता है, इसी प्रकार धर्म सघ की रक्षा के लिये साधुओ की कमी को पूरा करने के लिये श्रावक सघ को सदा तत्पर रहना चाहिये। आजकल के नवयुवको मे धर्म शिक्षा का नितान्त अभाव है। यदि आपको भविष्य की पीढी से धार्मिक अज्ञान दूर करना है तो स्वाध्याय का प्रचार प्रसार अत्यन्त आवश्यक है। जैन समाज मे प्रोफेसर, अध्यापक, वकील, डाक्टर, एम एल ए, एम पी, मत्री आदि उच्च शिक्षित व्यक्तियो के होते हुए धर्म के प्रति अरुचि क्यो है इसे समझना और दूर करना होगा। जहां मुसलमानो के १० घर होगे वहां भी लोग नमाज पढने मस्जिद मे जायेंगे पर जहां जैनों के १०० घर हो, वहां भी स्थानक के ताला लगा रहे तो क्या यह आश्चर्य की बात नही है ?

आचार्य प्रवर ने स्वाध्याय सघ के उद्देश्यो पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सबसे प्रथम तो श्रावको के अज्ञान को दूर करना है। दूसरा जहां साधु-साध्वियो की पहूंच न हो वहां श्रावको को जाकर जैन घरो को सभालना है, उनमे धर्म प्रचार करना है, ऐसे स्थानो मे पर्युषण मनाना आदि है। तीसरा श्रावको का नैतिक जीवन शुद्ध बनाना है, गृहस्थ वस्तुओ मे मिलावट न करें, खोटे तोल माप का प्रयोग न करें, झूठे हिसाब न लिखे आदि अनेक बातें हैं जो धर्म शिक्षा से प्राप्त होती हैं। नैतिकता और निर्व्यसनता यह स्वाध्यायियो की प्रथम आवश्यकता है। स्वाध्यायी को सप्त व्यसन का त्यागी होना चाहिये। जो व्यक्ति स्वय अपने जीवन को ऊँचा न उठा सकें, उसके उपदेश का दूसरे पर क्या असर पडेगा। श्रावको का कर्तव्य है कि वे गृहस्थ धर्म की गाडी चलाते हुए भी धर्म सघ के लिये अपने समय का कुछ भोग दे। जैन सघ की सेवा भगवान की सेवा है।

आचार्य प्रवर ने कहा कि जैसे वैष्णव समाज मे गीता का प्रचार है, लोग उसे कठस्थ कर प्रतिदिन उसका पाठ करते हैं, गोरखपुर से उसकी परीक्षा होती है, वैसे ही जैन धर्म की गीता उत्तराध्ययन सूत्र है, उसका पठन पाठन और उसकी परीक्षा का प्रचार होना चाहिये। स्वावलम्बन की अत्यन्त आवश्यकता है, जिसकी पूर्ति स्वाध्याय से ही हो सकती है। प्रोफेसर, अध्यापक, वकील आदि शिक्षित लोग तन से सेवा दें और सेठ लोग धन से सेवा दें। समिति को युवको के चरित्र निर्माण का निश्चय करना चाहिये। इसके लिये क्षेत्रीय कार्यकर्त्ताओ को, स्थानीय कार्यकर्त्ताओ को और पूरे महाराष्ट्र के कार्यकर्त्ताओ को आगे आना चाहिये। हमारी यही स्वाध्याय सेना जैन सघ का सक्रिय रक्षक दल बन सकेगी। अन्त में आचार्य श्री ने स्वाध्याय समिति को आशीर्वाद देते हुए कहा कि मैं पूरे भरोसे के साथ उम्मीद करता हू कि आपने जो काम हाथ मे लिया है, उसे पूरे जोश के साथ अपने समय का भोग देकर पूर्ण सफल बनायेंगे।

अन्त मे श्री महावीर स्वामी का जय घोष के साथ ४-३० बजे मीटिंग समाप्त हुई।

———

श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगांव

श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगाव, पंच दिवसीय स्वाध्यायी शिक्षण शिविर, सम्यग् ज्ञान प्रचारक मडल जयपुर के तत्वावधान मे, दि. २२ जुलाई से २६ जुलाई १९७९ तक हुआ।

शिविर विवरण.—

श्री नवजीवन मंगल कार्यालय मे दि. २२ जुलाई की शुभ वेला मे आचार्य प्रवर बा. ब. पूज्य श्री १०८ श्री हस्तीमल जी म. सा के सनिध्य मे एव श्री नयमल जी लूकड़ जलगाव वालो की अध्यक्षता मे जयपुर निवासी रत्नपारखी सुश्रावक श्रीचंदजी गोलेच्छा के कर कमलो से इस नव निर्मित महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय सघ के प्रथम स्वाध्यायी शिक्षण शिविर का उद्घाटन हुआ।

दैनिक कार्यक्रम मे प्रात ६ से ७ प्रार्थना एव वंदन, ८ से ९½ तक शिक्षण, ९½ से ११ तक आचार्य प्रवर का उद्बोधन तथा शेष समय मे अध्ययन, वक्तृत्वकला, प्रतिक्रमण, सूत्रवाचन, ध्यान, चितन आदि रात के १० बजे तक चलता रहा।

शिक्षण तथा पाठ्य विषय.—

१ श्री कन्हैयालालजी लोढा जयपुर, २. श्री केवल मल जी लोढा जयपुर, ३. श्री चौथमल जी जैन, सवाईमाधोपुर, और ४. श्री लाल चन्द जैन जोधपुर वालो ने शिविरार्थियो को अध्ययन कराया। सामयिक सूत्र, प्रतिक्रमण सूत्र, २५ बोल. अन्तकृतदशाक सूत्र और विशेष धार्मिक जानकारी का अध्ययन कराया गया।

विशेषता और उपलब्धि —

इन शिविर मे प्रो गदिया, प्रो. ओस्तवाल और डा. वनवट जैसे बौद्धिक व्यक्तियो ने एव ७७ वर्षीय श्री राजमल जी चोरडिया जैसे वृद्ध व्यक्तिओ ने युवको के साथ भाग लेकर शिविर में सुगन्ध पैदा की। ज्ञान और क्रिया के शिक्षण के साथ ही शिविर का मुख्य ध्येय पर्युषण पर्व मे पर्वाराधन करवाने के लिये स्वाध्यायी तैयार करवाना था। परम हर्ष की बात है कि इस ध्येय मे हमे काफी सफलता मिली है। चालीस गाव के दोनो प्रोफेसर, श्री माणकलालजी गादिया, श्री पारसमल जी काकरिया मालेगांव, श्री वसत आदिनाथ

सगीव लासल गाव, श्री पारसमल जी सचेती वैंजापुर, श्री गणेशमल जी बाफना जलगाव, श्री राममल जी चोरडिया अमरावती, श्री पूनमचन्दजी सचेती अमलनेर आदि स्वाध्यायियो की वक्तृत्वकला काफी सुन्दर है और वे आगामी पर्यूषण में अपनी सेवायें देने मे समर्थ हैं। यह इस शिविर की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

वर्गीकरण.—

सामयिक कक्षा के २ वर्गों मे १९ स्वाध्यायी तथा प्रतिक्रमण और सूत्रवाचन की कक्षा मे २५ स्वाध्यायियो ने अध्यन किया। इन ४४ शिवरार्थियो ने वक्तृत्वकला की कक्षा मे भी भाग लिया जिनमे २ प्रोफेसर, १ डाक्टर, १ अध्यापक, ३१ श्रेष्ठी वर्ग और ९ विद्यार्थी थे। इस प्रकार महाराष्ट्र के २० स्थानों से ४४ शिविरार्थियो ने भाग लिया।

धर्मक्रिया आराधना —

शिविर मे ज्ञान के साथ-साथ धार्मिक क्रिया को भी महत्व दिया गया, फलस्वरूप शिविर काल मे शिविरार्थियो और अध्यापको द्वारा निम्न क्रियाराधना की गयी.—

सामयिक १५१५, दया ३६, एकासन ७, उपवास ३, आयंबिली, बेले और तेले हुये। इनके अतिरिक्त दैनिक प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यन, पोरसी दो पोरसी आदि तो निरंतर चलते ही रहे।

इस प्रकार इस पच दिवसीय आध्यात्मिक स्वाध्यायी यज्ञ की पूर्णाहुति आज श्रीमान पी बी मूक्षा जिला न्यायाधीश के कर कमलो द्वारा हुआ।

स्वाध्यायी भावना के साथ—

आपका विनीत—

जलगांव,
दि २६ जुलाई १९७९

सुरेश कुमार जैन, महामंत्री
श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्यायी संघ,

•

परीक्षा फल:—

शिविर में ४४ व्यक्तियो ने भाग लिया जिसमे से १३ स्वाध्यायी सामयिक कक्षा मे बैठे तथा २८ प्रतिक्रमण कक्षा मे सम्मिलित हुए। कुल ४१ परीक्षा मे सम्मिलित हुए और उत्तीर्ण हुए।

प्रतिक्रमण कक्षा मे: प्रथमस्थान श्री रतनलालजी बफना, जलगाव द्वितीय स्थान श्री हरिप्रसाद जी जैन, महावर।

सामयिक कक्षा मे —प्रथम स्थान श्री माणकलाल जी गादिया, चालीस गाव द्वितीय स्थान श्री प्रकाश चंद जी कटारिया, जलगाव।

आध्यात्मिक क्रिया मे —प्रथम स्थान श्री पारसमल जी सचेती वैजापुर ६२ सामयिक द्वितीय स्थान श्री राजमल चोरडिया अमरावती ५६ सामयिक।

वक्तृत्व कला मे —प्रथम स्थान प्रो घेवर चद जी गादिया चालीस गाव द्वितीय स्थान श्री माणक लाल जी गादिया चालीसगाव।

विशिष्ट स्थान.—

१. श्री पारसमल जी काकरिया, मालेगाव—वक्तृत्व कला

२ श्री हरिप्रसाद जी जैन, मडावर—धार्मिक क्रिया ५ दया २ एकासन ९९ सामयिक

३ श्री चपालालजी गादिया, वरणगाव— ,, ,, तेला ३९ सामयिक

४ श्री फूलचदजी चोपडा, जलगाव— ,, ,, बेला, २७ सामयिक

प्रथम द्वितीय स्थान प्राप्त स्वाध्यायियो को एक-एक सूटकेश एव अन्य सभी स्वाध्यायियो को एक-एक दुपटी पारितोषिक मे दी गई। विशिष्ट व्यक्तियो का सभा मे सम्मान किया गया।

द्वितीय स्वाध्यायी शिक्षण शिविर

श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगांव द्वारा संचालित द्वितीय स्वाध्यायी शिक्षण शिविर दि. २२-६-७६ से २६-६-७६ तक

उद्घाटन,

श्री नवजीवन मंगल कार्यालय मे दि २२ सितम्वर को प्रात १० वजे आचार्य प्रचार वा व प्रात स्मरणीय पूज्य श्री १०८ श्री हस्तीमलजी म सा के सान्निध्य मे श्रीमान हनुमानचन्द सा काकरिया बालोतरा निवासी द्वारा शिविर का उदघाटन हुआ। मुख्य अतिथि का स्थान श्रीमान वशीलालजी जरगड जयपुर संघ के कोषाध्यक्ष ने ग्रहण किया।

शिविर में १३ स्थानो से ४२ स्वाध्यायियो ने भाग लिया। इस वार सवसे अधिक स्वाध्यायी धूलिया और जलगाव के थे, पर जलगाव के वहुत कम स्वाध्यायी पाचो दिन शिविर मे उपस्थित रह सके। इस वार के शिविर की विशेपता यह थी कि इसमें ९१ महिलाएँ भी सम्मिलित हुई, जिसमे से ४९ महिलाओ ने पाचो दिन भाग लिया। ३ महिलायें तो वाहर से भी आई थी।

शिक्षक तथा पाठ्यक्रम

१. श्री आनन्दराजजी जैन ववई, २ श्री कन्हैयालालजी लोढा जयपुर, ३ श्री केवलमलजी लोढा जयपुर एव ४. श्री. मोहनराज जी चामड जोधपुर वालो ने अध्यापन कार्य किया।

सामायिक कक्षा मे सामायिक सूत्र अर्थ सहित, २५ वोलका थोकडा, समकित के ६७ वोल और भक्तामर स्त्रोत के १० श्लोक पढाये गये। अन्तगढदशाक सूत्र का वाचन विवेचन सहित करवाया गया। अहिंसा, सत्य, अस्तेय और सप्तव्यसन पर लेख लिखने को दिये गये।

प्रतिक्रमण कक्षा मे प्रतिक्रमण सूत्र शुद्ध उच्चारण सहित, ५ समिति ३ गुप्ति, कर्मप्रकृति थोकडा एव भक्तामरस्तोत्र के २० श्लोक पढाये गये। दशवैकालिक सूत्र के प्रथम दो अध्ययन और उत्तराध्ययन सूत्र का तीसरा अध्ययन अर्थ सहित वताया गया। इतिहास काल के ३ तीर्थंकर,और २ श्रावको की कथाएँ, और २ सती तथा चौपी गाकर सुनाने का अभ्यास करवाया गया। ज्ञान, दर्शन, चारित्र और ब्रम्हचर्य पर लेख लिखने को दिये गये।

सभी शिविरार्थियो को पुण्य, पाप, आश्रव, सवर, निर्जरा, मोक्ष, अभक्ष्य, मिथ्यात्व, सम्यकत्व, और श्रमण धर्म पर आचार्यप्रवर एव अध्यापकगण ने व्याख्यान सुनाये। वक्तृत्व कला मे स्वय शिविरार्थियो को इन विषयो पर भाषण देने और गायन आदि सुनाने के लिये प्रोत्साहित किया गया।

वर्गीकरण :

पुरुषो की सामायिक कक्षा में १८ और स्त्रियो की सामायिक कक्षा मे १७ शिविरार्थियो ने प्रवेश लिया। पुरुषो की प्रतिक्रमण कक्षा मे २४ और महिलाओ की प्रतिक्रमण कक्षा १ में १२ तथा प्रतिक्रमण कक्षा २ मे २५ शिविरार्थियो ने प्रवेश लिया। महिलाओ की प्रतिक्रमण कक्षा १ मे सभी पढी लिखी और कालेज जानेवाली कन्याओ एव महिलाओ को रखा गया।

धर्म क्रिया आराधन :

ज्ञानाराधन के साथ-साथ शिविरार्थी बन्धुओ और बहिनो ने धर्म क्रिया मे भी दिल खोल कर भाग लिया जिसके फलस्वरूप शिविरकाल मे २०२१ सामायिक, ११ उपवास, ३२ दया, १२ एकासन, ३ पोषध, १ वेला और ९ सवर तथा अनेक पोरसी २ पोरसी के प्रत्याख्यान हुए

परीक्षा एवं पारितोषिक :

इस बार सभी शिविरार्थियो की परीक्षा न लेकर उन्हे अगले माह मे होने वाले शिविर तक अपना पाठ्यक्रम पूर्ण रूप से कठस्थ करके लाने को कहा गया तथा अगले शिविर मे लिखित परीक्षा लेने की घोषणा की गई। महा पुरुष स्वाध्यायियो की प्राथमिक परीक्षा मौखिक ली गई।

सामायिक कक्षा मे — प्रथम स्थान श्री महेशकुमारजी नाहटा, नगरी द्वितीय स्थान श्री दीपचन्दजी सचेती, धुलिया.

प्रतिक्रमण कक्षा मे — प्रथम स्थान श्री टीकमचन्द जी हीरावत, बम्बई, द्वितीय स्थान श्री मागीलालजी सिंघी, लासल गाँव

सामायिक क्रिया मे — प्रथम स्थान श्री. टीकमचन्दजी बाठिया, पाचोरा द्वितीय स्थान श्री. पन्नालालजी चतरमुथा, धुलिया. तृतीय स्थान श्री टीकमचन्दजी हीरावत, बम्बई

धर्मक्रिया आराधन मे — प्रथम स्थान श्री आनन्दराजजी छल्लाणी, धुलिया. द्वितीय स्थान श्री विशनचन्दजी मूथा, लासूर

महिलाओ मे सामायिक एव धर्म क्रिया आराधन मे — प्रथम स्थान श्रीमती प्रेमबाई द्वितीय स्थान श्रीमती कचनबाई चोपडा, तृतीय स्थान श्रीमती कवरीबाई बडेर.

अनुशासन मे विशेष स्थान १ श्री महेशकुमार नाहटा नगरी,
२ श्री दिनेशकुमार नाहटा नगरी,

श्रीमान जतनराजजी सा मेहता मेडता निवासी के कर कमलों से सभी शिविरार्थियो को आचार्य प्रवर द्वारा अनुवादित उत्तराध्ययन सूत्र पद्यानुवाद की एक-एक पुस्तक पारितोषिक स्वरूप तथा विशेष पारितोषिक मे गजेंद्र व्याख्यान माला, जीवन श्रेयस्कर माला और प्रद्युम्न चरित्र आदि पुस्तकें वितरित की गई।

समापन समारोह

शिविर का समापन दि २९ को प्रात ९.३० बजे बबई निवासी स्वाध्यायी बधु श्रीमान टीकमचदजी हीरावत के कर कमलो से सपूर्ण हुआ। मगलाचरण के पश्चात सघाध्यक्ष श्रीमान नथमलजी लूकड द्वारा समारोह के अध्यक्ष श्री हीरावतजी का स्वागत किया गया। श्री आनन्दरामजी जैन ने श्री हीरावतजी का परिचय दिया। श्री. लालचन्द जैन ने स्वाध्याय सघ जोधपुर एव महाराष्ट्र स्वाध्याय सघ का परिचय देकर शिविर की रिपोर्ट सुनाई। कुछ स्वाध्यायी बन्धुओ एव बहिनो के भाषण और गायन आदि के पश्चात श्री हीरावतजी ने अपना अध्यक्षीय भाषण पढकर सुनाया। अन्त मे आचार्य प्रवर का उद्बोधन हुआ जिसमे आचार्य प्रवर ने स्वाध्यायियो को कुछ भेंट देकर जाने की प्रेरणा दी, फलस्वरूप अधिकाश स्वाध्यायियो ने कुछ शादी विवाह मे बारूदका प्रयोग न करने, भांगडा नृत्य न करने और सिगरेट बीडी से बरातियो की अगवानी न करने के प्रत्याख्यान लिये।

इस प्रकार इस पच दिवसीय आध्यात्मिक स्वाध्याय यज्ञ की पूर्णाहुति सपन्न हुई।

विनीत--
सुरेश कुमार जैन, महामंत्री
श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय सघ



श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ के अध्यक्ष श्रीमान भैय्याजी



श्री नथमलजी लूंकड़ का

संक्षिप्त परिचय

श्रीमान सागरमलजी सा. लूंकड अपनी उम्र के आठवें वर्ष मे ही जलगांव मे आ गये। अपनी अद्भुत कार्यकुशलता एव नीतिमत्ता से सन् 1931 मे आपने अपना स्वतन्त्र व्यवसाय सागरमल नथमल के नाम से स्थापित किया।

आपने सन् 1925 मे अपने ही मकान मे ओसवाल जैन बोर्डिंग की नींव डाली। वर्षों तक जलगांव पिंजरा पोल सस्था के जनरल सेक्रेटरी के रूप मे महत्वपूर्ण सेवायें दी। साधु-सन्तो की खूब सेवा करना, चतुर्मास करवाना विविध धार्मिक अवसरो पर धार्मिक क्रियाएं करने की प्रेरणा देना आदि आपके पिताजी की सहज वृत्तियां थी। उन दिनो जलगांव मे धर्म स्थानक नहीं था। अत: आपने स्वय ही धार्मिक कार्यों के लिये 'सागर भवन' बनवा दिया जो आज तक काम आ रहा है। सन् 1924 व 1925 मे जैन धर्म के सन्त शिरोमणि पूज्य श्री जवाहराचार्य के सन् 1929 मे जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म सा. के चातुर्मास आपके पिताश्री ने ही करवाये।

आपके सुपुत्रो ने आपकी स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिये जलगांव मे श्री सागर आयुर्वेदिक औषधालय, सागर हाई स्कूल, सागर व्यायाम शाला, सागर टावर आदि सस्थाओ की स्थापना की। बुरहानपुर मे भी उन्होंने सागर टावर का निर्माण करवाया।

भैया साहब की माताजी एक अत्यन्त धर्म परायण व सेवाभावी महिला थी। आपने अपने बच्चो पर योग्य सस्कार किये व बचपन से ही उनमे धार्मिकता के बीज बोये। दानी तो इतनी थी उनके द्वार पर आया हुआ कोई भी व्यक्ति खाली हाथो नहीं लौटता, पर आप गुप्तदान करना ही पसद करती थी। धर्म के प्रति उनके मन मे बडी श्रद्धा थी। एक साध्वीजी की प्रेरणा से आपने बुढापे मे पूरा प्रतिक्रमण जबानी याद किया जबकि उन्हें पढना लिखना भी नही आता था। वे नियमित प्रतिदिन सुबह शाम दो बार सामायिक व प्रतिक्रमण करती थी। आपने अपने जीवन मे 8,11,15,21 व मास खमण

की वडी तपस्याये की थी। अतिम समय मे भी नवकार मत्र का जाप करते व धर्म ध्यान मे लीन रहते हुए सन्थारे के प्रत्याख्यान किये। उनके सुपुत्रो ने उनकी स्मृति मे 20101) रु का दान देकर ओसवाल मगल कार्यालय की नीव डाली।

गौर वर्ण, हँसमुख मुद्रा, तेजस्वी आँखे और सीधे सादे शुभ वेषयुक्त भैया साहव को देखकर कोई भी प्रभावित हुए विना नही रह सकता। स्वाध्याय स घ जोधपुर को आपका अभूतपूर्व योगदान मिला है। व्यस्त जीवन होते हुए भी आप प्रति वर्ष 10-11 दिन निकालकर दूर-दूर के क्षेत्रो मे पर्यू षण पर व्याख्यान देने जाते हैं। भुनावल, चालीस गाँव, अमरावती, जामनेर आदि निकटस्थ क्षेत्रो के अतिरिक्त आप मद्रास, मैसूर, हैदरावाद जैसे महानगरो मे भी अपने विद्वतापूर्ण धार्मिक प्रवचन दे चुके हैं। आप एक प्रभावी वक्ता और जैन धर्म के वैज्ञानिक तथा गहन अभ्यासी है। मनुष्य जन्म से नही कर्म से महान वनता है, इस उक्ति को आपने अपनी समाज सेवा से सार्थक किया है। समाज सेवा धर्म, प्रचार एव दानवीरता का जो परिचय आपने दिया है वह अतुलनीय है। भाकरी केन्द्र खोलकर आपने दुखियो के आँसूओ को खुशी मे वदल दिया।

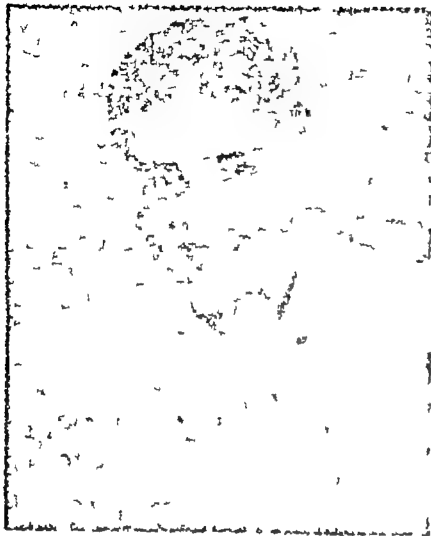
समस्त ओसवाल समाज एव स्वाध्याय स घ, जलगाँव ने आपकी सेवाओ से प्रभावित होकर आपको 'समाज भूपण' की उपाधि से अलकृत किया है। शिक्षा के प्रति आपकी असीम निष्ठा है। आप शिक्षा के क्षेत्र मे उचित नियोजन अनुशासन व्यावहारिकता, नीतिमत्ता व योग्य स स्कारो को ऊँचा स्थान देते हैं। यही कारण है कि आज आप इस विभाग की कई शिक्षा स स्थाओ के पदाधिकारी व सक्रिय सभाप्रद हैं, जैसे—मूलजी जेठा महाविद्यालय, सा ना सा विद्यालय, कन्याशाला, सागर विद्यालय, ब्रू. सा. विद्यालय, खानदेश ओसवाल शिक्षण स स्था आदि।

भगवान महावीर के 2500 सौ वी निर्वाण महोत्सव मे आपने जिला कार्याध्यक्ष की भूमिका निभाई थी, जिसे जलगाव जिले की जनता कभी न भूल सकेगी। ओसवाल सुख शाति मडल और महावीर जैन सेवा समिति जैसी स स्थाओ द्वारा समाज के दुर्वल घटको के लिये विशिष्ट अत्युपयुक्त सहयोग प्रदान कर आपने सेवा का अत्युच्च आदर्श उपस्थित किया है। अहिंसा की तीव्र भावना से आपको गो सेवा की प्रेरणा मिली। अन जलगाँव पिजरा पोल सस्था के कार्य मे लम्वे अर्से से आपका योगदान और मार्गदर्शन वहुत मौलिक रहा है। देश मे गो वध वन्दी का वातावरण निर्माण करने हेतु आपका प्रचार कार्य भी उल्लेखनीय है। आपने भारत जैन महामडल जैसी अखिल भारतीय सस्था के महामन्त्री पद को भी विभूपित किया है। समन्वय की भावना एव पर-धर्म सहिष्णुता आपकी वडी विशेषताए है। जैनो के पथो-पथो मे समन्वय, तीर्थो के झगडे सुलझाना, पर्यू षण-सवत्सरी के समय विषयक मतभेदो को मिटाना, धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक कार्यो मे दिखावा तथा फिजूल खर्ची वद करना, पुरानी अर्थहीन रूढियो का अधानुकरण त्यागना आदि अनेक वातो की सुधारवादी दिशा मे आप सतत् प्रयत्नशील रहते हैं।

योगासन, प्राकृतिक चिकित्सा एव आयुर्वेद के आप वडे हिमायती हैं। आपका स्वास्थ्य इन्ही की वदौलत सुन्दर है। आपकी वलवती इच्छा है कि समाज का हर आदमी विशेषत. युवक वर्ग इसका अनुगमन करे।

भैया साहव अपने जीवन के 60 साल पूरे कर चुके हैं, पर वे कही वृद्ध नही लगते न शरीर से न मन से। मेरे विचार से वे यौवन की सीमा पार कर अव प्रौढत्व मे प्रवेश कर रहे है। समाज को आपसे अभी वहुत आशा है और ईश्वर आपको दीर्घायु वनायें।





श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ के महामंत्री श्रीमान सेठ

सुरेश कुमार जैन

का संक्षिप्त परिचय

महाराष्ट्र के गण्यमान्य उद्योगपति सुश्रावक श्री भीकमचन्दजी की धर्मपत्नि श्रीमती प्रेमबाई की रत्नकुक्षि से दि 22-11-43 को आपका जन्म हुआ। आपकी मातुश्री ने धर्मचक्र आदि अनेक दुष्कर तप किये हैं। पीढियो से आपके परिवार पर लक्ष्मी का वरद हस्त रहा है। आपके पिताश्री का जीवन मानवोचित गुणो से पूर्ण और साहसी रहा है। उन्होने 26 वर्ष तक म्यूनिसिपल कौंसिलर और दो बार जलगांव म्युनिसिपल कांउसिल के चेयरमेन पद पर रहकर जनता जनार्दन की सेवा के उल्लेखनीय कार्य किये। आपके पिताश्री का बम्बई मे दि 11-3-74 को हृदयगति रुक जाने के कारण असामयिक अवसान हो गया। उनके देहावसान मे समाज ने एक अमूल्य रत्न और महाराष्ट्र ने सच्चा जनसेवक खो दिया।

श्री सुरेशकुमारजी ने सन् 1965 मे बी. ए की उपाधि प्राप्त करने के साथ-साथ व्यावसायिक क्षेत्र मे भी कुशलता प्राप्त करली और पिताश्री के निर्देशन मे आप अपने पैतृक विशाल व्यवसाय का सचालन करने लगे। आपके लघु भ्राता श्री रमेशकुमार जैन और श्री सतीश कुमार जैन सदा आपकी दक्षिण और वाम भुजा के समान सब कार्यों मे आपके सहयोगी रहे हैं। खानदेश स्पीनिग एण्ड विवीग मिल्स की खरीद मे अद्भुत साहसिकता दिखाकर आपने विपुल यश और वैभव उपार्जित किया। अठारह लाख रुपये की विपुल धनराशि से गेंदालाल मिल्स का क्रय कर आपने अपनी अनूठी व्यावसायिक सूझ-बूझ का परिचय दिया और मिल्स की वीतिभूमि मे से 80 हजार वर्ग फुट भूमि जलगांव क्रीड़ा सघ को दान मे दे। अपनी अनुकरणीय दानवीरता का परिचय दिया है।

अपने इस युग के महान युग प्रवर्तक धर्माचार्य, जिन शासन प्रभावक गुरुवर हस्ती के प्रथम दर्शन और प्रथमोपदेश से ही धर्म के सार तत्व को गुरुमन्त्र के साथ आत्मसात कर धर्म और समाज

को अभ्युत्थान की ओर अग्रसर करने का अति दुष्कर बीड़ा तत्काल ही उठा लिया। इस चतुर्मास के शुभारम्भ के साथ ही स्थानीय सघ के सहयोग से महाराष्ट्र स्वाध्याय सघ की जलगांव मे स्थापना कर आपने उसके महामन्त्री पद का कार्यभार अपने कधो पर लिया और महाराष्ट्र के घर-घर में स्वाध्याय का घोष गु जरित करने की दिशा मे आपने एक माह से भी कम समय में उल्लेखनीय कार्य कर दिखाया।

सम्राट सपति के सुभटो के समान देश के कोने-कोने और विदेशो तक घूम-घूमकर जीवन पर्यन्त घर-घर मे स्वाध्याय का दिव्य घोष गु जाते हुए धर्म का प्रचार करने वाले आत्मनिर्भर एव सुयोग्य स्वाध्यायियो की सशक्त शान्ति सेना सुगठित करने हेतु 'श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ' की स्थापना कर आपने आध्यात्मिक जगत् मे अभिनव सृजनकारिणी क्रांति का सूत्रपात किया है।

'धापूबाई चैरिटेबल ट्रस्ट' के माध्यम से आज प्रतिवर्ष वहुत वडी धनराशि व्यय कर विद्यार्थियो, विधवाओ और वेसहारो की वर्षों से सहायता करते आ रहे हैं।

नवजीवन मगल कार्यालय का विशाल और भव्य भवन, जो इस वर्ष आचार्यश्री के चतुर्मासावास के कारण जीवन्त तीर्थस्वरूप धर्मक्षेत्र वना हुआ है, वह आप ही की कुशल देखरेख मे आप ही के योगदान के वल पर खडा हुआ है।

इस प्रकार आपका जीवन व्यावसायिक कुशलता, दानवीरता और साहसिकता की तीन सरिताओ का त्रिवेणी सगम है।

आपकी मातुश्री श्रीमती प्रेमवाई इस वृद्धावस्था मे भी अनेक प्रकार की तपस्याएं करती रहती है। जैन महिला मडल की स्थापना आपकी मातुश्री के प्रयत्नो से ही हुई थी और द्वितीय स्वाध्याय शिक्षण शिविर मे महिलाओ को भी सम्मिलित करने मे आपकी मातुश्री की प्रेरणा ही मुख्य रही।

आधुनिक नवीनतम वैज्ञानिक साज-सज्जाओ एव उपकरणो से सुसज्जित वम्बई के जसलोक अस्पताल जैसी अनेक कल्याणकारी योजनाओ को आप जलगांव मे साकार रूप देने के लिए सतत् प्रयत्नशील हैं, यह आपके विराट व्यक्तित्व का परिचायक रेखाचित्र मात्र है।



श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ जलगाँव

नैष्ठिक (पर्यूषण सेवा देने वाले) सदस्यों की सूचि

क्रम	नाम / पिता का नाम	गोत्र	पता	उम्र	व्यवशिक्षण
1	श्री शोभाचन्दजी/त्रिवकराजजी	मचेती	न्यू फैशन क्लाथ स्टोर्स, वैजापुर औरगावाद	30	नानमेट्रीक
2	श्री किशोरकुमारजी/विशनचदजी	छाजेड/मूथा	4/4/236-3 इन्द्र वाग मुल्तान वाजार, हैद्रावाद	22	मेट्रीक
3	श्री उदेचदजी/हीरालालजी	कटारिया	287, भवानी पेठ, जलगांव	35	नानमेट्रीक
4	श्री रमेशलालजी/रामचद्रजी	सांखला	76 पोलने पेठ, जलगांव	30	साधारण
5	श्री हरिप्रसादजी/खेडमलजी	जैन	भंडावर महुआ रोड (सवाई माधोपुर)	50	8 वी
6	श्री पारसकुमारजी/जेठमलजी	वांठिया	कोडवाडा गली, पाचोरा 424201	18	अध्यापक
7	श्री अनिलकुमार/लालचदजी	वाफणा	शास्त्री नगर, लालगांव (नासिक)	21	वी ए.प्रथम वर्ष
8	श्री वसत/आदिनाथ	सगवे	शास्त्री नगर, लालगांव (नासिक)	61	B S C वी टी.
9	श्री मदनचदजी/भैरुदानजी	गुलेच्छा	जैन मदिर मार्ग, नदुरवार म रा	46	मराठी फाइनल
10	श्री विजयकुमारजी/देवराजजी	साखला	गांधी चौक, पाचोरा (जलगांव)	21	अध्यापक
11.	श्री पानमलजी/जसवतराजजी	मुथा	लासूर स्टेशन-423702 (औरगावाद)	38	मैट्रीक
12	श्री दीपचदजी/मिश्रीलालजी	वोथरा	गांधी रोड, पाचोरा-424201 (जलगांव)	39	वी. काम
13	श्री महेशचद/अनराजजी	नाहटा	मु पो नगरी (जिरायपुर-म प्र)	19	वी ए प्रथम वर्ष
14	श्री पारसमलजी/वस्तीमलजी	कांकरिया	कांकरिया निवास, केम्परोड, मालेगांव (नासिक)	53	नानमेट्रीक
15	श्री दिनेशकुमारजी/मेघराजजी	नाहटा	मेघराज पुखराज नाहटा, नगरा (नासिक रायपुर म प्र)	18	हायर सैकेण्डरी
16	श्री सतोकचदजी/फूलचदजी	झावड	मु पो नादुरा (जि वुलडाणा)	50	मेट्रीक
17	श्री आनदराजजी/खीवराजजी	छल्लाणी	गली न 14 सुभापनगर, पाटीलवाडा, धुलिया	63	छठी

श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगाँव

सन् १९७१ के पर्यूषण पर्व पर सेवा देने वाले सदस्यों की सूची

क्रम	नाम	निवास स्थान	नियुक्ति स्थान
1	श्री पारसमलजी कांकरिया	मालेगांव	औरंगाबाद
2	श्री गणेशमलजी बाफना	जलगांव	"
3	श्री राजमलजी चोरडिया	अमरावती	चालीसगांव
4	श्री पूनमचदजी सचेती	अमलनेर	"
5.	श्री वसत आदिनाथ मगवे	लासलगांव	लासून स्टेशन
6	श्री धनजय चोरडिया	शिरपुर	"
7	श्री लालचद जैन	जलगांव	नगरी
8	श्री हेमराज कोचर	जलगांव	"
9.	श्री पनराजजी ओस्तवाल	जालना	खडवा
10.	श्री घीसूलालजी बागमार	जलगाव	सेलवड
11	श्री प्रकाश हमराजजी बांठिया	पाचोरा	"
12	श्री रिखवचदजी कोठारी	जालना	सुजालपुर सीटी
13	श्री अनिल लालचदजी बाफना	लासलगांव	"
14	श्री मदनचदजी गोलेच्छा	नन्दुरबार	बुरहानपुर सीटी
15	श्री रमेशचद्रजी साखला	जलगांव	बुरहानपुर स्टेशन

श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगांव सामान्य सदस्यों की सूची

क्रम	नाम / पिता का नाम	गोत्र	पता	उम्र	व्यशिक्षण
1	श्री घेवरचदजी/रूपचदजी	गादिया	शिवजी सेठ जीन, 40 गांव म रा	40	एम. काम
2	श्री कल्याणमलदी/किशनचदजी	चोरडिया	आग्रा रोड, धुलिया (म. रा)	63	चौथी
3	श्री कातिलालजी/भीकचदजी	चौधरी	आग्रा रोड, पो बो. 63 धुलिया	34	बी काम. LLB
4	श्री नथमलजी/जीवराजजी	बरडिया	1291 आग्रा रोड, धुलिया	55	पांचवी
5	श्री चपालालजी/पन्नालालजी	सुराणा	गलीन 4 शनि मदिर के सामने धुलिया	65	मेट्रीक
6	प्रो कंवरलालजी/किवलचदजी	ओसवाल	आडवा बाजार, चालीस गांव म.रा	40	एस एस-सी.
7	श्री लालचदजी/बाबूलालजी	भटेवरा	1532, गली न. 5 धुलिया	41	नवी
8	श्री दीपचदजी/धनराजजी	सचेती	29 एल आत.सी कालोनी. धुलिया	58	इन्टर आर्टस
9.	श्री भूवरलालजी/दामोदरदासजी	मेहेर	प्लाट न 17 शारदा हाउसिंग सोसाइटी, जलगांव	59	नानमेट्रीक
10	श्री शंकरलालजी	चोरडिया	महाराष्ट्र रेडियो, टावर के पास, फूले मार्केट जलगांव	38	बी.एस-सी.

क्रम	नाम पिता का नाम	गोत्र	पता	उम्र	धर्म-शिक्षण
11	श्री इरफचदजी/पूनमचदजी	बोरा	290 भवानी पेठ, जलगांव	68	नानमेट्रीक
12	श्री गनेशीलालजी	धतर	सिवनी मालवा (म प्र)	70	मिडिल
13	श्री फकीरचदजी/ताराचदजी	संघवी	67 बालाजी पेठ, सागर दवाखाने के सामने, जलगांव	65	चौथी
14	श्री प्रकाशचदजी/बाबूलालजी	चोपड़ा	बलीराम पेठ, जलगांव	23	नानमेट्रीक
15	श्री सोहनलालजी/रतनचदजी	घोषा	240 बलीराम पेठ, जलगांव	42	,,
16	श्री हस्तीमलजी/सेजमलजी	चोपड़ा	विमनजी नगर जलगांव	60	,,
17	श्री खूबचदजी/मेघराजजी	तातेड	स्टेट बैंक एण्डिया जलगांव	62	,,
18	श्री ताराचदजी/तेजमलजी	चोपड़ा	पो धरणगांव ता. एरन्डोल (जि जलगांव)	61	,,
19	शांतिलालजी/शकरलालजी	रांका	राजमल इन्डस्ट्रीज, औद्योगिक क्षेत्र, जलगांव	30	बी इ.
20	श्री नेमीचदजी/भवरलालजी	चोरडिया	जय भाग्य दाल मिल जलगांव	38	मेट्रीक
21	श्री सुनील/कवरलालजी	जैन	जैन, पोलन पेठ, जलगांव	14	साधारण
22	श्री चिमनलाल/मूलचदजी	फुभट	150 भवानी पेठ जलगांव	65	सातवीं
23	श्री नरेन्द्रउर्फ हीरालाल/बसीलालजी	भनाली	18 फुले मार्केट जलगांव	28	एम एस-सी.
24	श्री माणकचदजी/प्रतापमलजी	समदडिया	171 बालाजी पेठ, सर्राफा बाजार जलगांव	57	नानमेट्रीक
25.	श्री जवरीलालजी/मगराजजी	कांकरिया	32/15 जिरहा पेठ, विमनजी नगर	60	,,
26.	श्री तिलोकचदजी/गुलाबचदजी	बागरेचा	मु.पो नेर (जि. धुलिया)	45	मेट्रीक
27	श्री मोहनलालजी/शंकरलालजी	बागरेचा	,, ,,	27	,,
28	श्री बाबूलालजी/गुलाबचदजी	,,	,, ,,	70	पांचवीं
29.	श्री राणुलालजी/जुगराजजी	बाफना	,, ,,	36	नवीं
30	श्री भागचदजी/गुलाबचदजी	बागरेचा	,, ,,	54	सातवीं
31.	श्री सरूपचदजी/लालचदजी	बागरेचा	,, ,,	57	सातवीं
32.	श्री सुभाषचद्रजी/लक्ष्मनदासजी	छल्लाणी	,, ,,	28	मेट्रीक
33	श्री दगडुलालजी/लखीचन्द जी	ओस्तवाल	मु पो नेर (धुलिया	61	4 थी
34	श्री पन्नालालजी/पापालाल जी	बागरेचा	,, ,	50	मेट्रीक
35.	श्री मोतीलालजी/पापालाल जी		,, ,,	43	,,
36.	श्री फूलचन्दजी/मोतीलाल जी		,, ,,	20	,,
37.	श्री सचालालजी/लखीचन्दजी	ओस्तवाल	,, ,,	57	पांचवी
38.	श्री भवरलालजी/मोतीलालजी	जैन	मु पो खेड़ा ,,	57	छठी
39	श्री कन्हैयालालजी/रावतमलजी	चतरमुथा	,, ,,	69	चौथी
40.	श्री जवरीलालजी/रामलालजी	,,	,, ,,	56	छठी
41	श्री सुगनचन्दजी/मोहनलालजी	सुराणावाल	,, ,,	37	प्री बी काम.
42	श्री बसीलालजी/मिश्रीलालजी	दुगड	,, ,,	47	चौथी

क्रम	नाम	पिता का नाम	गोत्र	पता		उम्र	व्य-शिक्षण
43	श्री रिखवचदजी	जवरीलाल	चतरमुथा	मु. पो. खेडा	धुलिया	30	वी ए द्वि वर्ष
44	श्री माणकचदजी	फूलचदजी	भण्डारी	विनोद क्लाथ सेटर 112		36	साधारण
45	श्री हीरालालजी	मोहनलालजी	मुणोत	256 भवानी पेठ	,,	22	वी काम प्र वर्ष
46	श्री गुलावचन्दजी	मोतीलालजी	सिंघवी	226 नवी पेठ	,,	50	नान मेट्रिक
47	श्री राजेन्द्रकुमार	फूलचदजी	चौपडा	108 भवानी पेठ	,,	20	मेट्रीक
48	श्री नीलमचद	भवरलालजी	चोरडिया	जयभारत दाल मिल, औद्योगिक क्षेत्र, जलगाँव			
49	श्री सायरचदजी	मगराजजी	काकरिया	64 वालाजी पेठ	,,	47	नान मेट्रीक
50	श्री मोहनलालजी	फूलचदजी	चोपडा	108 भवानी पेठ	,,	22	वी काम
51	श्री दिलीपकुमार	वसीलालजी	जागडा	166 पोलन पेठ	,,	19	मेट्रीक
52	श्री कवरलाल	दलीचद	कोचर मुथा	राका फर्नीचर पोलन पेठ	,,	40	,,
53	श्री दिनेशकुमार	चाँदमलजी	मठारा	जिल्हा पेठ	,,	21	,,
54	श्री सुनीलकुमार	सागरमलजी	साखला	35/5 जिल्हा पेठ	,,	18	वारहवी
55	श्री हीराचदजी	मोतीलालजी	लोढा	व्यकटेश स्मृति,	,,	41	दसवी
56.	श्री मोतीलालजी	मोहनलालजी	मुणोत	256, भवानी पेठ	,,	24	वी एस सी
57	श्री विश्वनाथ	रामकृष्ण	पाटील	C/o श्री रतनलालजी वाफना सुभाष चौक	,,	22	मेट्रीक
58	श्री राजेन्द्रकुमार	वशीलालजी	वोथरा	32 नवी पेठ	,,	18	वारहवी
59	श्री विजयकुमारजी	दीपचदजी	चोरडिया	229 जोशी पेठ	,,	23	ग्यारहवी
60.	श्री पुखराजजी	हीरालालजी	कटारिया	256 भवानी पेठ	,,	60	साधारण
61	श्री नरेन्द्रकुमार	पुखराजजी	कटारिया	,, ,,	,,	23	मेट्रीक
62.	श्री मुगनचदजी	गुलावचंदजी	मुणोत	एच एन जैन पिप्रालारोड		20	वी. काम
63	श्री वावूलालजी	हजारीमलजी	चोपडा	248 वलीराम पेठ	,,	5	तीसरी
64	श्री गुलावचन्दजी	वस्तीमलजी	साखला	17, पोलन पेठ,	जलगाँव	54	नानमेट्रीक
65	श्री दलीचन्दजी	हस्तीमलजी	चोरडिया	16 पोलन पेठ	,,	46	वी इ
66	श्री प्रकाशचन्दजी	उदयचन्दजी	कटारिया	287 भवानी पेठ	,,	27	प्री. वी एस सी
67	श्री रतनलालजी	खीवराजजी	सुराणा	जिल्हापेठ, स्टेट वैंक के पास	,,	57	मेट्रीक
68.	श्री वालचन्दजी	उत्तमचन्दजी	देसर्ग	184 नवी पेठ	,,	44	,,
69	डॉ ओंकारलालजी	दीपचन्दजी	वनवट	7 जिल्हा पेठ सेसन कोर्ट के पास	जलगाँव	58	एम.सी पी एस.
70	श्री चम्पालालजी	मेघराजजी	काकरिया	जिल्हा पेठ नटराज के पास	,,	55	दूसरी हिन्दी
71.	श्री रमेशकुमारजी	विरदीचन्दजी	मुणोत	197 वलीराम पेठ	,,	26	वी.कॉम.
72	श्री दिलीपकुमारजी	हस्तीमलजी	चोपडा	विसनजी नगर	,,	20	,,

क्रम	नाम　पिता का नाम	गोत्र	पता	उम्र	व्य-शिक्षण
73.	श्री भ्रूवरलालजी/वसीलालजी	चोपडा	171 रथचौक, जोशी पेठ, जलगांव	35	एस.एस सी.
74	श्री प्रवीणचन्दी/निर्मचन्दजी	गुणोत	हाउसिंग सोसायटी, 33 पिप्राला रोड, जलगांव	23	बी कॉम
75	श्री प्रकाशचन्दजी/रतनलालजी	सुराणा	सुराणा मेडीकल स्टोर्स, जलगाव	29	बी ए एम एस
76	श्री रामचन्दजी/धनराजजी	साँखला	76, पोलन पेठ, जलगाव	58	साधारण
77	श्री हीरालालजी/रूपचन्दजी	राका	17 , जिल्हा पेठ, जलगाव	65	माधारण
78	श्री लाभचन्दजी/नैनसुकदासजी	समदडिया	विनोद क्लॉथ सेंटर, जलगांव	39	मेट्रीक
79	श्री मन्नालालजी/रामचन्द्रजी	डोसी	2, शाहूनगर, जलगांव	45	बी.कॉम L L B
80.	श्री फूलचन्दजी/हजारीमलजी	चोपडा	108, भवानी पेठ, जलगाव	52	मराठी छठी
81	श्री मोतीलालजी/मूलचन्दजी	कुमठ	20 फोली पेठ, रथ चौक जलगाव	50	मेट्रीक
82	श्री भ्रूवरलालजी/मगराजजी	काकरिया	177, जिल्हा पेठ, जलगांव	53	दूसरी
83.	श्री शातिलालजी/उत्तमचन्दजी	भंमाली	404, नवी पेठ, जलगांव	53	मेट्रीक
84	श्री मिश्रीलालजी/ताराचन्दजी	चोपडा	296 वलीराम पेठ, जलगांव	41	एम कॉव.L LB
85.	श्री प्रेमचन्दजी/माणकचन्दजी	तातेड	C/o रतनलालजी वाफना, सुभाप चौक, जलगांव	27	एस एस.सी
86.	श्री शातिलालजी/राजमलजी	वरडिया	पो सेलवड, ता भुसावल, जलगाव	40	दसवी
87.	श्री कवरलालजी/गुलाबचन्दजी	सिगी	26 नवी पेठ, जलगाव	25	मेट्रीक
88	श्री सज्जनराजजी/	वाफना	C/o रतनलालजी वाफना, सुभाप चौक, जलगाव	30	,,
89	श्री कातिलालजी/भ्रुवरलालजी	मेहेर	शारदा हाउसिग सोमायटी,जलगाव	25	बी.कॉम द्वि.वर्ष
90.	श्री चपालालजी/मूलचन्दजी	नाहर	पजाब बैंक के बाजू मे, भुसावल	55	चौथी
91.	श्री इन्दरचन्दजी/देवचन्दजी	साखला	76, पोलन पेठ, जलगाव	13	पाचवी
92	श्री मेगराजजी/चौथमलजी	काकरिया	64, वालाजी पेठ, जलगाव	80	साधारण
93	श्री गणेशमलजी/जमराजजी	वाफना	178, जिल्हा, पेठ, जलगांव	42	मेट्रीक
94	श्री पृथ्वीराजजी/हस्तीमलजी	चोपडा	विसनजी नगर, जलगांव	25	मेट्रीक
95	श्री नगीनचदजी/घेवरचन्दजी	सिंघवी	गाधी चौक, पाचोरा (जलगांव)	22	वी काम
96	श्री कातिलाल/करसनदासशाह		66 नवी पेठ, जलगांव	46	छठी
97	श्री फूलचदजी/ह कचदजी	पारख	62 वालाजी पेठ ,,	74	चौथी
98	श्री कातलालजी/मोतीलालजी	छाजेड	61 वालाजी पेठ ,,	42	इन्टर सायस
99	श्री दीपचदजी/पारसमलजी	जैन	सालेचा इन्डस्ट्रीज, औद्योगिक क्षेत्र, जलगांव	30	मेट्रीक

क्रम	नाम / पिता का नाम	गोत्र	पता		उम्र	व्य-शिक्षण
100.	श्री हस्तीमलजी/किशनलालजी	जैन	29 वालाजी पेठ, मोहनवाडी	जलगांव	39	मेट्रीक
101	श्री राजमलजी/लखीचदजी	घोरा	वालाजी पेठ	,,	24	,,
102.	श्री मुकेश/शांतिलालजी	ललवाणी	165 वालाजी पेठ	,,	25	बी.वी काम.
103.	श्री पदमचदजी/दुलीचदजी	नाहर	C/o राजमल लखीचंद	,,	27	दशमी
104	श्री नेमीचदजी/हसराजजी	कावडिया	181 जिल्हा पेठ	,,	54	मेट्रीक
105	श्री स्वरूपचदजी/वावुलालजी	सचेती	C/o ग्रार. सी. वाफना, सुभाष चौक	,,	24	,,
106	श्री ईश्वरलालजी/शांतिलाल	लोढा	,, ,, ,,	,,	22	,,
107	डा सणीदास/सरदारमलजी	डाकलिया	67 वालाजी पेठ	,,	25	बीएएमकाम.
108.	श्री धनराजजी/रामचद्रजी	दोशी	297 भवानी पेठ	,,	52	मेट्रीक
109	श्री कांतिलालजी/केशरीमलजी	डफलिया	292 जयकिशनवाडी	,,	42	छठी
110	श्री प्रफुल्लकुमार/हीरालालजी	रांका	177 कर्वे रोड, जिल्हा पेठ	,,	21	एस.एस.सी.
111.	श्री सुखराजजी/सागरमलजी	मल्हारा	भगवान महावीर मार्ग	,,	42	मेट्रीक
112	श्री उत्तमचदजी/हीरालालजी	कोचरमुथा	79 भवानी पेठ	,,	42	ग्राठवी
113	श्री महावीरचदजी/सम्मतराजजी	रांका	राजकमल-इड ग्रौद्यो. क्षेत्र	,,	18	मेट्रीक
114	श्री प्रफुल्लकुमार/मोहनलालजी	मुणोत	256 भवानी पेठ	,,	19	नवी
115	श्री चदनमलजी/चपालालजी	राखेचा	श्री ट्रेडर्स, मेनरोड, शिरपुर, पु जि धुले		26	वी. काम.
116	श्री फूलचन्दजी/हजारीमलजी	चोपडा	108 भवानी पेठ जलगांव		52	छठी
117	श्री गुलावचन्दजी/धूलचन्दजी	चोरडिया	पो शिरपुर, जि. धुले		53	छठी
118	श्री घोडीरामजी/हजारीमलजी	छाजेड	2351, गली न 6 धुले		65	पांचवी
119	श्री भैरुलालजी/पन्नालालजी	घोरा	कुमार नगर ब्लाक न 190 रुम न 9 धुले		52	चौथी
120	श्री वबूलालजी/गुलावचन्दजी	वागरेचामुथा	गली न 2 तेली गली, धुले		71	चौथी
121	श्री वशीलालजी/पन्नालालजी	वोथरा	32 नवी पेठ, जलगांव		46	विशारद
122	श्री पन्नालालजी/मूलचन्दजी	चतरमुथा	3350, गली न 2 मुलावाडा, धुले		44	ग्यारहवी
123	श्री शातिलालजी/कन्हैयालालजी	ग्रोस्तवाल	77 मारोती पेठ, जलगांव		38	मेट्रीक
124	श्री मनसुखजी/गुलावचन्दजी	सावद्रा	पो लासलगांव, नेहरू रोड		19	वारहवी

श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगाँव

महिला सदस्यों की सूची

क्रम	नाम	पति/पिता का नाम	गोत्र	पता	उम्र	व्य-शिक्षण
1	श्रीमती जयालक्ष्मी	चुन्नीलालजी	पीपरिया	चदन हाउसिंग सोसायटी, विशनजी नगर, जलगाव	40	सातवीं
2.	सौ पन्नावाई	पन्नालालजी	चोरडिया	चोरडिया डी डी पी. सर्राफा वाजार भुसावल	46	सातवी
3	,, सरोजवाई	पन्नालालजी	सुराणा	238, नवी पेठ, जलगाँव	67	साधारण
4.	कु मधुवाला	चिनरूपचन्दजी	भडारी	जयकिशन वाडी, जलगाव	21	बी.ए.
5.	कु. शोभा	कुँवरलालजी	काकरिया	77, जिल्हा पेठ, जलगाँव	19	बी.ए. फाइनल
6.	सौ शान्तिवाई	निमीचन्दजी	लुणिया	विशनजी नगर, शास्त्री निवास ,,	20	पाँचवीं
7.	,, शकुन्तलावाई	कुँवरलालजी	गुलेच्छा	सर्राफा वाजार, लालाजी पेठ, ,,	49	शिक्षित
8.	,, निर्मलावाई	प्रकाशचन्दजी	वरडिया	,, ,,	18	साधारण
9	,, सदावाई	ज्ञानचन्दजी	रायसोनी	180 नवी पेठ, जलगाँव	49	नवीं
10	,, सूरजवाई	गंभीरमलजी	श्री श्रीमाल	98, भवानी पेठ ,,	51	चौथी
11.	,, शकुन्तलादेवी	रूपचन्दजी	कटारिया	422 जय किशन वाडी ,,	31	सातवीं
12	,, कमलावाई	कन्हैयालालजी	खिवसरा	1486 शुक्रवार पेठ, पूनार	48	नवी
13	,, विमलवेन	शशिकात	शाह	180 नवी पेठ, जलगाव	38	नवी
14.	,, कमलावाई	कवरलालजी	कोचरमुथा	पोलन पेठ ,,	31	पाँचवीं
15.	,, विजयानन्दनी	राजेन्द्र	मलार	359 जयकिशन वाडी ,,	24	ग्याहरवीं
16.	श्रीमती प्रेमवाई		श्री श्रीमाल	शिवाजी नगर, जलगाँव	63	साधारण
17.	सौ चन्दनवाला	हस्तीमलजी	रतनपुरा वोरा	मोहन वाडी, शनि पेठ पु चौकी जलगाव	35	पाचवीं
18	,, कंचन	भवरलालजी	संघवी	नवी पेठ शिर्के गिरजे के पास जलगाव	24	ग्यारहवीं
19.	,, कलावती	निमीचन्दजी	चोरडिया	जय भारत दाल मिल, औद्योगिक क्षेत्र, जलगाव	34	साधारण
20.	,, सुगनवाई	माणकचन्दजी	सांड	शनि पेठ, जलगाँव	37	साधारण
21.	,, कलावती	पुखराजजी	श्री श्रीमाल	चोपडा भवन, विसनजी नगर ,	21	ग्यारहवी
22.	,, शांतावाई	सोहनलालजी	जैन	वालाजी पेठ, जलगाँव	28	,,
23.	,, ज्योतिवाला	मूलचन्दी	चोपडा	108 भवानी पेठ, सर्राफा वाजार जलगाँव	38	SSC

श्री मध्यप्रदेश जैन स्वाध्याय संघ इन्दौर

संक्षिप्त परिचय

सरक्षक श्रीमान सुगनमल जी भडारी इन्दौर—आपको इदौर समाज की तरफ से, समाजरत्न की पदवी दी गई। आप प्रसिद्ध मिल मालिक श्रीमान् कन्हैयालालजी भंडारी के भ्राता है। आप इदौर श्रावक सघ के अध्यक्ष हैं एव अनेक सस्थाओ के पदाधिकारी है। अ भा श्वे स्था. कान्फ्रेंस के उपाध्यक्ष हैं। आप दानवीर एव समाज सेवी तथा इदौर नगर के माने हुए कार्यकर्ता हैं।

अध्यक्ष—श्रीमान वालचदजी मेहता, इन्दौर—आप प्रकाश दाल मिल इन्दौर के मालिक हैं। आप धर्मनिष्ठ और देवगुरु भक्त श्रावक हैं।

उपाध्यक्ष—श्रीमान सिरेमलजी चोरडिया, इन्दौर—आप श्री महावीर जैन स्वाध्याय शाला के निर्देशक हैं। आप एम टी क्लाथ मार्केट एशोसियेशन के मत्री है एव अन्य अनेक सस्थाओ के भी पदाधिकारी एव कार्यकर्ता हैं। सामयिक स्वाध्याय के आप विशेप प्रेमी हैं।

उपाध्यक्ष—श्रीमान पारसमलजी चोरडिया, उज्जैन—आप समाज सेवी कर्मठ कार्यकर्ता हैं। सामायिक स्वाध्याय के प्रसार प्रचार में आपका विशेष योगदान है।

महामंत्री श्री फकीरचदजी मेहता, इदौर—आप जैसे महान समाज सेवी कर्मठ कार्यकर्त्ता को कौन नहीं जानता ? अ भा श्वे स्था कान्फ्रेंस के मत्री है। इदौर मे अनेक सस्थाओ के आप कार्यकर्त्ता है। भुसावल मे भी कई वर्षों तक अपने पद पर रह कर अनेक प्रकार से समाज सेवा की हैं। जब से आप भुसावल छोडकर इंदौर पधारे तब से अनेक सामाजिक और धार्मिक तथा चातुर्मास के कार्य आपके सयोजन मे अति सुन्दर ढ ग से सपन्न हो रहे हैं। आप जैसे कार्यकर्त्ता के लिये जितना लिखा जाय उतना ही कम है।

सहमत्री श्रीमान हस्तीमलजी झेलावत, इदौर—आप इदौर समाज के माने हुए वक्ता एव सभा सचालन विशेपज्ञ हैं। सामयिक स्वाध्याय मे आपकी विशेप रुचि है आप तैयार कपडों के व्यापारी एव बनाने वाले हैं। श्री महावीर स्वाध्याय शाला मे छात्रो की उपस्थिति बढाने मे आपका सहयोग रहा हैं।

सहमत्री—श्री मान सुरेश कुमारजी झाझरिया, इदौर—आप स्वाध्याय मण्डल के कोपाध्यक्ष एव महावीर स्वाध्याय शाला के उत्साही प्रेरणादाता हैं। आप भी सामयिक स्वाध्याय के रसिक हैं। तथा अपने साथियो को भी दैनिक स्वाध्याय मे भाग लेने के लिये प्रोत्सहित रहते करते रहते हैं।

प्रवन्ध मन्त्री—श्री अशोक कुमार जी मांडलिक—ड्रेसेस इंदौर के पार्टनर एव समाज सेवी कार्यकर्त्ता है। धर्म के प्रति आपके मन मे गहरी आस्था है और आप सामयिक स्वाध्याय के कार्यक्रम को आगे बढ़ाने मे तनमन से सहयोग देते रहते हैं।

कोषाध्यक्ष.—श्री सागरमलजी वेताला, इदौर—आप इदौर के प्रसिद्ध दाल-मिल मालिक हैं। आपकी रुचि स्वाध्याय के प्रति नयी-नयी जागृत हुई हैं, फिर भी आप अपने साथियो को सामयिक स्वाध्याय की प्रेरणा देते रहते हैं।

संयोजक.—श्री लाभचदजी जी काठेड, इंदौर—आप उत्साही एवं कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। आप सरकारी पाठशाला में अध्यापक होते हुए भी महावीर स्वाध्याय शाला के छात्रो को अध्यापन देते है। आप घर जाकर छात्रो को बुलाकर स्वाध्याय शाला मे सम्मिलित होने की प्रेरणा देते है। आप ही के प्रयत्न से गत पर्युषण में इस नवीन संस्था से भी स्वाध्यायी पर्युषण सेवा मे भाग ले सके।

इसके अतिरिक्त भी निम्न कार्यकर्त्ताओ का भी मध्यप्रदेश स्वाध्याय संघ की गतिविधियो मे पूर्ण सहयोग रहा और भविष्य मे भी सहयोग मिलता रहेगा।

(१) श्री भवरलालजी बाफना—आप प्रसिद्ध दाल मिल मालिक हैं। धर्म और गुरु के प्रति आप की अटूट श्रद्धा है। आप ही के अथक प्रयत्नों से आचार प्रवर पूज्य श्री हस्तीमलजी म० सा० का चतुर्मास इन्दौर मे हो सका। साजन नगर मे चलने वाली स्वाध्याय शाला के प्रेरणा दायक आप ही हैं।

(२) श्री वस्तीमलजी चोरडिया—आप भी दाल मिल मालिक हैं। प्रत्येक धार्मिक कार्य को गति देने मे आपकी और श्री भवरलालजी बाफना की युगल जोडी है।

(३) श्री सागरमलजी कटारिया—आप स्वाध्याय सघ के दानवीर सदस्य हैं। आपने १००१) रु. देकर श्री सम्यक् ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं जिनवाणी की सरक्षकता स्वीकार की है। प्रतिक्रमण पूर्ण कर लेने वाले स्वाध्याय शाला के छात्रो को १०१) रु० प्रति छात्र देने की आपने घोषणा की है। अभी दि० ४ से ६ अक्टूबर १९७९ को जलगांव मे श्री मध्य प्रदेश स्वाध्याय सघ का जो त्रिदिवसीय शिविर लगा था उसके लिये इन्दौर से आने वाली २ मे से १ वस का किराया आपने दिया है।

(४) श्री मदनलालजी बोडाना—आप अत्यन्त धर्म प्रेमी और श्रद्धालु व्यक्ति हैं। स्वाध्याय संघ की प्रगति मे आपके पूरे परिवार का हाथ है। आपकी धर्म-पत्नि श्री महावीर श्राविका सघ की संयोजिका है और आपके पुत्र श्री गजेन्द्र बोडाना श्री महावीर जैन स्वाध्याय शाला के महामत्री हैं। आप ड्रेसेज मेनुफेक्चर्स एशोसियेशन के कोषाध्यक्ष भी हैं।

(५) श्री लक्ष्मीचन्दजी मांडलिक.—आप स्वाध्याय मण्डल इन्दौर के मंत्री हैं। आप कर्मठ सामाजिक तथा धार्मिक कार्यकर्त्ता हैं। आपका परिवार स्वाध्याय का रसिक है। आपके एक ही पुत्र है वह भी स्वाध्याय के कार्य में नित्य संलग्न है। आप श्री महावीर स्वाध्याय शाला के परामर्शदाता भी हैं।

(६) श्री नेमीचन्दजी नारेलिया —आप कई वर्षों से स्वाध्याय मण्डल इन्दौर के अध्यक्ष है। आप के सुपुत्र श्री नगीनचन्दजी स्वाध्याय शाला के उपाध्यक्ष है। आप प्रतिदिन ५ सामायिक करते हैं एव सामायिक स्वाध्याय के रसिक हैं।

(७) श्री शतीपचन्दजी तातेड —आपका समस्त परिवार धार्मिक कार्यों में सदैव सहयोगी रहता है। आपके पिताजी को दया करवाने का शौक है।

(८) श्री विमलचन्दजी तातेड —आप श्री महावीर स्वाध्याय शाला, इन्दौर के अध्यक्ष हैं। आप स्वाध्याय सघ के सक्रिय युवक कार्यकर्त्ता है।

(९) श्री गजेन्द्र बोडाना आप श्री महावीर स्वाध्याय शाला, इन्दौर के महामत्री है। आप भी स्वाध्याय सघ के सक्रिय युवक कार्यकर्त्ता हैं।

(१०) श्री प्रकाश कोठारी आप भी महावीर स्वाध्यायशाला, इन्दौर के कोषाध्यक्ष है तथा आप भी स्वाध्याय सघ के सक्रिय युवक कार्यकर्त्ता हैं।

(११) श्री प्रेमराजजी भडारी —आप श्री महावीर स्वाध्याय शाला, इन्दौर के परामर्शदाता हैं। आप रेडीमेड ड्रेसेज के व्यापारी एव सामायिक स्वाध्याय के रसिक हैं।

(१२) श्री दीपचन्दजी चोरडिया —आप स्वाध्याय सघ के युवक कार्यकर्त्ता है। तथा सामायिक स्वाध्याय के कार्यों मे उत्साह पूर्वक भाग लेते हैं।

(१३) श्री राजेन्द्र चोरड़िया – सामायिक स्वाध्याय के कार्यों को गति देने मे आपका पूर्ण सहयोग है। आप स्वाध्याय सघ के सक्रिय युवक कार्यकर्त्ता हैं।

(१४ श्री तिलोकचन्दजी लाडूलालजी जैन —आप सरकारी पाठशाला के अध्यापक होते हुए भी श्री महावीर स्वाध्याय शाला, इन्दौर में शिक्षण का कार्य करते हैं। छात्रो को शाला में उपस्थित रहने के लिये उत्साहित करते रहते हैं। आप बहुत ही शान्त स्वभावी और छात्रो के प्रिय शिक्षक हैं।

(१५) श्री सपत कुमार जी गेलडा.—आप भी श्री महावीर स्वाध्याय शाला, इन्दौर मे अध्यापक का कार्य कर रहे हैं। आप सायायिक स्वाध्याय के रसिक हैं।

(१६) श्री घनश्यामजी लड्डूलालजी जैन —आप सरकारी नौकर होते हुए भी समय निकाल कर श्री महावीर स्वाध्याय शाला, इन्दौर के छात्रो को शिक्षण देते हैं। आपने गत पर्युषण मे बाहर गाँव जाकर सेवा प्रदान की।

इसके अतिरिक्त भी श्री मध्य प्रदेश स्वाध्याय सघ के कई सक्रिय कार्यकर्त्ता हैं जिनका परिचय समयाभाव से प्राप्त न हो सका, अत हम उनका परिचय देने मे असमर्थ हैं। आशा है कार्यकर्त्ता हमे क्षमा करेंगे।

निम्न स्वाध्यायियो गत पर्युषण में अपनी सेवाये प्रदान की जिसके लिये संघ उन्हे शतश धन्यवाद देता है —

(१) श्री रमेश काठेड C/o श्री लाभचन्दजी कांठेड, महावीर भवन, इमली बाजार, इन्दौर

(२) श्री संतोष पूनमचन्दजी जैन, ६६ बोहरा बाजार, इन्दौर

(३) श्री गौतम सुरेशचन्दजी झाझरिया, ९९ जवाहर मार्ग इन्दौर

(४) श्री राजेन्द्र मोहनलालजी छिंगावत, १०२ जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर

(५) श्री महेन्द्र पूनमचन्दजी भडारी, २३, जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर

(६) श्री घनश्याम लाडूलालजी जैन, २१/१ मल्हार गज, इन्दौर

(७) श्री राकेश नेमीचन्दजी नाहर, ९, राजवाडा, इन्दौर

(८) श्री सुनील कुमार जैन, ७३ जवाहर मार्ग, इन्दौर

———

निम्न स्वाध्यायियों के परिचय नहीं प्राप्त हुए है व कुछ स्वाध्यायी नये बने है। अतः सभी का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

			जिन क्षेत्रों में सेवाएं दी हैं			
न	नाम स्वाध्यायियो	जोधपुर	1976	1977	1978	1979
(1)	श्री भंवरलाल जी टाटिया	,,	जुड	—	निम्बाहेडा	—
(2)	,, शातिलाल जी चोपडा	,,	—	—	ढासपा	—
(3)	,, भगराज जी कुम्भट	,,	—	—	—	अर्जात
(4)	,, धनराज जी कवाड	,,	—	—	—	साजावास
(5)	,, श्रीमति उच्छव कवर	,,	—	वाडमेर	—	—
(6)	,, गजराज चाम्बड	,,	—	—	—	कोसाना
(7)	,, लालचन्द जी सिंघवी	,,	—	—	महावीर नगर	नगरी
(8)	श्री पुनवानचन्द जी ओस्तवाल	भोपाल गढ	वागली	तिरपुर	परावतपुर	गुडियातम
(9)	,, प्रकाश चन्द्र जी काकरीया	,,	जुड	—	—	—
(10)	,, हस्तीमल जी ओस्तवाल	,,	—	दासपा	—	वरण गाव
(11)	श्री धनपतराज जी मेहता	पीपाड सिटी	—	सोमेसर	चौथ का बरवाडा	
(12)	,, सुरेश जी गांधी	,,	—	—	—	हरताला
(13)	,, स्वरूप चन्द जी भन्डारी	,,	—	—	—	बुरहानपुर
(14)	,, उज्जवल कुमार जी मेहता	,,	—	—	—	फतेहपुर
(15)	,, सज्जन राज जी धाया	,,	—	—	—	हरताला
(16)	श्री मोहनलाल जी कटारिया	बिलाडा	—	—	—	बिलाडा
(17)	,, पन्नालाल जी ललवाणी	,,	—	—	—	बिलाडा
(18)	,, मदनलाल जी गोठी	,,	—	—	—	बिलाडा
(19)	सविता बहन कामदार	मद्रास	चिगलपेट	—	—	—
(20)	सुरज बहन शाह	,,	पाडीचेरी	टडियारपेट	चिंगलपेट	—
(21)	इन्दु बहन खधार	,,	पांडीचेरी	—	पाडीचेरी	—
(22)	भवरी बाई सुराणा	,,	—	—	तिरतनी	—
(23)	श्री विनिता बम्ब	,,	—	गुडियातम	तिरतनी	—
(24)	उषा बंब	,,	—	गुडियातम	तिरतनी	—
(25)	पारस बहिन पारख	,,	—	टडियापारपेट	—	—
(26)	मजु सुराणा	,,	—	टडियारपेट	चिंगलपेट	—
(27)	पुष्पा गेलडा	,,	—	—	पाडीचेरी	—
(28)	शान्ति बहन	,,	—	—	चिंगलपेट	—
(29)	पुष्पा सुराणा	,,	—	—	पालासनी	—

			जिन क्षेत्रो मे सेवाऐं दी है			
न.	नाम स्वाध्यायियो	मद्रास	1676	1977	1978	1979
(30)	श्री सागरमल जी पीचां	"	—	—	मेट्या	—
(31)	श्री वादरमल जी नाहर	"	—	—	—	वीजापुर
(32)	,, माधवलाल जी सेठिया	"	—	—	—	तिरतनी
(33)	,, नीलमचन्द जी वाघमार	"	—	—	—	नया घोबी पेट
(34)	श्री भगवतीलाल जी मोगरा	डुंगला	—	सेतिया	—	—
(35)	,, हरीसिंह जी तातेड	"	—	—	—	महागढ
(36)	,, कालूलाल जी तातेड	"	—	—	—	जोख्यामाता जी
(37)	,, सुरेश कुमार जी दाणी	"	—	—	—	लोगच
(38)	चन्दा कुमारी चंडालिया	कपासन	—	—	—	गिलुण्ड
(39)	पुष्पा कुमारी दुगड	"	—	—	—	गिलूण्ड
(40)	श्री मिश्रीलाल जी चडालिया	"	—	—	—	गिलूण्ड
(41)	श्री सुरेश कुमार जी मेहता	खैरोदा	—	—	—	फलीचडा
(42)	,, राजमल जी खैरोदिया	"	—	—	मदार	वनेडिया
(43)	श्री गोतमचन्द जी डोसी	जयपुर	—	जलगांव	—	—
(44)	,, लादूराम जी दक	हैदरावाद	—	—	वणी	फतेहपुर
(45)	श्रीमति लाड कंवर मेहता	भोपाल	भोपाल	—	—	भोपाल
(46)	श्री प्रकाशचन्द जी जैन	नागौर	—	—	वाडमेर	—
(47)	,, नीलमचन्द जी सुराणा	नागपुर	—	—	यशवन्तपुर	—
(48)	,, ऋषभचन्द जी सचेती	किशनगढ	—	—	—	अमीनगर सराय
(49)	,, भवरलाल जी डोसी	बम्बई	—	—	वणी	नन्दूरवार
(50)	श्री वावूलाल जी जैन	मागरोल	—	—	—	मांगरोल
(51)	,, बुद्धिलाल जी जैन	करही	—	—	—	करही
(52)	,, पूरण चन्द जी जैन	करही	—	—	—	करही
(53)	,, सतीश चन्द जी जैन	लहसोडा	—	—	—	लहसोडा
(54)	,, नाथूलाल जी जैन	शेखपुरा	—	—	—	शेखपुरा
(55)	,, हजारीलाल जी जैन	शेखपुरा	—	—	—	शेखपुरा
(56)	,, दिलीप कुमार जी जैन	नया गांव	—	—	—	नया गांव
(57)	,, प्रेमचन्द जी जैन	रसीदपुर	—	—	—	रसीदपुर
(58)	,, अशोक कुमार जी जैन	रसीदपुर	—	—	—	रसीदपुर
(59)	,, पारसमल जी	कुचवास	—	खेतीया	—	—
(60)	,, चान्दमल जी भण्डारी	बोहेडा	—	—	मनावर	—

न.	नाम स्वाध्यायियो		जिन क्षेत्रो मे सेवाए दी हैं 1976	1977	1978	1979
(61)	श्री पारसमल जी नाहर	माद सोडा	—	—	—	लोगच
(62)	,, अजित कुमार जी पितलीया	पारसोली	—	—	—	मोखन
(63)	,, मदनलाल जी सुरुपिया	भदेखर	—	—	चौथ का बरवाडा	कोसिगो
(64)	,, शान्तीलाल जी धीग	खैंरोडा	—	गिलूण्ड	—	—
(65)	,, सुन्दरलाल जी मेहता	डुगला	—	—	—	कुदारिया
(66)	,, कन्हैयालाल मेहता	पडुना	—	—	—	नवाणिया
(67)	,, सुश्री शकुन्तला मेहता	जोधपुर	—	—	—	भीडर
(68)	,, नवरतनमल जी मुथा	पिपाड	—	—	—	बाडमेर
(69)	,, श्री प्रकाश जी पटवा	बैंगलोर	—	—	—	मैसू र
(70)	,, विमल जी धारी वाल	बैंगलोर	—	—	—	तिरुचिनापल्ली
(71)	,, पन्नाल ल जी चोरडिया	बैंगलोर	—	—	—	मैसूर
(72)	,, सुखराज जी वागरेचा	बैंगलोर	—	—	—	तिरुचिनापल्ली
(73)	,, श्री प्रमोद कुमार जी	अलवर	—	—	—	जामनेर
(74)	,, वसन्तीलाल जी दाणी	1974 मे सारग पुर पधारे				
(75)	,, पनराज जी ओस्तवाल	(भोपाल गढ) वर्तमान मे जालना रहते है।				

	स्वाध्यायी नाम	निवासी
1.	श्री सागरमलजी वया	डु गला
2	,, सुरेश कुमारजी पितलिया	,,
3.	,, अशोक कुमार जी मेहता	,,
4	,, चन्दनमल जी जैन	चगेरी
5	,, प्रकाशचन्द जी नागोरी	सिगोली
6.	,, कन्हैयालाल जी मेहता	,,
7	,, कवरलाल जी गाधी	,,
8.	,, नेमीचन्द जी दक	,,
9.	,, सुन्दरलाल जी गाधी	,,
10	,, पारसमल जी भडारी	,,
11.	,, शभुदयाल जी व्यास	,,
12	,, हिम्मतलाल जी चण्डालिया	कपासन
13	,, फतहलाल जी सा. मारु	,,
14	,, राजेन्द्र कुमार जी चन्डालिया	,,

	स्वाध्यायी नाम	निवासी
15	श्री चन्द्रप्रकाश जी चण्डालिया	कपासन
16	,, चान्दमल जी चण्डालिया	,,
17	,, महेन्द्र कुमार जी बाघमार	,,
18	,, दिनेश कुमार जी चण्डालिया	,,
19.	,, रमेश कुमार जी लसोड	कुथवास
20.	,, छगनलाल जी धनावत	नवाणियां
21.	,, द्रोपदी कुमारी पोखरणा	,,
22.	,, मानसिंह खारीवाल	पहुना
23.	,, राजमल जी भडारी	बोहेडा
24.	,, कोमल चन्द जी भण्डरी	,,
25.	,, हस्तीमल जी नाहर	भादमोडा
26.	,, मिठुलाल जी नाहर	भीडर
27.	,, गणेश लाल जी मुणोत	,,
28	,, शान्तिलाल जी रामपुरिया	बडी सादडी
29.	,, रतन लाल जी दलाल	,,
30.	,, मागी लाल जी रातडिया	,,
31.	,, अमरसिंह जी कठालिया	,,
32.	,, मदनलाल जी सा धींग	,,
33.	,, छोटूलाल जी सुराणा	कदवासा
34.	,, प्रकाश चन्द जी बावेल	,,
35.	,, सुशील कुमार जी सुराणा	,,
36.	,, किरणमल जी शिशोदिया	बेंगू
37	,, भूपाल सिंह जी सुराणा	,,
38.	,, सोहन लाल जी बाफणा	उदयपुर
39.	,, विश्वम्भर दयाल जी जैन	नयागाव
40.	,, योगेन्द्र कुमार जी जैन	,,
41	,, पवन कुमार जी जैन	,,

स्वाध्याय संघ जोधपुर सन् 1979 की संक्षिप्त वार्षिक रिपोर्ट

विगत वर्षों को भांति यह वर्ष भी सघ के लिए प्रगति सूचक ही रहा। सघ द्वारा सचालित सभी प्रवृत्तियों में निरन्तर प्रगति हुई।

(1) *स्वाध्यायी सदस्यो मे वृद्धि —आचार्य प्रवर के महाराष्ट्र मे पदार्पण से उनके सदुपदेशों तथा श्रीमान्* लालचन्द जी सिंघवी एव श्रीमान् बृजमोहन जी जैन की प्रेरणा से तथा जल गाव मे प्रतिमाह स्वाध्यायी शिविर लगने से महाराष्ट्र मे लगभग 50, मध्य प्रदेश मे 15 इसके अलावा मेवाड मे 25, मद्रास मे 10 एवं अन्य 20 अर्थात् कुल 120 नये स्वाध्यायी बने। इनमे से कुछ इस वर्ष भी पर्यूषण पर सेवा देने गये, शेष अगने वर्षों मे जा सकेगें। इस प्रकार अब स्वाध्यायी सदस्यो की सख्या लगभग 650 तक पहुच गई है।

(2) **स्वाध्यायी क्षेत्रों मे भी वृद्धि.**—गतवर्ष 124 क्षेत्रो मे 255 स्वाध्यायियो के स्थान पर इस वर्ष कई स्थानों पर रेल व बस मार्ग आदि बन्द होने के वावजूद भी इस वर्ष 181 क्षेत्रो से मागे प्राप्त हुई जिनमें मे 142 स्थानो पर 297 स्वाध्यायी भेजे जा सके। सभी स्थानो पर कार्यक्रम सुचारू रूप से चला।

(3) **स्वाध्यायी शिविरः**—गतवर्ष 2 के स्थान पर इस वर्ष 7 स्वाध्यायी शिविर विभिन्न प्रान्तो मे लगाये गये जिनमे स्वाध्यायियो को शुद्ध उच्चारण, शास्त्र वॅचन, भाषण कला, आदि विविध विषयो का ज्ञान व अभ्यास आदि कराया गया। शिविर निम्न स्थानो पर एव निम्न अवधि मे लगे।

न	शिविर स्थान	दिनाक से	शिविरार्थी सख्या
(1)	पारसोली (म प्र.)	11-3-79 से 13-3-79	46
(2)	डुगला (मेवाड	11-6-79 से 15-6-79	52
(3)	पचाला (सवाई माधोपुर)	16-6-79 से 24-6-79	54
(4)	जलगाँव (महाराष्ट्र	22-7-79 से 26-7-79	44
(5)	,, ,,	22-7-79 से 26-9-79	42
(6)	,, ,,	4-10-79 से 6-10-79	125
(7)	,, ,,	20-10-79 से 3-11-79	136

(4) **स्थानीय शिविर** —स्थानीय शिविर भी विभिन्न प्रान्तो मे कुल 7 स्थानो पर ही लगा क्योंकि इस वर्ष ग्रीष्मावकाश समय पर न हो सका। कई स्थानो पर परीक्षाए अलग-अलग तारीखो मे होती रही, इस

कारण इस प्रवृत्ति मे उल्लेखनीय प्रगति न हो सकी, फिर भी अलवर, रसीदपुर, उखनाना, जैनपुरी (सवाई माधोपुर) मेवाड में कपासन एव महाराष्ट्र मे चोपड़ा व अमलनेर आदि स्थानो पर शिविर लगाये गये।

(5) प्रचार-प्रसार —श्रीलाल चन्द्र जी सिघवी द्वारा महाराष्ट्र मे जामनेर, फतेहपुर, शेलवड, वाकोद, सीगोली आदि तथा म प्र. मे इच्छापुर, बुरहानपुर सीटो, हडताला, वरण गाँव, एदलावाद आदि तथा सयोजक महोदय द्वारा भी पारसोली, सींगोली, कदवासा, वेगू, धारडी, माडलगढ वीगोद आदि क्षेत्रों का दौरा किया गया। श्रीमान् मागीलाल जी सा. राका, मोहनराज जी चाम्वड, श्री मोहनल ल जी जीरावला द्वारा काकरोली, नाथद्वारा, कुंवारिया कपासन आदि मेवाड क्षेत्रो का दौरा किया गया।

(6) साधना विभागः—श्रीमान् चादमल जी सा. कर्णावट सचालक की अस्वस्थता के बावजूद भी कार्य चालु रहा। साधना विभाग द्वारा दो साधक शिविर प्रथम 15-10-79 से 17-10-79 तक जयपुर मे तथा द्वितीय 28-10-79 से 29-10-79 तक जलगाँव मे लगाया गया। साधको के जीवन परिवर्तन के लिए विषय और कषायों को मन्द करने हेतु विशेष जोर दिया गया। विविध प्रकार के धार्मिक एव सामाजिक कुरीतियो को मिटाने वावत भी विशेष प्रेरणा दी गई। नये साधक तैयार करने एव पुराने साधको को भी ज्ञान, दर्शन एव त्याग व्रत मे प्रगति करने हेतु प्रेरणा की गई।

साभार प्राप्ति स्वीकार

११५१) श्री कुशलचन्द जी हस्तीमल जी सिसोदिया, बैंगलोर
११११) ,, जुगराज जी बाफणा, बैंगलोर
११११) ,, सुकनराज जी भोपालचन्द जी पगारिया, बैंगलोर
१०००) ,, किशनलाल फूलचन्द जी बैंगलोर
७०१) ,, पारसमल जी बागरेचा, बैंगलोर
७०१) ,, मोहनलाल जी पगारिया, बैंगलोर
७०१) ,, घीसूलाल जी मोहनलाल जी राका, बैंगलोर
५०१) ,, जवरीमल जी सचेती, किरन टैक्सटाइल्स, जोधपुर
५०१) ,, सुगनचन्द जी लोढा, जोधपुर
५०१) ,, भवरलाल जी शंकरलाल जी, बैंगलोर
५०१) ,, पारसमल जी देसलडा, बैंगलोर
५००) ,, सागरमल जी चम्पालाल जी, बैंगलोर
३५१) ,, मिश्रीमल जी सूरजमल जी चोरडिया, बैंगलोर
३५१) ,, जसवन्तराज जी लुणावत, बैंगलोर
३०१) ,, जवरचन्द जी अनोपचन्द जी जोधपुर
३०१) ,, मुन्नीलाल जी मूलचन्द जी गोलेछा, जोधपुर
३०१) ,, भवरलाल जी लूंकड, बैंगलोर
३००) ,, मेसर्स-कल्पना इलेक्ट्रिक कम्पनी, बैंगलोर
३०१ ,, जसराज जी बागरेचा, बैंगलोर
३०१) ,, मेसर्स-कामधेनु, बैंगलोर
२५१) ,, गणेशमल जी कुन्दनमल जी, जोधपुर
२५१) ,, सिरेमल जी भवरलाल जी मुथा, बैंगलोर
२०१) ,, मोहनलाल जी जसवन्त जी भसाली, जोधपुर
२०१) ,, नथमल जी गोलिया, जोधपुर
२०१) ,, घेवरचन्द जी जसराज जी गोलेछा, बैंगलोर
२०१) ,, मिश्रीलाल जी पारस मल जी कातरेला, बैंगलोर
२०१) ,, एम वी शाह, बैंगलोर
२०१) ,, बक्तावरमल जी जेठाजी छाजेड, बैंगलोर,
२०१) ,, भीवराज जी लक्ष्मीचन्द जी, बैंगलोर
२०१) ,, पारसमल जी भंसाली, जोधपुर

२०१) श्री गांगीलाल जी, बाबूलाल जी, बैंगलोर
२००) ,, हुकमीचन्द जी डोसी, बैंगलोर
२००) ,, थानमल जी धनराज जी, जोधपुर
२००) ,, रिखबचन्द जी मीठालाल जी, मैसूर
२००) ,, गांगीलाल जी, प्रकाशचन्द जी रुणवाल, मैसूर
१५१) ,, सुमेरमल जी पारसमल जी, बैंगलोर
१५१) श्रीमती पार्वती बाई धर्मपत्नि श्री मगनचन्द जी रातड़िया, बैंगलोर
१०५) ,, धनराज जी धीगड़मल जी, बैंगलोर
१०१) ,, केसरीमल जी, बैंगलोर
१०१) ,, मेसर्स जे. के. इलेक्ट्रिकल्स, बैंगलोर
१०१) ,, पारसमल जी देवड़ा, बैंगलोर
१०१) ,, मेसर्स एच प्रतापसिंह एण्ड सन्स, बैंगलोर
१०१) श्रीमती ताराबाई सेठ, बैंगलोर
५१) मेसर्स राजुन इण्डस्ट्रीज, बैंगलोर
५१) ,, जवरीलाल जी भण्डारी, बैंगलोर
५१) ,, मिश्रीलाल जी छगनलाल जी, बैंगलोर
५१ श्रीमती शकुन्तला बहिन जी, बैंगलोर
५१) मेसर्स-राजलक्ष्मी पेपर मार्ट, बैंगलोर
३१) ,, मानमल जी, बैंगलोर

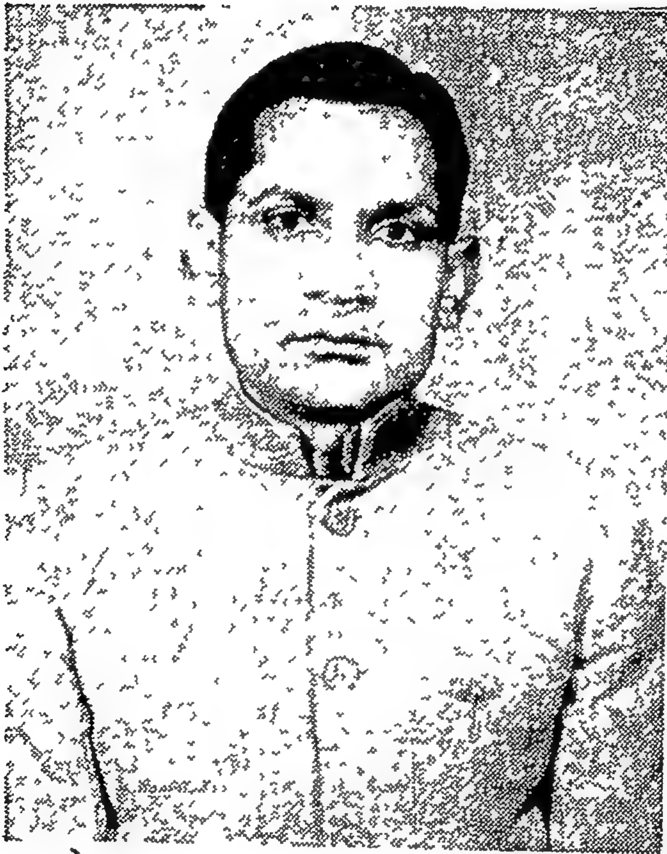
तृतीय खण्ड

स्वाध्यायी-चित्रावली

> जो राग-द्वेष से परिणत होकर लोगों को ठगने के युद्धशास्त्र और कामशास्त्र पढ़ता है, उसका स्वाध्याय निष्फल है।

—: हार्दिक अभिनन्दन :—

हमारे संयोजक :



श्री सम्पतराज जी डोसी

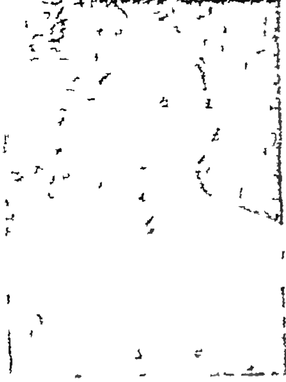
सयोजक

श्री श्वे० स्था० जैन स्वाध्याय सघ

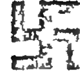
(सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा सचालित)

प्रधान कार्यालय : जोधपुर

—: हार्दिक अभिनन्दन :—



श्री सुजानमलजी मेहता
निर्देशक
स्वाध्याय संघ, शाखा स. माधोपुर





श्री रामदयालजी जैन सर्राफ
कार्याध्यक्ष
स्वाध्याय संघ, शाखा-स. माधोपुर





श्री चाँदमलजी कर्नावट
संचालक
साधना विभाग, उदयपुर





श्री रूपचन्दजी जैन
संयोजक
स्वाध्याय संघ, शाखा-स. माधोपुर



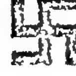


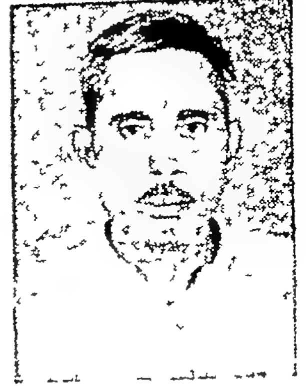
श्री रघुनाथदासजी जैन
लेखा-निरीक्षक
स्वाध्याय संघ, शाखा-स. माधोपुर

—: हार्दिक अभिनन्दन :—



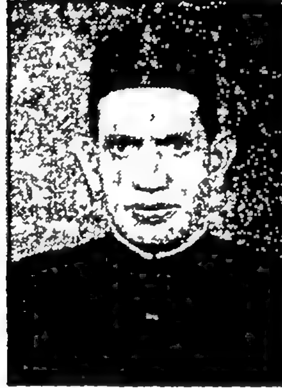
श्री चौथमलजी जैन
भू पू संयोजक
शाखा—सवाई माधोपुर





श्री कल्याणमलजी जैन
भू पू प्रचारक
शाखा—सवाई माधोपुर



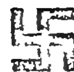


श्री कन्हैयालालजी लोढा
अधिष्ठाता
जैन सिद्धात शिक्षण संस्थान, जयपुर





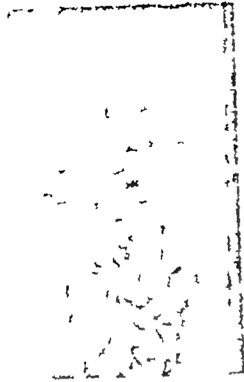
श्री मोहनलालजी जैन
व्यवस्थापक
स्वाध्याय संघ, जोधपुर





श्री शान्ताप्रसादजी जैन
व्यवस्थापक
शाखा—सवाई माधोपुर

महिला स्वाध्यायी



श्रीमती शान्ति मुणोत
जोधपुर



कुमारी इन्दु डागा
जोधपुर



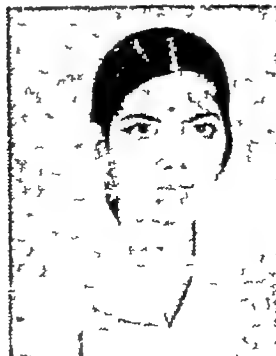
श्रीमती कमला बहिन जैन
इन्दौर



श्रीमती सुशीला बोहरा, अध्यक्षा
अ भा श्री महावीर जैन
श्राविका समिति, जोधपुर



कुमारी मोहन गांधी
जोधपुर

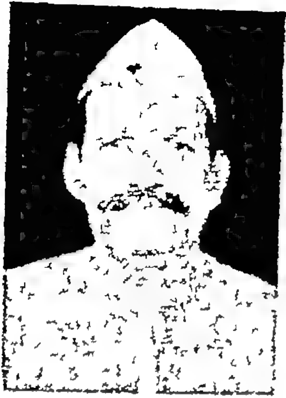


कुमारी पुष्पा गांधी
जोधपुर

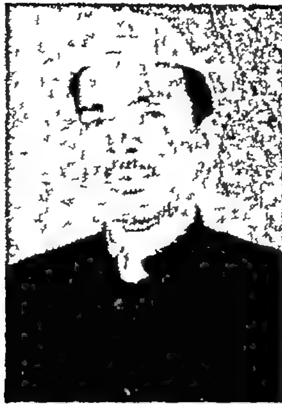


कुमारी शकुन्तला मेहता
जोधपुर

स्वाध्यायी चित्रावली



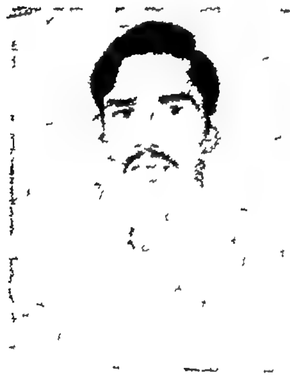
श्री रतनलालजी माडोत
अजमेर



श्री अमरचन्दजी कासवा
अजमेर



श्री सुन्दरलालजी हींगड
आकोला



श्री घीसूलालजी हींगड
आकोला



श्री चन्दनमलजी बनवट
भाण्डा



श्री मोतीलालजी सुराना
इन्दौर



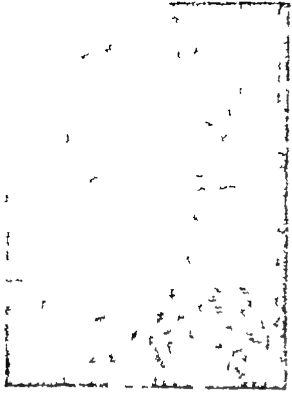
श्री मन्दारमलजी मुणोत
किशनगढ



श्री मदन लालजी धींग
कुन्थवास



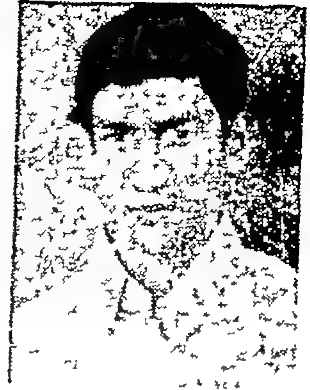
श्री अनिल कुमारजी बया
कानोड



श्री चैनमलजी नागोरी
कानोड



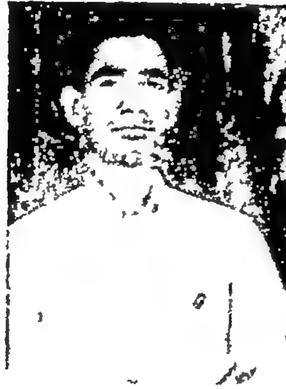
श्री धर्मचन्दजी नागोरी
कानोड



श्री सुभाषकुमारजी रांका
कानोड



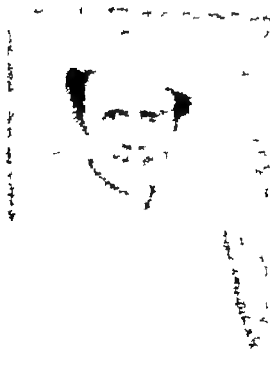
श्री भगवतीलाल तेजावत
कानोड



श्री नाथूलालजी खेरोदिया
मेरांदा



श्री चांदमलजी भंसाली
जालोर



श्री [illegible]जी [illegible]
[illegible]



श्री नथमलजी [illegible]
जलगाव



श्री कस्तूरचन्दजी बाफणा
जलगाँव



श्री ज्ञानराजजी मेहता
बंगलौर



श्री आनन्दराजजी जैन
बम्बई



श्री फूलचन्दजी रूणवाल
बिजापुर



श्री नाथूलालजी चण्डालिया



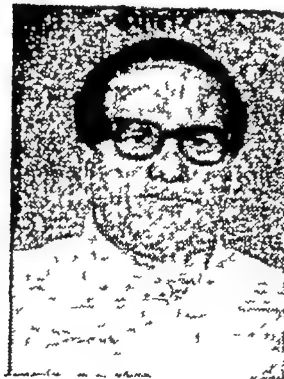
श्री पन्नालालजी चौरडिया



श्री सुकनराजजी पगारिया



श्री हीरालालजी रांका
वोहेड़ा



श्री सम्पतराजजी वाफणा
भोपालगढ



श्री सोहनलालजी हुण्डीवाल
भोपालगढ



श्री नरपतराज जी चौपडा
जोधपुर



श्री कुन्दनमलजी दाणी
डूँगला



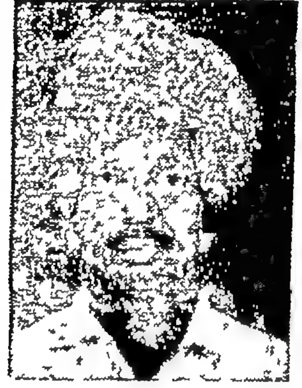
श्री भगवतीलालजी मोगरा
डूँगला



श्री खूबीलालजी खेरोदिया
ताणा



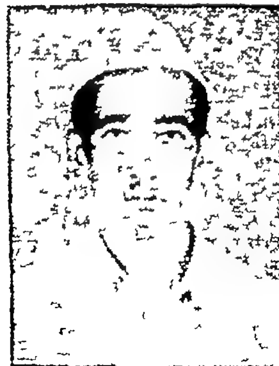
श्री भँवरलालजी पोखरणा
नवाणिया



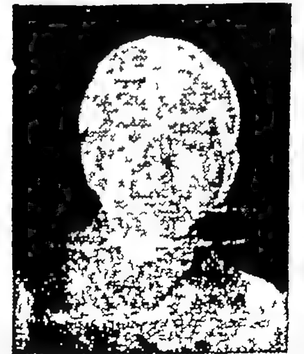
श्री नेमीचन्दजी मूथा
पीपाड सीटी



श्री घीसूलालजी तातेड
पाली



श्री मागीलालजी नागौरी
पारसोली



श्री रगलालजी धाकड
फलीचडा



स्व सूरजमल दूगड
जोधपुर



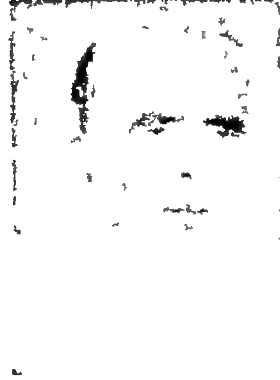
श्री सुगनचन्दजी भण्डारी
जोधपुर



श्री धनराजजी भण्डारी
जोधपुर



श्री पुखराजजी
जोधपुर



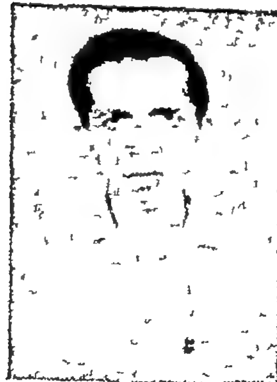
श्री रिखबराजजी कर्णावट
जोधपुर



श्री ए. आर बोथरा
जोधपुर



श्री भवरलाल लोढा
जोधपुर



श्री करणराजजी मेहता
जोधपुर



श्री पारसमलजी
जोधपुर



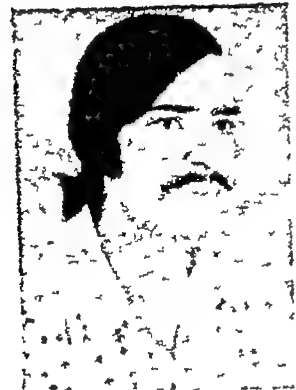
श्री अर्जुनराजजी मेहता
जोधपुर



श्री धनराजजी मुणोत
जोधपुर



श्री आनन्दराजजी मुणोत
जोधपुर



श्री पारसमलजी हींगड
जोधपुर



श्री जवरीमलजी चाम्बड
जोधपुर



श्री रतनलालजी बालड
जोधपुर



श्री सुरेन्द्र कुमारजी खिवसरा
जोधपुर



श्री प्रसन्नचन्दजी मेहता
जोधपुर



श्री विजयराजजी खिवसरा
जोधपुर



श्री नवरतनमलजी डोसी
जोधपुर



श्री दशरथजी कोठारी
जोधपुर



श्री रगत्पमलजी डागा
जोधपुर



श्री महिपालमलजी मेहता
जोधपुर



श्री हँसराजजी डागा
जोधपुर



श्री मेघराजजी पटवा
जोधपुर



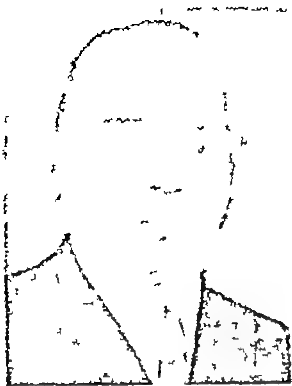
श्री राजेन्द्रजी सर्राफ
जोधपुर



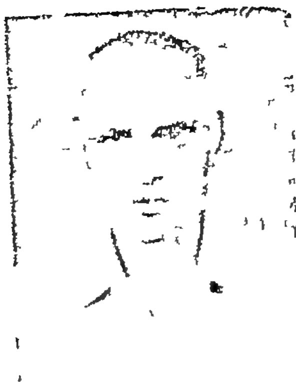
श्री राजेन्द्रराजजी मेहता
(पुन्नू) जोधपुर



श्री भँवरलालजी चोपड़ा
जोधपुर



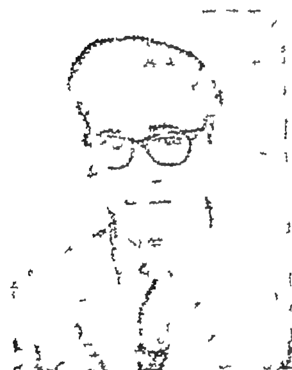
श्री राजेन्द्र कुमारजी पटवा
जयपुर



श्री मोहनराजजी चामड
जोधपुर



श्री दौलतरूपचन्दजी भंडारी
जोधपुर



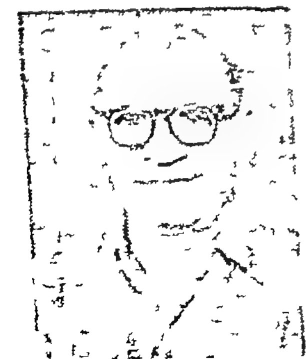
श्री माणकमलजी भण्डारी
जोधपुर



श्री चंचलमलजी चोरडिया
जोधपुर



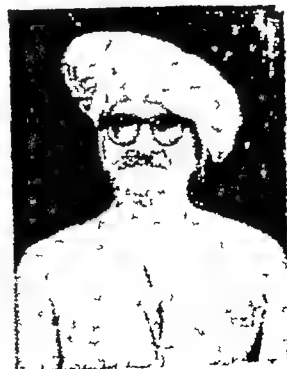
श्री नरपतराजजी भण्डारी
जोधपुर



श्री सम्पतराजजी खिवसरा
जोधपुर



श्री मांगीलालजी राका
जोधपुर



श्री अनराजजी मेडतिया
जोधपुर



श्री चिरंजीलाल जी जैन
कुन्डेरा



श्री रामजीलाल जी जैन
छोह



श्री महावीर प्रसाद जी जैन
चौथ का बरवाड़ा



श्री राजेन्द्र जी जैन
जरखोदा



श्री उम्मेदचन्द जी जैन
जरखोदा



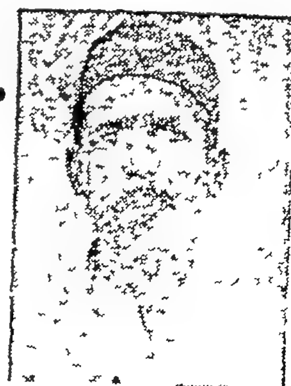
श्री जसकरण जी डांगा
टोंक



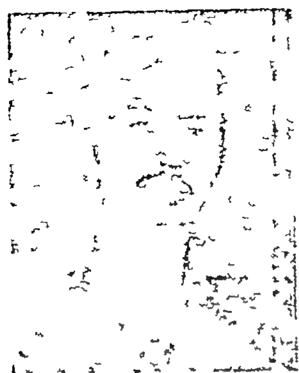
श्री महावीर प्रसाद जी जैन
आगरवाड़ा



श्री निहालचन्द जी जैन
देई



श्री कपूर चन्द जी जैन
देई



श्री गजानन्द जी जैन
देवली



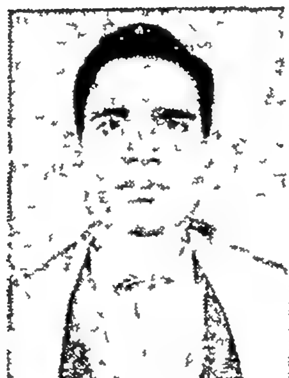
श्री मोहनलाल जी जैन
नैनवा



श्री अमोलक चन्द जी जैन
दिलोता



श्री प्रेमचन्द जी कोठारी
बून्दी



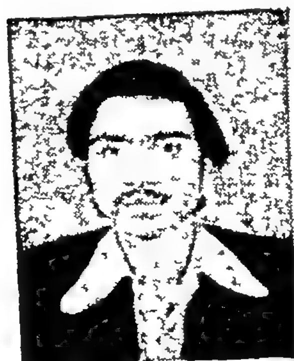
श्री रिद्धिचन्द जी जैन
सूरथाल



श्री मिलाप चन्द जी डागा
बून्दी



श्री मोहनलाल जी भडकत्या
बून्दी



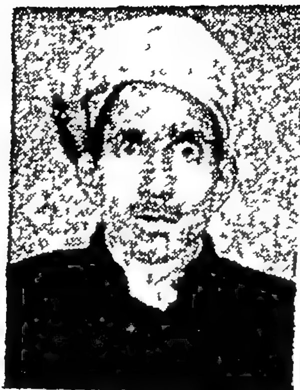
श्री धर्मचन्द जी जैन
श्यामपुरा



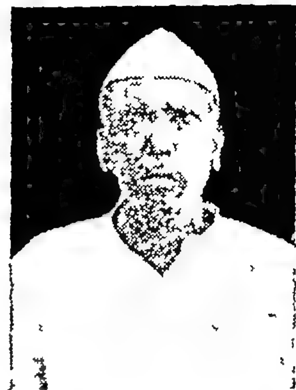
कवि श्री भवरलाल जी जैन
श्यामपुरा



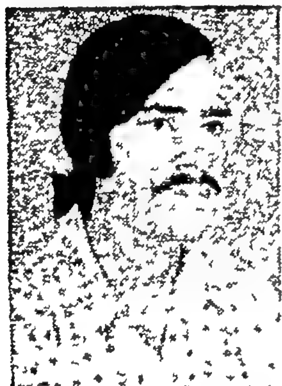
श्री सुरेशकुमारजी पालरेचा
ब्यावर



श्री मदनलालजी सरूपरिया
भदेसर



श्री पारसमलजी बाफणा
भोपालगढ



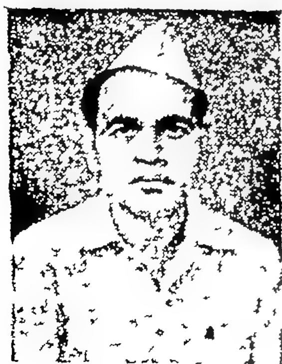
श्री पारसमलजी हींगड
जोधपुर



श्री जवरीमलजी चाम्वड
जोधपुर



श्री रतनलालजी बालड
जोधपुर



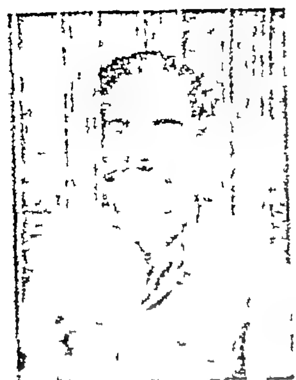
श्री रतनलालजी बाफणा
भोपालगढ



श्री सुभाषचन्दजी हुण्डीवाल
भोपालगढ



श्री रिखबराजजी छाजेड
भोपालगढ



श्री मनोहरलालजी पोखरणा
भादसोडा



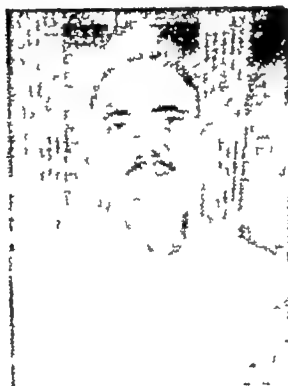
श्री भवरलालजी खरोदिया
भादसोडा



श्री नानालालजी भादवा
भादसोडा



श्री शकरलालजी लोढा
भादसोडा



श्री रोशनलालजी नाहर
भादसोडा



श्री शान्तिलालजी जारोली
मोरवन



श्री नेमीचन्दजी जैन
मेमता मांटी



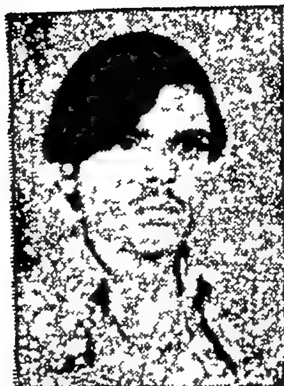
श्री प्रसन्नचन्दजी ओस्तवाल
मद्रास



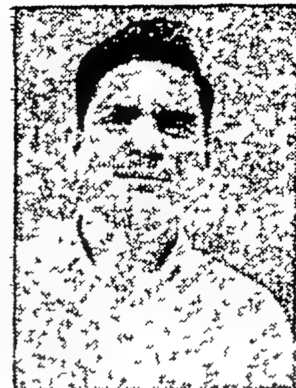
श्री हरकचन्दजी ओस्तवाल
मद्रास



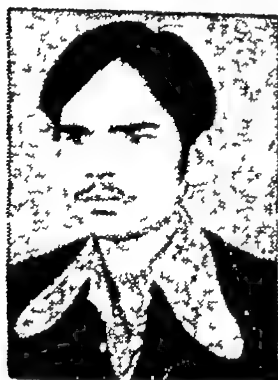
श्री पारस चन्द जी जैन
श्यामपुरा



श्री नरेन्द्र मोहन जी जैन
श्यामपुरा



श्री माणक चन्द जी जैन
श्यामपुरा



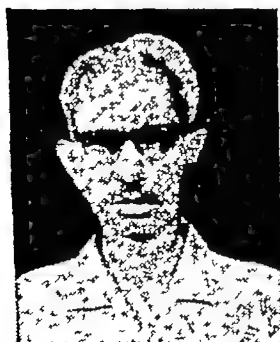
श्री प्रकाश चन्द जी जैन
श्यामपुरा



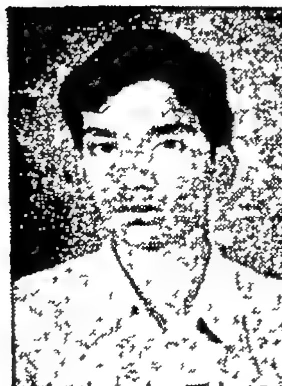
श्री लालचन्द जी जैन
साहूनगर



श्री गोपीकृष्ण जी हाडा
सवाई माधोपुर



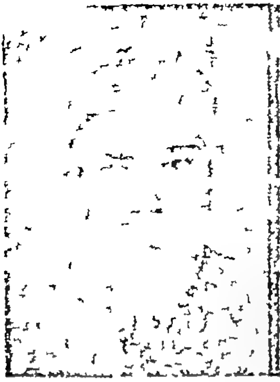
श्री मांगीलाल जी पोद्दार
सवाई माधोपुर



श्री मदनलाल जी जैन
सवाई माधोपुर



श्री ओम प्रकाश जी जैन
सवाई माधोपुर



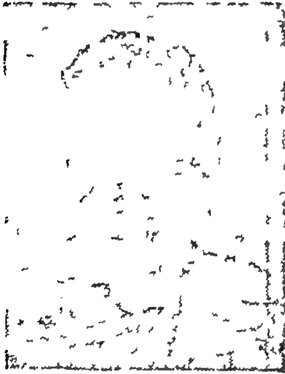
श्री राजेन्द्र प्रसाद जी जैन
सवाई माधोपुर



श्री सुरेन्द्र जी जैन
सवाई माधोपुर

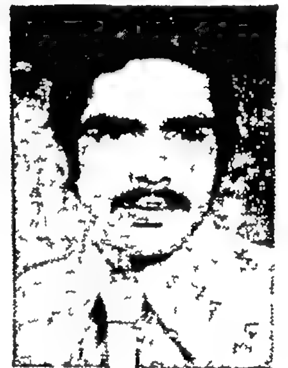


श्री हनुमान प्रसाद जी जैन
सवाई माधोपुर



श्री हीरालाल जी जैन
पुसेदा वाले
सवाई माधोपुर

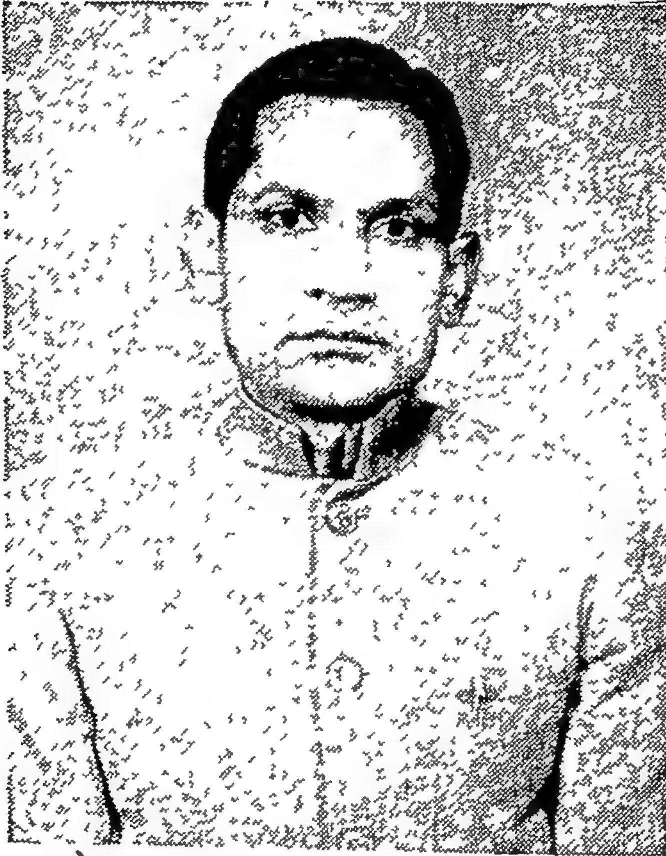




श्री बाबूलाल जी जैन
धणोली वाले
सवाई माधोपुर

—: हार्दिक अभिनन्दन :—

हमारे संयोजक :



श्री सम्पतराज जी डोसी

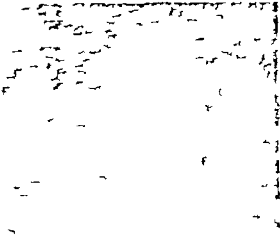
संयोजक

श्री श्वे० स्था० जैन स्वाध्याय संघ

(सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा संचालित)

प्रधान कार्यालय . जोधपुर

—: हार्दिक अभिनन्दन :—



श्री सुजानमलजी मेहता
निर्देशक
स्वाध्याय संघ, शाखा स. माधोपुर





श्री रामदयालजी जैन सर्राफ
कोषाध्यक्ष
स्वाध्याय संघ, शाखा-स. माधोपुर



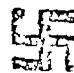


श्री चांदमलजी कर्नावट
संचालक
साधना विभाग, उदयपुर





श्री रूपचन्दजी जैन
संयोजक
स्वाध्याय संघ, शाखा-स. माधोपुर





श्री रघुनाथदासजी जैन
लेखा-निरीक्षक
स्वाध्याय संघ, शाखा-स. माधोपुर

—: हार्दिक अभिनन्दन :—



श्री चौथमलजी जैन
भू पू संयोजक
शाखा–सवाई माधोपुर





श्री कल्याणमलजी जैन
भू पू प्रचारक
शाखा–सवाई माधोपुर





श्री कन्हैयालालजी लोढा
अधिष्ठाता
जैन सिद्धात शिक्षण सस्थान, जयपुर





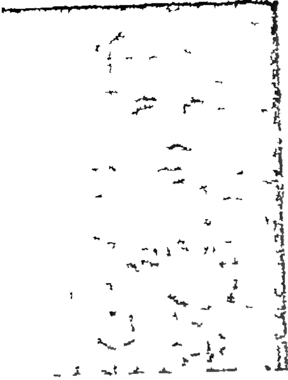
श्री मोहनलालजी जैन
व्यवस्थापक
स्वाध्याय सघ, जोधपुर





श्री शान्ताप्रसादजी जैन
व्यवस्थापक
शाखा–सवाई माधोपुर

महिला स्वाध्यायी



श्रीमती शान्ति मुणोत
जोधपुर



कुमारी इन्दु डागा
जोधपुर



श्रीमती कमला बहिन जैन
इन्दौर



श्रीमती सुशीला बोहरा, अध्यक्षा
अ. भा. श्री महावीर जैन
श्राविका समिति, जोधपुर



कुमारी मोहन गांधी
जोधपुर



कुमारी पुष्पा गांधी
जोधपुर



कुमारी शकुन्तला मेहता
जोधपुर

चतुर्थ खण्ड

विज्ञापन-सहयोग

विज्ञापन-सहयोग हेतु सभी प्रतिष्ठानों एवं महानुभावों के प्रति हार्दिक आभार।

स्वाध्यायी श्रावकों का :–

卐 हार्दिक - अभिनन्दन 卐



स्वाध्याय दूसरो की निन्दा मे निरपेक्ष, बुरे विकल्पो के नाश करने मे समर्थ, तत्त्व के विनिश्चय का कारण और ध्यान की सिद्धि करने वाला हैं।

शान्ति टेक्सटाइल्स इण्डस्ट्रीज

कांकरिया बिल्डिंग

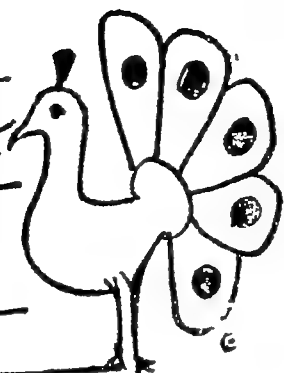
जोधपुर (राज.)

जो परिभवई पर जणं, संसारे परिवत्तई मह ।
श्रदु इखिणियाऊ पाविया, इति सखाय मुणी ण मज्जई ।

जो मनुष्य दूसरे का तिरस्कार करता है, वह चिर काल तक संसार मे परिभ्रमण करता है । पर-निन्दा पाप का कारण है, यह समझ कर साधक अहभाव का पोषण नहीं करते ।

—भगवान महावीर

With the Best Compliments of





जो आत्मा विषयो से निरपेक्ष है, वह संसार में रहता हुआ भी जल मे कमलिनी पत्र के समान अलिप्त रहता है।

—भगवान महावीर



NATHAMAL SIRAHMAL BUMB

PITALIYON KA CHOWK
JOHARI BAZAR, JAIPUR - 302003

With best compliments from :



आत्मा ही सुख-दुख करने वाली तथा उसका नाश करने वाली है। सत् प्रवृत्ति में लगी हुई आत्मा ही मित्ररूप है जबकि दुष्प्रवृत्ति में लगी हुई आत्मा ही शत्रु रूप है।

—भगवान महावीर



REAL GEMS

PITALIYON KA CHOWK
JOHARI BAZAR, JAIPUR

शुभ कामनाओं सहित :—



जिस प्रकार महागिरी हवा के झंझावात से डोलायमान नही होता, उसी प्रकार व्रतनिष्ठ पुरुष सम-विषय ऊँच-नीच, अनुकूल-प्रतिकूल परिषहो के आने पर भी धर्म-पथ से विलग नही होता ।

—भगवान महावीर



धनराज चौपड़ा, बालोतरा

With best compliments from :



स्वाध्याय के समान दूसरा तप न कभी हो सका है, न आज कही है, और न कल कभी होगा ।



MONA INDIA
JAIPUR

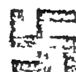
"जह मम न पियं दुक्खं, जाणिय एमेव सव्वजीवाणं।"





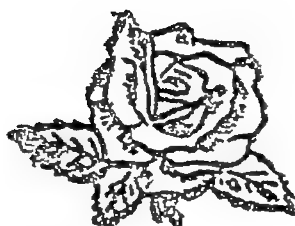
जैसे मुझे दुःख प्रिय नहीं है, वैसे ही अन्य सब जीवों को भी दुःख प्रिय नहीं है, यह समझ कर जो न स्वयं हिंसा करता है और न दूसरों से हिंसा करवाता है, वही श्रमण है, भिक्षु है।

—भगवान महावीर



विचार-शुद्धि के बिना आचार-शुद्धि बनावटी है जो टिकाऊ नही है। वैसी आचार-शुद्धि सर्कस के शेर की तरह होती है। जैसे सर्कस का शेर बकरी के साथ रहता है, किन्तु वह विचारो की शुद्धता के कारण नही, वरन् केप्टिन के कोडे के डर के कारण ऐसा करता है। यह शुद्धि चिर स्थायी कभी नहीं हो सकती।

—आचार्य श्री हस्तीमलजी म०












With the
Best
Compliments
of



दाणं दरिद्दस्स पहुस्स खंती ।

—गरीब का दान और समर्थ व्यक्ति की क्षमा महान् धर्म है।

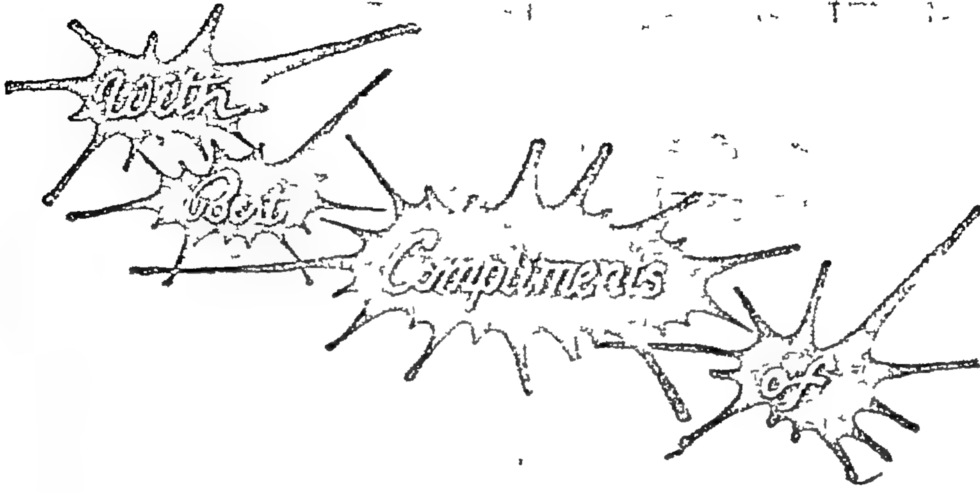


Gopal Machines Private Ltd.

Manufacturers of : Safety Razors Blades Plants,
Light Machinery & Spare Parts There of ets etc

Phones : 64345 Off
61087 Res.

Works & Regd Office
C 116, Vishwakarma
Industrial Area
JAIPUR (India)



धम्मे दुविहे पन्नत्तं, सुअधम्मे चेव चरित्तधम्मेचेव धर्म के दो प्रकार है, श्रुत-धर्म और चारित्र धर्म। श्रुत धर्म अज्ञान को नष्ट करता है और चारित्र धर्म मोह मिथ्यात्व को।



BHANDARI AGENCIES

MADRAS

दूरभाष : 24891

श्री श्वे० स्था० जैन स्वाध्याय संघ
जोधपुर



द्वारा विद्वान स्वाध्यायी बन्धुओं को पर्यूषण महापर्व पर
सादर आमंत्रित कीजिये एवं धर्म लाभ के सुअवसर
प्राप्त कीजिये



—संयोजक
स्वाध्याय संघ जोधपुर
घोड़ों का चौक जोधपुर (राज.)



सव्वं जगं तू समयाणुपेही,
पियमप्पियं कस्स वि नो करेज्जा ।

समग्र विश्व को जो समभाव से देखता है, वह न किसी का प्रिय करता है और न किसी का अप्रिय । अर्थात् वह समदर्शी होकर अपने-पराये की भेदबुद्धि से होता है ।

—भगवान महावीर

